विदेह — प्रथम मैथिली पाक्षिक ई-पत्रिका
ISSN 2229-547X · www.videha.co.in

रंग-संगम

नओटा मैथिली नाटक आ तकर अंग्रेजी रंगमंचीय रूपान्तर

विदेह नाट्य उत्सवमे मंचित नाटक सभक संकलन

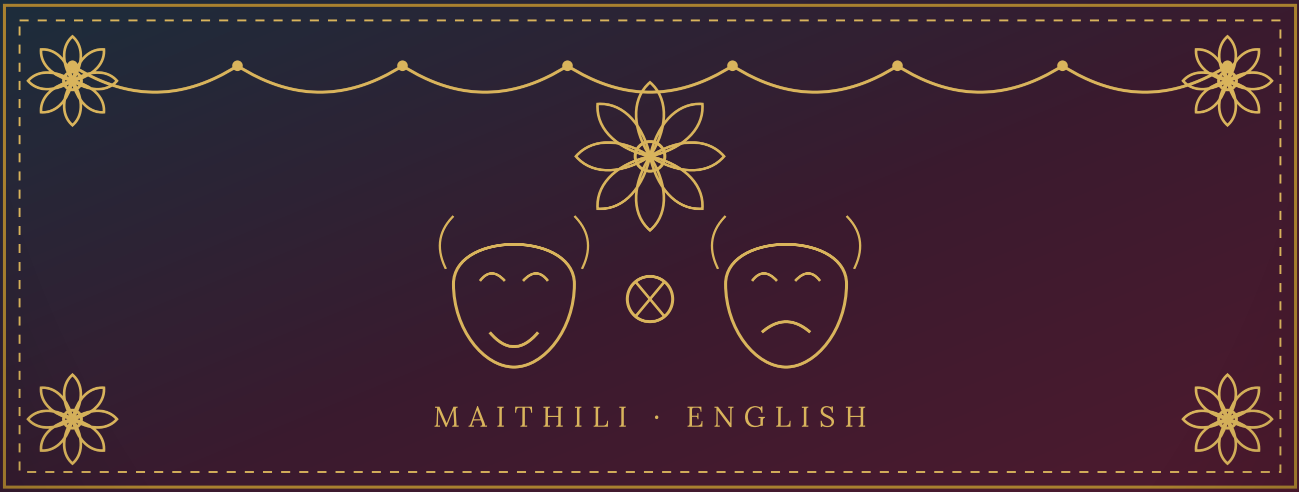

गजेन्द्र ठाकुर
GAJENDRA THAKUR

विदेह प्रकाशन · संयुक्त संस्करण २०२६

गजेन्द्र ठाकुर समग्र ❖ गजेन्द्र ठाकुर समग्र ❖ गजेन्द्र ठाकुर समग्र ❖ गजेन्द्र ठाकुर समग्र ❖

रंग संगम

नओटा मैथिली नाटक आ तकर अंग्रेजी रंगमंचीय रूपान्तर

गजेन्द्र ठाकुर

सम्पादक — विदेह, प्रथम मैथिली पाक्षिक ई-पत्रिका

VIDEHA · ISSN 2229-547X · www.videha.co.in

प्रकाशन-विवरण

रंग-संगम : नओटा मैथिली नाटक आ तकर अंग्रेजी रंगमंचीय रूपान्तर

लेखक: गजेन्द्र ठाकुर

सम्पादक: विदेह — प्रथम मैथिली पाक्षिक ई-पत्रिका

VIDEHA · First Maithili Fortnightly eJournal · Since 2000
ISSN 2229-547X · www.videha.co.in

संयुक्त संस्करण: २०२६

© गजेन्द्र ठाकुर। सर्वाधिकार सुरक्षित।

संरचना

एहि संयुक्त खण्डमे प्रत्येक मैथिली नाटकक तुरन्त बाद ओकर अंग्रेजी रंगमंचीय रूपान्तर राखल गेल अछि। मूल रचना, संवाद, मंच-निर्देश आ उपलब्ध चित्रसभ सुरक्षित राखि एकरूप पुस्तक-विन्यास देल गेल अछि।

एहि खण्डक विन्यास

रंग-संगममे नओटा मैथिली नाटक आ तकर नओटा अंग्रेजी रंगमंचीय रूपान्तर जोड़ी-क्रममे प्रस्तुत अछि। पहिने मैथिली मूल, तकर तुरन्त बाद ओही नाटकक अंग्रेजी रूपान्तर; एहि क्रमक पुनरावृत्ति सभ नओ जोड़ीमे कएल गेल अछि।

मैथिली आ अंग्रेजी भागक दृश्य-पहिचान अलग राखल गेल अछि, मुदा समूचा ग्रन्थक टाइपोग्राफी, पृष्ठ-विन्यास, चित्र-व्यवस्था आ शीर्षक-क्रम एके सम्पादकीय रूपमे संयोजित अछि।

अनुक्रममे प्रत्येक मूल नाटक आ ओकर अंग्रेजी रूपान्तरक आरम्भ-पृष्ठ अलग-अलग देल गेल अछि।

अनुक्रम

क्रम	नाटक / रूपान्तर	पृष्ठ
1क	अपाला आत्रेयी — मैथिली मूल	5
1ख	APALA ATREYI — अंग्रेजी रूपान्तर	31
2क	भऽ जाएब छू — मैथिली मूल	56
2ख	WE SHALL TURN TO ASH — अंग्रेजी रूपान्तर	74
3क	दानवीर दधीची — मैथिली मूल	89
3ख	DADHICHI, THE GREAT GIVER — अंग्रेजी रूपान्तर	102
4क	गंगा ब्रिज — मैथिली मूल	114
4ख	GANGA BRIDGE — अंग्रेजी रूपान्तर	151
5क	जलोदीप — मैथिली मूल	183
5ख	JALODEEP: THE WATER-LAMP — अंग्रेजी रूपान्तर	206
6क	कमलाक भगता — मैथिली मूल	229
6ख	A Devotee of the Kamala — अंग्रेजी रूपान्तर	240
7क	मचण्ड — मैथिली मूल	250
7ख	MACHANDA — अंग्रेजी रूपान्तर	271
8क	संकर्षण — मैथिली मूल	288
8ख	SANKARSHAN — अंग्रेजी रूपान्तर	335
9क	उल्कामुख — मैथिली मूल	380
9ख	ULKAMUKH — अंग्रेजी रूपान्तर	449

अपाला आत्रेयी

ऋग्वैदिक ब्रह्मवादिनीक आत्मसम्मान आ विद्याक गाथा

गजेन्द्र ठाकुर

सम्पादक, विदेह: प्रथम मैथिली पाक्षिक ई-पत्रिका (since 2000)

ISSN 2229-547X

पात्र-परिचय आ मंच-सज्जा

रोग-संघर्ष, मंत्र-दृष्टि, आ अन्तिम निर्णयकेँ बेसी स्पष्ट आ नाटकीय बनाओल गेल अछि।)

(ध्वनि संकेत: आमक गाछीक पात, वेदीक अग्नि, वैद्यक जड़ी-बूटी, विवाह-मंत्र, एकाकी रातिक जप, सोम थकुचबाक ध्वनि, आ ब्रह्मोदय सभाक गंभीर स्वर।)

(बाल नाटक)

पात्र: अपाला: ऋगवैदिक ऋचाक लेखिका, ब्रह्मवादिनी, आ अपन आत्मसम्मानक रक्षिका।

अत्रि: अपालाक पिता

वैद्य 1,2,3

कृशाश्व: अपालाक पति।

वेषभूषा: -

उत्तरीय वस्त्र (पुरुष), वल्कल, जूहीक माला (अपालाक केशमे), दण्ड।

मंच सज्जा: - आश्रमक शान्ति आ भीतरक संघर्ष दुनू देखाबए लेल मंचक एक भागमे सहकार-कुञ्ज, दोसर भागमे वेदी/अग्निकुण्ड, आ पाछाँ दूर जलाशयक संकेत।

सहकार-कुञ्ज (आमक गाछी), वेदी, हविर्गन्ध, रथक छिद्र, युगक छिद्र, सोझाँमे साही, गोहि

आ गिरगिट। त्वक्-रोगक दृश्य संकेत हलुक उज्जर कपड़ा/प्रकाशसँ देल जाए, उपहाससँ नहि।

दृश्य एक

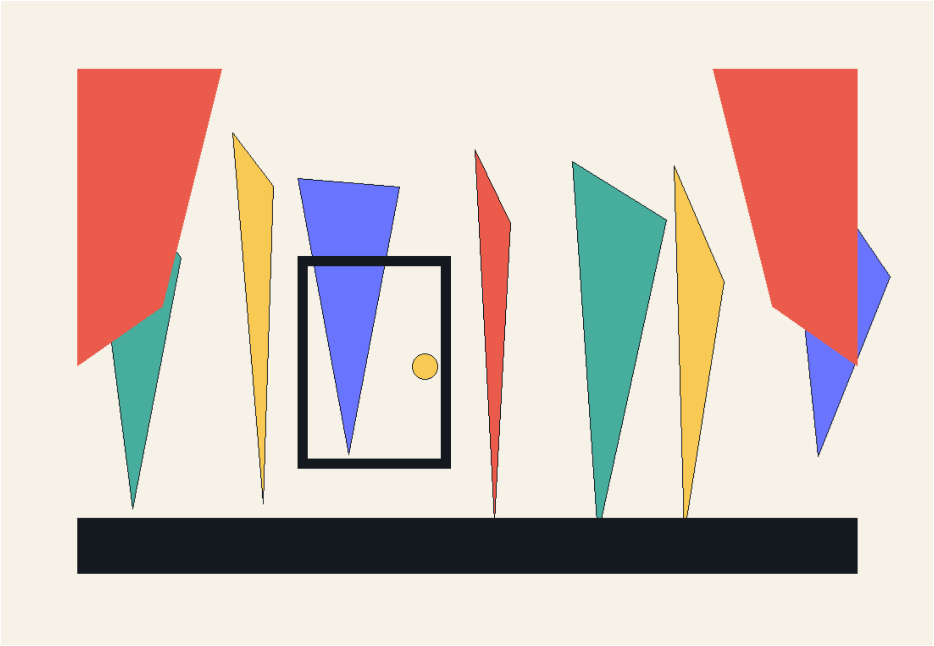

चित्र 1

(आमक गाछीक मध्य एक गोट बालिका आ बालक। पातक सरसराहटि, दूर जलक स्वर। अपाला हाथमे किछु पात/अक्षर-अभ्यास लेने छथि, जे देखबैत अछि जे ओ पहिनहिसँ जिज्ञासु छथि।)

बालिका: हमर नाम अपाला अछि। हम ऋषि अत्रिक पुत्री छी। अहाँ के छी ऋषि बालक? आ अहाँक आँखि अक्षर तकैए कि धनुष?

बालक: हम शिक्षाक हेतु आयल छी। ऋषि अत्रि कतए छथि।

अपाला: ऋषि जलाशय दिशि नहयबाक हेतु गेल छथि, अबिते होयताह।

(तखनहि दहिन हाथमे कमंडल आ वाम हाथमे वल्कल लेने महर्षि अत्रिक प्रवेश।)

अत्रि: पुत्री ई कोन बालक आयल छथि।

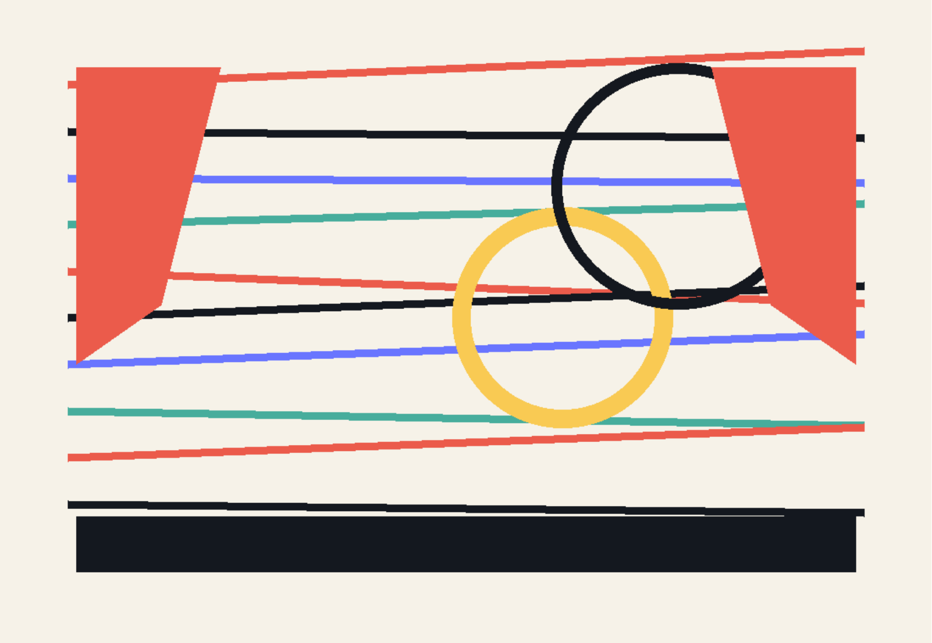

चित्र 2

अपाला: ऋषिवर। आश्रमवासीक संख्यामे एक गोट वृद्धि होयत। ई बालक शिक्षाक हेतु...

बालक: नहि। हमर अखन उपनयन नहि भेल अछि। हम अखन माणवक बनि उपाध्यायक लग शिक्षाक हेतु आयल छी। ई देखू हमर हाथक दण्ड। हम दण्ड- माणवक बनि सभ दिन अपन गामसँ आयब आ साँझमे चलि जायब। हम वेद मंत्रसँ अपरिचित अनृच छी, मुदा सीखबाक भूख अछि।

अत्रि: बेश तखन अहाँ हमर शिष्यक रूपमे प्रसिद्ध होयब। दिनक पूर्व भाग प्रहरण विद्याक ग्रहणक हेतु राखल गेल अछि। हम जे मंत्र कहब तकरा अहाँ स्मरण राखब। पुनः हम अहाँक विधिपूर्वक उपनयन करबाय संग लऽ आनब। एतय कन्या आ कुमार दुनूकेँ प्रश्न करबाक अधिकार अछि; प्रश्ने विद्याक पहिल सीढ़ी अछि।

बालक: विपश्चित गुरुक चरणमे प्रणाम।

(पटाक्षेप)

दृश्य दू

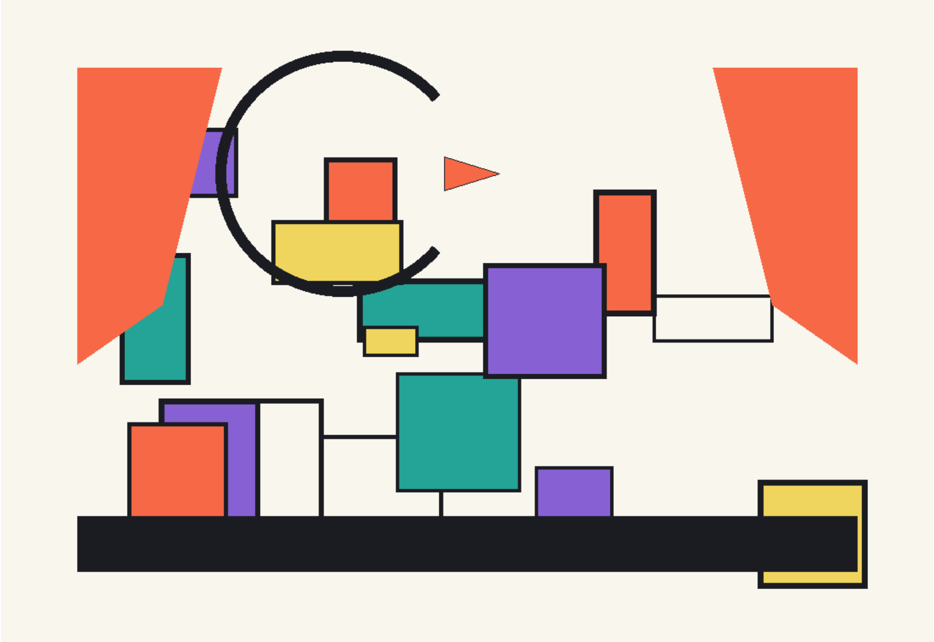

चित्र 3

(उपनयन संस्कारक अंतिम दृश्य। अपाला आ किछु आन ऋषि बालक बालिकाक उपनयन संस्कार कराओल गेल अछि। वेदीक अग्नि, सामगानक हलुक स्वर, आ विद्यार्थी सभक एकाग्रता देखाइ दे।)

अत्रि: अपाला। आब अहाँक असल शिक्षा आ विद्या शुरू होयत। ज्ञान केवल स्मरण नहि, आत्मदीप सेहो अछि। (पुनः आन विद्यार्थी सभक दिशि घूमि।) अहाँ सभकेँ सावित्री मंत्रक नियमित पाठ करबाक चाही। ॐ भूर्भुवः स्वः तत्सवितुर्वरेण्यं भर्गो देवस्य धीमहि धियो योनः प्रचोदयात्। सविता- जे सभक प्रेरक छथि- केर वरेण्य- सभकेँ नीक लागय बला तेज- पृथ्वी, अंतरिक्ष आ स्वर्गलोक-सर्वोच्च अकाश-मे पसरल अछि। हम ओकर स्मरण करैत छी। ओ हमर बुद्धि आ मेधाकेँ प्रेरित करथु।

अपाला: पितृवर। “ॐ नमः सिद्धम” केर संग विद्यारम्भक पूर्व शिक्षाक अंतर्गत की सभ पढ़ाओल जायत। अत्रि: वर्ण, अक्षर-स्वर, मात्रा- ह्रस्व, दीर्घ आ प्लुत, बलाघात- उदात्त, अनुदात्त, स्वरित, शुद्ध उच्चारण, अक्षरक क्रमिक विन्यास- वर्त्तनी, पढ़बाक आ बजबाक शैली, एकहि वर्णकेँ बजबाक कैकटा प्रकार, ई सभ शिक्षाक अंतर्गत सिखाओल जायत। साम संतान- जेकि सामान्य गान अछि- केर माध्यमसँ शिक्षा देल जायत। अपाला: गुरुवर। जँ उच्चारणमे दोष होइ तँ अर्थ बदलि जाइ छै; जँ दृष्टिमे दोष होइ तँ मनुक्ख बदलि जाइ छै।

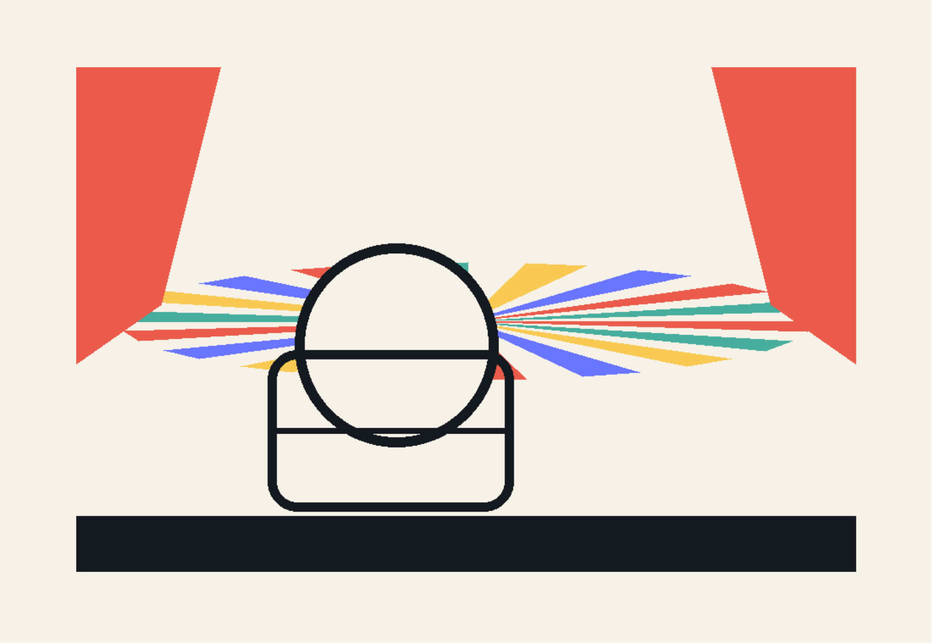

चित्र 4

आश्रमक नियमसँ सेहो अवगत करा देल जाय।

अत्रि: वनक प्राणी अवध्य छथि। आहारार्थ फल पूर्व-संध्यामे वन-वृक्षसँ एकत्र कएल जायत। प्रात: आ सायं अग्निहोत्र होयत, ताहि हेतु समिधा, कुश, घृत-आज्य, एवम् दुग्धक व्यवस्था प्रतिदिन मिलि-जुलि कय कएल जायत। हरिणकेँ निर्विघ्न आश्रममे टहलबाक अनुमति अछि। कदम्ब, अशोक, केतकी, मधूक, वकुल आ सूदकारक गाछक मध्य एहि आश्रममे यद्यपि कृषिक अनुमति नहि अछि, परञ्च अकृष्य भूमि पर स्वत: आ बीयाक द्वारा उत्पन्न अकृष्टपच्य अन्नक प्रयोग भऽ सकैछ। विद्या ओ प्रकृति, दुनू पर अधिकार नहि, सेवा करबाक अछि।

बालक: हम सभ एकहि विद्यापीठक रहबाक कारण सतीर्थ्य छी। गुरुवर। दण्ड आ कमण्डलक

अतिरिक्त किछु रखबाक अनुमति अछि?

अत्रि: कटि मेखला आ मृगचर्म धारण करू आ अपनाकेँ एहि योग्य बनाऊ जाहिसँ द्वादशवर्षीय यज्ञ सत्रक हेतु अहाँ तैयार भऽ सकी आ महायज्ञक समाप्तिक पश्चात् ब्रह्मोदय, विदथ परिषद आ उपनिषद ओ अरण्य संसदमे गंभीर विषय पर चर्चा कऽ सकी।

(पटाक्षेप)

दृश्य तीन

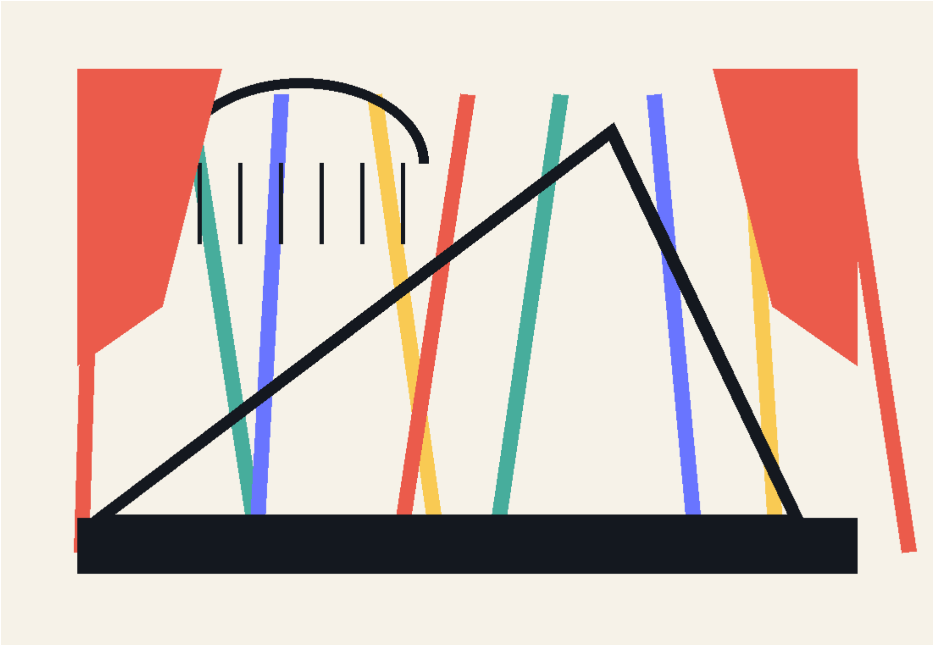

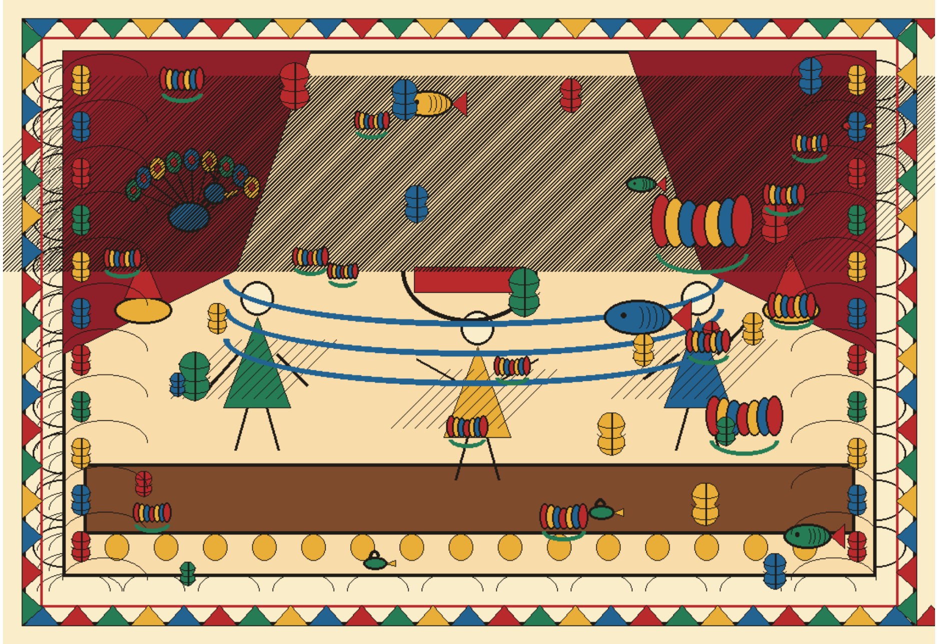

चित्र 5

(कुटीरमे ऋषि अत्रि कैक गोट वैद्यक संग विचार-विमर्श कए रहल छथि। बाहर अपालाक साम-अभ्यासक हलुक स्वर सुनाइ दैत अछि; भीतर पिता आ वैद्यक चिन्ता।)

अत्रि: वैद्यगण। बालिका अपालाक शरीरमे त्वक् रोगक लक्षण आबि रहल अछि। शरीर पर श्वेत कुष्ठक लक्षण देखबामे आबि रहल अछि। रोग देहपर अछि, मुदा समाज एकरा आत्मापर आरोप बना दै छै; ताहि डर सेहो हमरा अछि।

वैद्य 1: कतबा महिनासँ कतेको औषधिक निर्माण कए बालिकाकेँ खोआओल आ लेपनक हेतु सेहो देल।

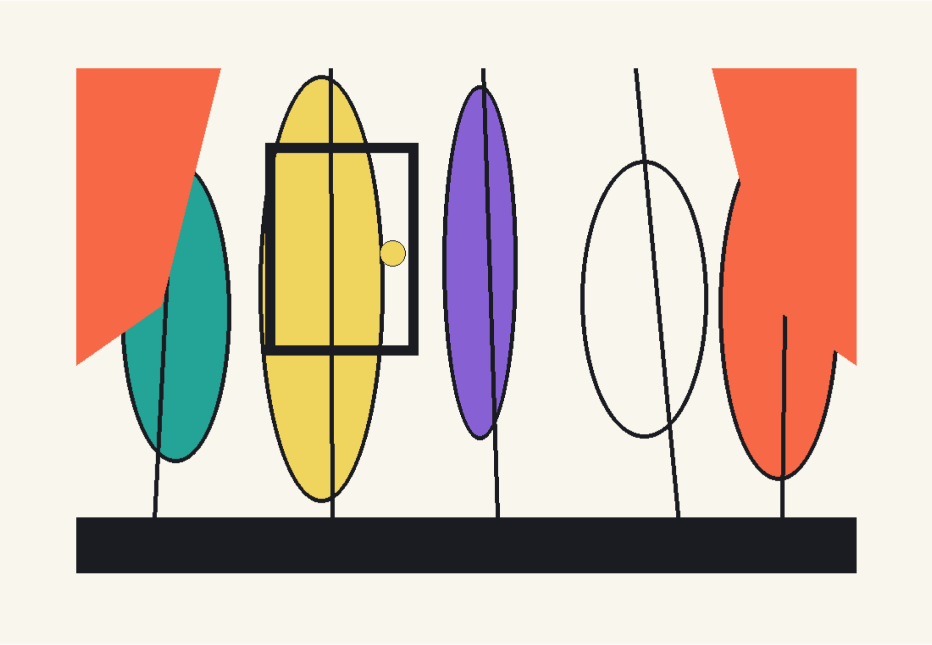

चित्र 6

रोग जिद्दी अछि, मुदा बालिकाक मन ओकरासँ बेसी दृढ़।

अत्रि: अपाला आब विवाहयोग्य भऽ रहल छथि। हुनका हेतु योग्य वर सेहो ताकि रहल छी।

मुदा योग्य वर से हो, जे अपालाक विद्या देखए, केवल त्वचा नहि।

वैद्य 2: कृशाश्वक विषयमे सुनल अछि, जे ओ सर्वगुणसंपन्न छथि आ वृद्ध माता-पिताक सेवामे

लागल छथि। ओ अपन अपालाक हेतु सर्वथा उपयुक्त वर होयताह।

अत्रि: तखन देरी कथीक। अपने सभ उचित दिन हुनकर माता-पितासँ संपर्क करू।

दृश्य चारि

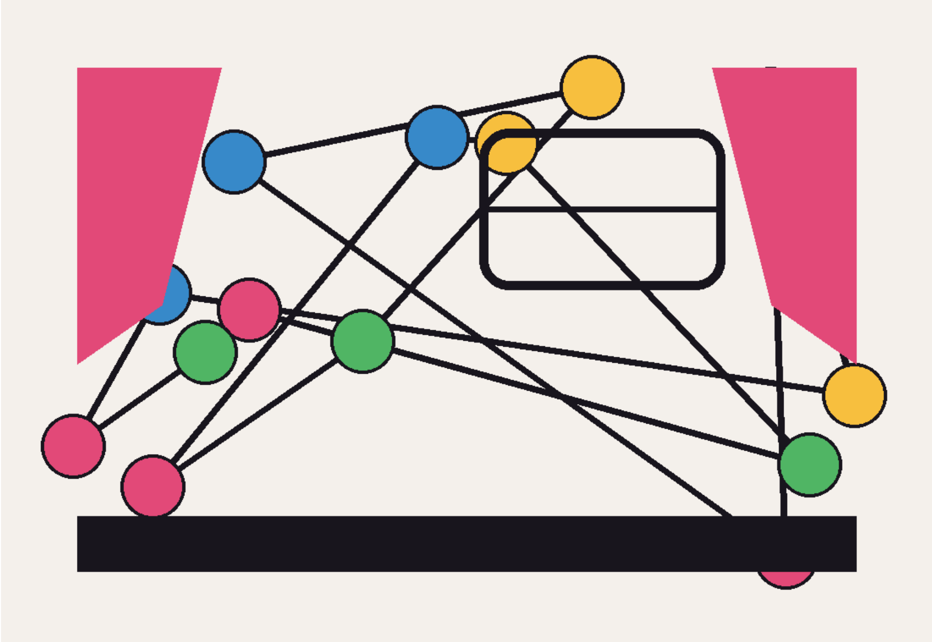

चित्र 7

(आश्रमक सहकार-कुञ्जमे वैवाहिक विधिक अनुष्ठान अछि। वेदी बनाओल गेल अछि आ ओतय ऋत्विज लोकनि जव-तील केर हवन कऽ रहल छथि। अग्नि उज्ज्वल अछि, मुदा अपालाक मनमे हलुक आशंका।)

अपाला (मोने मोन): माथ पर त्रिपुंडक भव्य-रेखा आ शरीर-सौष्ठवक संग विनयक मूर्त्ति, ईएह कृशाश्व हमर जीवनक संगी छथि। की ई हमर मंत्र-संगिनी आत्माकेँ देखता, कि केवल त्वचाक

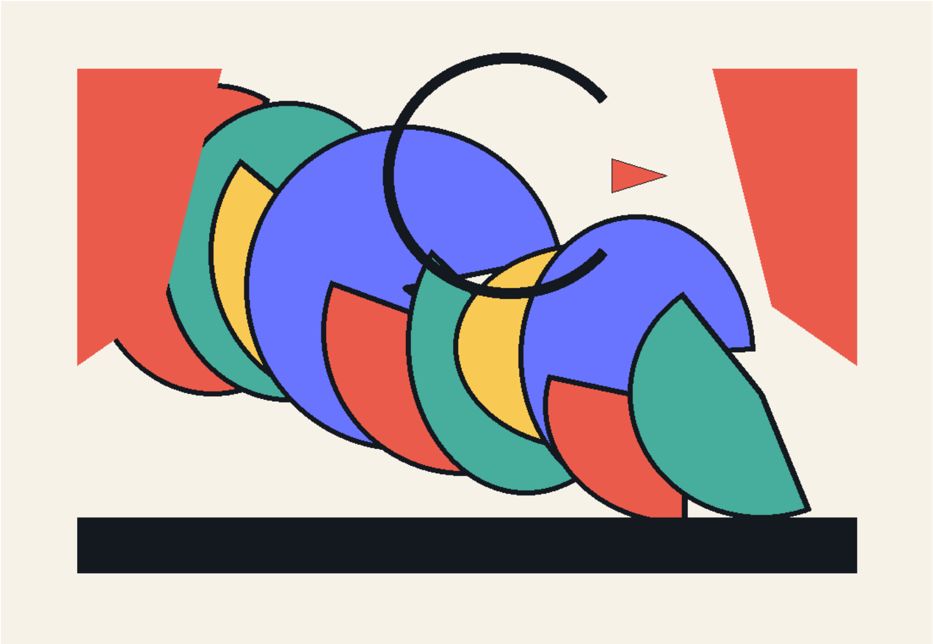

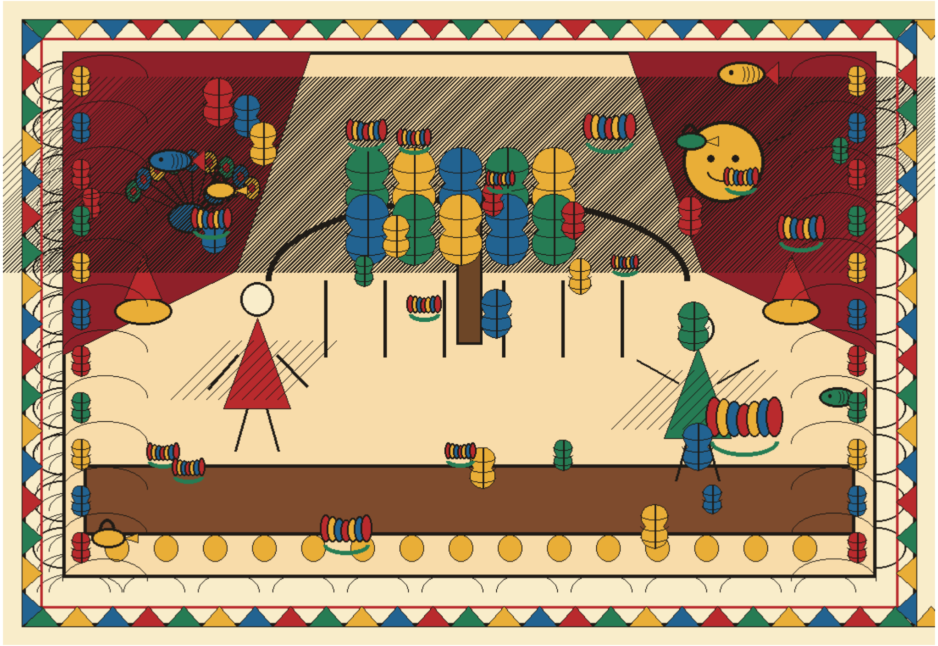

चित्र 8

दाग? (तखने कृशाश्वक नजरि अपालासँ मिलैत छन्हि आ अपाला नजरि नीचाँ कए लैत छथि। मुदा स्त्रीत्वक मर्यादाकेँ रखैत ललाट ऊँचे बनल रहैत छन्हि।)

अत्रि: उपस्थित ऋषि-मण्डली आ अग्निकेँ साक्षी मानैत, हम अपाला आ कृशाश्वक पाणिग्रहण करबैत छी। (अग्निक प्रदक्षिणा करैत काल कृशाश्वक उत्तरीय वस्त्र कनेक नीचाँ खसि पड़ल आ अपालाक केशक जूही-माला सेहो पृथ्वी पर खसि पड़ल।)

दृश्य पाँच

चित्र 9

(अपालाक पतिगृह। वृद्ध माता-पिता बैसल छथिन्ह आ अपाला घरक काजमे लागल छथि। एक कोनमे वेद-पाठक सामग्री सेहो अछि; ओ घरक सेवा आ विद्या दुनू निभा रहल छथि।)

काजमे लागल छथि।)

अपाला: प्रिय कृशाश्व। एतेक दिन बीति गेल। पतिगृहमे हम कोनो नियंत्रणक अनुभव नहि कएलहुँ। हमरा प्रति अहाँक कोमल प्रेम सतत् विद्यमान रहल। मुदा श्वेत त्वकक जे दाग हमरा पर ज्वलन्त सत्ताक रूपमे अछि, कदाचित् वैह किछु दिनसँ अहाँक हृदयमे हमरा प्रति उदासीनताक रूपमे परिणत भेल अछि। घरक चुप्पी सेहो कखनो-कखनो शब्दसँ तीख होइत अछि।

कृशाश्व: हमर उदासीनता अपाला?

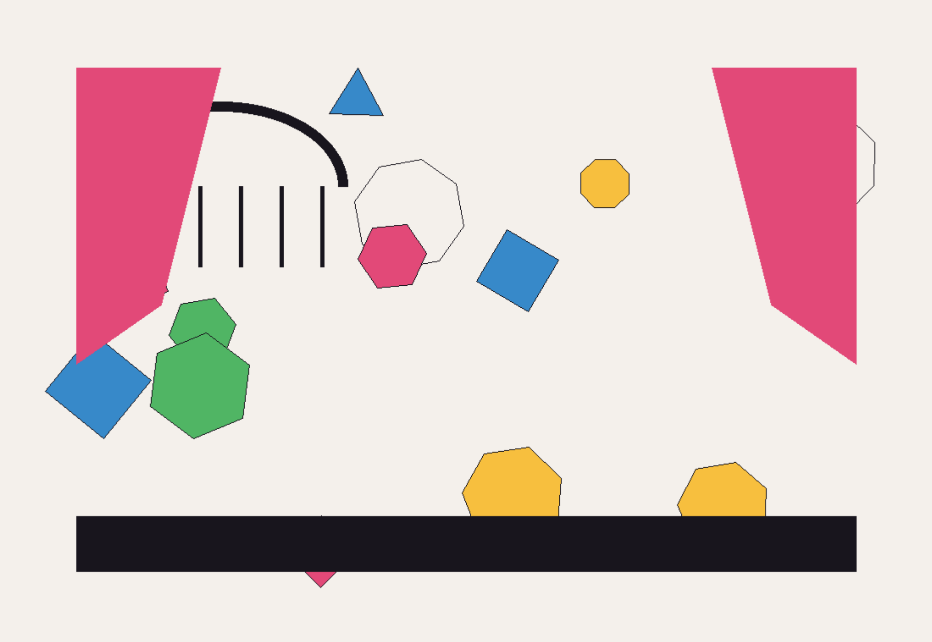

चित्र 10

अपाला: हँ कृशाश्व। हम देखि रहल छी ई परिवर्त्तन। की एकर कारण हमर त्वगदोषमे अंतर्निहित अछि? कृशाश्व: हे अपाला। हमरा भीतर एकटा संघर्ष चलि रहल अछि। ई संघर्ष अछि प्रेम आ वासनाक। प्रेम कहैत अछि, जे अपाला ब्रह्मवादिनी छथि, दिव्य नारी छथि। मुदा वासना कहैत अछि, जे अपालाक शरीरक त्वगदोष नेत्रमे रूपसँ वैराग्यक कारण बनि गेल अछि। हम अपन दुर्बलता कहि रहल छी, ओकरा धर्मक नाम नहि दऽ सकै छी।

अपाला: पुरुषक हाथसँ स्त्रीक ई भर्त्सना। कामनासँ कलुषित पुरुष द्वारा नारीक हृदय-पुष्पकेँ थकूचब छी ई। हम वेदक अध्ययन कएने छी। चन्द्रमाक प्रकाशक बीचमे ओकर दाग नुका जाइत अछि मुदा हमर ई श्वेत त्वक् दाग हमर विशाल गुणराशिक बीचमे नहि मेटायल। दाग देहपर अछि, दृष्टि अहाँक बीमार भेल अछि। (कृशाश्व स्तब्ध भय जाइत छथि मुदा किछु बजैत नहि छथि।)

अपाला: सबल पुरुषक सोँझा हम अपन हारि मानैत नहि, अपन सम्मान बचबैत अपन पिताक तपोवन जा रहल छी, कृशाश्व। जे घरमे आत्मा छोट करए पड़ए, से घर नहि, बन्धन अछि।

दृश्य छ:

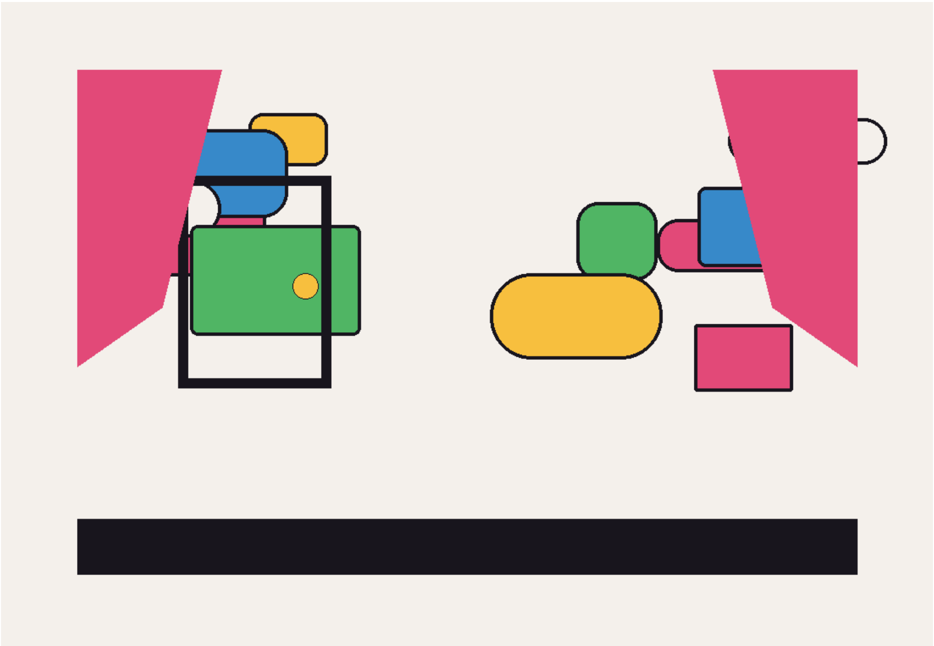

चित्र 11

(अपाला प्रातः कालमे समिधासँ अग्निकुण्डमे होम करैत इन्द्रक पूजा आ जपमे लागि गेल छथि। कुशासन पर बैसलि छथि। हवा स्थिर। सोम थकुचबाक ध्वनि धीरे-धीरे मंत्रक लयमे बदलैए।)

अपाला: धारक लग सोम भेटल, ओकरा घर आनल आ कहल जे हम एकरा थकुचब इंद्रक हेतु, शक्रक हेतु। (साँस सम्हारि) हे इन्द्र, ई सोम केवल औषधि नहि, हमर संकल्प अछि। गृह-गृह घुमैत आ सभटा देखैत, छोट खुट्टीक ई सोम पीबू, दाँतसँ थकुचल, अन्न आ दहीक संग खेनाइ काल प्रशंसा गीत सुनैत। हम सभ अहाँकेँ नीक जेकाँ जनबाक हेतु अवैकल्पिक रूपसँ लागल छी मुदा क्यो गोटे अहाँकेँ प्राप्त नहि कऽ सकल छी। हे चन्द्र, अहाँ आस्ते-आस्ते आ निरन्तर ठोपे-ठोपे इन्द्रमे

चित्र 12

प्रवाहित होऊ। की ओ हमरा लोकनिक सहायता नहि करताह, हमरा लोकनिक हेतु कार्य नहि करताह। की ओ हमरा लोकनिकेँ धनीक नहि बनओताह? की हम अपन राजासँ शत्रुताक बाद आब अपना सभकेँ इन्द्रसँ मिला लिअ’। हे इन्द्र अहाँ तीन ठाम उत्पन्न करू- हमरा पिताक मस्तक पर, हुनकर खेतमे आ हमर उदर लग। एहि सभ फसिलकेँ ऊगय दियौक। अहाँ हमरा सभक खेतकेँ जोतलहुँ, हमर शरीरकेँ आ हमर पिताक मस्तककेँ सेहो। अपालाकेँ पवित्र कएल। इन्द्र ! तीन बेर, एक बेर पहिया लागल गाड़ी, एक बेर चारि पहिया युक्त गाड़ीमे आ एक बेर दुनू बरदक कान्ह पर राखल युगक बीच। हे शतक्रतु ! आ अपालाकेँ स्वच्छ कएल आ सूर्यसमान त्वचा देल। हे इन्द्र ! मुदा स्मरण रहए- शुद्धि केवल त्वचाक नहि, दृष्टिक सेहो चाही।

दृश्य सात

चित्र 13

(महायज्ञक समाप्तिक पश्चात ब्रह्मोदयक दृश्य। ऋत्विजगण, विद्यार्थी, आ आश्रमवासी सभ

गंभीर मुद्रा मे। अपाला शांत छथि; हुनकर देह पर रोगक चिह्न मेटि गेल अछि, मुदा आँखिमे

अनुभवक गहराई अछि।)

अत्रि: एहि विशाल ऋत्विजगणक मध्य ऋकक मंत्रमे अपालाक ऋचाकेँ हम सम्मिलित कए सकैत छी,

कारण ई स्वत: स्फुटित आ अभिमंत्रित अछि। अपालाक चर्मरोग एहिसँ छूटि गेल, एकर ई सद्य:

प्रमाण अछि। मुदा प्रमाण केवल रोग-निवारण नहि; प्रमाण ई अछि जे पीड़ा सेहो ऋचा बनि

सकैए। अपाला एहि मंत्रक दृष्टा छथि।

ऋषिगण: अत्रि, हमरा सभ सेहो एहि मंत्रक दर्शन कएल। अहो। सम्मिलित करबाक आ नहि

करबाक तँ प्रश्ने नहि अछि। ई तँ आइसँ ऋकक भाग भेल। अपालाक नाम मंत्रसँ अलग नहि कएल

जाए।

(एहि स्वीकृतिक बाद ब्रह्मोदय सभामे दोसर काज सभ प्रारम्भ भऽ जाइत अछि। कृशाश्व

विचलित मोने अपालाक सोझाँ अबैत छथि।)

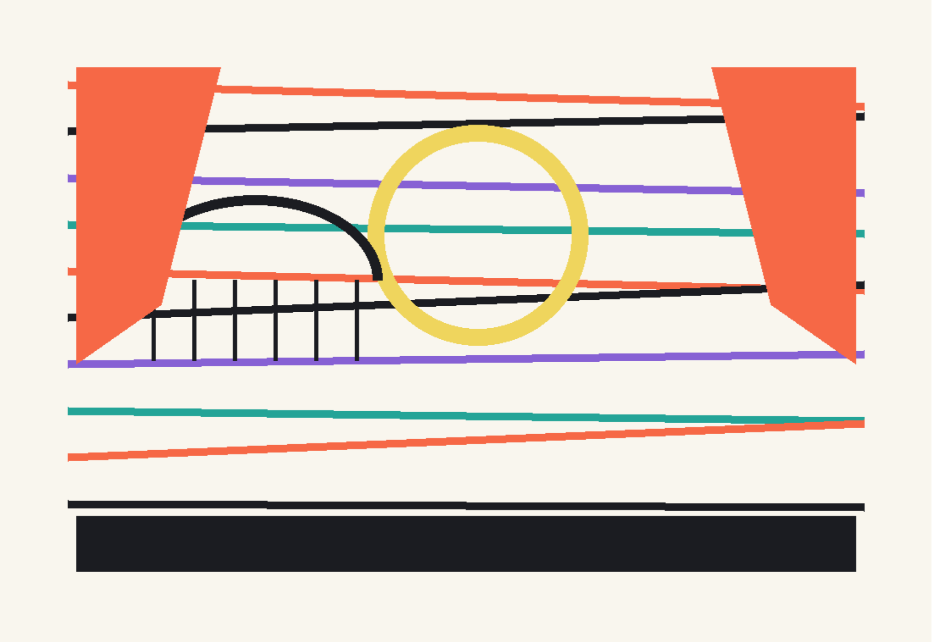

चित्र 14

कृशाश्व: अपाला। हम दु:खित छी। अहाँक वियोगमे आ अपन संकुचित दृष्टिक लेल।

अपाला: हे कृशाश्व। इन्द्रक देल ई त्वचा योगक परिणाम अछि। अहाँक उपेक्षा हमरा एहि योग्य बनेलक, मुदा आब एहि पर अहाँक कोनो अधिकार नहि। जे प्रेम दागमे साथ छोड़ि देलक, ओ दागरहित देह पर अधिकार नहि माँगि सकैए। हम अपाला आत्रेयी छी- ककरो दया नहि, अपन ऋचाक दृष्टा।

(दुनू गोटे शनै:-शनै: मंचक दू दिशि सँ बहराए जाइत छथि। अपाला जे दिशि जाइ छथि ओतय वेदीक प्रकाश बढ़ैए; कृशाश्वक दिशि प्रकाश मद्धिम।)

सूत्रधार: देहक घाव भरि सकैए, दृष्टिक घाव विद्यासँ भरैए। अपालाक ऋचा एहि लेल जीवित अछि जे ओ अपन पीड़ाकेँ मौन नहि रहए देलनि।

(पटाक्षेप)

पटाक्षेप

VIDEHA

विदेह: प्रथम मैथिली पाक्षिक ई-पत्रिका | **ISSN 2229-547X | www.videha.co.in**

APALA ATREYI

A Tale of the Self-Respect and Learning of a Rigvedic Brahmavadini

Gajendra Thakur

Editor, Videha: The First Maithili Fortnightly E-Journal (since 2000)

ISSN 2229-547X

CHARACTERS AND STAGE SETTING

The struggle with illness, the vision of the mantra, and the final decision have been made clearer and more dramatic.

Sound cues: leaves in a mango grove, fire at the altar, the physicians' herbs, wedding chants, solitary night-time recitation, the pounding of Soma, and the solemn voices of the Brahmodya assembly.

Children's Play

Characters:

APALA: Author of Rigvedic hymns, a Brahmavadini, and defender of her self-respect.

ATRI: Apala's father.

PHYSICIANS 1, 2, AND 3

KRISHASHVA: Apala's husband.

Costumes: Upper garments for the male characters, bark cloth, a jasmine garland for Apala's hair, and staffs.

Stage setting: To show both the peace of the hermitage and its inner conflict, one part of the stage should contain a mango grove, another the altar or fire-pit, with the suggestion of a distant pool at the rear.

Required scenic elements include the mango grove, the altar, the scent of offerings, openings in a cart and a yoke, and, at the front of the stage, a porcupine, a monitor lizard, and a chameleon. Apala's skin condition should be suggested with pale cloth or lighting, never through mockery.

SCENE ONE

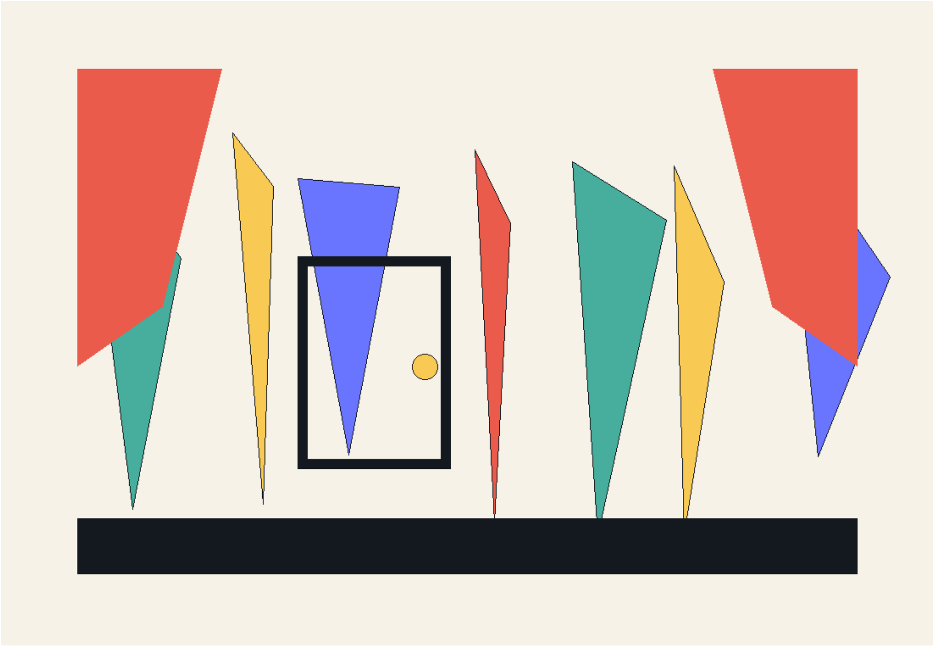

ILLUSTRATION 1

A girl and a boy stand amid a mango grove. Leaves rustle; water can be heard in the distance. Apala holds leaves or writing-practice materials, showing that she is already inquisitive.

GIRL: My name is Apala. I am Rishi Atri's daughter. Who are you, young rishi? Are your eyes searching for letters—or for a bow?

BOY: I have come to study. Where is Rishi Atri?

APALA: He has gone towards the pool to bathe. He should be back at any moment.

Maharishi Atri enters, carrying a water-pot in his right hand and bark cloth in his left.

ATRI: Daughter, who is this boy who has come here?

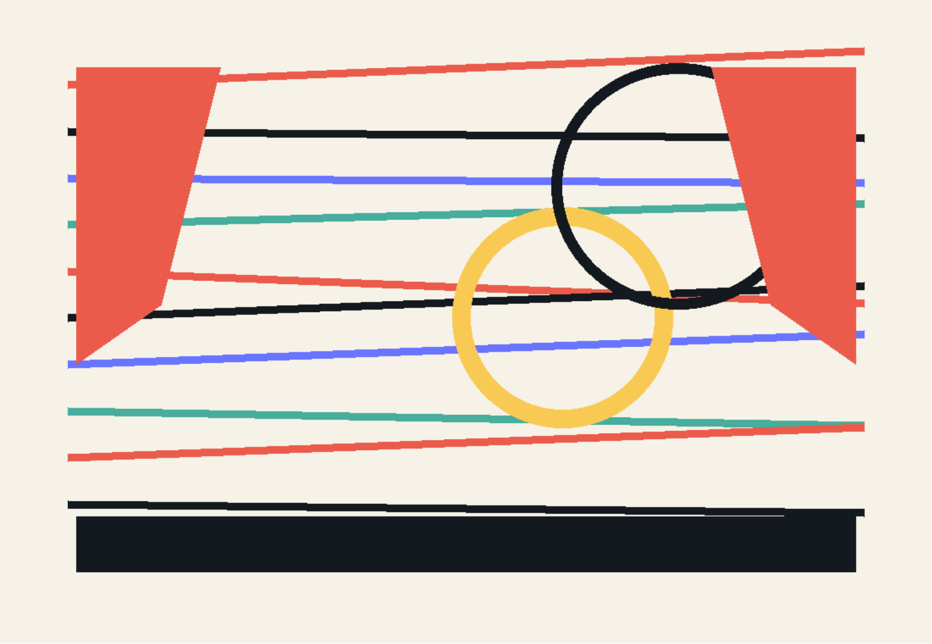

ILLUSTRATION 2

APALA: Revered Rishi, the number of residents in the hermitage is about to increase by one. This boy has come to study...

BOY: No. My initiation has not yet taken place. For now, I have come as a manavaka to study under the teacher. See the staff in my hand. As a danda-manavaka, I shall come each day from my village and return in the evening. I am an anrich, unacquainted with Vedic mantras, but I hunger to learn.

ATRI: Very well. Then you shall become known as my pupil. The first part of the day is reserved for training in the use of weapons. You must remember every mantra I teach you. Later, I shall take you with me and arrange your formal initiation. Here, girls and boys alike have the right to ask questions; a question is the first step towards knowledge.

BOY: I bow at the feet of the wise teacher.

CURTAIN.

SCENE TWO

ILLUSTRATION 3

The final stage of the initiation ceremony. Apala and several other young students—girls and boys—have undergone initiation. The fire on the altar, soft Sama chanting, and the students' concentration should be visible to the audience.

ATRI: Apala, your true education now begins. Knowledge is not merely memory; it is also a lamp within.

He turns to the other students.

ATRI: All of you must regularly recite the Savitri mantra: "Om bhur bhuvah svah, tat savitur varenyam bhargo devasya dhimahi dhiyo yo nah prachodayat." Savita—the inspirer of all—possesses the venerable radiance beloved by all, spread across the earth, the mid-region, and heaven—the highest sky. We meditate upon that radiance. May it inspire our intellect and understanding.

APALA: Father, what will be taught as the preliminary course before formal study, together with "Om Namah Siddham"?

ATRI: Letters, vowel-sounds, measures—short, long, and prolonged—accents: udatta, anudatta, and svarita; pure pronunciation; the orderly arrangement of letters—spelling; the manner of reading and speaking; and the many ways of sounding the same letter. All these will form part of the instruction. Teaching will be given through Sama-santana, that is, simple song.

APALA: Revered Teacher, when pronunciation is faulty, meaning changes; when vision is faulty, the human being changes.

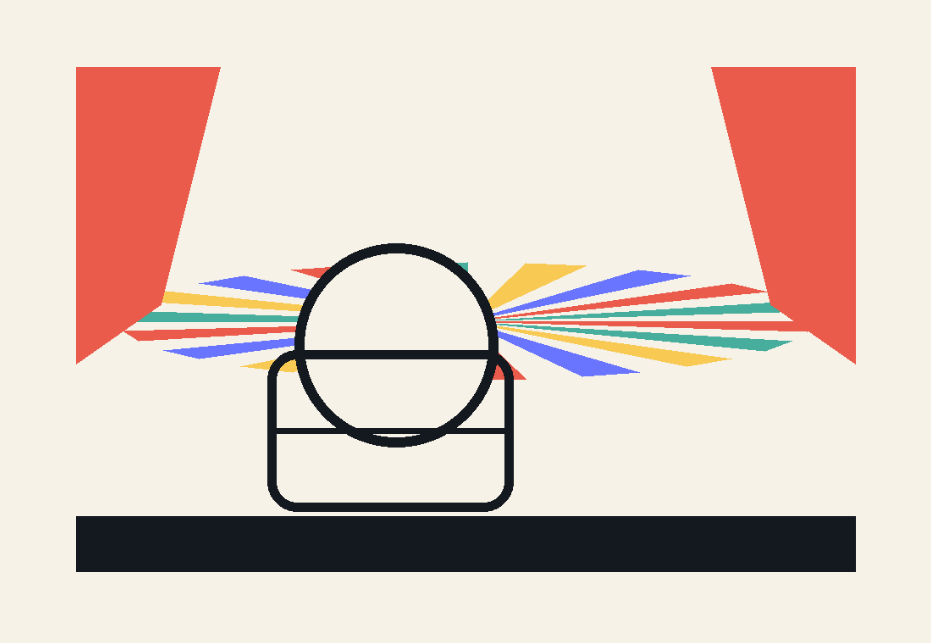

ILLUSTRATION 4

The rules of the hermitage should also be explained.

ATRI: The creatures of the forest are not to be harmed. Fruit for food shall be gathered from the forest trees on the previous evening. Agnihotra will be performed morning and evening. For it, firewood, kusa grass, clarified butter, and milk shall be arranged collectively each day. Deer may roam freely through the hermitage. Though farming is not permitted in this hermitage among the kadamba, ashoka, ketaki, madhuka, vakula, and sudakara trees, grain that grows by itself or from seed on uncultivated land—akrishtapachya grain—may be used. Knowledge and nature are not possessions to rule; both are to be served.

BOY: Since we study in the same seat of learning, we are fellow students. Revered Teacher, besides a staff and water-pot, are we permitted to keep anything else?

ATRI: Wear a waist-girdle and deerskin, and prepare yourselves so that you may be ready for the twelve-year sacrificial session and, after the great sacrifice concludes, take part in serious discussions at the Brahmodya, the Vidatha council, the Upanishadic gathering, and the forest assembly.

CURTAIN.

SCENE THREE

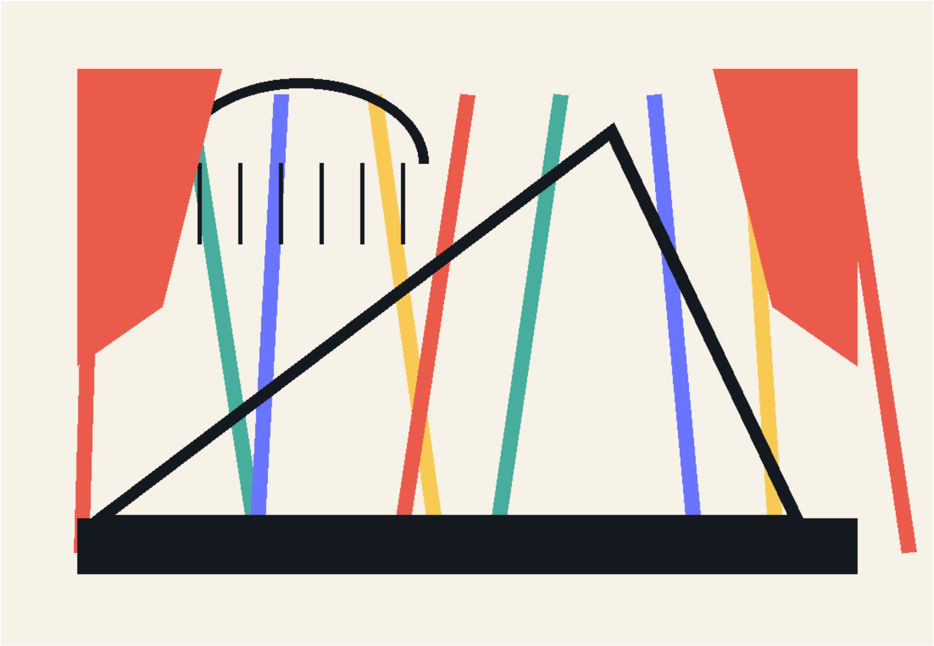

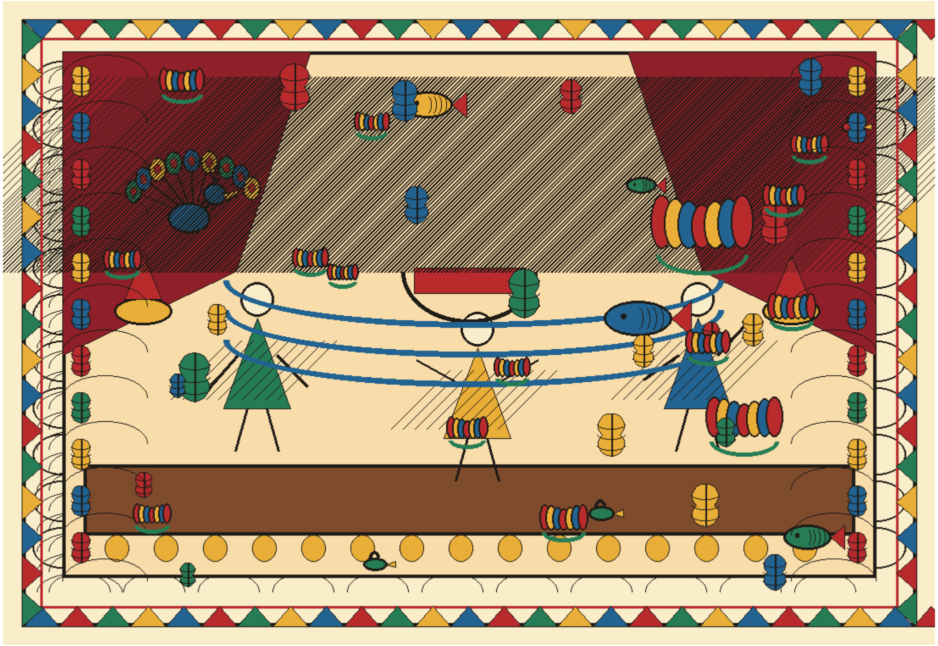

ILLUSTRATION 5

Inside the hut, Rishi Atri is consulting several physicians. From outside comes the faint sound of Apala's Sama practice; inside are the worries of a father and the physicians.

ATRI: Physicians, signs of a skin disease are appearing on young Apala's body. White patches resembling kushta are becoming visible. The illness is on her body, but society turns it into an accusation against the soul; that is what I fear as well.

PHYSICIAN 1: For many months we have prepared various medicines for the girl to take and salves for her skin.

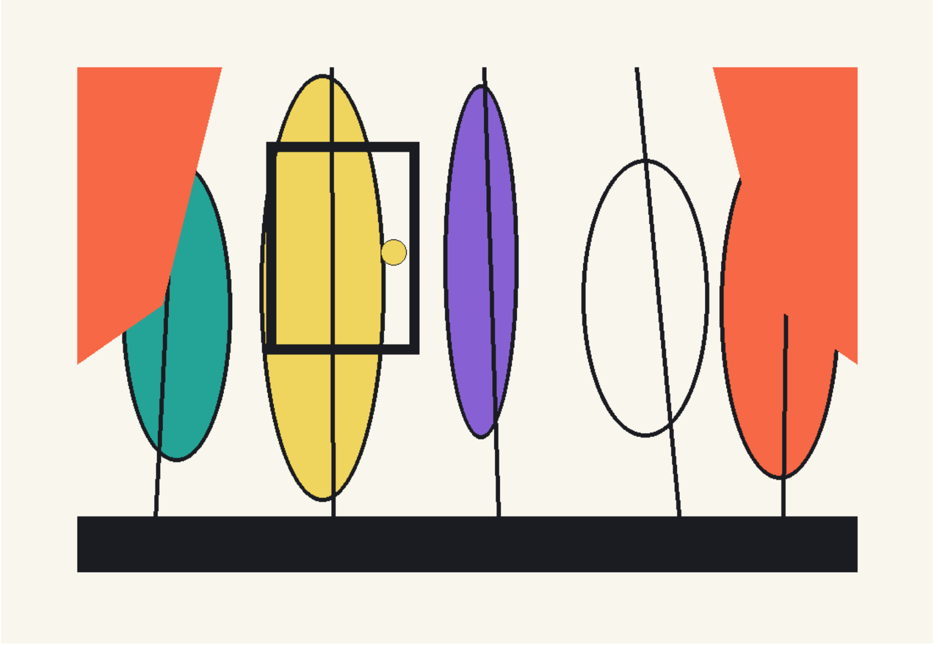

ILLUSTRATION 6

The illness is stubborn, but the girl's spirit is stronger.

ATRI: Apala is now approaching marriageable age. I am also seeking a worthy husband for her. But he must be a man who sees Apala's learning, not merely her skin.

PHYSICIAN 2: I have heard of Krishashva. He possesses every virtue and is devoted to caring for his aged parents. He would be entirely suitable for our Apala.

ATRI: Then why delay? On an auspicious day, you should contact his parents.

SCENE FOUR

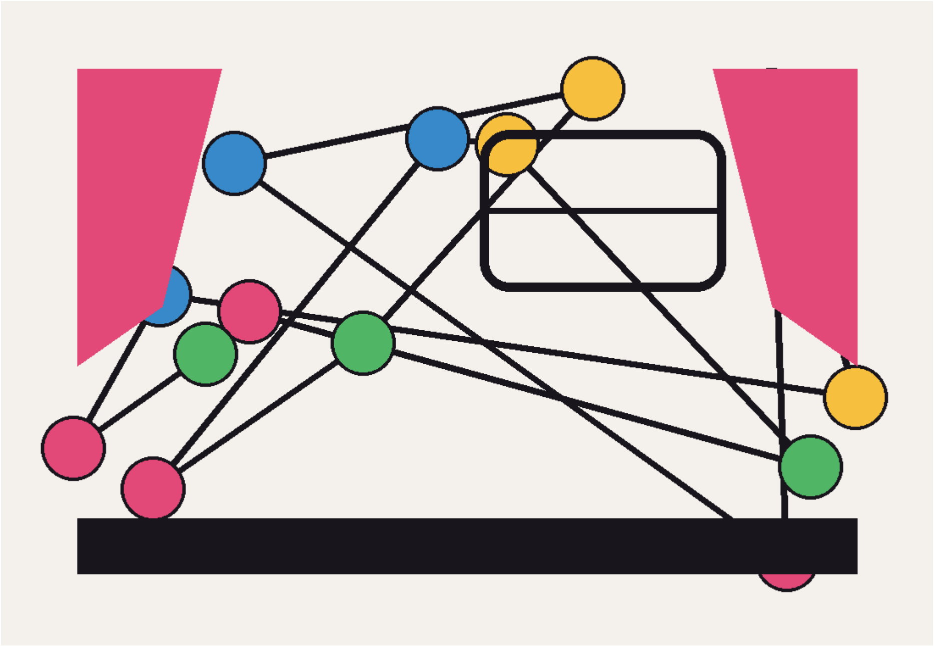

ILLUSTRATION 7

A wedding rite is under way in the mango grove of the hermitage. An altar has been prepared, and the officiating priests are offering barley and sesame into the fire. The flames are bright, but in Apala's heart there is a faint apprehension.

APALA (to herself): With the majestic lines of the tripundra upon his forehead, a well-formed body, and humility embodied—this is Krishashva, my companion for life. Will he see the soul that shares my mantras, or only the marks upon my skin?

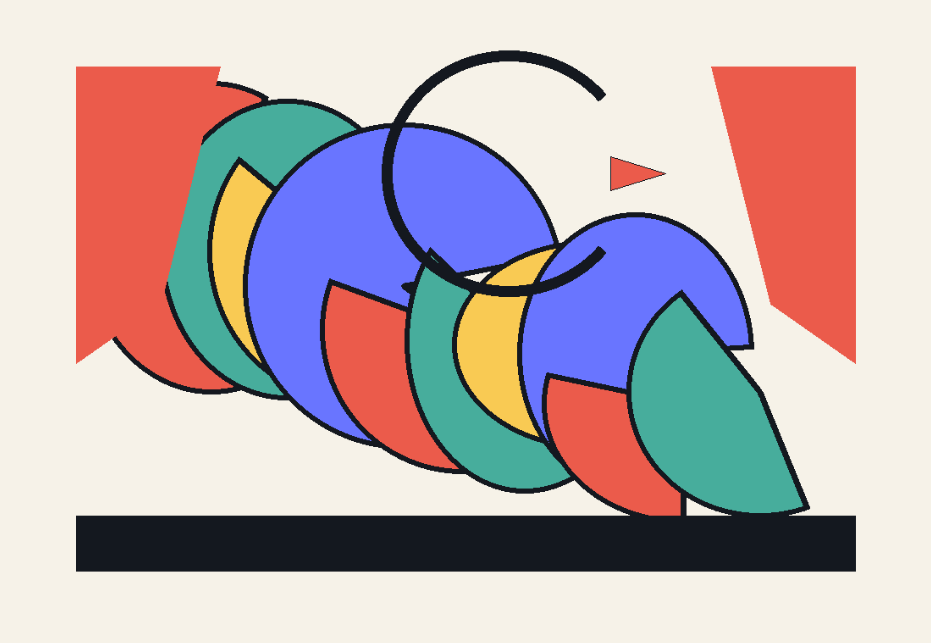

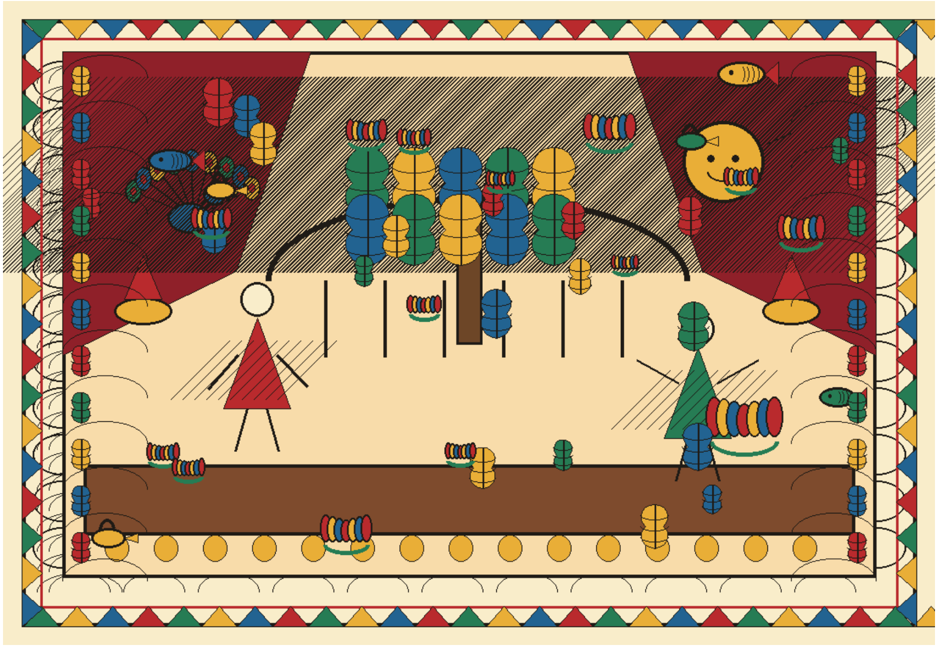

ILLUSTRATION 8

At that moment Krishashva's eyes meet Apala's. She lowers her gaze, yet her head remains held high, preserving the dignity of womanhood.

ATRI: Before the assembled circle of rishis, and with the sacred fire as witness, I unite Apala and Krishashva in marriage.

As they circle the fire, Krishashva's upper garment slips slightly, and the jasmine garland in Apala's hair falls to the ground.

SCENE FIVE

ILLUSTRATION 9

Apala's marital home. Her elderly parents-in-law are seated while Apala works about the house. In one corner are materials for Vedic study; she is attending both to household service and to learning. She continues working.

APALA: Dear Krishashva, so many days have passed. In your home I have never felt controlled. Your tender love towards me has always been present. Yet these white patches that burn upon me like a living presence seem, over the past few days, to have become a coldness towards me in your heart. Sometimes the silence of a house cuts more sharply than words.

KRISHASHVA: My coldness, Apala?

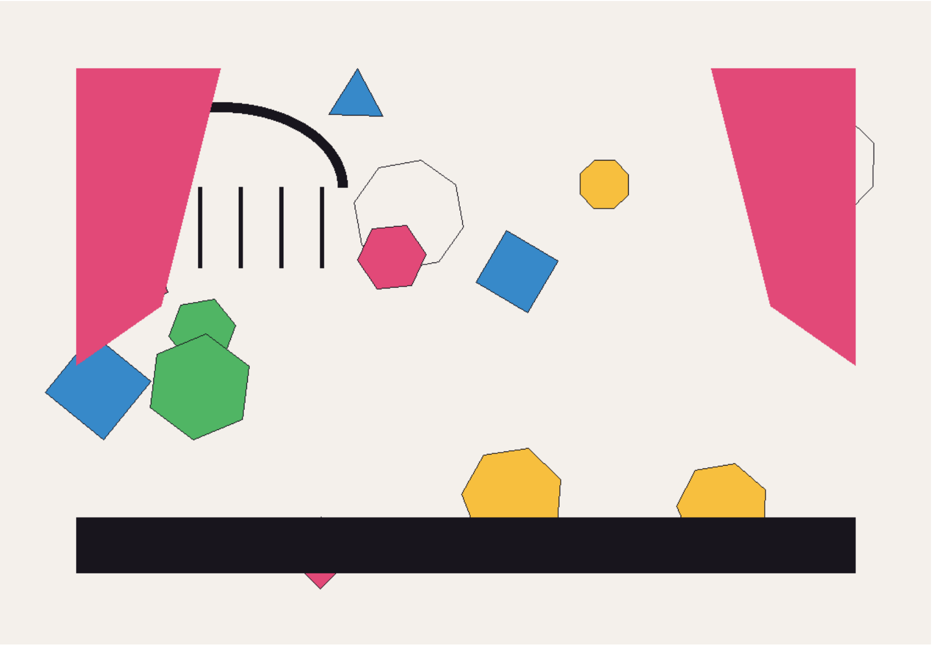

ILLUSTRATION 10

APALA: Yes, Krishashva. I have seen the change. Does its cause lie in my skin condition?

KRISHASHVA: Apala, a conflict is raging within me. It is a struggle between love and desire. Love tells me that Apala is a Brahmavadini, a woman of the divine. But desire tells me that the condition of Apala's skin has turned my eyes away from her beauty in aversion. I confess my weakness; I cannot give it the name of dharma.

APALA: This is a woman's humiliation at a man's hands. This is a man, corrupted by desire, crushing the flower of a woman's heart. I have studied the Vedas. The moon's blemishes disappear in its radiance, but the white marks on my skin have not disappeared amid the abundance of my virtues. The marks are on my body; it is your vision that has fallen ill.

Krishashva is stunned into silence.

APALA: I will not surrender before a physically strong man. To preserve my self-respect, I am returning to my father's forest hermitage, Krishashva. A house in which the soul must make itself small is not a home; it is a prison.

SCENE SIX

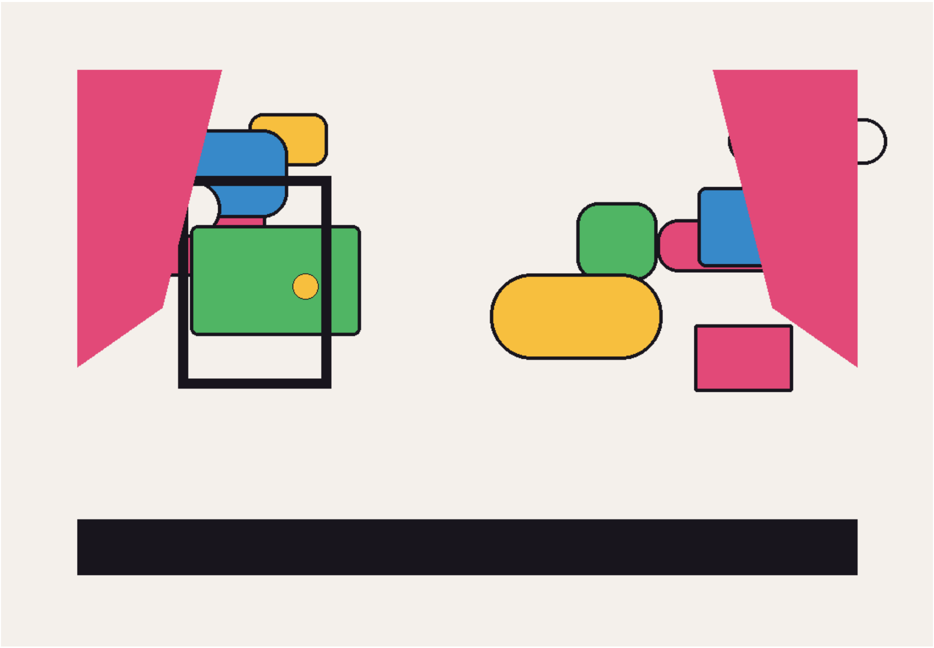

ILLUSTRATION 11

At dawn, Apala offers kindling into the fire-pit and begins worship and recitation to Indra. She sits upon a kusa-grass seat. The air is still. The sound of Soma being pounded slowly becomes the rhythm of the mantra.

APALA: I found Soma beside the stream, brought it home, and said, “I shall press it for Indra, for Shakra.”

She steadies her breath.

APALA: O Indra, this Soma is not merely medicine; it is my resolve. Wandering from house to house and beholding everything, drink this Soma from the little peg, crushed by my teeth; while you eat it with grain and curds, hear songs of praise. We are wholly intent upon knowing you well, yet no one has been able to attain you. O Moon, flow slowly, continuously, drop by drop, into Indra.

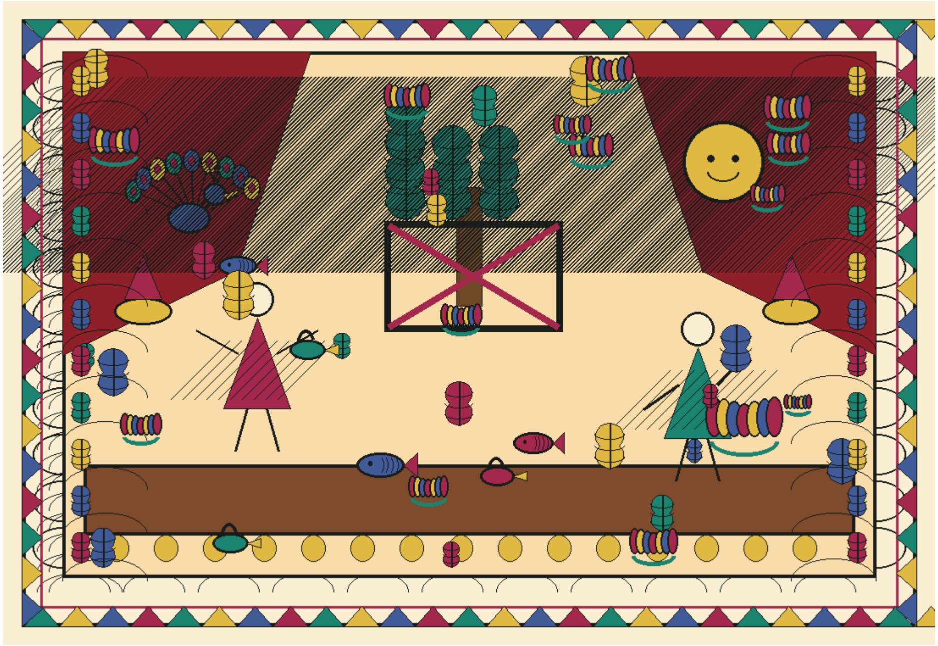

ILLUSTRATION 12

APALA: Will he not help us, will he not act for us? Will he not make us prosperous? After our enmity with our king, shall we now reconcile ourselves with Indra? O Indra, cause growth in three places—upon my father's head, in his field, and near my abdomen. Let all these crops grow. You have ploughed our field, my body, and my father's head as well. You purified Apala. O Indra—three times: once through the opening of a wheeled cart, once through the opening of a four-wheeled cart, and once through the yoke resting upon the shoulders of two oxen. O Shatakratu! You cleansed Apala and gave her skin like the sun. O Indra! But let it be remembered: not only the skin, but the vision must also be purified.

SCENE SEVEN

ILLUSTRATION 13

After the completion of the great sacrifice: the Brahmodya assembly. The officiating priests, students, and residents of the hermitage sit in solemn attention. Apala is calm; the signs of illness have disappeared from her body, but in her eyes lies the depth of experience.

ATRI: Before this great gathering of officiating priests, I can include Apala's hymn among the mantras of the Rig, because it arose spontaneously and is consecrated by mantra. Apala's skin disease has been cured by it; here is the immediate evidence. But the proof is not merely the cure of disease; the proof is that suffering itself can become a hymn. Apala is the seer of this mantra.

RISHIS: Atri, we too have beheld this mantra. Indeed! There can be no question whether it should be included. From this day, it is part of the Rig. Apala's name shall not be separated from the mantra.

After this recognition, the other proceedings of the Brahmodya assembly begin. Krishashva approaches Apala with a troubled heart.

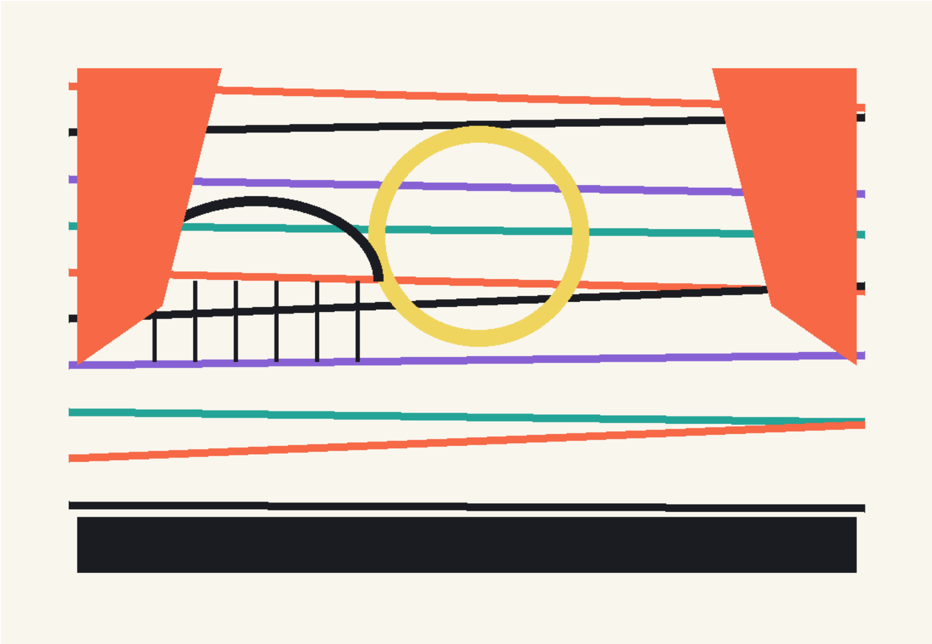

ILLUSTRATION 14

KRISHASHVA: Apala, I am sorry—for our separation and for the narrowness of my vision.

APALA: Krishashva, this skin bestowed by Indra is the result of spiritual discipline. Your rejection made me capable of attaining it, but you have no claim over it now. A love that abandoned me when I bore marks cannot demand rights over a body without them. I am Apala Atreyi—not an object of anyone's pity, but the seer of my own hymn.

They slowly leave the stage in opposite directions. The light brightens towards the altar on Apala's side; on Krishashva's side, it fades.

NARRATOR: Wounds of the body may heal; wounds of vision are healed by learning. Apala's hymn lives because she did not allow her suffering to remain silent.

CURTAIN.

CURTAIN

VIDEHA

Videha: The First Maithili Fortnightly E-Journal | ISSN 2229-547X | www.videha.co.in

भऽ जाएब छू

मैथिलीक पहिल जलवायु-चेतना बाल चौबटिया-सड़क नाटक

गजेन्द्र ठाकुर

सम्पादक, विदेह: प्रथम मैथिली पाक्षिक ई-पत्रिका (since 2000)

ISSN 2229-547X

भूमिका

(बाल चौबटिया-सड़क नाटक। मैथिलीक पहिल क्लाइमेट फिक्शन नाटकक सुधारल पाठ; बच्चा
सभक खेल, विज्ञान, कल्पना, आ चेतावनीकेँ बेसी मंचीय आ सहभागी बनाओल गेल अछि।)

(ध्वनि संकेत: भीड़क हल्ला, चिड़ै-चुनमुनीक चहचहाहटि, भगजोगनीक टिमटिम प्रकाश, पातक
सरसराहटि, खोंखी, आ अन्तमे बच्चा सभक सामूहिक प्रतिज्ञा।)

(बाल चौबटिया-सड़क नाटक; खेल-खेलमे विज्ञान, विज्ञानमे कल्पना, आ कल्पनामे भविष्य
बचेबाक आग्रह।)

भाग १ : सृष्टिक पात्र सभ

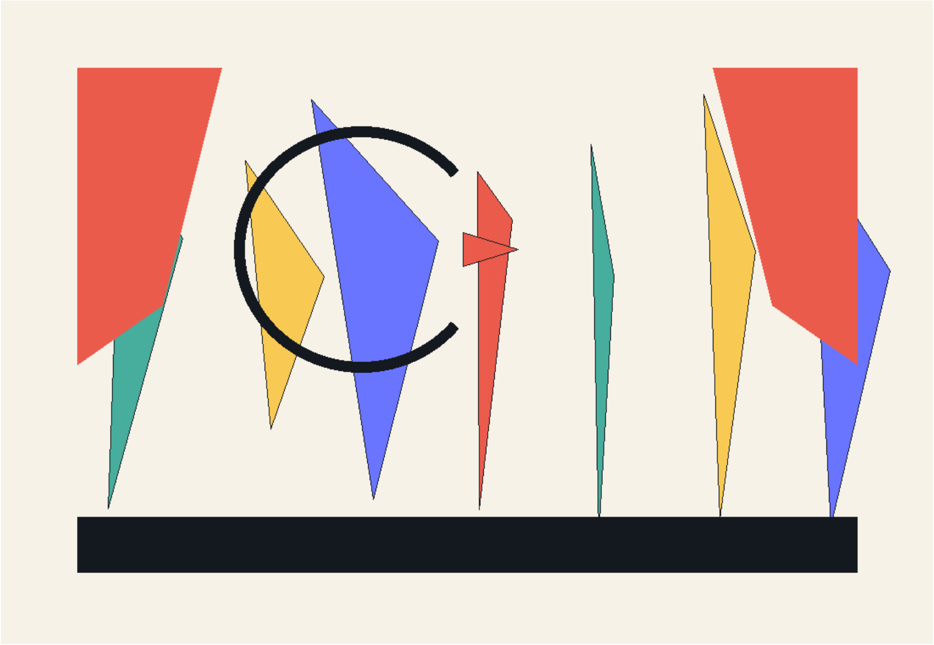

चित्र 1

सूत्रधार: आउ, आउ। ऐ चौबटिया नाटक, सड़क नाटक देखबाले आउ। मोबाइल कनेक नीचाँ राखू,

आँखि ऊपर उठाउ; जे अकास बदलि रहल अछि, से अहींक अकास अछि।

(सूत्रधार लोक सभ दिस तकै छथि। कलाकार सभ गप-शप करैत हल्ला जेकाँ करैत छथि। कियो

पात झरबाक ध्वनि करैए, कियो चिड़ैक स्वर, कियो खोंखी; धीरे-धीरे हल्ला तालमे बदलैए।)

भीड़सँ आएल पुरुष कलाकार: (कलाकार सभक गोलसँ बहार भऽ निकलैत)- की हौ। की सभ बाजि

रहल छह हौ। की छिऐ ?

सूत्रधार: सभ जुमि कऽ आउ। घेराबा बना लिअ। मैथिली चौबटिया नाटकले घेरा बना कऽ ठाढ़

भऽ जाऊ। चोटगर नाटक हएत।

भीड़सँ निकलि कऽ आएल दोसर महिला कलाकार: चल रे चल। एकरा सभक मैथिली नाटक हेबऽ

दही। नाटक देखलासँ भोजन चलतौ रौ।

सूत्रधार: नै यै दाइ। भुखलेबला लेल ई नाटक छै। पेटक भूख, मोनक भूख, बोलीक भूख आ हबाक

भूख। जखन हबा बीमार होइ छै, तखन पेटो खाली लगै छै।

महिला कलाकार: से छै। तखन आबै जाइ जो।

सूत्रधार: आबै जाउ, आबै जाउ। आइ हएत बच्चा, किशोर, युवा, प्रौढ़ आ बूढ़क लेल नाटक।

स्त्री-पुरुषक लेल नाटक। चिड़ै-चुनमुनी लेल नाटक, गाछ-बृच्छ लेल नाटक, हबा-बसात लेल नाटक।

सूर्य-चन्द्र-तरेगण लेल नाटक। मूर्त-अमूर्त लेल नाटक। देश लेल नाटक। निन्न आ सपना लेल

नाटक। आ जँ अहाँ सभ देखैत-देखैत किछु सोचि लेब, तँ ई नाटक पृथ्वी लेल सेहो हएत।

(महिला सूत्रधार बिच्चहिमे आबि जाइ छथि। भीड़सँ आएल वएह महिला कलाकार महिला सूत्रधार बनि सकै छथि।)

महिला सूत्रधार: हे। सोझे कहू ने जे ककरा लेल ई नाटक नै छै। एना पैघ-पैघ गप किए दऽ रहल छी।

सूत्रधार: कोनो नाम छुटि गेलै की ?

महिला सूत्रधार: यएह लिअ। सेहो हमहीं कहू। आब ताम-झाम शुरू करू आ देखाउ जे की विस्तार लेने अछि ई नाटक।

सूत्रधार: बेस तँ शुरू करू।

(कलाकार सभ एक दोसरामे मिज्झड़ भऽ एक-एकटा फराक पाँती बनबैत छथि। छोट, किशोर, युवा आ बूढ़क पाँती। स्त्री-पुरुषक पाँती। चिड़ै-चुनमुनी जेकाँ छोट बौआ आ छोट बुच्ची बजैत अछि। किशोर सभ हाथमे गाछ-बृच्छक हबा-बसातमे हिलैत पातक फोटो लऽ लैत छथि। युवा

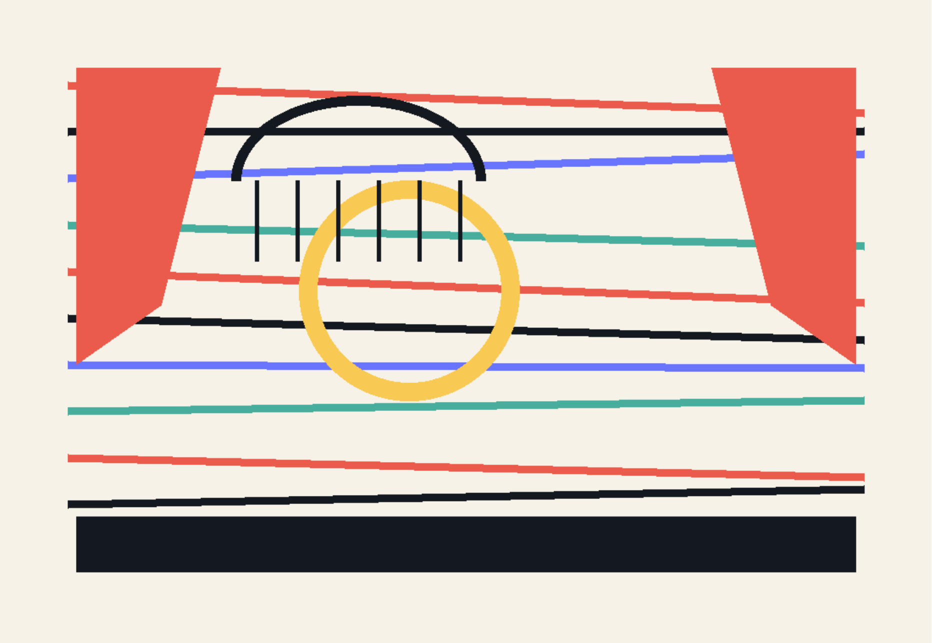

चित्र 2

पुरुष सूर्य-तरेगणक फोटो आ युवा स्त्री-चन्द्रक फोटो लेने अबैत अछि लेने अछि तँ बूढ़ आ बूढ़ी भूत-प्रेत, भगवान आ स्वप्नक फोटो हाथमे लऽ लैत छथि। दर्शक सभसँ कहल जाए जे ओ सभ गोल घेरा बनाकऽ हबाक रास्ता खाली राखथि।)

१ छोट बौआ: हम ओम। हम चिड़ै। नै भगजोगनी।

२ छोट बुच्ची: हम आस्था। हम चुनमुनी। हा हा (हँसैत)। भगजोगनी।

३ किशोर बौआ: हम जयन्त। हम गाछ।

४ किशोर बुच्ची: हम अपाला। हम बृच्छ। हेँ हेँ (हँसैत)।

५ युवा: हम विजय। हम सूर्य तरेगण।

६ युवती: हम विजया। हम चन्द्र माने चन्दा। खी-खी (हँसैत)।

७ वृद्ध: (थड़थड़ाइत) हम नेकलाल। हम भूत-प्रेत-राकश...।

८ वृद्धा: हम रामवती। हम स्वप्न माने कल्पना। हम...हम...हम...।

(कल्पनाक भाव-भंगिमा तीन बेर करैत छथि।)

सूत्रधार: अहाँ सभक काज की ?

महिला सूत्रधार: अहाँ सभक काज की ?

(आब छोट बौआकेँ –ओमकेँ-१ छोट बुच्ची-आस्थाकेँ-२ एना ८ धरि कहब।)

१ सँ ८ (संगे-संग): हम सभ कोनो काजकेँ ढंगसँ कऽ देब, कहि कऽ तँ देखू। मुदा पृथ्वी बचेबाक काज सभ मिलि कऽ करए पड़त।

महिला सूत्रधार: चिड़ै-चुनमुनी, दुनू गोटे आउ आ भगजोगनी बनि जाउ।

(१ सँ ८ संगे-संग चिकड़ऽ लगैत अछि। तखने १ आ २ झोंझसँ निकलि कऽ बगलमे राखल झोरासँ भगजोगनीक फोटो आ दूटा लेजर लाइट लऽ अनै छथि आ शेष छह गोटे एकटा चद्दरिसँ दुनू गोटेकेँ अढ़ कऽ दै छथि।)

१: (लेजर लाइट बड़बै छथि): कतऽ छी आस्थू।

२: (चद्दरिसँ बहार भऽ लेजर लाइट बड़बैत) हमदेख लेलौं ई संकेत। हम ओतऽ छलौं झोँझमे।

१ आ २ (संगे संग बजैत): हँ भऽ गेल।

७ आ ८ (संगे बजैत): की भऽ गेल?

१: देखलौं नै जे कोना प्रकाशसँ हमसभ एक दोसराकेँ ताकि लेलौं। बिना चिल्लाए, बिना धुँआ, बिना आगि।

७: ई तँ जखन हम मनुक्ख रही, माने मुइलाक पहिने, तखन खूब प्रयोग करैत रही। की यै

भाग २ : विज्ञान आ कल्पना

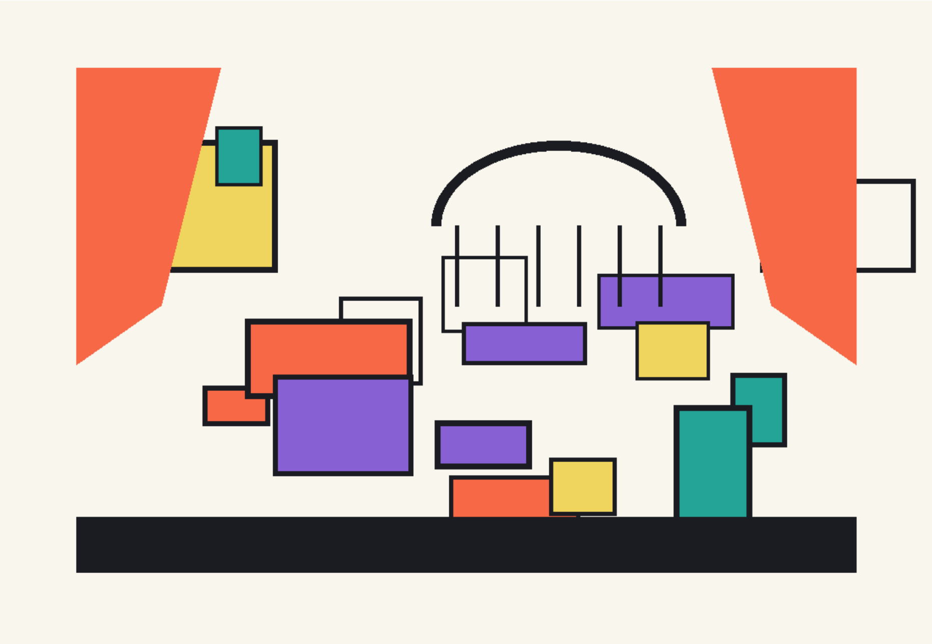

चित्र 3

रामवती।

८: करैत तँ रही, मुदा प्रकाश संग कतेक गर्मी आबि जाइ छलै। गुमारसँ जान चलि जाइ छल।

७: हे, प्रकाश हेतै तँ गर्मी तँ बहार हेबे करतै।

८: नेकलालजी। सोलह आना ऊर्जामे सँ पन्द्रह आना गर्मी आ एक आना मात्र प्रकाश आनै छलौं अहाँ। बड़का वैज्ञानिक बनै छलौं। प्रकाश तँ आबै छल मुदा गुमारसँ जान चलि जाइ छल। ऊर्जा बचत तखन ने पृथ्वी बचत।

७: अहाँ तँ छीहे कल्पना। मुइलाक बाद तँे ने बनि गेलौं कल्पना।

८: आ तँे ने अहाँ बनि गेलौं भूऽऽऽऽऽत, प्रेऽऽऽऽऽत, राकश।

७: (कने तमसाइत) हे तँ अहीं कहू जे प्रकाश बिन गर्मीक भेट सकैए। (लोकसभ दिस हाथ पसारि कऽ तकैत अछि)

५: (सोझाँ अबैत): नै, ई सम्भव नै अछि।

६: ई सम्भव अछि विजय।

५: आबि गेली विजया!!! (आश्चर्यसँ हाथ पसारैत अछि।) हिनकासँ कने पूछू जे हिनका लग अपन प्रकाश छन्हि की?

८: नै छन्हि मुदा तैयो रातिमे जे हिनकासँ इजोरिया छिटकैए से ठंढा तँ लगिते अछि।

७: हा!!! कल्पना!!! अपने फुरेने बजैत जाउ...बजैत जाउ...!!!

८: अहाँ जँ जिबैतेमे हमर गप सुइतौं, कल्पना करितौं तँ बना सकितौं बिन गुमारबला प्रकाश। ठंढ़ा प्रकाश।

७: सुनऽ हौ ओम-आस्था, बिन गुमारबला प्रकाश !! (आश्चर्य प्रकट करैत हाथ पसारैत अछि।)

आब तोँहीं सभ बताबह जे बिन गुमारबला प्रकाश सम्भव नै छै।

१ आ २: (आशचर्यसँ हाथ पसारैत) प्रकाशसँ गर्मी निकलतै तँ भगजोगनी तँ मरिये जेतै।

८: तखन तों सभ कोना जीवित छह।

१: माने?

२: प्रकाश तँ ठंढ़ा होइ छै।

१: हमर पुछरीसँ बहराइए प्रकाश, शीतल प्रकाश। ई खेल नहि, देहक विज्ञान अछि।

२: करैए मोन ठंढ़ा। दैए संकेत आ ताकि लै छी हम सभ एक-दोसराकेँ। जे प्रकाश साथीकेँ भेटाबए, ओ प्रकाश नीक; जे पृथ्वीकेँ जड़ाबए, ओ प्रकाश अधूरा।

८: ओह, हम तकैत रहि गेलौं रातिमे दूर देशक चन्द्रमा आ करैत रहि गेलौं कल्पना। मुदा अहाँ नेकलाल, किए नै देख सकलौं रातिमे घुमैत भग जोगनी सभकेँ। छोट चीजक विज्ञान पैघ किताबसँ पहिले सामने चमकै छल।

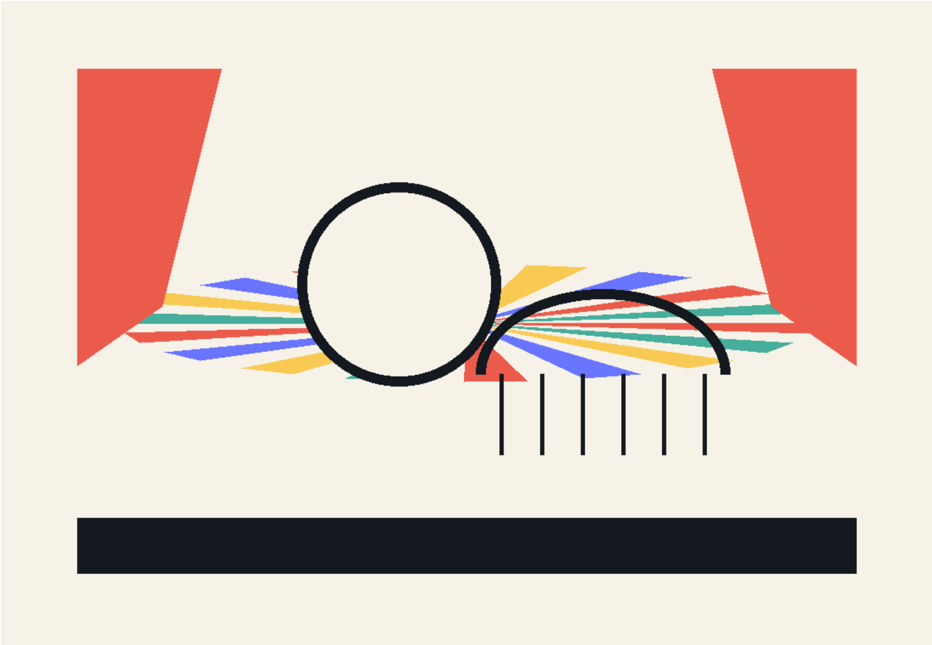

चित्र 4

७: असफल वैज्ञानिक छी हम। राकश बनि घुमै छी, प्रकाशक ऊर्जासँ जड़ै छी। कल्पने, हम नै कऽ सकलौं कल्पना, नै तँ बनि जइतौं भगजोगनी।

८: जे पूरा कऽ दैतौं अहाँ हमर ओ कल्पना तँ हमहूँ बनि जइतौं भगजोगनी। नै कटितै एतेक रास गाछ-बृच्छ, बोन देखू कतेक दूर भेल देखाइए (दूर बाध दिस आंगुर देखबैत अछि।) जखने गाछ घटै छै, छाँह घटै छै, पानि घटै छै, गीत घटै छै।

३ आ ४ (समवेत स्वरमे) असगर भऽ गेल छी हम सभ। सूर्य तरेगन चन्द्रमा सन असगर। मुदा सूर्य-चन्द्र तँ दूर रहि कऽ चमकै छथि; गाछ असगर भेल तँ गाम सूखि जाइ छै।

(ऐ दुनूकेँ छोड़ि कऽ सभ कलाकार भीड़मे मिज्झर भऽ जाइ छथि।)

४: असगरे रहि गेल छी हम सभ। किछु दिनमे खतम भऽ जाइ जाएब।

३: लगैए सएह। बनि जाएब भूत, प्रेत, राकश।

(तखने भूत-प्रेत बनल वृद्ध अबैए।)

७: से किए, अहाँ सभक ई स्थिति कोना भेल।

३: अहाँ द्वारे।

४: अहीं दुआरे।

७: आब हम की कऽ देलौं।

३: कागच बनबैले हमरा काटलौं।

४: कुर्सी, दरबज्जा, सजावट, आ एक बेर प्रयोग भऽ फेकाएबला चीज लेल सेहो काटलौं।

४: मकान बनबैले हमरा काटलौं।

७: मुदा से तँ जरूरी छल। से तँ करैए पड़ितै किने।

३: तँ हमरा रोपलौं किए नै। कल्पना किए नै केलौं।

(तखने वृद्धाक प्रवेश होइए।)

८: कहू। कल्पना किए नै केलौं?

७: कोन कल्पना।

८: कल्पना जे कतेक काटी आ तकर कतेक गुना रोपी।

७: मुदा हम तँ रोपलौं।

३: अहाँ रोपलौं यूकेलिप्टस।

४: अहाँ रोपलौं विदेशी गाछ।

३: खून..नै नै..पानि पीब गेल सभटा ऐ जमीनक। जे गाछ माटिक प्यास नै बुझै, ओकरा रोपलासँ जंगल नहि बनै छै।

७: हे सभटा हमरे दोख नै दै जाउ। की अहाँ सभ ऊर्जा नै खर्च करै छी? हम वैज्ञानिक छी। सभटा बुझल अइ हमरा। मुदा बुझलो गप जँ व्यवहारमे नहि उतरल तँ विज्ञानो अधूरा।

भाग ३ : प्रतिज्ञा

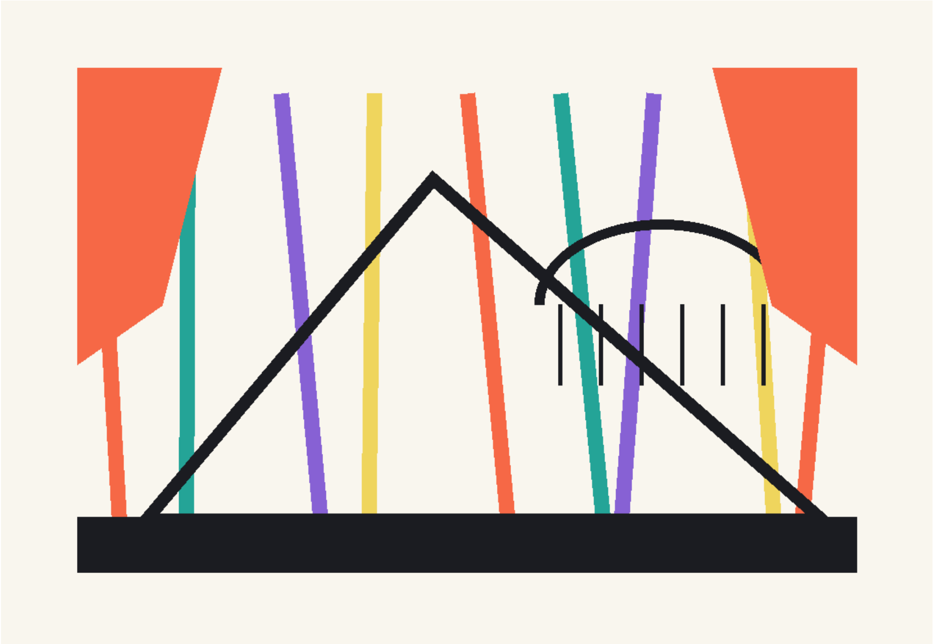

चित्र 5

(३ आ ४ समवेत स्वरमे गीत गाबै छथि।)

ऑक्सीजन जरा भोजन बनबै छी

काज मोताबिक सेहो जरबै छी

जाड़क मासमे गरम रहै छी

नै होइ छै सगरो गरमी तँए

(नाचऽ लगै जाइए।)

७: बुझल अछि हमरा ई सभ। मुदा गर्मी कम्मे सही आनै तँ छी।

३: मुदा सेहो अहीं सभ लेल।

७: हमरा सभ लेल। कोना..कोना?

४: जाड़मे फूल तोड़ैकाल हाथ नै ठिठुरए अहाँ सभक तँ कमलक फूलकेँ गरम राखै छी। प्रकृति अपन ताप हिसाबसँ खर्च करैए, मनुक्ख बे-हिसाब।

७: हे तँ कियो अहाँकेँ काटैए तँ अपन सुरक्षा अपने किए नै करै छी।

८: कल्पना..सोचू सोचू।

३: करै छी।

४: जतेक सक बनि पड़ैए, ततेक करै छी।

(३ आ ४ समवेत स्वरमे गीत गाबै छथि।)

काँट देखा कऽ दूर भगाबी

फल खुआ कऽ भूख भगाबी

फूल तोड़ि कऽ, लऽ जाउ

देवता पितरपर अहाँ चढ़ाउ

(नाचऽ लगै जाइए।)

३: फल-फूलक लालचो दै छिऐ, छाँहो दै छिऐ, साँसो दै छिऐ।

४: काँट देखा कऽ डराबितो छिऐ, मुदा कुल्हाड़ी काँटसँ नहि डरैए।

३: मुदा तैयो नै मानै जाइए।

८: कल्पना..सोचू, सोचू।

७: (वृद्धा रामवती दिस तकैत।) हे कल्पने। हमरा जे अहाँ कहै छलौं जे कतेक काटी, तकर कतेक गुना रोपी, से हिनको सभकेँ कहियौन्ह ने।

८: हिनकर सभक पएर तँ माटिमे रोपल छन्हि, ई सभ कोना कऽ से करताह। मुदा बीया, पराग, पवन, पानि, चिड़ै, पशु - सभ हिनकर पएर बनि सकैए।

७: (मुँह दुसैत) कल्पना..सोचू..सोचू।

(३ आ ४ समवेत गाबऽ लगैए आ वृद्धक मुँह गीत सुनबाक क्रममे झूस हेबऽ लगै छै; मुदा गीत सुनैत-सुनैत वृद्धा मुदित भऽ जाइए।)

बीया फँसैए महीसक केसमे

लऽ जाइए ओ दूरदेशमे

झाड़ैए देह पहुँचाबैए ओतए

रोपने पएर, चलि जाइ ओतए!!!!

(बिन हिलने दुनू गोटे हाथसँ दूर इशारा करैत अछि।)

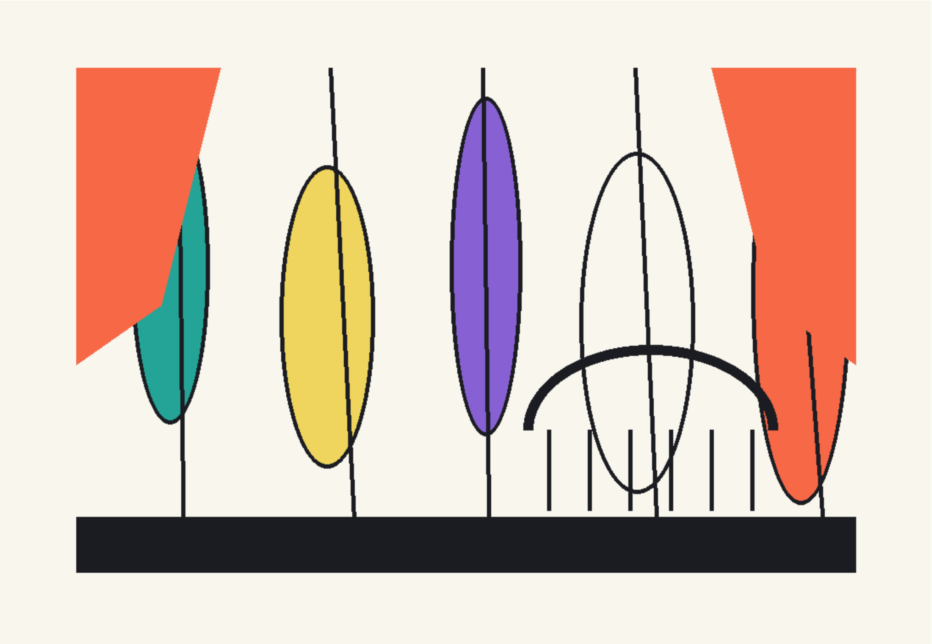

चित्र 6

३: बीयामे तेना कऽ नोकसी सन फाँस बनबै छिऐ जे ओ मालक देहमे बाझि कऽ दूर चलि जाए। ई हमर यात्रा अछि, बिना टिकट, बिना धुँआ।

४: आ दूर जा कऽ बीया ओतऽ नव गाछ जनमाबए।

३: पराग लऽ कऽ टिकली दूर जाइए।

४: दोसर गाछकेँ ओइ परागसँ पुष्ट करैए..दूर देशमे।

८: कल्पना..ऽऽऽऽऽ।

(वृद्ध माथपर हाथ धऽ बैस जाइए, मुदा वृद्धा सेहो ओकर बगलमे बैस जाइए, आकाश दिस चिन्तित भऽ तकैत।)

४: जयन्त आब लगैए हमसभ खतम भऽ जाएब। जइ देशक वैज्ञानिक कल्पना नै करैत होथि, जइ गामक बच्चा गाछ नै गनैत होथि, ओतऽ की हएत? (हाथ घुमा कऽ पुछै छथि।)

३: अपाले। ओतऽ भविष्यक गाछ-बृच्छ विहीन कल्पना सत्य भऽ जाइए। मुदा जँ बच्चा सभ आज बीया गनि लेत, तखन भविष्य फेर लिखल जा सकैए।

४: जेना एतऽ भेल अछि।

(३ आ ४ कानि कऽ गाबैए।)

जड़ि कटने भऽ जाएब छू

फूल पात सभ, लऽ लू

मरि गेल सभटा बुतरू

(दुनू खोंखी करऽ लगैए।)

(१ सँ ८ सभ बैसि जाइए आ गाबैए। पहिने धीमे, फेर दर्शक सभकेँ संग गेबाक संकेत देल जाए।)

जड़ि कटने भऽ जाएब छू।

जड़ि कटने भऽ जाएब छू

फूल पात सभ, लऽ लू

मरि गेल सभटा बुतरू

(सभ खोंखी करऽ लगैए। खोंखी धीरे-धीरे तालमे बदलैए; फेर सभ ठाढ़ भऽ हाथमे काल्पनिक बीया लैत छथि।)

१: हम भगजोगनीक शीतल प्रकाश बचाएब।

२: हम रातिक अन्हार सेहो बचाएब, जाहिसँ तरेगण देखाइ देत।

३: हम जतेक काटब, ताहिसँ बेसी रोपब।

४: हम देसी गाछ चिन्हब, बीया बचाएब।

५: हम ऊर्जाकेँ व्यर्थ गर्मी नहि बनए देब।

६: हम कल्पना करब, मुदा काजो करब।

७: हम पुरान गलती मानब।

८: हम नव सपना रोपब।

१ सँ ८ (दर्शक दिस हाथ पसारि): कहू, अहाँ सभ सेहो?

(कलाकार सभ दर्शकसँ "हँ" कहलाबथि। सभ मिलि तीन बेर बाजथि।)

सभ: जड़ि बचत तँ भऽ जाएब छू नहि; जड़ि बचत तँ बचि जाएब छी।

(पटाक्षेप।)

पटाक्षेप

VIDEHA

विदेह: प्रथम मैथिली पाक्षिक ई-पत्रिका | ISSN 2229-547X | www.videha.co.in

WE SHALL TURN TO ASH

Maithili's First Climate-Awareness Children's Crossroads Street Play

Gajendra Thakur

Editor, Videha: The First Maithili Fortnightly E-Journal (since 2000)

ISSN 2229-547X

PREFACE

(A children's crossroads street play. This is a revised version of Maithili's first climate-fiction play; the children's games, science, imagination and warnings have been made more theatrical and participatory.)

(Sound cues: the noise of a crowd, the chirping of birds, the flickering light of fireflies, the rustling of leaves, coughing, and finally the children's collective pledge.)

(A children's crossroads street play: science through play, imagination through science, and within imagination, an appeal to protect the future.)

PART 1: THE CHARACTERS OF CREATION

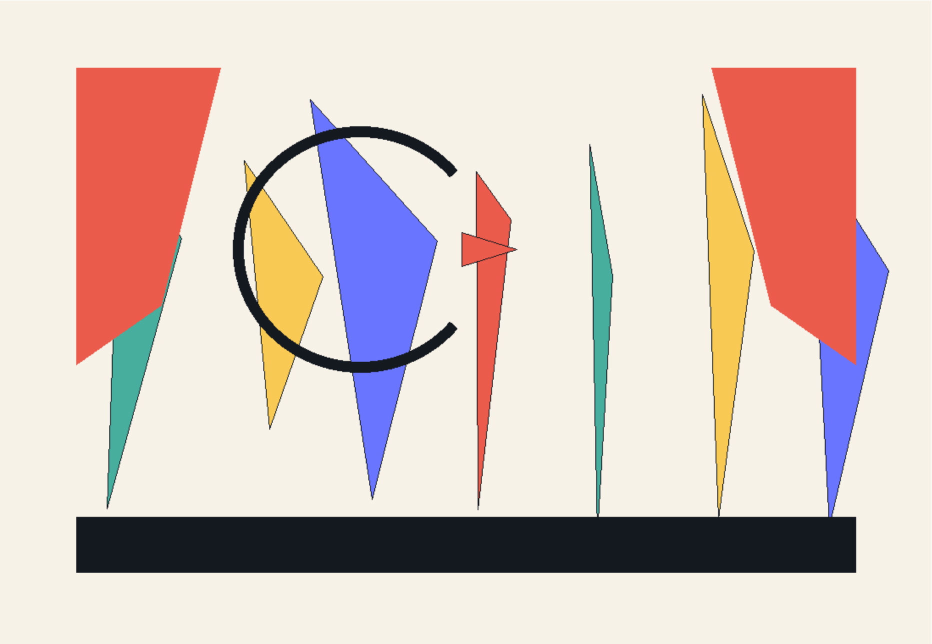

Figure 1

NARRATOR: Come, come! Come and watch this crossroads play, this street play. Put your phones down for a moment;

lift your eyes. The sky that is changing is your own sky.

(The NARRATOR looks towards the people. The PERFORMERS chat and create the noise of a crowd. One makes the sound of falling leaves, another imitates a bird, another coughs; gradually the noise settles into rhythm.)

MALE PERFORMER FROM THE CROWD: (Breaking out of the circle of performers.) Hey! What are all of you saying? What is this?

NARRATOR: Everyone, gather round. Form a circle. Stand in a ring for this Maithili crossroads play.

It will be a powerful play.

SECOND FEMALE PERFORMER FROM THE CROWD: Come on, come on. Let them put on their Maithili play. Will watching a play put food on your plate?

NARRATOR: No, sister. This play is for the hungry: hunger of the stomach, hunger of the mind, hunger for language,

and hunger for clean air. When the air falls ill, even the stomach feels empty.

FEMALE PERFORMER: True enough. Then let us go and watch.

NARRATOR: Come, come! Today there will be a play for children, adolescents, young people, adults and the elderly;

a play for women and men; a play for birds and tiny birds, for trees and plants, for air and wind;

a play for the sun, moon and stars; for the visible and invisible; for the nation; for sleep and dreams.

And if, while watching, you begin to think, then this will also become a play for the Earth.

(The FEMALE NARRATOR enters from the centre. The same female performer who came from the crowd may take the role of the FEMALE NARRATOR.)

FEMALE NARRATOR: Oh, just tell us plainly who this play is not for. Why are you making such grand speeches?

NARRATOR: Have I left anyone out?

FEMALE NARRATOR: There you are! I have to say that too. Now begin the spectacle and show us how far this play reaches.

NARRATOR: Very well. Let us begin.

(The PERFORMERS intermingle and then form separate lines: children, adolescents, young people and the elderly; women and men. A little boy and a little girl make the calls of birds and tiny birds. The adolescents hold photographs of leaves moving in the wind. A young

Figure 2

man enters carrying a picture of the sun and stars, and a young woman carries a picture of the moon. The old man and woman take pictures of ghosts, spirits, gods and dreams. Ask the spectators to form a circular ring and keep a clear path for the air.)

1. LITTLE BOY: I am Om. I am a bird. No - a firefly.
2. LITTLE GIRL: I am Aastha. I am a tiny bird. Ha, ha! (Laughs.) A firefly.
3. ADOLESCENT BOY: I am Jayant. I am a tree.
4. ADOLESCENT GIRL: I am Apala. I am a tree. Heh, heh! (Laughs.)
5. YOUNG MAN: I am Vijay. I am the sun and the stars.
6. YOUNG WOMAN: I am Vijaya. I am the moon - Chanda. Hee, hee! (Laughs.)
7. OLD MAN: (Trembling.) I am Neklal. I am a ghost, a spirit, a demon...
8. OLD WOMAN: I am Ramvati. I am a dream - that is, Imagination. I... I... I...

(She repeats an expressive gesture of imagination three times.)

NARRATOR: What is your work?

FEMALE NARRATOR: What is your work?

(Now the LITTLE BOY, Om, is Number 1; the LITTLE GIRL, Aastha, is Number 2; and so on up to Number 8.)

NUMBERS 1 TO 8: (Together.) Give us any task and see how well we do it. But the work of saving the Earth must be done by everyone together.

FEMALE NARRATOR: Bird and tiny bird, both of you come forward and become fireflies.

(NUMBERS 1 TO 8 begin clamouring together. Then 1 and 2 emerge from the thicket, take pictures of fireflies and two laser lights from a bag kept nearby, while the other six cover the two of them with a sheet.)

1: (Shining the laser light.) Where are you, Aastha?

2: (Emerging from beneath the sheet and shining the laser light.) I have seen the signal. I was over there in the thicket.

1 AND 2: (Together.) Yes - it is done!

7 AND 8: (Together.) What has happened?

1: Did you not see how we found each other through light - without shouting, without smoke, without fire?

7: When I was human - I mean, before I died - I used to experiment with this a great deal. What do you say,

PART 2: SCIENCE AND IMAGINATION

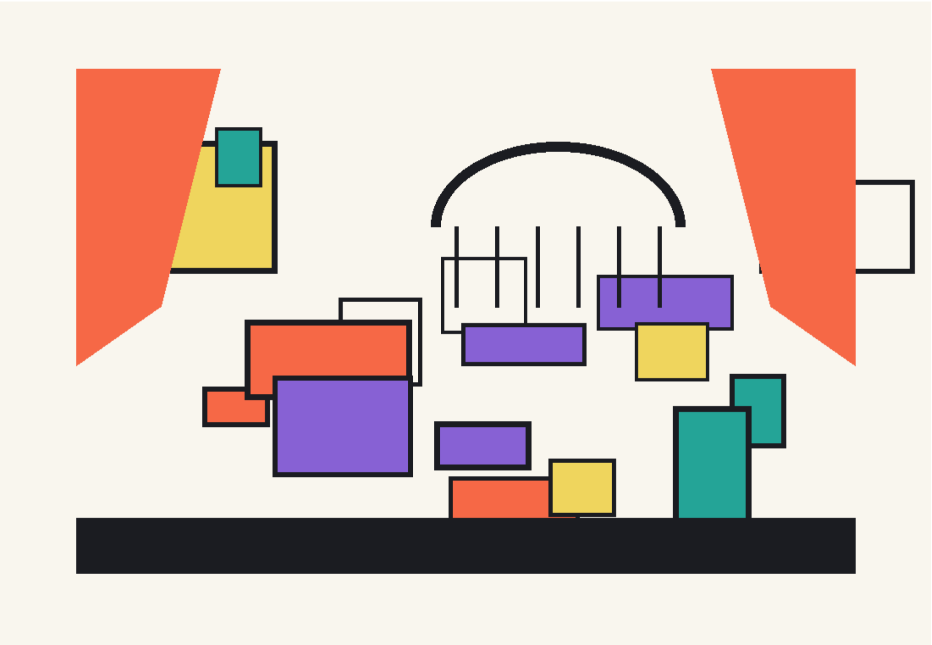

Figure 3

Ramvati?

8: You did experiment, but so much heat came with the light. The stifling heat could kill a person.

7: If there is light, heat is bound to come out.

8: Neklalji, out of every sixteen parts of energy, you produced fifteen parts of heat and only one part of light. You fancied yourself a great scientist. The light did come, but the stifling heat could kill. Only when energy is saved can the Earth be saved.

7: You are Imagination, after all. That is why, after dying, you became Imagination.

8: And that is why you became a ghoooooost, a spiiiiirit, a demon!

7: (Slightly annoyed.) Then you tell us whether light can be obtained without heat. (He spreads his hands towards the people and looks at them.)

5: (Coming forward.) No, it is not possible.

6: It is possible, Vijay.

5: Vijaya has arrived! (He spreads his hands in astonishment.) Ask her whether she has any light of her own.

8: No, she does not. Yet the moonlight she scatters at night certainly feels cool.

7: Ha! Imagination! Keep saying whatever comes into your head... keep saying it!

8: Had you listened to me while you were alive and used your imagination, you could have made light without stifling heat - cool light.

7: Listen, Om and Aastha - light without stifling heat! (He spreads his hands in amazement.) Now you two tell her that light without heat is impossible.

1 AND 2: (Spreading their hands in surprise.) If light gave off heat, fireflies would die.

8: Then how are the two of you alive?

1: What do you mean?

2: Our light is cool.

1: Light comes from my tail - cool light. This is not a game; it is the science of the body.

2: It cools the heart. It sends a signal and helps us find one another. Light that brings companions together is good; light that scorches the Earth is incomplete.

8: Oh, I kept gazing at the moon over distant lands at night and went on imagining. But you, Neklal - why could we not see the fireflies wandering at night? The science of a small creature shone before us

long before it appeared in a great book.

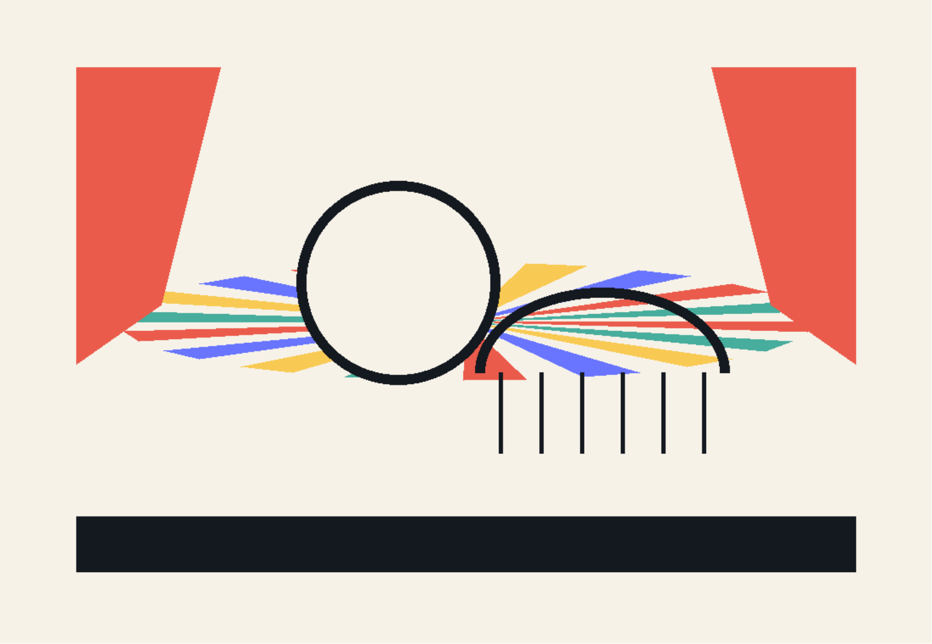

Figure 4

7: I am a failed scientist. I wander as a demon, burning in the energy of light. O Imagination, I could not imagine; otherwise I would have become a firefly.

8: Had you fulfilled that dream of mine, I too would have become a firefly. So many trees and forests would not have been cut. Look how far the forest has receded. (She points towards the distant fields.) As trees diminish,

shade diminishes, water diminishes, and songs diminish.

3 AND 4: (Together.) We have been left alone - as lonely as the sun, stars and moon. But the sun and moon can shine from far away; when a tree is left alone, the village dries up.

(All the PERFORMERS except these two merge back into the crowd.)

4: We have been left all alone. In a few days we shall be gone.

3: It seems so. We shall become ghosts, spirits and demons.

(The OLD MAN, dressed as a ghost-spirit, enters.)

7: Why? How did you come to this condition?
3: Because of you.
4: Because of you alone.
7: What have I done now?
3: You cut us down to make paper.
4: You cut us down for chairs, doors, decorations and single-use things that are thrown away.
4: You cut us down to build houses.
7: But those things were necessary. They had to be made, did they not?
3: Then why did you not plant us again? Why did you not imagine?

(The OLD WOMAN enters.)

8: Tell us. Why did you not imagine?
7: Imagine what?
8: Imagine how many trees you would cut, and how many times that number you would plant.
7: But I did plant trees.
3: You planted eucalyptus.
4: You planted foreign trees.
3: They drank all the blood... no, no... all the water from this soil. Planting a tree that does not understand the soil's thirst does not make a forest.
7: Do not put all the blame on me. Do you not use energy too? I am a scientist.
I understand all of this. But if knowledge is not put into practice, science itself remains incomplete.

PART 3: THE PLEDGE

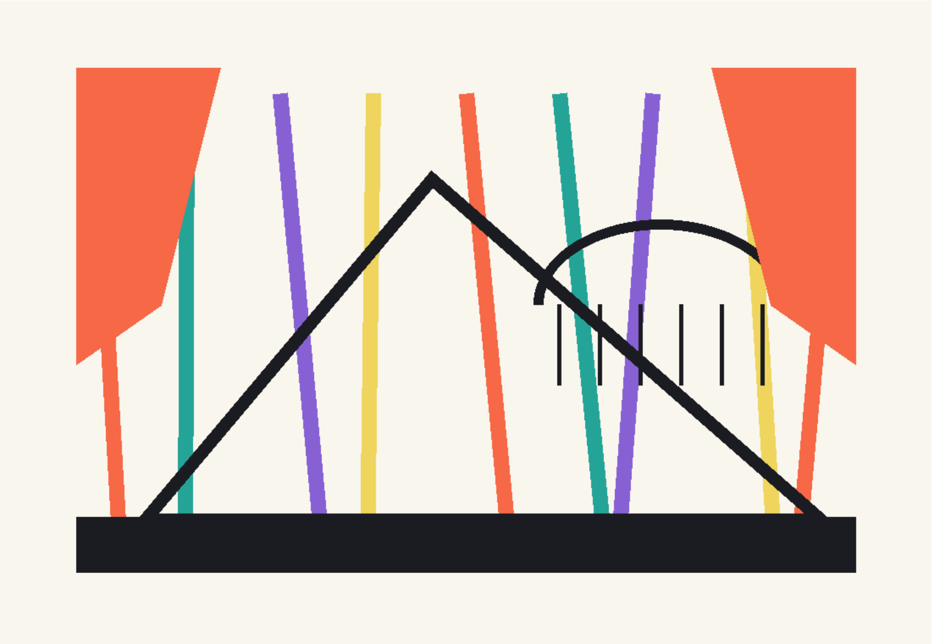

Figure 5

(3 AND 4 sing together.)

We burn oxygen to make our food,
And burn it as our labour demands;
In the winter months we keep ourselves warm,
Yet we do not heat the whole world.

(They begin to dance.)

7: I know all of that. But we produce only a little heat.

3: And even that is for all of you.

7: For us? How... how?

4: We keep the lotus flower warm so that your hands do not freeze when you pluck it in winter. Nature spends its heat with restraint; human beings spend it without measure.

7: Then, when someone cuts you, why do you not defend yourselves?

8: Imagine... think, think.

3: We do.

4: We do as much as we can.

(3 AND 4 sing together.)

We show you thorns and drive you away,
We feed you fruit and drive hunger away;
Pluck our flowers and carry them home,
Offer them to your gods and ancestors.

(They begin to dance.)

3: We tempt you with fruit and flowers; we give you shade; we give you breath.

4: We frighten you with thorns, but an axe is not afraid of thorns.

3: Even then, you refuse to stop.

8: Imagine... think, think.

7: (Looking towards the OLD WOMAN, Ramvati.) O Imagination, what you told me - that we must plant many times the number of trees we cut - please tell them that too.

8: Their feet are rooted in the soil. How can they do that? But seeds,
pollen, wind, water, birds and animals can all become their feet.

7: (Pulling a face.) Imagination... think, think.

(3 AND 4 begin to sing together. As he listens, the OLD MAN grows downcast; the OLD WOMAN, however, becomes delighted.)

A seed catches in a buffalo's hair,
And travels with it far from here;
The buffalo shakes; the seed drops there -
With rooted feet, we journey there!

(Without moving, both point into the distance.)

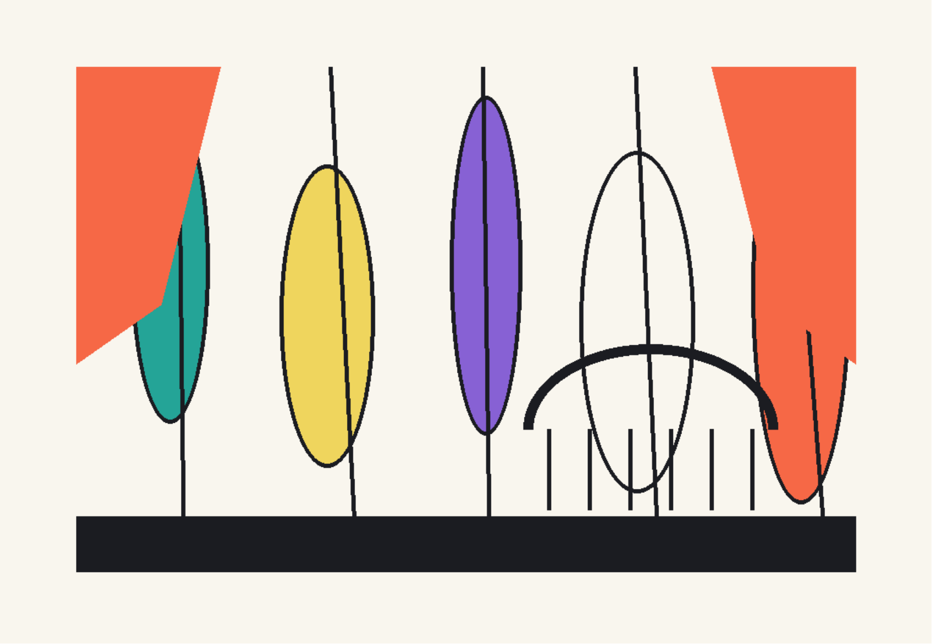

Figure 6

3: We make tiny hook-like barbs on a seed so that it catches in an animal's coat and travels far. This is our journey - without a ticket, without smoke.

4: Far away, the seed gives birth to a new tree.

3: A butterfly carries pollen far away.

4: With that pollen, it fertilises another tree... in a distant land.

8: Imaginaaaaation...

(The OLD MAN sits down with his head in his hands. The OLD WOMAN sits beside him and looks towards the sky, deep in thought.)

4: Jayant, now I feel that we shall disappear. What will happen in a country whose scientists do not imagine, in a village whose children do not count its trees? (She circles a hand as she asks the question.)

3: Apala, there the imagined treeless future becomes reality. But if the children count the seeds today, the future can still be rewritten.

4: As it has been here.

(3 AND 4 sing through tears.)

Cut our roots, and we shall turn to ash;
Take all our flowers and leaves;
All the children are dead.

(Both begin to cough.)

(NUMBERS 1 TO 8 sit and sing. They begin softly, then invite the audience to join.)

Cut our roots, and we shall turn to ash.
Cut our roots, and we shall turn to ash;
Take all our flowers and leaves;
All the children are dead.

(Everyone begins to cough. The coughing gradually becomes rhythmic. Then all stand, holding imaginary seeds in their hands.)

1: I shall protect the firefly's cool light.

2: I shall also protect the darkness of night, so that the stars remain visible.

3: I shall plant more trees than I cut.

4: I shall recognise native trees and preserve their seeds.

5: I shall not allow energy to become waste heat.

6: I shall imagine, but I shall also act.

7: I shall admit the mistakes of the past.

8: I shall plant a new dream.

NUMBERS 1 TO 8: (Extending their hands towards the audience.) Say it - will all of you do the same?

(The PERFORMERS encourage the audience to answer, "Yes." Everyone speaks together three times.)

ALL: If the roots survive, we shall not turn to ash; if the roots survive, we shall survive.

(Blackout.)

CURTAIN

VIDEHA

Videha: The First Maithili Fortnightly E-Journal | ISSN 2229-547X | www.videha.co.in

दानवीर दधीची

ज्ञान, प्रतिज्ञा आ सत्यक रक्षाक वैदिक नाट्य-गाथा

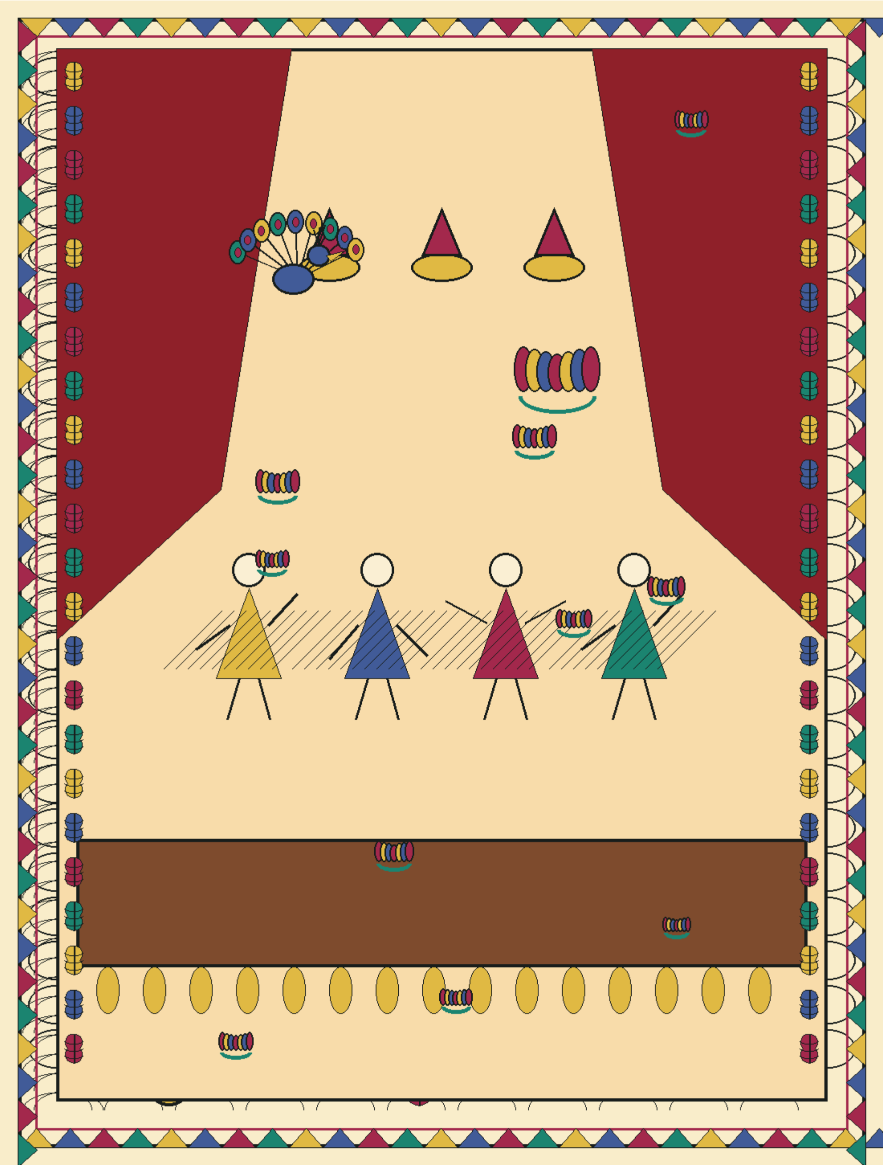

गजेन्द्र ठाकुर

सम्पादक, विदेह: प्रथम मैथिली पाक्षिक ई-पत्रिका (since 2000)

ISSN 2229-547X

मंच-सज्जा आ वेष-भूषा

(बाल नाटक। सुधारल पाठमे दधीचीक दानकेँ हड्डी-दंतकथा नहि, बल्कि ज्ञान, प्रतिज्ञा,

पात्रता, आ सत्यक रक्षा रूपमे बेसी स्पष्ट कएल गेल अछि।)

(ध्वनि संकेत: आम्रवनक पात, यज्ञधूम, आगन्तुकक पग, इन्द्रक बज्र, आश्विनौक शल्य-सज्जा,

घोड़ाक मृदु हिनहिनाहटि, युद्ध-धुआँ, आ अन्तमे सूत्रधारक सत्य-वचन।)

(बाल नाटक)

मंच सज्जा: आम्र वन, पोखरि, आश्रम-वेदी आ युद्ध स्थल। प्रकाशसँ तीन लोकक भाव: आश्रममे

स्वर्णिम शान्ति, इन्द्रक प्रवेशमे तीख उजास, युद्धस्थलमे धुआँमय लालिमा।

आम्र वन, पोखरि आ युद्ध स्थल

वेष-भूषा:

अधो वस्त्र- आश्रमवासीक हेतु

आश्विनक हेतु वैद्यक श्वेत वस्त्र

आ इन्द्रक हेतु योद्धाक वस्त्र

रथ आ अस्त्र शस्त्रक चित्र पर्दा पर छायांकित कएल जा सकैत अछि। युद्धक दृश्य बच्चा-दर्शक

लेल सांकेतिक राखल जाए; ध्वनि आ प्रकाशसँ भय, हिंसा नहि।

प्रथम दृश्य

चित्र 1

(महर्षि दध्यङ आथर्वन दधीचीक तपोवनक दृश्य। सूर्योदयक स्वर्णिम आभा, फूलक गाछक फूलक

संग पवनक प्रभावसँ सूर्य दिशि झुकब। यज्ञक धूँआसँ मलिन भेल गाछक पात। महर्षि सूर्योदयक

दृश्यक आनन्द लए रहल छथि। मुदा दृष्टिमे अतृप्त भाव छन्हि: ज्ञान अछि, मुदा योग्य पात्रक प्रतीक्षा अछि। ओहि आश्रमक कुलपति थिकाह महर्षि, दस सहस्र छात्रकेँ विद्यादान करैत छथि, सभक नाम, गाम आ कार्यसँ परिचित छथि। से ओ तखने प्रवेश करैत एकटा

अपरिचित आगंतुकक आगमन सँ साकांक्ष भऽ जाइत छथि।)

दध्यङ आथर्वन दधीची: अहाँ के छी आगंतुक?

अपरिचित: हम एकटा अतिथि छी महर्षि आ कोनो प्रयोजनसँ आयल छी। कृपा कए अतिथिक मनोरथ पूर्ण करबाक आश्वासन देल जाय। जे पहिने आश्वासन भेटै, से प्रश्न बादमे सहजबे होइ छै।

दध्यङ आथर्वन दधीची: एहि आश्रमसँ क्यो बिना मनोरथ पूर्ण कएने नहि गेल अछि आगंतुक। हम अहाँक सभ मनोरथ पूर्ण होएबाक आश्वासन दैत छी। मुदा ज्ञानक दानमे दाताक हाथ संग

ग्रहीताक पात्रता सेहो देखल जाइ छै।

अपरिचित: हम देवता लोकनिक राजा इन्द्र छी। अहाँसँ परमतत्त्वक उपदेशक हेतु आयल छी। एहिसँ अहाँक कीर्त्ति स्वर्गलोक धरि पहुँचत।

(दध्यङ आथर्वन दधीची सोचमे पड़ल मंच पर एम्हरसँ ओम्हर विचलित होइत घुमय लगैत छथि। ओ

मंच पर घुमैत मोने-मोन, बिनु इन्द्रकेँ देखने, बजैत छथि जे दर्शकगणकेँ तँ सुनबामे अबैत अछि

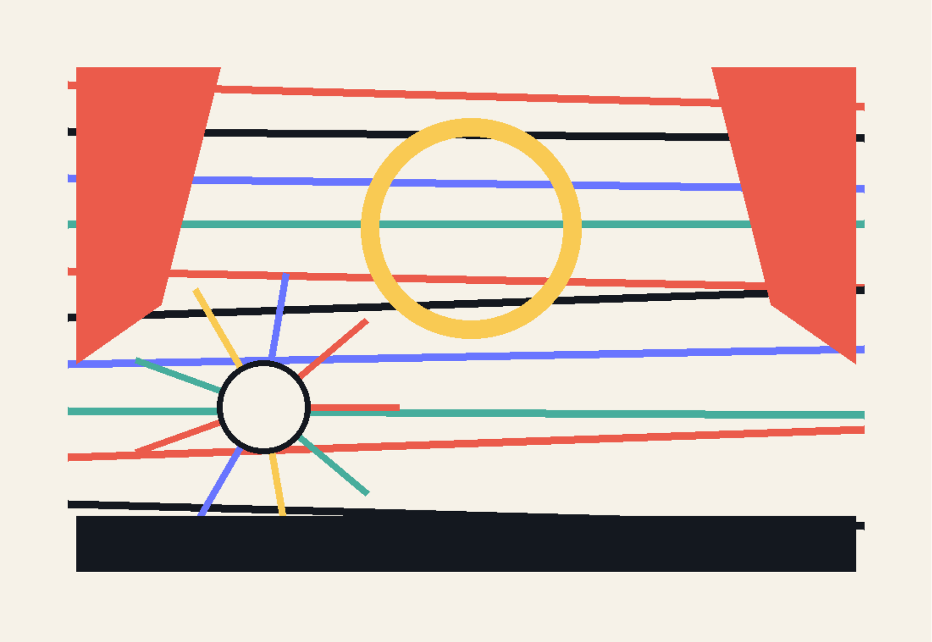

चित्र 2

मुदा इन्द्र एहन सन आकृति बनओने रहैत छथि जे ओ किछु सुनिये नहि रहल छथि आ मंचक एक

दोगमे ठाढ़ भऽ जाइत छथि।)

दध्यङ आथर्वन दधीची: (मोने-मोन) हम शिक्षा देब तँ गछि लेने छी मुदा की इन्द्र एकर अधिकारी छथि। बज्र लए घुमए बला, कामवासनामे लिप्त अनधिकारी व्यक्तिकेँ परमतत्त्वक शिक्षा? ज्ञान जँ अहंकारी हाथमे पड़त तँ मधु विष बनि सकैए। मुदा गछने छी तँ अपन प्रतिज्ञाक रक्षणार्थ मधु-विद्याक शिक्षा इन्द्रकेँ दैत छियन्हि।

इन्द्र: कोन सोचिमे पड़ि गेलहुँ महर्षि।

दध्यङ आथर्वन दधीची: इन्द्र, हम अहाँकेँ मधुविद्याक शिक्षा दए रहल छी। भोगसँ दूर रहू। नाना प्रकारक भोगक आ भोज्यक पदार्थ सभसँ। ई सभ ओहने अछि जेना फूल सभक बीचमे साँप। भोगक अछैत स्वर्ग अधिपति इन्द्र आ भूतलक निकृष्ट कुकुरमे कोन अंतर रहत तखन? मधु-विद्या कहैए: सभ एक-दोसराक हेतु मधु अछि; जे केवल अपने लेल जीबै, ओ मधुकेँ विष बना दैए।

(इन्द्र अपन तुलना कुकुरसँ कएल गेल देखि कए तामसे विख-सबिख भऽ गेल। मुदा अपना पर

नियंत्रण रखैत मात्र एक गोट वाक्य बजैत मंच परसँ जाइत देखल जाइत अछि।)

इन्द्र: महर्षि अहाँक ई अपमान तँ आइ हम सहि लेलहुँ। मुदा आजुक बाद ज्योँ अहाँ ई मधु-विद्या ककरो अनका देलहुँ तँ अहाँक गरदनि परसँ ई मस्तिष्क, जकर अहाँकेँ घमण्ड अछि, एहि भूमि पर खसत। ज्ञान पर पहरा हमर रहत।

दृश्य दू

चित्र 3

(ऋषिक आश्रम। आश्विन बन्धुक आगमन। हुनका सभक वस्त्र साधारण, हाथमे वैद्यक औजार/औषधि। महर्षिसँ अभिवादनक उपरान्त वार्त्तालाप।)

आश्विन बन्धु: महर्षि। आब हम सभ अहाँक मधु विद्याक हेतु सर्वथा सुयोग्य भ’ऽ गेल छी। हिंसा आ भोगक रस्ता हम सभ छोड़ि देलहुँ। इन्द्र सोमयागमे हमरा लोकनिकेँ सोमपानक हेतु सर्वथा अयोग्य मानलन्हि मुदा हमरा सभ प्रतिशोध नहि लेलहुँ। कतेक पंगुकेँ पएर, कतेक आन्हरकेँ आँखि हमरा सभ देलहुँ। च्यवन मुनिक बुढ़ापाकेँ दूर कएलहुँ। आ तकरे उपकारमे च्यवन हमरा लोकनिकेँ

सोमपीथी बना देलन्हि। सेवा हमरा पात्र बनेलक, पद नहि।

दध्यङ आथर्वन दधीची: आश्विनौ। ब्रह्मज्ञानककैं देब एकटा उपकारमयी कार्य अछि आ अहाँ लोकनि एहि विद्याक सर्वथा योग्य शिक्षार्थी छी। इन्द्र कहने अछि, जे जाहि दिन ई विद्या हम कहियो ककरो देब तँ तहिये ओ हमर माथ शरीरसँ काटि खसा देत। मुदा ई शरीर तँ अछि क्षणभंगुर। आइ नहि तँ काल्हि एकरा नष्ट होयबाक छै। ताहि डरसँ हम ब्रह्म विद्याक लोप नहि होए देबैक। ज्ञान रोकेनिहारसँ पैघ अपराधी कियो नहि।

आश्विनौ: महर्षि अहाँक ई उदारचरित! मुदा हमरो सभ शल्यक्रिया जनैत छी आ पहिने हमरा सभ घोड़ाक मस्तक अहाँक गरदनि पर लगाए देब। जखन इन्द्र अपन घृणित कार्य करत आ अहाँक मस्तककेँ काटत तखन अहाँक असली मस्तक हमरा सभ पुनः अहाँक शरीरमे लगा देब। अहाँ ज्ञान बचाउ, हम अहाँक जीवन बचएबाक उपाय करब।

(मंच पर आबाजाही शुरू भऽ जाइत अछि, क्यो टेबुल अनैत अछि तँ क्यो चक्कू धिपा रहल अछि

जेना कोनो शल्य चिकित्साक कार्य शुरू भऽ रहल होअय। प्रकाश अर्ध-अन्हार। परदा खसए लगैत अछि आ पूरा खसितो नहि अछि आकि फेर उठब प्रारम्भ भऽ जाइत अछि। एहि बेर

घोड़ाक गरदनि लगओने महर्षि आश्विन बन्धुकेँ शिक्षा दैत दृष्टिगोचर होइत छथि। दृश्य

सांकेतिक आ गरिमामय राखल जाए।)

दध्यङ आथर्वन दधीची: एहि जगतक सभ पदार्थ एक दोसराक उपकारी अछि। ई जे धरा अछि से

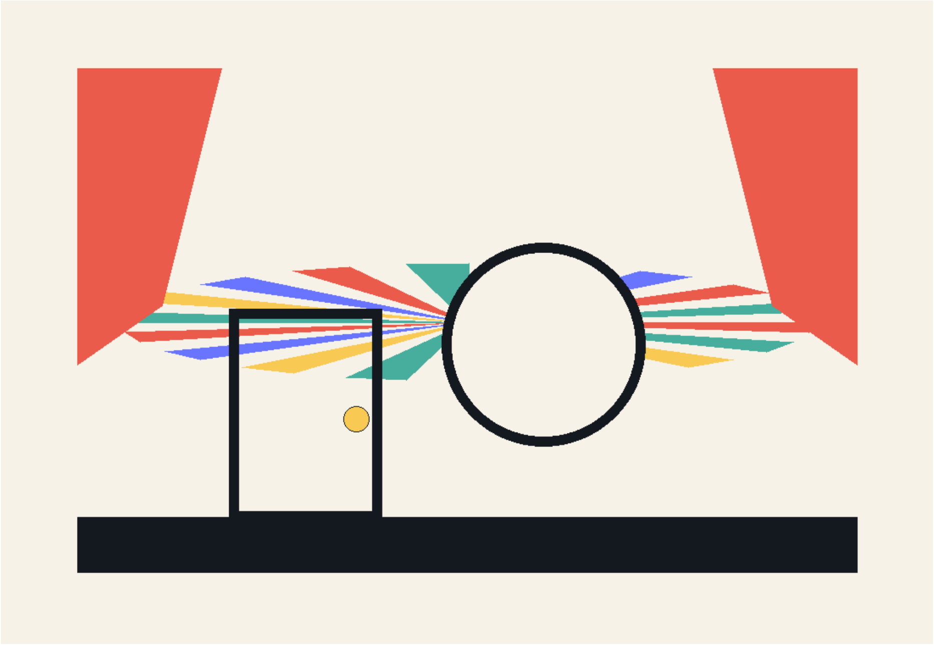

चित्र 4

सभ पदार्थक हेतु मधु अछि आ सभ पदार्थ ओकरा हेतु मधु। समस्त जन मधुरूपक अछि। तेजोमय आ अमृतमय। सत्येक आधार पर सूर्य ज्योति पसारैत अछि एहि विश्वमे। चन्द्रक धवल प्रकाश दूर भगाबैत अछि रातिक गुमार आ आनैत अछि शीतलता। ज्ञानक उदयसँ अन्हारमे बुझाइत साँप देखा पड़ैत अछि रस्सा। विश्वक सूत्रात्माकेँ ओहि परमात्माकेँ अपन बुद्धिसँ पकड़ू। जाहि प्रकारेँ रथक नेमिमे अर रहैत अछि ताहि प्रकारेँ परमात्मामे ई संपूर्ण विश्व। जे ई देखलक, से ककरो नीच नहि बुझत, ककरो केवल साधन नहि बनाओत।

(तखने मंचक पाछाँसँ बड्ड बेशी कोलाहल शुरू भऽ जाइत अछि। तखने बज्र लए इन्द्रक आगमन

होइत अछि। एक्के प्रहारमे ओ महर्षिक गरदनि काटि दैत छथि। फेर इन्द्र चलि जाइत छथि।

मंच पर आबाजाही शुरू भऽ जाइत अछि, क्यो टेबुल अनैत अछि तँ क्यो चक्कू धिपा रहल अछि,

जेना कोनो शल्य चिकित्साक कार्य शुरू भऽ रहल होअय। परदा खसए लगैत अछि आ पूरा खसितो नहि अछि आकि फेर उठब प्रारम्भ भऽ जाइत अछि। एहि बेर महर्षि पुनः अपन स्व-शरीरमे देखल जाइत छथि। ओ बैसले छथि आकि इन्द्र अपन मुँह लटकओने अबैत अछि। बज्र ओकर हाथमे अछि, मुदा हाथ काँपि रहल अछि।)

इन्द्र: क्षमा करब महर्षि हमर अपराध। आइ आश्विन-बन्धु हमरा नव-रस्ता देखओलन्हि। गुरूसँ एको अक्षर सिखनिहार ओकर आदर करैत छथि मुदा हम की कएलहुँ? असल शिष्य तँ छथि आश्विन बन्धु। हम ज्ञानक रक्षा करबाक नाम पर ज्ञानक हत्या करऽ गेल रही।

दध्यङ आथर्वन दधीची: इन्द्र। अहाँकेँ ताहि द्वारे हम शिक्षा देबामे पराङमुख भए रहल छलहुँ। मुदा अहाँक दृढ़निश्चय आ सत्यक प्रति निष्ठाक द्वारे हम अहाँकेँ शिक्षा देल। हमरा मोनमे

अहाँक प्रति कोनो मलिनता नहि अछि। अपराध देखल गेल, पश्चात्तापो देखल गेल; आब ज्ञानकेँ सेवा बनाउ, अधिकार नहि।

इन्द्र: धन्य छी अहाँ आ धन्य छथि आश्विनौ। आब हम ओ इन्द्र नहि रहलहुँ। हमर अभिमानकेँ आश्विनौ खतम कए देलन्हि।

(इन्द्र मंचसँ जाइत अछि। परदा खसैत अछि।)

दृश्य तीन

चित्र 5

(स्वर्गलोकक दृश्य। चारू दिशि वृत्र आ शम्बरक नामक चर्चा करैत लोक आबाजाही कए रहल छथि। ओ दुनू गोटे आक्रमण कए देने अछि भारतक स्वर्गभूमि पर। भयक ध्वनि, घायल लोकक पुकार, दूर युद्ध-नाद। इन्द्र सहायताक हेतु महर्षिक आश्रम अबैत छथि।)

इन्द्र: वृत्र आ शम्बरक आक्रमण तँ एहि बेर बड्ड प्रचंड अछि। अहंकार लऽ कऽ नहि, मार्गदर्शनक याचना लऽ कऽ आयल छी महर्षि।

दध्यङ आथर्वन दधीची: इन्द्र। कुरुक्षेत्र लग एकटा जलाशय अछि, जकर नाम अछि, शर्यणा।

अहाँ ओतए जाऊ, ओतय घोड़ाक मूड़ी राखल अछि, जाहिसँ हम आश्विनौकेँ उपदेश देने छलहुँ। ब्रह्मविद्या ओहि मुँहसँ बहरायल आ ताहि द्वारे ओ अत्यंत कठोर आ दृढ़ भऽ गेल अछि। ओहिसँ नाना-प्रकारक शस्त्र बनाऊ, अग्नि आश्रित विध्वंसकक प्रयोग करू, त्रिसंधि व्रज, धनुष, इषु-बाण-अयोमुख-लोहाक सूचीमुख सुइयाबला आ विकंकतीमुख- कठोर, एहि तरहक शस्त्रक प्रयोग करू, कवच आ शिरस्त्राणक प्रयोग करू, अंधकार पसारयबला आ जड़ैत रस्सी द्वारा दुर्गंधयुक्त धुँआ निकलएबला शस्त्रक सेहो प्रयोग करू आ युद्ध कए विजयी बनू। मुदा स्मरण राखू, शस्त्रक धर्म रक्षा अछि, दंभ नहि।

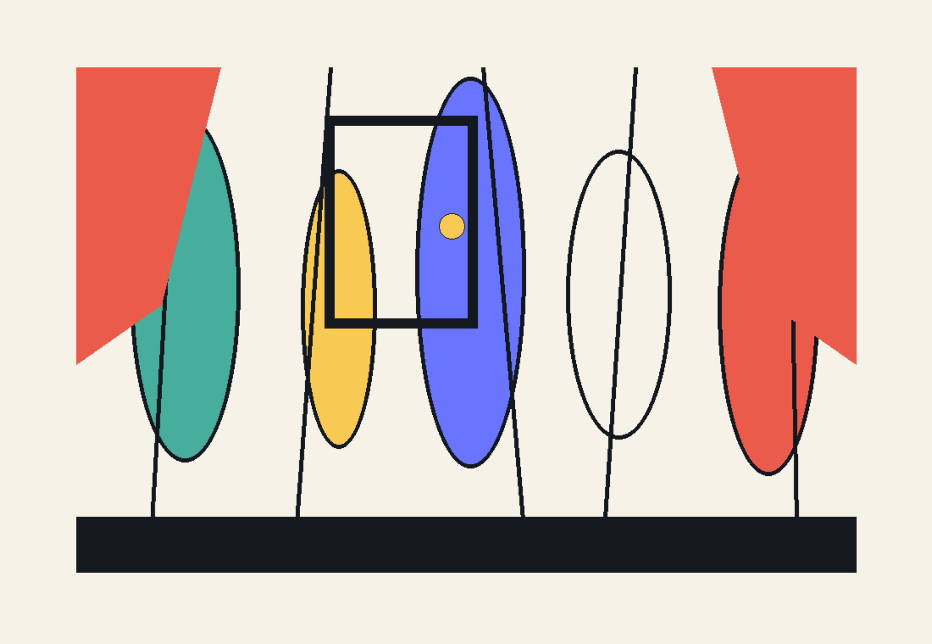

चित्र 6

इन्द्र: जे आज्ञा महर्षि।

(परदा खसैत अछि आ जखन उठैत अछि तँ पोखरिक कातमे घोड़ाक मूड़ीसँ इन्द्र द्वारा वज्र आ विभिन्न हथियार बनाओल जा रहल अछि। फेर परदा खसि कऽ जखन उठैत अछि तँ अग्नियुक्त शस्त्र, जे फटक्का द्वारा मंचपर उत्पन्न कएल जा सकैत अछि, देखबामे अबैत अछि। मंच धुआँसँ भरि जाइत अछि। युद्धक ध्वनि तीव्र भऽ कऽ अचानक थमि जाए। फेर परदा खसैत अछि आ मंचक पाछाँसँ सूत्रधारक स्वर सुनबामे अबैत अछि।)

सूत्रधार: इन्द्रक विजय भेलन्हि आ दुष्ट सभ खोहमे भागि गेल। ईएह छल वैदिक नाटक: दधीची अपन देह नहि, ज्ञान, प्रतिज्ञा आ सत्यक रक्षा दान केलन्हि। बादमे एहि अर्थकेँ अनर्थ कए देलन्हि पौराणिक लोकनि, जाहिमे दधीचीक हड्डीसँ इन्द्रक वज्र बनएबाक चर्च कएल गेल अछि। बच्चा सभ, सुनू- कथा बदलि सकैए, मुदा सत्यक खोज बन्न नहि हेबाक चाही।

("ई असल बात अछि"-केर फुसफुसाहटिक संग पर्दा खसले रहैत अछि। लाइट क्षणिक ऑफ भेलाक बाद ऑन भए जाइत अछि। मंचपर केवल वेदीक धुआँ आ जलाशयक मद्धिम स्वर रहि जाइत अछि।)

(पटाक्षेप)

पटाक्षेप

VIDEHA

विदेह: प्रथम मैथिली पाक्षिक ई-पत्रिका | ISSN 2229-547X | www.videha.co.in

DADHICHI, THE GREAT GIVER

A Vedic Dramatic Tale of Safeguarding Knowledge, a Vow, and Truth

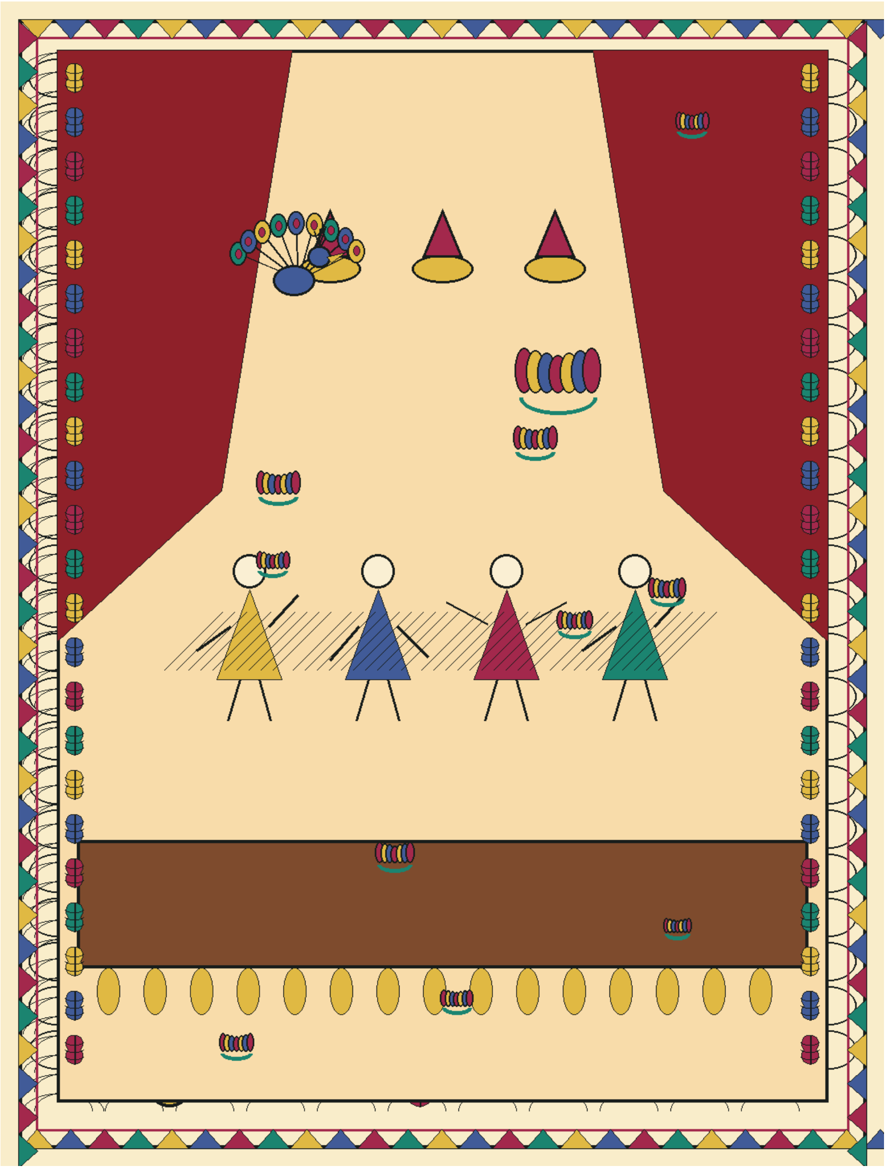

Gajendra Thakur

Editor, Videha: The First Maithili Fortnightly E-Journal (since 2000)

ISSN 2229-547X

STAGE SETTING AND COSTUMES

(A play for children. In this revised text, Dadhichi's gift is presented not as the legend of his bones, but more clearly as the safeguarding of knowledge, a vow, moral worthiness, and truth.)

(Sound cues: leaves rustling in the mango grove, sacrificial smoke, an approaching visitor's footsteps, Indra's thunderbolt, the Ashvins' surgical preparations,

a horse's gentle neighing, the smoke of battle, and, at the end, the Narrator's declaration of truth.)

(A play for children)

SETTING: A mango grove, a pond, the altar of the hermitage, and a battlefield. Lighting should suggest three realms:

golden serenity in the hermitage, a sharp blaze at Indra's entrance, and a smoky red glow on the battlefield.

Mango grove, pond, and battlefield

COSTUMES:

Lower garments for the residents of the hermitage

White physicians' robes for the Ashvins

Warrior's attire for Indra

Silhouettes of chariots and weapons may be projected onto a screen. For young audiences, the battle should remain symbolic: create fear through sound and light, not through graphic violence.

SCENE ONE

ILLUSTRATION 1

(The forest hermitage of Maharshi Dadhyang Atharvan Dadhichi. The golden light of sunrise fills the stage. Flowering trees,

heavy with blossoms, bend toward the sun as the wind moves through them. Leaves have been dimmed by smoke from the sacred fire.

The Maharshi delights in the sunrise, yet his eyes reveal a sense of incompleteness: he possesses knowledge, but he is still

waiting for a worthy recipient. He is the head of the hermitage, teaching ten thousand students and knowing the name, village,

and work of every one of them. Therefore, when an unknown visitor enters, the Maharshi immediately watches him

with keen expectation.)

DADHYANG ATHARVAN DADHICHI: Who are you, stranger?

UNKNOWN VISITOR: I am a guest, Maharshi, and I have come with a purpose. Kindly promise to fulfil the wish of your guest.

Once the promise is given, the question that follows becomes easier.

DADHYANG ATHARVAN DADHICHI: No one has ever left this hermitage with a wish unfulfilled, stranger. I promise that all your wishes shall be fulfilled. But when knowledge is given, the giver must also consider

the worthiness of the receiver.

UNKNOWN VISITOR: I am Indra, king of the gods. I have come to receive from you instruction in the Supreme Reality.

Through this, your fame will reach the heavenly realm.

(Dadhyang Atharvan Dadhichi falls into thought and begins pacing restlessly from one side of the stage to the other.

As he circles the stage, he speaks inwardly without looking at Indra. The audience can hear him,

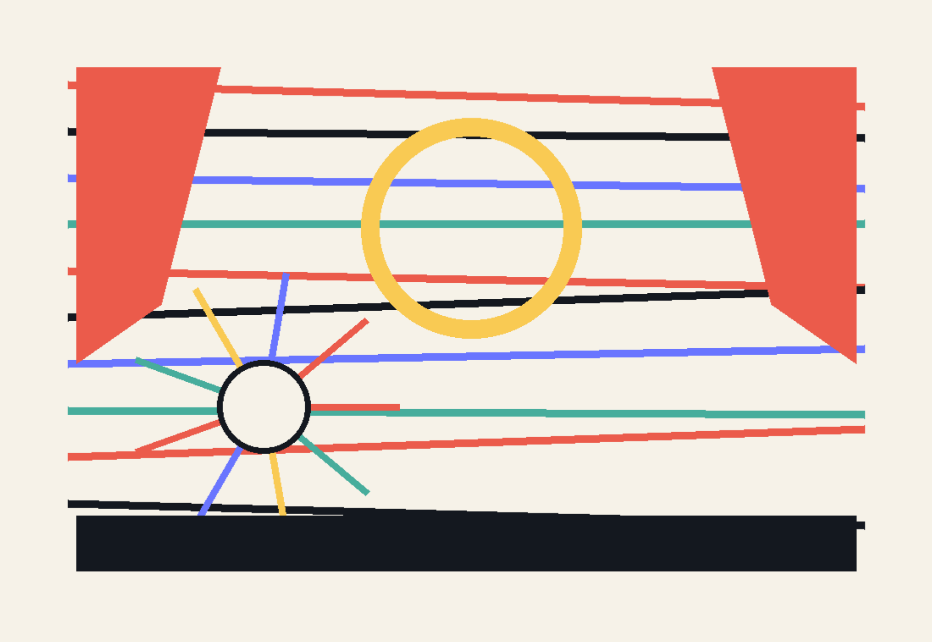

ILLUSTRATION 2

but Indra maintains the appearance of hearing nothing and stands in one corner of the stage.)

DADHYANG ATHARVAN DADHICHI: (Aside.) I have promised to teach him, but is Indra worthy of this knowledge?
A man who roams with a thunderbolt and is immersed in sensual desire - should such an unworthy person receive instruction
in the Supreme Reality? If knowledge falls into arrogant hands, honey can turn to poison. Yet I have given my word,
so, to uphold my vow, I shall teach Indra the Madhu-Vidya.
INDRA: What has plunged you into such deep thought, Maharshi?
DADHYANG ATHARVAN DADHICHI: Indra, I shall teach you the Madhu-Vidya. Keep away from indulgence -
from every kind of pleasure and rich food. Such things are like a snake hidden among flowers.
If indulgence rules him, what difference remains between Indra, lord of heaven, and the lowest dog on earth? The Madhu-Vidya
teaches that all beings are honey for one another; whoever lives only for himself turns honey into poison.
(Furious at being compared to a dog, Indra trembles with rage. He controls himself, however, and speaks only
a single sentence as he leaves the stage.)
INDRA: Maharshi, today I have endured this insult from you. But from this day onward, if you give the Madhu-Vidya
to anyone else, this head - whose intellect fills you with such pride - will fall from your neck
onto this ground. I shall stand guard over knowledge.

SCENE TWO

ILLUSTRATION 3

(The sage's hermitage. The Ashvin Brothers enter in simple clothing, carrying medical instruments and medicines. After greeting the Maharshi, they begin their conversation.)

ASHVIN BROTHERS: Maharshi, we have now become fully worthy to receive your Madhu-Vidya. We have abandoned the paths of violence and indulgence. At the Soma sacrifice, Indra judged us entirely unworthy to drink Soma, yet we did not seek revenge. We gave legs to many who were lame and sight to many who were blind. We drove away the old age of Sage Chyavana. In gratitude for that service, Chyavana made us eligible to partake of Soma. Service made us worthy - rank did not.

DADHYANG ATHARVAN DADHICHI: Ashvins, to impart knowledge of Brahman is an act of benevolence, and you are entirely worthy students of this knowledge. Indra has declared that on the very day I ever give this knowledge to anyone, he will sever my head from my body. But this body

is transient. If not today, it must perish tomorrow. Fear of that cannot make me allow Brahma-Vidya to disappear. No one commits a greater crime than one who obstructs knowledge.

ASHVINS: Maharshi, what greatness of spirit! But we too know surgery. First, we shall attach a horse's head to your neck. When Indra carries out his vile act and cuts off your head, we shall restore your true head to your body. You preserve the knowledge; we shall find a way to preserve your life.

(Movement begins across the stage: one person brings in a table while another sharpens a knife, as though a surgical procedure is about to begin. The light dims to half-darkness. The curtain starts to fall, but before it has fully descended, it begins to rise again. This time, the Maharshi is seen teaching the Ashvin Brothers with a horse's head attached to his neck. The scene must remain symbolic and dignified.)

DADHYANG ATHARVAN DADHICHI: Every substance in this world serves every other. This earth

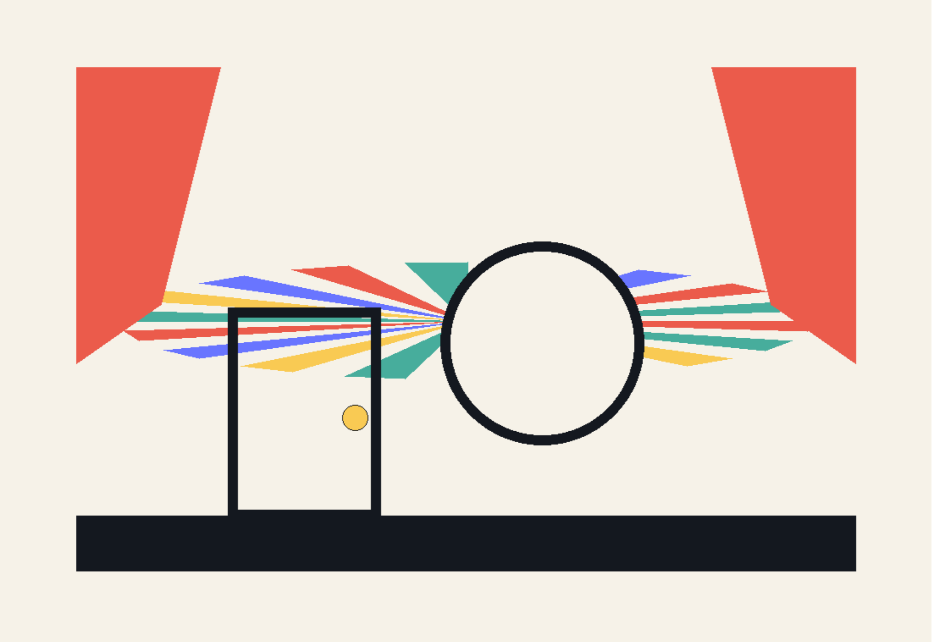

ILLUSTRATION 4

is honey for all beings, and all beings are honey for the earth. All life is of the nature of honey - radiant and immortal. Upon the foundation of truth, the sun spreads light through the world. The moon's white radiance drives away the heaviness of night and brings coolness. When knowledge dawns, the snake imagined in darkness is seen to be a rope. Grasp with your understanding the unifying thread of the universe - the Supreme Self. Just as the spokes of a chariot wheel rest in its hub, the entire universe rests in the Supreme Self. Whoever sees this will regard no one as inferior and will make no one merely a means to an end.

(At that moment, a tremendous commotion erupts behind the stage. Indra enters carrying his thunderbolt.
With a single stroke, he severs the Maharshi's head. Indra then leaves.
Movement begins across the stage again: one person brings in a table while another sharpens a knife, as though another surgical procedure is about to begin. The curtain starts to fall, but before it has fully descended, it begins to rise again. This time, the Maharshi is seen restored to his own body. He is seated when Indra enters with his head bowed. The thunderbolt is still in his hand, but that hand is trembling.)

INDRA: Forgive my offence, Maharshi. Today the Ashvin Brothers have shown me a new path. One who learns even a single letter from a teacher honours that teacher - but what have I done? The true disciples are the Ashvin Brothers. In the name of protecting knowledge, I had set out to destroy knowledge itself.

DADHYANG ATHARVAN DADHICHI: Indra, that is why I had been reluctant to teach you. Yet because of your determination and your devotion to truth, I taught you. I hold no bitterness toward you. The offence has been seen, and repentance has been seen as well. Now make knowledge an act of service, not a source of authority.

INDRA: Blessed are you, and blessed are the Ashvins. I am no longer the Indra I was. The Ashvins have ended my arrogance.

(Indra leaves the stage. The curtain falls.)

SCENE THREE

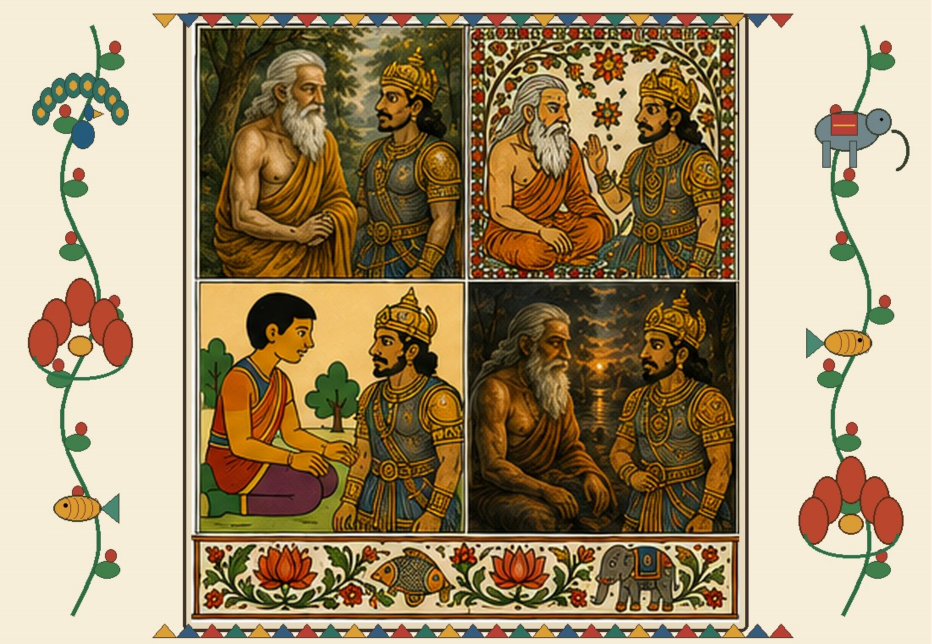

ILLUSTRATION 5

(The heavenly realm. People move about on every side, speaking anxiously of Vritra and Shambara. The two have launched an attack upon the celestial land of Bharat. Sounds of fear, cries of wounded people, and distant battle calls are heard. Indra comes to the Maharshi's hermitage seeking help.)

INDRA: The attack by Vritra and Shambara is exceptionally fierce this time. I have come not with arrogance, but to seek your guidance, Maharshi.

DADHYANG ATHARVAN DADHICHI: Indra, near Kurukshetra there is a reservoir called Sharyana. Go there. The horse's head through which I instructed the Ashvins has been kept there. Brahma-Vidya passed through that mouth, and because of it the head has become exceptionally hard and strong. From it, fashion weapons of many kinds. Use fire-based destructive devices, the trisandhi-vraja, bows, arrows, iron-headed shafts with needle-like points, and hard vikankati-shaped heads. Use

armour and helmets. Also use weapons that spread darkness, and weapons that release foul-smelling smoke through burning cords. Fight and be victorious. But remember: the dharma of a weapon is defence, not vanity.

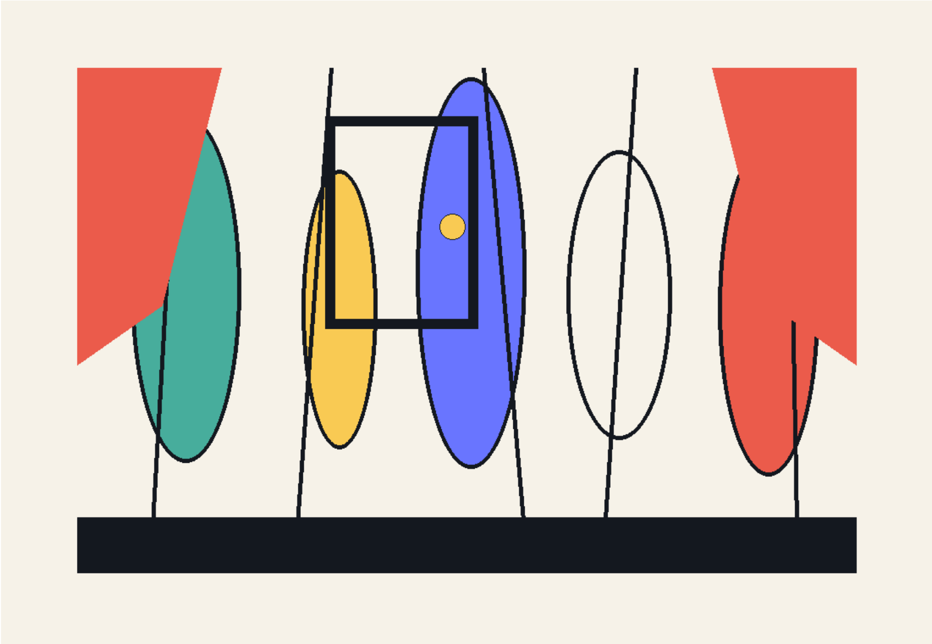

ILLUSTRATION 6

INDRA: As you command, Maharshi.

(The curtain falls. When it rises, Indra is seen beside the pond, fashioning a thunderbolt and other weapons from the horse's head. The curtain falls again. When it rises once more, fire-charged weapons are suggested with stage-safe pyrotechnic effects. Smoke fills the stage. The sounds of battle rise to a climax and suddenly stop. The curtain falls again, and the Narrator's voice is heard from behind the stage.)

NARRATOR: Indra was victorious, and the wicked fled into caves. This was the Vedic drama: Dadhichi

did not give away his body; what he gave was the defence of knowledge, his vow, and truth. Later,

the storytellers of the Puranas distorted this meaning and told instead that Indra's thunderbolt was made from Dadhichi's bones.

Children, listen: a story may change, but the search for truth must never cease.

(With whispers of, 'That is the truth,' the curtain remains down. The lights go out briefly,

then come on again. Only the smoke from the altar and the soft sound of the reservoir remain onstage.)

(Curtain.)

END OF PLAY

VIDEHA

Videha: The First Maithili Fortnightly E-Journal | ISSN 2229-547X | www.videha.co.in

गंगा ब्रिज

विकास, भ्रष्टाचार आ बलिदानपर एकटा मार्मिक नाटक

गजेन्द्र ठाकुर

सम्पादक, विदेह: प्रथम मैथिली पाक्षिक ई-पत्रिका (since 2000)

ISSN 2229-547X

पात्र-परिचय

बच्चा १ जे अभियन्ता बनैए

बच्चा २ अभियन्ताक मित्र (बादमे मुख्य अभियन्ता बनैए)

बच्चा ३ (जे बादमे मजदूर बनैए)

मुख्यमंत्री

मीत

बाउ

लाला

दादा

बिलट

इन्जीनियरक पत्नी

ठिकेदार

मजदूर

शिक्षक (वा शिक्षिका)१

शिक्षक (वा शिक्षिका)२

किछु छात्र-छात्रा

ढोलहो देनहार

डंका बजेनहार (दूटा लोक)

बतही माए

पैघ भाए

पल्लव एक

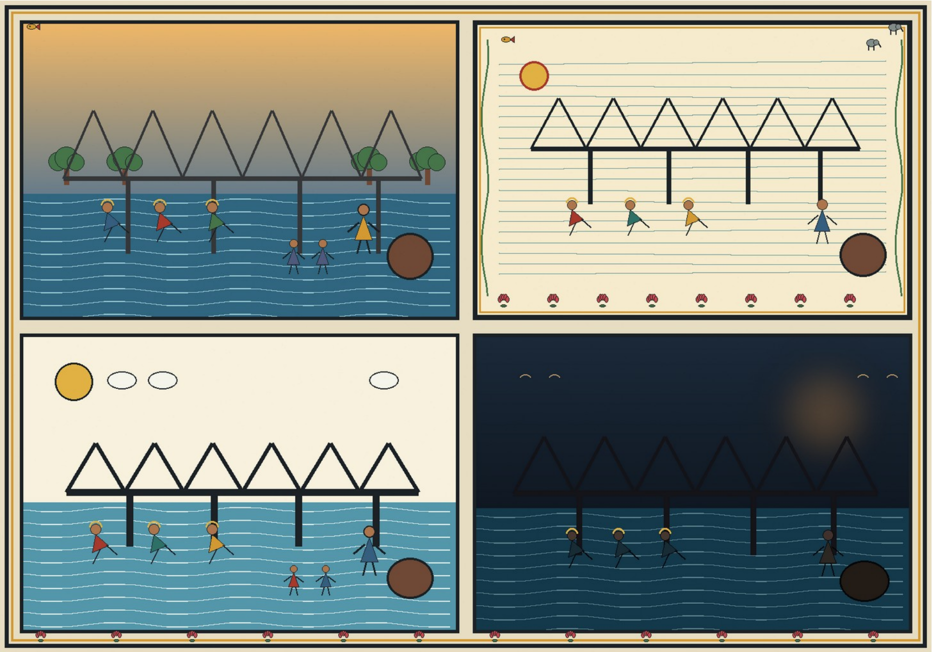

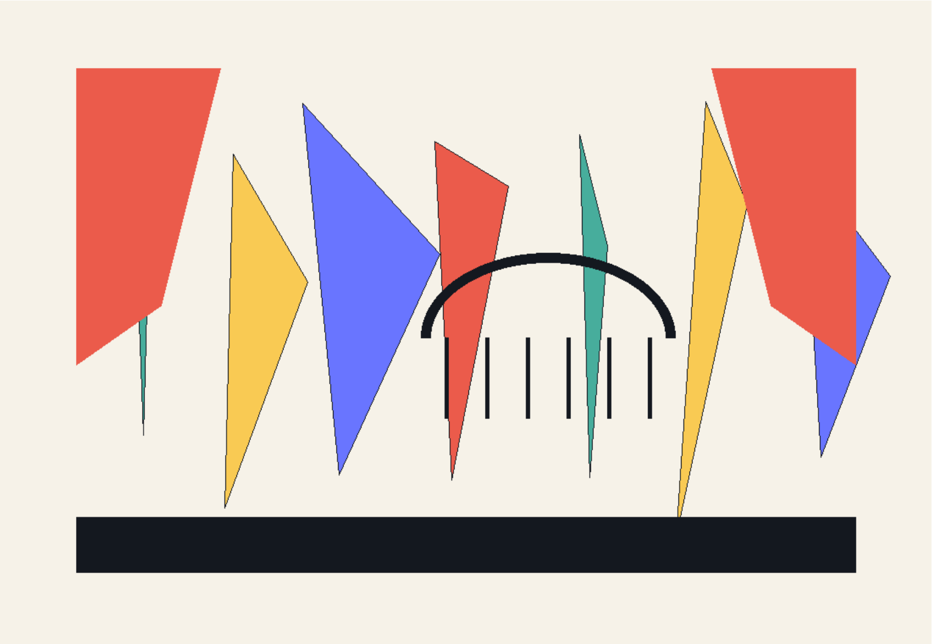

चित्र 1

स्टेजक एक कात किछु मजदूर सभ खट-खुट कऽ गिट्टी पजेबा तोड़ि रहल छथि। दूरसँ गंगाक धारक मद्धिम स्वर, बीच-बीचमे पुलक लोहारि कराह, आ हथौड़ीक चोट सुनाइ दैत अछि। लगैए जे

गंगापुलक मरोम्मति भऽ रहल अछि; किछु मजदूर जय माँ गंगे कहि मंचक नीचाँ प्रणाम सेहो कऽ

रहल छथि। स्टेजक दोसर कात दूटा लोक नीचाँ राखल नगाड़ा-ढोलपर चोट दऽ रहल अछि। तखने

एकटा ढोलहो देनहारक प्रवेश।

ढोलहो देनहार : गंगा ब्रिज। पवित्र गंगापर बनल ऐ पुलक मरोम्मति लेल मजदूर चाही। स्त्री-पुरुष, बाल-वृद्ध सभ कियो आवेदन दऽ सकै छथि। (ढोलहो दैत, पुलक कराहसँ अपन स्वर ढकबाक कोशिश करैत) सुनै जाउ, सुनै जाउ।... गंगा ब्रिज। पवित्र गंगापर बनल ऐ पुलक मरोम्मति लेल मजदूर चाही। मजदूरक नाम लिखाइत रहत, पुलक चिप्पी लगैत रहत।

एकटा लोक (डंका बजेनाइ छोड़ि काज करैत मजदूर सभकेँ अकानैत ढोलहो देनहार लग अबैए , मुदा दोसर लोक आस्ते आस्ते डंका बजबिते रहैत अछि): देखै छिऐ जे काज तँ चलिये रहल छै, तखन फेर?

ढोलहो देनहार: (ओइ लोक दिस ध्यान नै दैत कृत्रिम रूपसँ बजैत) एतबे मजदूरसँ काज नै चलतै। पूरा पुल हिल रहल छै। (ढोलहो दैत) सुनै जाउ, सुनै जाउ।... गंगा ब्रिज। पवित्र गंगापर बनल ऐ पुलक मरोम्मति लेल मजदूर चाही। स्त्री-पुरुष, बाल-वृद्ध सभ कियो आवेदन दऽ सकै छथि।

दोसर लोक (डंका बजेनाइ छोड़ि कऽ ढोलहो देनहार लग अबैए): एतबे दिनमे कोना ई हाल भऽ गेलै। सुनै छिऐ जतेक पाया ऐ पुलमे छै ततेक कताक करोड़ टाका एकरा बनबैमे खर्च भेल रहै।

ढोलहो देनहार: (अहू लोक दिस ध्यान नै दैत कृत्रिम रूपसँ बजैत) काज ढंगसँ नै भेल रहै। सुनै जाउ, सुनै जाउ...। गंगापर बनल ऐ पुलक मरोम्मति लेल मजदूर चाही। स्त्री-पुरुष, बाल-वृद्ध

सभ कियो आवेदन दऽ सकै छथि। सुनै जाउ, सुनै जाउ।

एकटा लोक: (दर्शक दिस तकैत) देखै छिऐ, जहिया बनिये रहल छलै, बनि कऽ तैयारो नै भेल रहै, तहियेसँ ऐ पुलक मरोम्मति शुरू छै।

दोसर लोक: (ओइ लोकपर ध्यान नै दैत दर्शक दिस तकैत) चिप्पीपर चिप्पी पड़ि रहल छै। उद्घाटनसँ पहिनहिये सँ चिप्पी पड़नाइ शुरू भऽ गेल रहै।

ढोलहो देनहार: (दुनू लोकपर ध्यान नै दैत आँखि मुनैत बजैत) सरकारी पुल छिऐ, चिप्पी नै पड़तै तँ इन्जीनियर आ ठिकेदारक घरपर छज्जा कोना पड़तै। सुनै जाउ, सुनै जाउ...।

एकटा लोक: (ढोलहो बल दिस आब मुँह करैत बजैए) हौ ढोलहोबला, से तँ बुझलिऐ, मुदा से ने कहऽ जे दुनियाँ मे आनो ठाम पुल बनै छै, से ओतुक्का इन्जीनियर आ ठिकेदारक घरपर छज्जा पड़ै छै आकि नै हौ।

ढोलहो देनहार: (ओइ लोक दिस अचकचा कऽ तकैत) किजा ने गेलिऐ, मुदा सुनै छिऐ अंग्रेजबला पुल मजगूत होइ छलै। (दर्शक दिस तकैत) सुनै जाउ, सुनै जाउ...।

दोसर लोक: (पहिल लोक दिस आब मुँह करैत बजैए) हौ, अनेरक पाइ आबै छलै लूटिक तँ जे एकाध टा पुल अंग्रेज बनेलकै से मजगूते ने हेतै हौ।

एकटा लोक: (दोसर लोक दिस आब मुँह करैत बजैए) ई इन्जीनियर आ ठिकेदार सभ लूटिमे अंग्रेजसँ कम नै छै, मुदा पुल मजगूत किए नै बनबै छै हौ। ओइ बनबैमे अंग्रेज सन किए नै छै हौ।

दोसर लोक: (पहिल लोक दिस मुँह करैत बजैए) मजगूत बना देतै तँ फेर मरोम्मतिक ठेका कोना भेटतै हौ। (ढोलहो बल दिस आब मुँह करैत बजैए) की हौ ढोलहोबला..

ढोलहो देनहार: (दोसर लोकक गपपर ध्यान नै दैत) किजा ने गेलिऐ। सुनै जाउ, सुनै जाउ...। गंगापर बनल ऐ पुलक मरोम्मति लेल मजदूर चाही। स्त्री-पुरुष, बाल-वृद्ध सभ कियो आवेदन दऽ सकै छथि। सुनै जाउ, सुनै जाउ।

(ढोलहो बला चलि जाइए।)

पहिल लोक:आब सरकारो की करतै, लोके सभ गड़बड़ छै।

दोसर लोक:लोक ककरा कहै छिहीं, हम आ तूँ।

पहिल लोक: नै रौ। इन्जीनियर आ ठिकेदार।

दोसर लोक:धुर बूड़ि, आब अंग्रेजक सरकार थोड़बे छै।

पहिल लोक:तँ की अर्थ बदलि जेतै।

दोसर लोक: हँ रौ।

पहिल लोक: तँ इन्जीनियर आ ठिकेदार लोक नै भेलै।

दोसर लोक:नै।

पहिल लोक:तँ की भेलै।

दोसर लोक: ओ सभ भेलै सरकार।

पहिल लोक: धुत्, सरकार मनुक्ख थोड़े होइ छै।

दोसर लोक:मनुक्खे होइ छै। राजो महराजा सभ जखन मनुक्खे होइ छलै, अंग्रेजो सभ जखन मनुक्खे होइ छलै तखन ई तँ स्वतंत्र भारतक सरकार छिऐ।

पहिल लोक:अच्छा, तखन पटना आ दिल्ली मे सरकार छै से की छिऐ रौ।

दोसर लोक: ओहो सरकारे छिऐ।

पहिल लोक:धुर्, ई इन्जीनियर तँ गामेक लोक छै। गामक लोक कतौ सरकार भेलै हँ, गाममे तँ जमीन्दारक अमला टा कँे लोक सरकार कहै छै।

दोसर लोक:आदति छै लोककँे तँ जमीन्दारक अमलाकँे अखनो सरकार कहै जाइ छै। किछु दिन बिततै, ओकरा सभकँे लोक सरकार नै कहतै।

पहिल लोक: तूँ तँ अन्तर्यामी बुझाइ छँे। आर सभ की हेतै रौ।

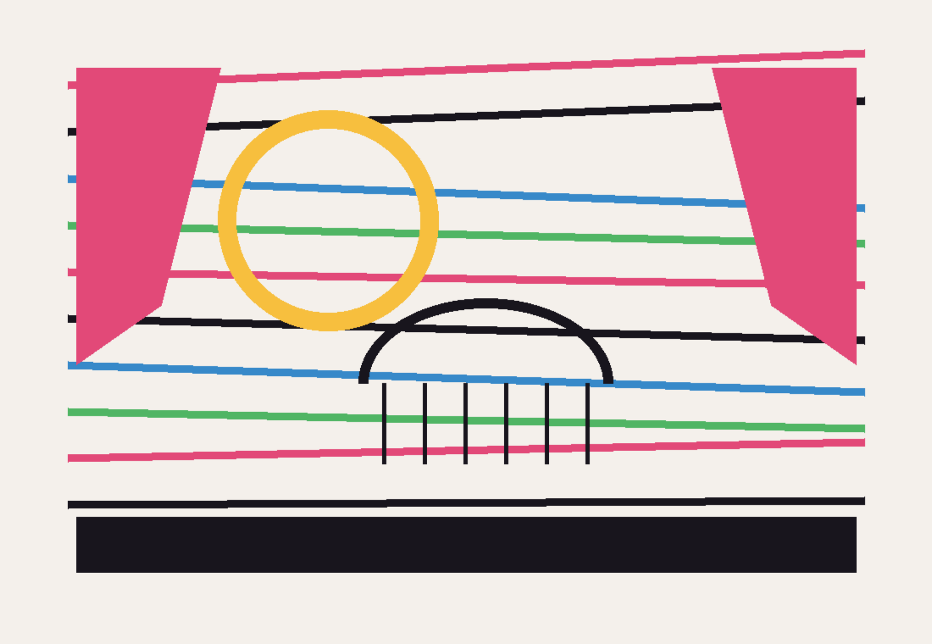

चित्र 2

दोसर लोक:सरकार इन्जीनियरकेँ बहाल केने छै, ठिकेदारसँ काज करबै छै, ई सभ सरकार छिऐ। ई सभ जे चाहते सएह हेतै।

पहिल लोक:हमरा आ तोरासँ किछु नै हेतै?

दोसर लोक:हम आ तूँ किछु लोककेँ चुनबै। ई सभ ओकरा सभक कहलमे रहतै।

पहिल लोक:रौ, सरकारी कर्मचारीमे तँ गामक चौकीदारो छै, ऑफिसक चपरासीयो छै। तँ ओहो सभ सरकार भऽ गेलै।

दोसर लोक:हँ रौ।

पहिल लोक:तखन अपने सभ खाली लोक भेलिऐ। जे करतै यएह सभ करतै।

दोसर लोक:अपने सभ चुनबै, आ ओकरा सभक कहलमे ई सभ रहतै।

पहिल लोक: माने अपने सभक कहल मे रहतै (किछु ओकरा बुझाइ नै छै, मुँहपर भाव अबै-छै जाइ छै।)

दोसर लोक:हँ, सएह ने भेलै।

पहिल लोक: (किछु ओकरा बुझाइ नै छै, मुँहपर भाव अबै-छै जाइ छै।) देखा चाही सरकारक राज....

पाछाँसँ दू-दूटा तिरंगा झण्डा लेने बच्चा सभ अबैए। संगमे दूटा शिक्षक छै। एकटा शिक्षक (बा शिक्षिका) आगाँ-आगाँ आ एकटा शिक्षक (बा शिक्षिका) पाछाँ-पाछाँ चलि रहल छथि। सभ मजदूरकेँ एक-एकटा झण्डा दऽ देल जाइ छै। “ओइ दुनू टा लोककेँ सेहो एक-एकटा झण्डा देल जाए”- ई गप शिक्षक इशारामे कहै छथि, मुदा झण्डा घटि गेलै, से ओ दुनू खाली हाथ रहि जाइ छथि आ सभक मुँह ताकऽ लगै छथि।

मजदूरक सोझाँ ओ दुनू लोक ठाढ़ भऽ जाइए आ फेर डंके लग आबि ठाढ़ भऽ जाइए आ आश्चर्यसँ देखऽ लगैए।

त्रिवार्णिक झण्डा लऽ कऽ बाकी सभ गोटे मंचपर छितरा जाइ छथि आ स्टेजपर ठाढ़ भऽ जाइ छथि। उल्लासक वातावरण सगरे पसरल अछि, दुनू लोककेँ छोड़ि सभक मुँहपर (मजदूर सभक सेहो) हँसी-प्रसन्नता आबि जाइ छै।

जखन सभ ठाढ़ भऽ जाइ छथि तखन दुनू शिक्षक (वा शिक्षिका) बच्चा सभक आगाँ आ दर्शक सभक सोझाँ ठाढ़ भऽ जाइ छथि।

“१५ अगस्त” ई नारा दुनू शिक्षक बाजै छथि आ “स्वतंत्रता दिवस” ई सभ मिलि कऽ (दुनू लोक केँ छोड़ि कऽ) बाजै छथि।

शिक्षक (वा शिक्षिका) १: बौआ-बुच्ची। आइ ई त्रिवार्णिक झण्डा हमरा सभक हाथमे फहरा रहल अछि। पहिने हम सभ दोसराक अधीन छलौं, पराधीन छलौं, ई झण्डा झुकल छल, फहरा नै सकै छलौं। झण्डा फहराइत रहए ओइ लेल हमरा सभकेँ जोर लगाबैत रहऽ पड़त। (चारू दिस हाथ पसारैत) ऐ इलाकामे आब खुशी पसरत। जमीन्दारक राज खतम भऽ गेल। सभ कियो पढ़ि सकै छथि। झगड़ा-झाँटी, युद्ध, आब सभ खतम भऽ गेल। हमरा सभक जीवनमे एकटा नवका भोर आएल अछि। नवका शिक्षा, नवका खेतीक चलनि हएत।

शिक्षक (वा शिक्षिका) २: बड़का चिमनीक धुँआ आ बड़का-बड़का बान्ह। बिलैंतसँ आबैबला सभ समान चिमनीबला फैक्ट्रीमे तैयार हएत। बड़का-बड़का बान्ह ओइ धारकेँ बान्हि-छेक कऽ सञ्जत कऽ देत। खूब उपजत खेत, बर्खा बरखत इन्द्रक नै, हमरा सभक प्रतापसँ। खेते-खेत बहत धार, हएत पटौनी। छोट-पैघक भेद मेटा जाएत।

शिक्षक (वा शिक्षिका) १: छोट-पैघक भेद मेटा जाएत? बड़का चिमनीक धुँआ आ बड़का-बड़का बान्ह छोट-पैघक भेद मेटाएत?

शिक्षक (वा शिक्षिका) २: हँ। पटौनी हएत खेते-खेत। बिलैंतसँ आबैबला सभ समान आब एतै चिमनीबला फैक्ट्रीमे तैयार हएत।

शिक्षक (वा शिक्षिका) १: बड़का बान्ह आ बड़का फैक्ट्रीसँ ढेर रास समस्या सेहो आबै छै। ओकर निदान जरूरी छै। विकास एकभग्गू भऽ जाएत।

शिक्षक (वा शिक्षिका) २: विकास एकभग्गू कोना हएत?

शिक्षक (वा शिक्षिका) १: बड़का फैक्ट्री सभ ठाम नै लागि सकत, कतौ-कतौ लागत, ओतऽ बोनिहारक पड़ैन हएत। बड़का बान्ह बनलासँ ओकर भीतरक गामसँ सेहो लोकक पड़ैन हएत। बड़का बान्ह जँ मजगूत नै हएत तँ ओ टूटत आ प्रलय आएत। बड़का फैक्ट्री आ बड़का बान्ह लोकक जिनगीकेँ छहोछित कऽ देत।

शिक्षक (वा शिक्षिका) २: एक पीढ़ीकेँ तँ बलिदान देबैए पड़त। बच्चा सभ, बाजै जाउ। अहाँ

सभ देश लेल अपनाकेँ समर्पण करब आकि नै।

शिक्षक (वा शिक्षिका) १: बच्चा सभ, बाजै जाउ, अहाँ सभ की बनऽ चाहै छी। समाजकेँ की देबऽ चाहै छी।

बच्चा १: हम इन्जीनियर बनब आ सड़क, पुल, नहर बनाएब। जइसँ लोकक दुःख दूर हेतै।

बच्चा २: हमहूँ इन्जीनियर बनब। बड़का-बड़का बान्ह, बड़का-बड़का चिमनीक धुँआ। धुँआ सुंघैमे हमरा बड्ड नीक लागैए। कतेक नीक दिन आएत, बड़का-बड़का बान्ह, बड़का-बड़का चिमनी देश भरिमे पसरि जाएत।

बच्चा १: मुदा धुँआसँ खोँखी होइ छै। हमर माए खोँखी करैत रहैए। हमरा धुँआसँ परहेज अछि।

बच्चा २:मुदा हमर माए तँ भनसाघर जाइतो नै अछि। मुदा हम जाइ छी, चोरा-नुका कऽ, आ धुँआक गंध, बड़का देवार, ई सभ हमरा बड्ड नीक लगैए।

भाग २ : निर्माणक कठिनाइ

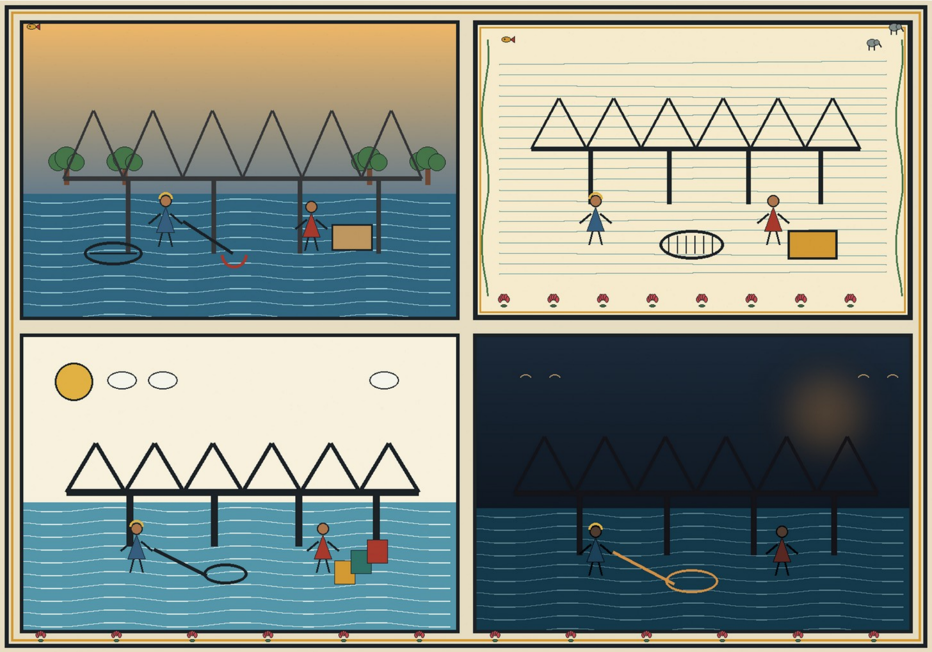

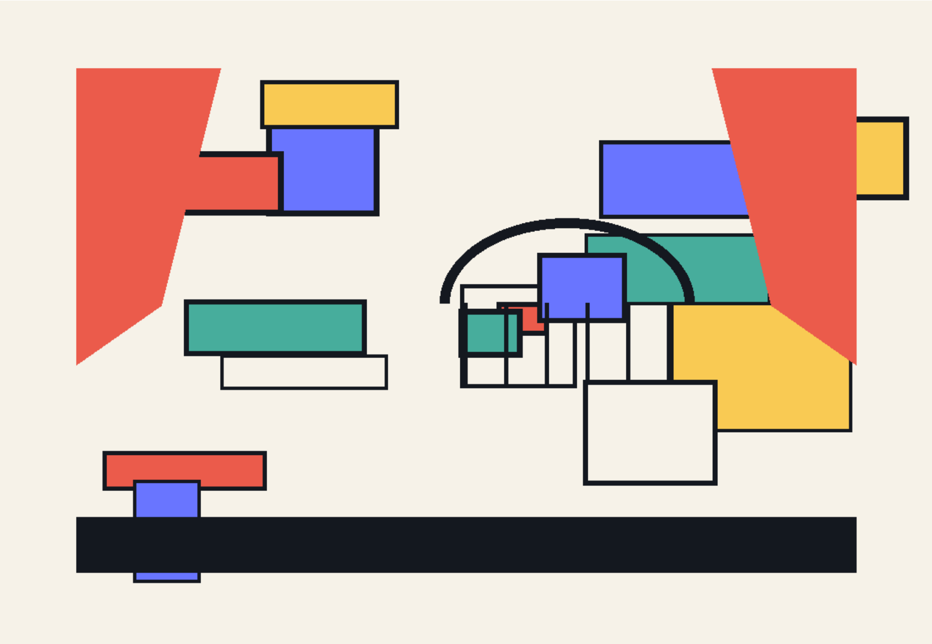

चित्र 3

(एकटा बच्चाक धरफड़ाइत प्रवेश)

बच्चा-३: हमर बकड़ी देखलिऐ यौ।

(सभ चुप्प भऽ ओकरा दिस देखऽ लागैए।)

बच्चा ३: (मुँहपर हाथ रखैत, कने हँसैत) पढ़ाइ होइ छै एतऽ यौ। जय भारत, जय भारत, जय

भारत.. हमर बकड़ी (पाछाँ दिस तकैत).. ओम्हर देखै छी। बकड़ी भागल तँ भेटिये जेतै, मुदा हम जे स्कूलसँ भागल छी, से फेर कोना पकड़ाइब?

(बच्चा ३ क प्रस्थान)

शिक्षिका २: नीक गप। मुदा विकास केहन हुअए, ई सभ हमरा सभक हाथमे नै अछि। पटना आ दिल्लीमे ई निर्णय हएत जे हमरा सभ लेल केहन विकास हेबाक चाही।

शिक्षिका १: नीक गप। नीक गप जे हमरा सभक विकास लेल पटना आ दिल्लीमे सोचल जा रहल अछि। मुदा ओतऽ बैसि कऽ वा एकाध दिनक हलतलबीमे कएल दौड़ासँ ओ सभ उचित निर्णय लऽ सकता? जे से, मुदा हम सभ समाज लेल काज करी, से सतत ध्यान रहए। पूरा इमानदारीसँ, जान जी लगा कऽ ऐ देशक इतिहास हमरा सभकेँ बनेबाक अछि, से ध्यान रहए। आइ १५ अगस्त १९४७ केँ हम ई प्रण ली, वचन दी।

सभ बच्चा: हम सभ वचन दै छी, हम सभ पूरा इमानदारीसँ जान जी लगा कऽ ऐ देशक नव इतिहास लिखब।

(“१५ अगस्त” ई नारा दुनू शिक्षक बाजै छथि आ “स्वतंत्रता दिवस” ई सभ मिलि कऽ (दुनू

लोक केँ छोड़ि कऽ) बाजै छथि, दुनू लोक मंचक कोनमे कतिआएल सन ठाढ़ छथि। बच्चा आ

शिक्षक सभ मजदूर सभसँ झण्डा आपस लऽ लै छथि। मजदूर सभ फेर बैसि कऽ ठक-ठुक करऽ लगैए। दुनू लोक ओतै हतप्रभ ठाढ़ रहैए। फेर पर्दाक पाछाँ कोनमे देखऽ लगैए जेना ककरो एबाक प्रतीक्षा कऽ रहल हुअए। तखने दुनू हरबड़ा कऽ जाइए आ एकटा कुर्सी आनि कऽ राखैए। एकटा

४०-४५ बर्खक अभियन्ता मंचपर अबैए। अभियन्ता कनेक हाँफि रहल अछि, कुर्सी देखिते ओ धबसँ

ओइ कुर्सीपर बैसि जाइए। फेर साँस स्थिर कऽ ठाढ़ होइए। ठक-ठुक बन्द भऽ जाइ छै आ मजदूर सभ फ्रीज भऽ जाइए, ओ दुनू लोक कोन दिस डंका लग चलि जाइए आ फ्रीज भऽ जाइए। अभियन्ता बाजऽ लगैए।)

अभियन्ता: (कुर्सीकेँ झमाड़ैत) एना। एना हिलि रहल अछि ई, ई गंगा ब्रिज। सीमेन्ट, बालु, गिट्टीक कंक्रीटसँ बनल ई पुल कठपुलासँ बेशी हिलैए। जहिया आबै छी, मरोम्मतियेक काज चलैत रहै छै। वन-वे, एक दिस; एक्के दिसुका मात्र भऽ कऽ रहि गेल अछि ई। एक्के दिस पुल खुजल छै, दोसर दिस कोना चलत, अदहा पुलपर मरोम्मतिक काज भऽ रहल अछि। (तखने ओ आभासी रूपमे हिलऽ लगैए आ ओकर बाजब थरथरा उठै छै।) ई पुल तँ एत्ते हिलि रहल अछि जत्ते गामक कठपुलो नै हिलैए।

(तखने एकटा ठिकेदार अबैए।)

ठिकेदार (अभियन्तासँ): हइ इन्जीनियर। तोहूँ वएह कऽ वएह रहि गेलेँ। बालुकेँ एना कऽ चालनिसँ चालू, ओना कऽ चालू, जेना ओ चाउर दालि हुअए मुदा हम सेहो चाललौं। ठीक छै ठीक छै। तूँ कहै छलेँ जे रोटी बनेबा लेल जेना चालै छी तहिना पुल बनेबा लेल चालू, तखने नीक रोटी सन नीक पुल बनत। ठीक छै ठीक छै। फेर एतेक सीमेन्ट, एतेक बालु, एतेक.. हम कहने रही जे हम तोहर सभ गप मानब, मुदा तखन नेता, दोसर इन्जीनियर, गुण्डा, एकरा सभकेँ कमीशन कतऽ सँ देबै? तोरा कहलासँ बालु चालऽ लगलौं आ कमीशन बन्द कऽ देलिऐ। हमर तँ किछु नै भेल मुदा तोहर बदली भऽ गेलौ, तोहर दरमाहा बन्न भऽ गेलौ। बच्चा सभक नाम स्कूलसँ कटाबऽ पड़लौ, गाम पठाबऽ पड़लौ बच्चा सभकेँ। हम कहने रहियौ तोरा, जे बालु चालब, एतेक सीमेन्ट, एतेक बालु, सभ निअमसँ देबै। हमरा की? इलाकाक पुल, सड़क... जतेक मजगूत रहतै ततेक ने नीक। हमरो लेल नीके। मुदा हमरा बूझल छल जे तोहर बदली भऽ जेतौ। चीफ इन्जीनियर, नेताक दहिना हाथ.. पहिने हमरे कहने रहए तोरा रोलरक नीचाँमे पिचड़ा कऽ दैले.. बइमान चीफ इन्जीनियर। देख, पहिने हमरो होइ छल जे तोहूँ ओकरे सभ जेकाँ छेँ, अपन रेट बढ़ाबैले ई सभ कऽ रहल छेँ। मुदा बादमे हम देखलौं जे नै, तूँ अलग छेँ। मुदा हम की करू? हम अपन बच्चाक नाम स्कूलसँ नै कटबा सकै छी। मुदा जौँ तोरा सन चीफ इन्जीनियर आबि जाए.... कहियो से दिन आबए... तखन हम फेरसँ बालु चालब शुरू करब आ वएह चालल बालु, एत्ते बालु एत्ते सीमेन्टमे मिलाएब। एत्ते बालु, एत्ते सीमेन्ट, सभटा ओहिना जेना अहाँ तूँ कहै छलेँ। मुदा जखन तोरा सन

कियो आबए तखने किने। ताधरि तँ...

(अभियन्ता आ ठिकेदारक प्रस्थान। लागल जेना फ्रीज लोकक्कैं अभियन्ता आ ठिकेदारक गपक विषयमे बुझल नै भेलै जेना ई सभ आभाषी छल। दुनूटा लोक फ्रीज स्थितिसँ घुरि असथिरसँ डंका बजबऽ लगैए आ तखन मजदूर सभ सेहो फ्रीज स्थितिसँ आपस आबि जाइए आ फेरसँ ठकठुक करऽ लगैए। दुनू लोक डंकाक अबाज आस्ते-आस्ते तेज करऽ लगैए आ फेर ठक-ठुकक अबाज मद्धिम पड़ि जाइए आ डंकाक अबाजक संग पर्दा खसैए।)

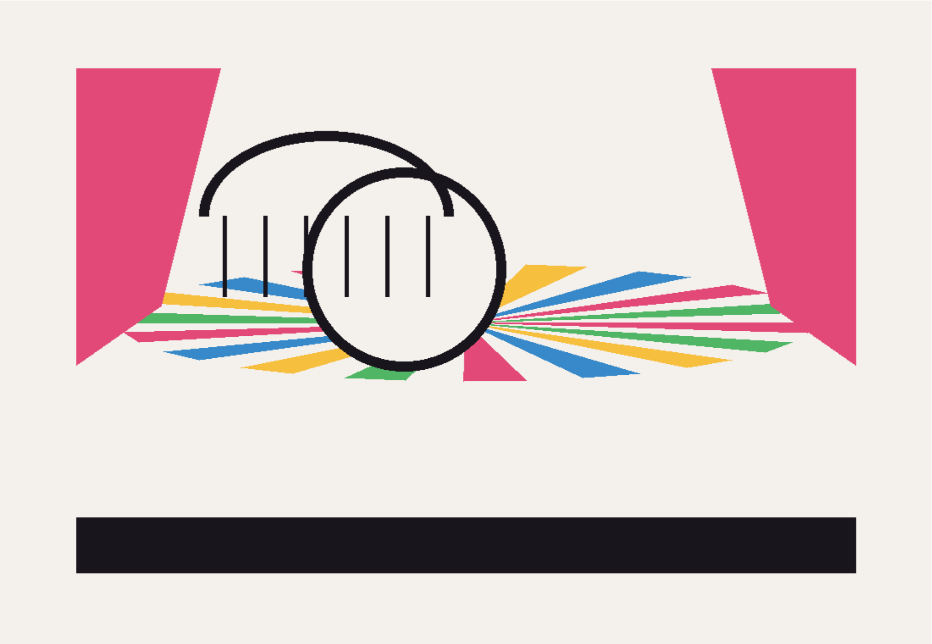

चित्र 4

पल्लव दू

(इन्जीनियरिंग कॉलेजक दीक्षान्त समारोह, विद्यार्थी सभ ठाढ़ अछि आ शिक्षक (बा

शिक्षिका) भाषण दऽ रहल छथि। अभियन्ता आ अभियन्ताक मित्र सेहो विद्यार्थी सभ मध्य ठाढ़ अछि।दुनू लोक डंकाक संग कोनमे बैसल अछि।)

शिक्षक/ शिक्षिका १: अहाँ सभक आइ ऐ इन्जीनियरिंग कॉलेजमे अंतिम दिन अछि। एतुक्का जीवन आ असल जीवनमे बड्ड अन्तर छै। आब अहाँ सभकेँ धूरा-गर्दामे जेबाक अछि। काज करबाक अछि। मोन लगा कऽ काज करबाक अछि। एतेक काज करबाक अछि जे ई खेत सोना उपजाबऽ लागए। लोकक जीवनमे समृद्धि आबि जाए। दिन-राति नै देखबाक अछि। यएह हमर दक्षिणा हएत। ऐ दीक्षान्त समारोहमे अहाँ सभसँ हम यएह आग्रह करै छी।

हमर देश, हमर लोक बड्ड मुश्किलसँ स्वतंत्र भेल अछि। मुदा ई स्वतंत्रता मानसिक रूपसँ आबि जाए तखन ने। आर्थिक रूपसँ हम दोसरासँ स्वतंत्र भऽ जाइ, ककरो आगाँ हाथ नै पसारऽ पड़ए, बजबाक स्वतंत्रता तखने आबि सकत। अभियन्ता माने बनेनहार, सर्जक। सड़क बनेनहार, नहर बनेनहार, पुला बनेनहार। अभियन्ता माने जोड़ैबला। ई पुल लोककेँ लोकसँ जोड़त। सड़क सभ बनत। लोकक जीवनमे गति आएत, दौगत जिनगी। नहरि, पोखरिसँ भरल इलाकामे सोना उपजत।

(विद्यार्थी सभक करतल ध्वनि।)

शिक्षक/ शिक्षिका २:अहाँ सभकेँ बड़का-बड़का काज करबाक अछि। बड़का-बड़का बान्ह बनेबाक अछि। ओहीसँ विकास हेतै, ओहीसँ तेजीसँ विकास हेतै। सगरे विश्वमे अही तरहेँ विकास भेल छै। भारतकेँ स्वतंत्रता भेटल छै, आ ई स्वतंत्रता तखने काएम रहि सकत जखन तेजीसँ विकास हएत। आ तेजीसँ विकास हएत बड़का-बड़का फैक्ट्री आ बड़का-बड़का बान्हसँ।

शिक्षक/ शिक्षिका १: ओना तँ हमरा विकासक ओइ बड़का पथसँ मतभिन्नता अछि, कारण बड़का फैक्ट्रीमे हमर लोक मजदूरे बनि कऽ ने रहि जाए, बड़का मजगूत पक्का बान्ह बनबैमे जतेक पाइ चाही तत्ते ऐ देश लग छैहो नै, तखन बड़का कच्ची बान्ह कतेक गामकेँ अपन पेटमे लेतै, ओतेक मजगूत नै रहतै, टुटैत भंगैत रहतै, सदिखन ओकर मरोम्मतिये होइत रहतै।

शिक्षक/ शिक्षिका २: मुदा मुजफ्फरपुरक ऐ दीक्षान्त समारोहमे विकासक पथक दिशा नै तय कएल जा सकैए। ओ तँ दिल्ली आ पटनेमे तय हएत। आब...(जोरसँ बजैत) ऐ दीक्षान्त समारोहमे सभसँ बेशी नम्बर लऽ कऽ पास केनिहार छात्रकेँ हम बजबऽ चाहै छियन्हि।

(अभियन्ताकेँ हाथक इशारासँ बजबैए आ मेडल पहिराबैए)।

(विद्यार्थी सभक करतल ध्वनि। शिक्षक/शिक्षिकाक प्रस्थान।)

अभियन्ताक मित्र: दोस। अभियंत्रणक पढ़ाइमे तँ तूँ बाजी मारि गेल छेँ। आब असल जिनगी शुरू हएत। देखी ओतऽ के बाजी मारैए।

अभियन्ता: अभियन्ताक जीत छै जे ओकर बनाएल पुल कतेक मजगूत छै, ओकर बनाएल नहरि आ बान्ह पानिक निकासीमे बाधा तँ नै दै छै। ओ लोकक जिनगी सुखी बना पाबैए आकि नै। काज समयसँ पूर्ण होइ छै आकि नै। ओइ परीक्षामे ककरा कतेक नम्बर अबै छै तहीसँ ओकर जीत-हारि

निर्धारित हेतै।

अभियन्ताक मित्र: बड़का काजमे कने-मने गलती तँ होइते रहै छै, हेबे करतै। जे कहीं भाइ, हमरा तँ बड़का छहर, बड़का फैक्ट्री, बड़का चिमनी बड्ड नीक लगैए। धुँआक सुगन्ध तँ हमरा बच्चेसँ नीक लगैए, तोरा तँ बुझले छौ।

अभियन्ता:आ हमर माएकेँ धुँआसँ खोँखी होइ छै, हमरा धुँआ नीक नै लगैए। तोरा तँ बुझले छौ।

अभियन्ताक मित्र:देख भाइ, हमरा आ तोरामे की अन्तर अछि। हम तँ ओइ पथपर आगाँ बढ़ि जाएब जे दिल्ली बा पटना हमरा लेल निर्धारित करत। मजगूत बड़का पक्का बान्ह बनाबैले कहत तँ से बनेबै, कमजोर बड़का कच्चा बान्ह बनाबैले कहत तँ से बनेबै। जे उपरका हाकिम कहत से करबै।

अभियन्ता: चाहे ओ नीक हुअए बा खराप।

अभियन्ताक मित्र: ऊपरमे बैसल छै तँ कोनो गुण छै तेँ नै बैसल छै। आ गुणी लोक अधला गप किए कहतै?

अभियन्ता:तखन एतऽ पढ़ि कऽ, ज्ञान अर्जित कऽ कऽ की फाएदा?

अभियन्ताक मित्र:छोड़ भाइ।

अभियन्ता:जीत आ हारिमे बड्ड कम अन्तर होइ छै। जीत आ हारिक परिभाषामे सेहो बड्ड अन्तर छै। जे काज हम गलत बुझै छिऐ, जे मार्ग हम गलत बुझै छिऐ ओइ काजकेँ हम कोना करब, ओइ मार्गपर हम कोना बढ़ब।

अभियन्ताक मित्र: भाइ, जेना जीत आ हारिक परिभाषा अलग होइ छै तहिना तँ सही आ गलत काज, सही आ गलत मार्गक सेहो अलग-अलग परिभाषा होइत हेतै। जे कुर्सीपर बैसल छै, ओकरा लेल गलत चीज सेहो फाइलमे सही बनि जाइ छै।

अभियन्ता: होइत हेतै ककरो लेल, मुदा पुलक पाया फाइलक परिभाषा नै मानै छै। सही तँ सही

भाग ३ : स्वार्थ आ समझौता

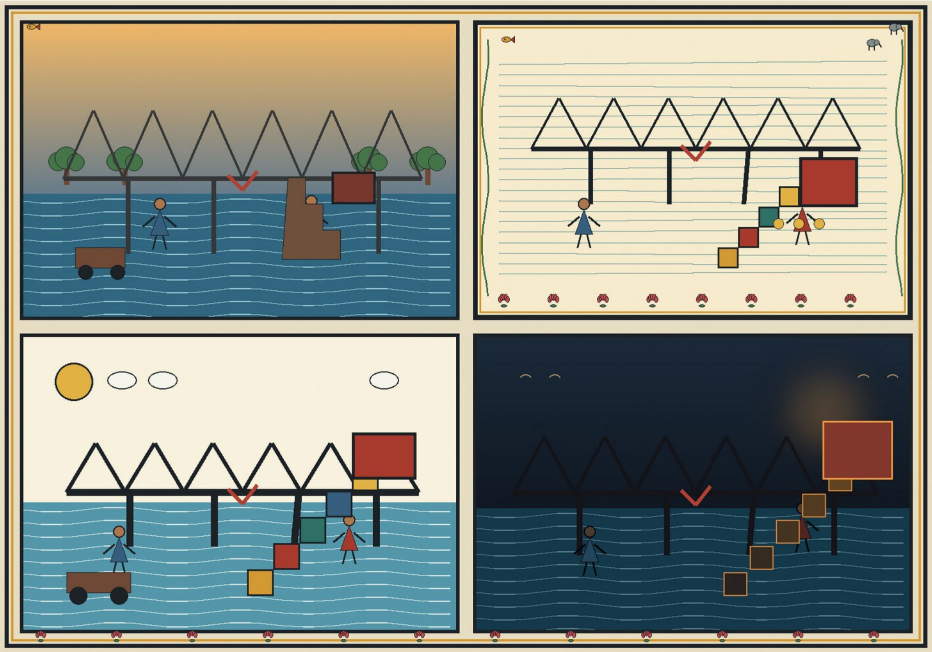

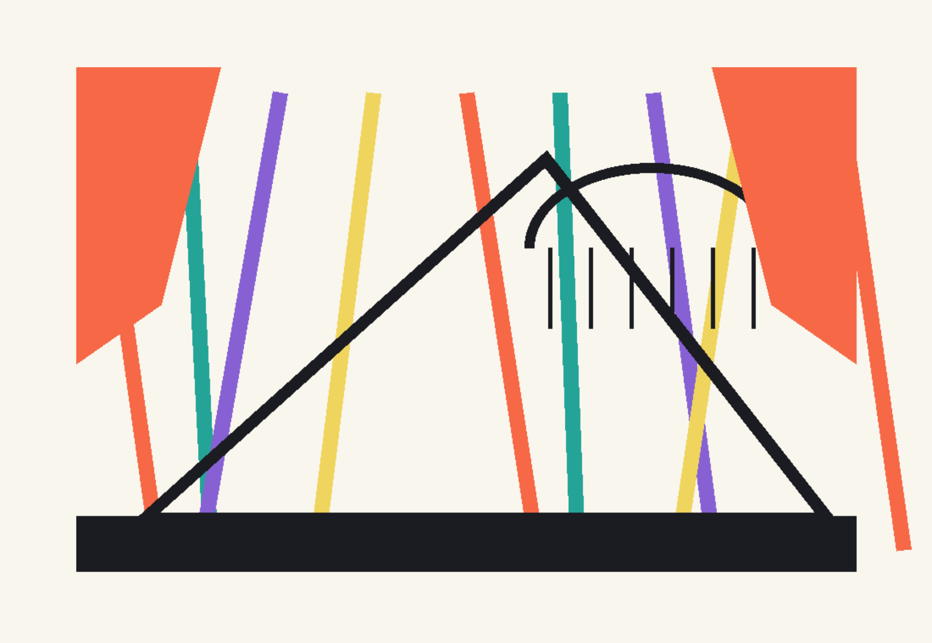

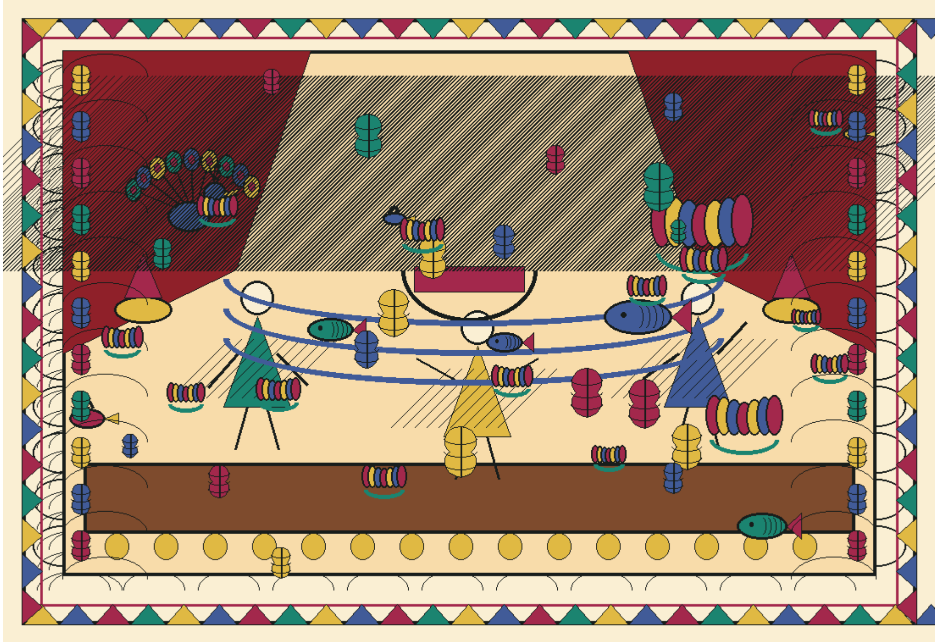

चित्र 5

रहतै आ गलत गलते रहतै; गलती कागजपर दबि सकै छै, नदीमे नै।

अभियन्ताक मित्र: देख भाइ। हम तँ सुखितगर परिवारसँ छी, मुदा तूँ तँ साधारण परिवारसँ छैं। हम तँ कमाइ-धमाइ नै करब, गलत-सलत नै करब तैयो हमर परिवारकेँ फर्क नै पड़तै। मुदा तोरापर तँ पूरा परिवार निर्भर छै, आस लगेने छौ।

अभियन्ता: भाइ, ई स्वतंत्रता तँ सभ लेल आएल छै। तोरा लागै छौ जे हम गरीब छी, आ कियो तेहनो छै जे हमरोसँ बेशी गरीब आ लचार अछि। किछु एहनो छै जे तोरासँ बेशी धनीक आ सामर्थ्यवान छै।

अभियन्ताक मित्र: जेना..

अभियन्ता: ओ सभ जे सभ आदेश देतै आ तूँ आँखि मूनि कऽ तकर बात मानबैं।

अभियन्ताक मित्र:देखहीं। आब पुरनका जमीन्दारी तँ गेलै। आब जे नबका देश सभ छै ओइमे ओही लोक सभक चलती हेतै जे नवका व्यवस्थामे पैसि पेतै। जे नवका जमीन्दार चुनावमे जीत जेतै, से बचतै, बा जकर बच्चा नवका सरकारमे आगाँ जेतै से बचतै। तकरे धन बचते, तकरे ऐश्वर्य काएम रहतै।

अभियन्ता: आ आगाँ बढ़ब माने?

अभियन्ताक मित्र: माने सत्ताक ऊपर, सत्ताक सीढ़ीक ऊपर, जतेक ऊपर जे चढ़तै से ततेक पैघ सत्ताबला हेतै। तोरा लग ई मौका आएल छौ आ हमरो लग आएल अछि। मुदा दुनूमे कनी अन्तर सेहो छै। तोरा सत्ता प्राप्त करबाक छौ आ हमरा सत्ता बचेबाक अछि।

अभियन्ता:की ओइसँ तूँ तृप्त भऽ जेमे।

अभियन्ताक मित्र:से आइ कोना कहियौ? से तँ जिनगीक अन्त कालेमे कहल जा सकैए।

अभियन्ता:मुदा जिन्गीक अन्तकालमे जँ तोरा बुझाउ जे ई सभ सत्ता भ्रम रहए, जे असल तृप्ति नै भेटल, तखन?

अभियन्ताक मित्र: तखन तखने सोचबै? अखन तँ सएह सोचाएल अछि जे कहलियौ।

अभियन्ता: आ तहिया जँ घुरबाक मोन हेतौ तखन कोना घुरबेँ?

अभियन्ताक मित्र: चल, पश्चाताप कऽ लेब तहिया। मुदा जँ से तोरा संग हौ? तखन तूँ कोना घुरबेँ?

अभियन्ता: सही गलत केना भऽ जेतै भाइ।

अभियन्ताक वर्ग: यएह जिद ने तोरा खा जाउ। आइ खुशीक मौका छै, आइ तूँ जीतल छेँ तँ आइ तोरे गप सही, मुदा आइये धरि।

(तखने दुनू लोक डंका बजबऽ लगैए। अभिन्ता, अभियन्ताक मित्र संग सभ विद्यार्थी मंचसँ

बहरा जाइए।)

(बच्चा ३ जे आब पैघ भऽ गेल अछि आ ठेला चलबैए, प्रवेश करैए।)

ठेलाबला: हमर ठेला कियो गुरका कऽ लऽ गेल। (दुनू लोकसँ) ई भीड़ कतऽ गेलै हौ। पैघ पढ़ाइ बला कॉलेज छिऐ, की बदलतै पढ़ि कऽ, देखा चाही। हमरो नाम ककरो रजिस्टरमे चढ़तै कि खाली ठेला आ देह दुनू गुरकि-गुरकि चलिते रहत? ठेला देखलहक हौ हमर? कियो लऽ गेल गुरका कऽ।

(प्रस्थान)

पहिल लोक: (दोसर लोकसँ) रौ, ई कोन कॉलेज छै रौ।

दोसर लोक:सरकार बनबै छै ई कॉलेज।

पहिल लोक:सरकार बनबै छै?

दोसर लोक:हँ रौ सरकार बनबै छै।

पहिल लोक:मुदा ओ इन्जीनिअर तँ कहै छलै जे ओ सरकार नै बनत। लोके रहत।

दोसर लोक:मुदा ओकर संगी की कहै छलै से नै सुनलहीं।

पहिल लोक:सुनलिऐ, ओकरा तँ कनी बेसिये हरबड़ी छलै।

दोसर लोक:एहेन आनो स्कूल कॉलेज छै रौ, सरकार बनाबैबला।

पहिल लोक:ठीके रौ।

दोसर लोक:हँ रौ ठीके।

पहिल लोक:ओतौ दू तरहक विद्यार्थे तँ नै हेतै रौ?

दोसर लोक:सभ ठाम दू तरहक विद्यार्थी रहै छै। एकटा जे सरकार बनि जाइ छै आ दोसर जे लोके बनल रहऽ चाहै छै।

पहिल लोक:आ से सरकारोमे रहै छै की? आ लोकमे?

दोसर लोक:सरकारोमे लोक रहै छै आ लोकोमे सरकार।

पहिल लोक: (ओकरा किछु नै फुराइ छै) एक्के कॉलेज, एक्के स्कूल आ दू तरहक विद्यार्थी?

दोसर लोक: सभ स्कूल आ कॉलेजमे दू तरहक मास्टर रहै छौ रौ बूड़ि। दू तरहक विचार घुरमैत रहै छै ओइ स्कूल कॉलेजमे। तरा-उपड़ी..

पहिल लोक:विद्यार्थी सभकेँ तँ घुरमा लागि जाइत हेतै रौ।

दोसर लोक:घर-पड़ोसी, सेहो तँ स्कूले छिऐ ने रौ बूड़ि। सेहो असरि करतै की नै।

पहिल लोक: (डंकापर एकटा चोट दैए आ फेर सोच लगैए) असरि करतै? (फेर डंकापर एकटा चोट दैए) असरि करबे करतै।(सोचऽ लगैए) देखा चाही की होइ छै।

(दोसर लोक डंकापर एकटा चोट दैए। पहिल लोक दोसर दिस ताकऽ लगैए। फेर एकटा चोट पहिल लोक दैए, फेर दोसर लोक डंकापर चोट दैए। आ फेर दुनूक मुँहपर हँसी आ बेरा-बेरी डंकापर चोट दैत डंकाक गति बढ़ऽ लगैए। पर्दा खसैत अछि।)

पल्लव तीन

(गामक दृश्य। अंगनामे अभियन्ताक बतही माए आ कनियाँ काकी बैसल छथि, आ अभियन्ता ठाढ़

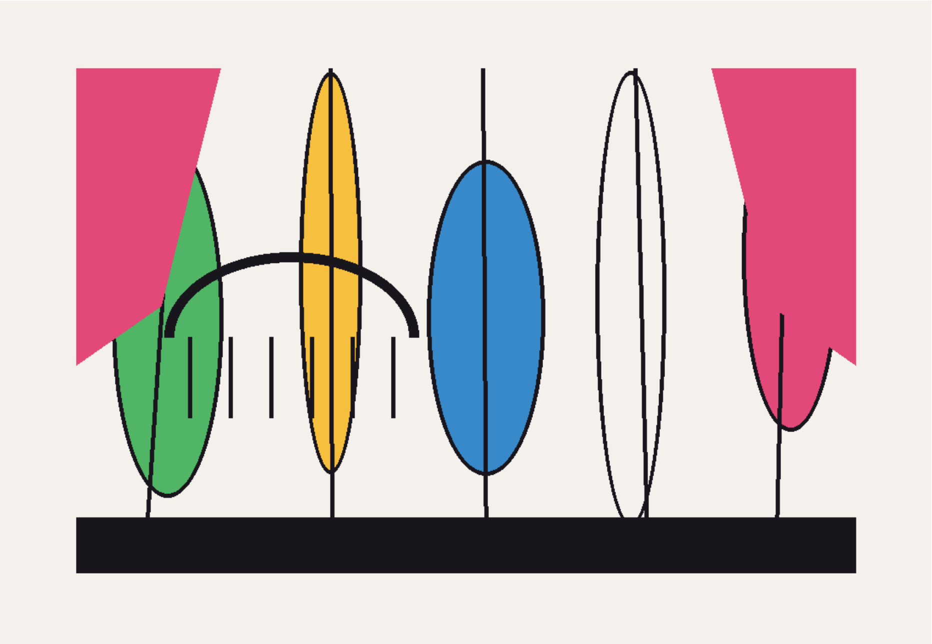

चित्र 6

अछि।)

कनियाँ काकी: (अभियन्तासँ) आबऽ बाउ, एतऽ बैसऽ।

बतही माए: आइ अहाँ ऐ गामक पहिल इन्जीनियर बनि गेलौं। पिता रहितथि तँ कत्ते खुशी होइतथि।

कनियाँ काकी:की करबै कनियाँ, मुदा अहाँक बेटा अछि धरि बापे सन जिदियाह।

बतही माए: से तँ अछिये।

कनियाँ काकी:कियो कतबो भाङठ लगेलकै मुदा पढ़ाइ पूरा केबे केलक।

बतही माए: गाममे एकटा एम.एल.ए. भेबो कएल तँ सेहो चण्डाल भऽ गेल। नै जानि कोन अराड़ि ठाढ़ कऽ लेलक। एकटा दसखत कऽ दितए तँ एतेक कष्ट जे हमर बाबूकेँ पढ़ाइमे भेल से नै होइतए।

कनियाँ काकी:खाली भोट कालमे मोन रहै छै। तखन कतेक मीठ बोल भऽ जाइ छै यै।

बतही माए: आ बादमे लोककेँ कहै छै, की होइ छह तोरे भोटसँ जीतल छी।

कनियाँ काकी: से एम.एल.ए.केँ हम सुना एलियनि हेँ।

बतही माए:कहिया यै।

कनियाँ काकी: से नै बुझलिऐ। बेटाक दुरागमनमे पीअर बच्चा एम.एल.ए.क अंगनामे ओलबा-दोलबा उठा दै गेलै जे कनियाँक कानबला हरा गेलै। सिपहिया गेटे बन्न कऽ देलकै जे जावत कानबला नै भेटतै तावत कियो बाहर नै जा सकैए। मार बाढ़नि।

बतही माए:देखू तँ।

कनियाँ काकी: आ सुनू ने। फेर कानबला कनियाँक केशमे भेटलै, तखन गेट खोललकै। झाँट बाढ़नि गै दरबारकेँ। मुदा टटीबाकेँ खूब सुनेलिऐ आ तइ लाथे अपन बाउक कागचपर जे पीअर बच्चा दसखत नै

केलक सेहो सुना देलिऐ।

बतही माए: हमरा बतहिया कहऽ जाइ लागल अछि। आब बुझौ, बतहियेक बेटा ने इन्जीनियर भेलै।

अभियन्ता: जे भेलै से आब गुजरि गेलै। गामक लोक पढ़ि जेतै से एम.एल.ए. कैँ नै ने सोहेतै। के टहल टिकोरा करतै? लोक आगाँ नै बढ़ए, की ऐ लेल देश स्वतंत्र भेल छै?

बतही माए: सभ अपन-अपन काज जतनसँ करए, जान-जी लगा कऽ करए।

कनियाँ काकी: की ई गप एम.एल.ए. लऽ नै छै यै? बतहिया कहतै, देखू तँ..

अभियन्ता: काकी, माएकैँ लोक बतहिया कहै छै तँ काल्हि हमरो लोक बतहा कहऽ लागत। तैँ डरि कऽ की हम कर्तव्यक पालन नै करी, बेइमान बनि जाइ? जँ पुल टूटत तँ खाली ईंट-पत्थर नै टूटत, लोकक भरोसा टूटत।

कनियाँ काकी: नै बच्चा, से तँ आब सभ बुझि गेल छै जे कतेक जिदियाह छह तूँ। जान-जी लगा कऽ काज करत, से सभकैँ बुझल छै।

(नेपथ्यसँ अबाज- हाकिम आएल अछि कि?)

(पैघ भाए प्रवेश करैत अछि।)

पैघ भाए- बौआ, दलानपर लोक सभ जुमल अछि। कनी बहार दिस ऐब।

अभियन्ता- अच्छा भाइ।

(माए आ कनियाँ काकीक प्रस्थान आ लोक सभक आगमन।)

दादा:(अभियन्तासँ) हाकिम, आइ कहऽ तोरा की चाही? टोल, गाम, इलाकामे शोर भऽ गेलै। बड़का-बड़का लोक मुँह तकिते रहि गेल। मुदा गामक, इलाकाक पहिल इन्जीनियर अपन गामेक भेल। पहिने हाकिम सभ फिरंगी सभ होइ छलै, ई पीअर बच्चा, एम.एल.ए., ई सभ छोटका जमीन्दार छल, बड़का जमीन्दार सभ एकरा सन-सन जमीन्दारकैँ जखन मोन जोकही पोखरिमे भरि-भरि राति ठाढ़ कऽ दै छलै। ई हमर हाकिमक कागचपर दसखत नै केलक! भोट दऽ कऽ जितबै जाइ गेलिऐ, जे गामक, इलाकाक कल्याण करत, मुदा केलक किछु नै। आब तँ पाँच साल ओकरो पुरि जेतै, आब देखबै छिऐ। पटना विधानसभामे एक्को बेर नै बाजल इलाकाक कल्याणक लेल।

लाला: हइ दादा, से नै कहक। एक बेर बाजल रहए पटना विधासभामे ओ। (व्यंग्यसँ नकल करैत बजैत) हुजूर, हमर खेत नील गाय चरि जाइए, से ओकरा मारै लेल, डरबै लेल बन्दूकक लाइसेंस देल जाए।

(सभ ठहक्का लगबैए।)

बाउ: हौ लाला। ओहो जमाना छलै, खतम भेलै। कहियो देहसँ बलगर लोकक चलती छलै, फेर कुल-खानदानक चलती एलै। आब हाथसँ काज करैबलाक समए आएल छै। पढ़ाइ-लिखाइपर रोक लगेने आब रोक लगतै हौ?

बिलट: हौ बाउ। ठीके कहै छह। जे हवा बहल छै हौ से कियो रोकि देतै हौ।

बाउ: हौ बिलट। प्रयास तँ केबे ने केलकै रोकबाक। मुदा हमर इन्जीनियर हाकिम बड्ड जिद्दी छै हौ। आइ हमर भैयारी जिबैत रहितै तँ देखितहक शान। टोलकेँ माथपर उठा लैतै हौ। गर्द कऽ दैतै हौ। मुदा बापक कमी कक्का सभ पूरा करतै हौ। रौ मीत, बाउ बच्चाक दोकानपर जो आ कहिहैं चारि अढ़ैया चिन्नी दरबज्जापर पठाएत, जल्दी। हमर नाम लिखबा दिहैं।

लाला: से नै हेतऽ, हम्मर नाम लिखबा दिहैं रौ।

दादा- नै रौ, हम्मर नाम।

बिलट- हे, बाउ बच्चा कोनो तोरा सभक टोलक छिअ। हम्मर नाम लिखबा दिहैं रौ छौड़ा।

मीत- (एक हाथ मोड़ने) एक-एक अढ़ैया चारू गोटेक नामपर लिखबा देबऽ।

(सभ हँसऽ लगैए।)

ढोलहो देनहार: नवका इन्जीनियर हाकिम आइसँ गामक बाहरक धारक पुल बनाओत, छोटका पुल। ओकरा सड़कसँ जोड़ल जाएत। सभ अपन-अपन खेतक माँटि जौँ सड़कपर काटि कऽ देबै तँ जे काज साल भरिमे हेबाक से एक मासमे भऽ जाएत। हाकिम कहै छथि- पहिने नाप, फेर काज; पहिने लोकक राह, फेर ठेका। सुनै जाउ, सुनै जाउ....।

भाग ४ : बलिदान आ पतन

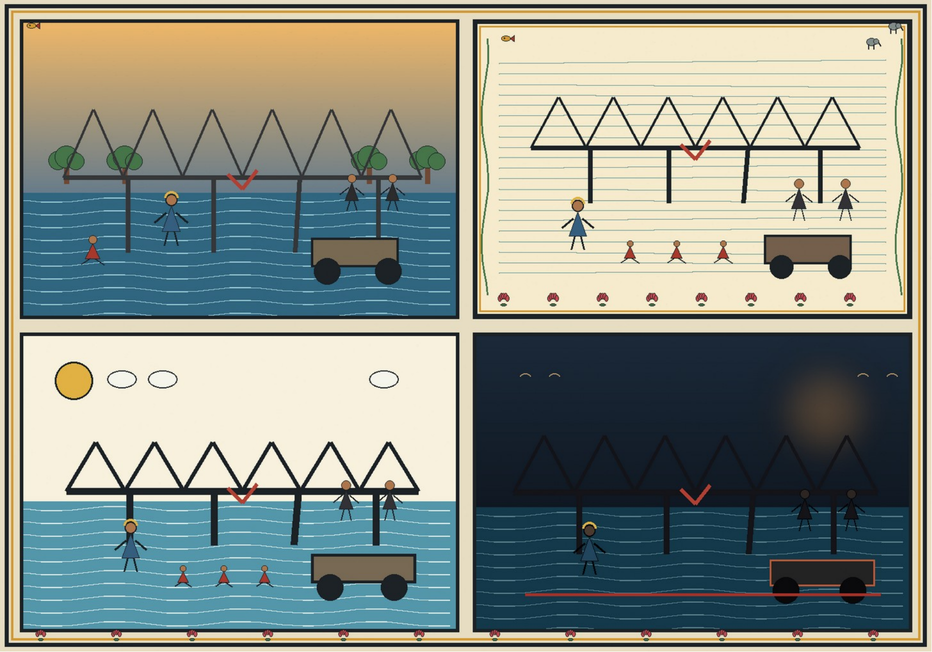

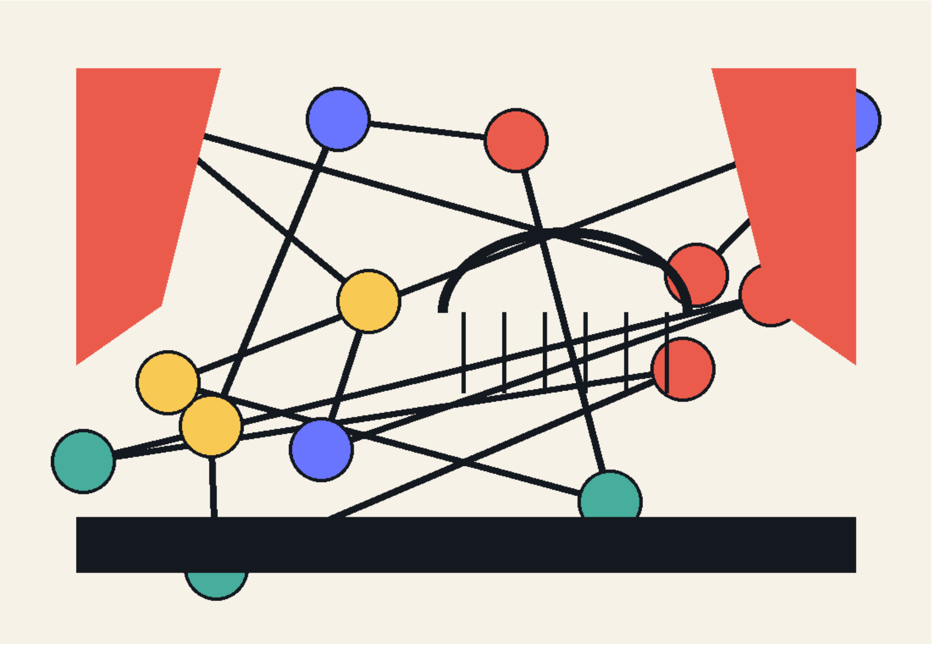

चित्र 7

बतही माए: बौआ, पुल बनाबऽ, मुदा अपन देहक पुल सेहो बचा कऽ राखऽ। घरक साँस अहाँसँ चलै छै।

अभियन्ता: अकेला तँ ओ होइ छै जे सत्यकेँ छोड़ि दै छै। जाधरि अहाँ सभक आँखि हमरा पाछाँ अछि, हम डगमगाएब नै।

इन्जीनियरक पत्नी: (धीमे स्वरमे) लोक अहाँपर भरोसा कऽ रहल अछि। मुदा अहाँक बच्चा सभ अहाँक बाट तकैत अछि। काज करू, मुदा अपना केँ अकेला नहि बुझू।

(तखने मजदूर सभ कोदारि लऽ कऽ आबि जाइए, चारिटा कोदारि एक गोटेक हाथमे बेशी छै, लाला, दादा, बिलट आ बाउकेँ ओ एक-एकटा कोदारि दऽ दै छै। सभ काल्पनिक रूपसँ माटि उखारऽ लगै जाइए। मीत सभकेँ देखैत इशारा दैत ढोलहो देनहारक संग प्रस्थान करैए। अभियन्ता जेबीसँ इन्ची टेप निकालैए आ नाप-जोख करऽ लगैए।)

पल्लव चारि

(पटनामे मुख्यमंत्रीक कार्यालय। मुख्यमंत्री कुर्सीपर बैसल छथि आ मुख्य अभियन्ता कल जोड़ि कऽ ठाढ़ छथि।)

मुख्यमंत्री- देशकेँ स्वतंत्र भेना कतेक साल भऽ गेल मुदा पटनामे गंगा नदीपर एकोटा पुल नै बनल। बड्ड प्रयास केलापर ऐबेर एकरा लेल फण्डक व्यवस्था भेल अछि। अहाँ संग बैसकी ऐ लेल बजाओल गेल अछि जे एकरा लेल जे टेण्डर देल जाएत तकर छार-भार मुख्य अभियन्ते पर ने रहै छै। अखबारमे विज्ञापन दऽ दियौ मुदा.. (मुख्य अभियन्ताकेँ बजबै छथि आ कानमे किछु फुसफुसा कऽ कहै छथि) ..बुझि गेलिऐ ने। कागजपर प्रतियोगिता रहत, भीतरसँ रास्ता अपन मोनमाफिक लोक लेल खुजल रहत। आ अहाँ संगे इन्जीनियरिंग कॉलेजसँ कतेक रास विद्यार्थी बहरेला, हुनका सभकेँ आब नीक

अनुभव भऽ गेल छन्हि। ओइमे सँ ढङक अभियन्ता सभकेँ आनू जे अपन काज नीक जेकाँ जनैत होथि।

मुख्य अभियन्ता: हँ, से तँ करैए पड़त। नै तँ ऐ ठिकेदार सभपर लगाम केना कसल हएत।

(मुख्य अभियन्ताक प्रस्थान।)

मुख्यमंत्री: (दर्शक दिस ताकि) ई गंगा ब्रिज विकासक गति बढ़ा देत। लोक जे शिथिल भऽ बैसल अछि, आवाजाही करऽ लागत। लोकक दिमाग आवाजाहीसँ खुजतै।

(नेपथ्यसँ तालीक गरगड़ाहटि)

बड्ड मोश्किलसँ स्वतंत्र भेल अछि लोक। मुदा ऐ स्वतंत्रता लेल जतेक बलिदान देबऽ पड़ल अछि, ओइसँ बेशी बलिदान देमए पड़त ओकरा बचेबा लेल। ई धार, ई पुल, सभ बलिदान मंगैत अछि।

(मंचक दोसर दिस हाथसँ संकेत करैत) ई गंगा, की बुझाइए बिनु बलिदाने ऐपर पुल बनि सकत?

खून चाही एकरा। की दऽ सकब अहाँ?

(नेपथ्यसँ- हम सभ खून देब, जतेक चाही खून देब।)

मुख्यमंत्री- यएह सुनऽ चाहै छलौं हम। यएह देखऽ चाहै छी। हम अपन भविष्यक पीढ़ी लेल जतेक बलिदान देब, ततेक बेशी सुखी भविष्यक पीढ़ी हएत।

(मुख्य अभियन्ता अबैए। मुख्यमंत्री दर्शक दिससँ मुँह घुमा कऽ ओकरा दिस मुँह कऽ लैए।)

मुख्य अभियन्ता: गप भऽ गेल अछि। ठिकेदार कमीशन दै लेल तैयार अछि।

मुख्यमंत्री: आ लोक बलिदान दै लेल।

(दुनूक ठहक्का।)

मुख्य अभियन्ता: इन्जीनियरक लिस्ट तैयार कऽ रहल छी। काज करैबला लोक चाही नै तँ ई ठिकेदरबा सभटा लूटि खाएत।

मुख्यमंत्री: कमीशन गछि कऽ कोनो खरीद लेने अछि ठिकेदरबा। सवारी कसने रहए पड़त। नै तँ लोकक बलिदान खाली चलि जाएत।

(दुनूक ठहक्का)

पल्लव पाँच

(हैल्मेट पहीर कऽ अभियन्ता आ मुख्य अभियन्ताक प्रवेश, हेल्मेट पहिरने मजदूर सभक

प्रस्थान।)

अभियन्ता: काजक प्रगतिसँ, काज करबाक तरीकासँ हम खुशी नै छी। नै तँ कोनो प्रकारक सुरक्षाक इन्तजाम अछि आ ने समानक गुणवत्तापर कोनो ध्यान अछि। काज सेहो सभटा दू नम्बरक भऽ रहल अछि। सुरक्षाक इन्तजाम रहितए तँ एतेक मजदूर धारमे खसि कऽ, खधाइमे खसि कऽ मशीनपर खसि कऽ नै मरितए। घाइल मे सँ कतेको केँ बचाओल जा सकै छल। फर्स्ट-ऐड धरिक व्यवस्था नै अछि। काल्हि रामधनीक हाथ मशीनमे फँसल; पट्टीक बदला बोरा बाँधि कऽ भेजि

देल गेल। ओकर छौड़ा बाहर बैसि कहैत रहै- बाबू घर चलू। पछिला मास तीस टा मजदूर मरि गेल। एक सालमे तीन सए मजदूर मरि गेल। मात्र दस गोटेक परिवारकेँ अनुकम्पाक अनुशंसा भेलै। दोसर सभक फाइल जे हम बढ़ेलौं, तकर की भेलै।

मुख्य अभियन्ता:देखू, अहाँ हमरा संगे पढ़ै छलौं। अहाँ काबिल इन्जीनियर छी मुदा अहाँ इन्जीनियरिंग धरि अपनाकेँ सीमित किए नै राखै छी? अहाँ बिना बातक अनुकम्पा आ अनुदानक मुद्दा किए उठा रहल छी। अहाँ बड़-बरनी फाइल बढ़ा देलिऐ, आब आगाँ की भेलै, किए भेलै, ओइसँ अहाँकेँ की मतलब अछि?

अभियन्ता: माने? इन्जीनियरिंग माने मजदूर जानक कोनो मोल नै। बोनिहारक जिनगी चलि गेलै मुदा ओकर परिवार? ओकर की हेतै? ओकर भोजन केना चलतै? ओकर बच्चाकेँ माए-बापक स्नेह कोना भेटतै? काल्हि तँ दुनू बोनिहार-बोनिहारिन वर-कनियाँ पुलक पायासँ नीचाँ खसि कऽ मरि गेलै। ओकर बच्चाक भार की सरकारपर नै छै। आ ओ पाइ सरकारक जेबीसँ जेतै, ओइमे अहाँकेँ कोन नोकसान अछि।

मुख्य अभियन्ता: देखू। एतेक मृतकक संख्या जँ सोझाँ एतै तँ हमरा आ मुख्यमंत्रीपर आरोप लागत।

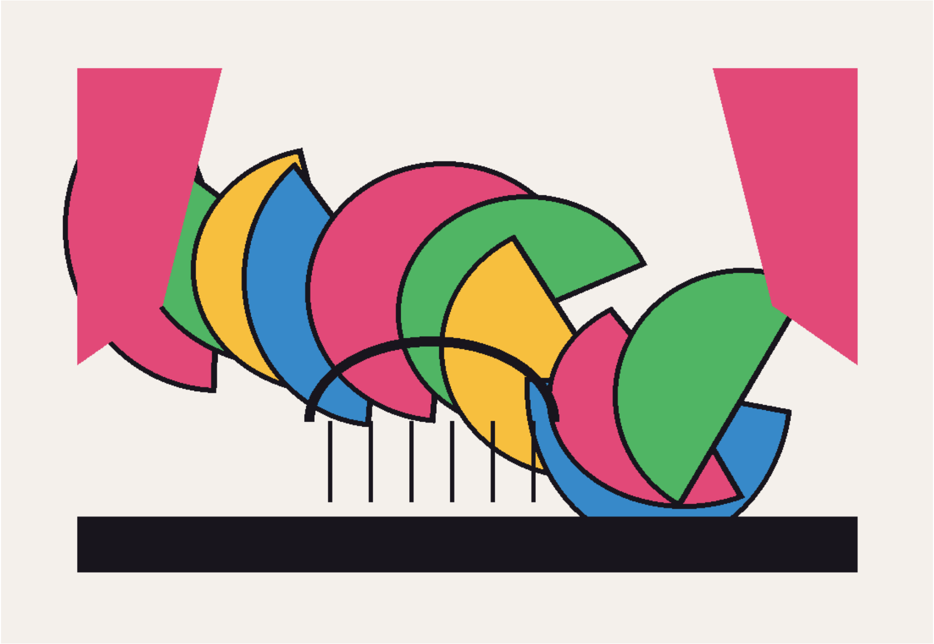

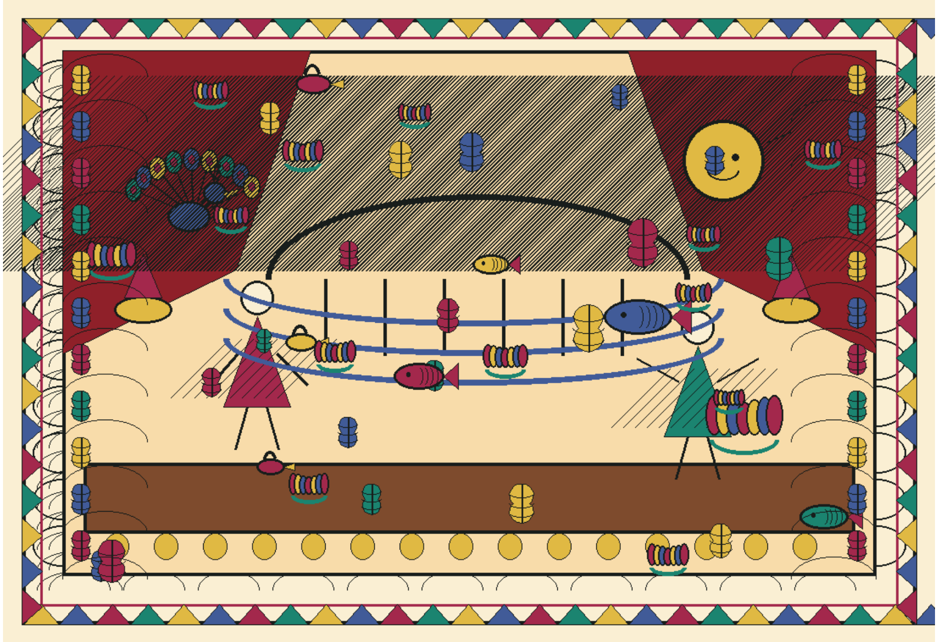

चित्र 8

गधमिसान मचि जेतै। मजदूर सभ ठाम-ठामक अछि, मुदा जँ समाचार बहरेतै तँ पूरा देशमे आगि लागि जेतै। विश्वमे बदनामी हेतै। खूनी मोकदमा चलतै। नै हमहीं बचब, नहिये मुख्यमंत्री बचता। अहाँक चलते ई सभ हेतै। अही दुआरे हम अहाँकेँ अनने रहौं ऐ प्रोजेक्टमे? एतेक पैघ प्रोजेक्टमे दुइयो हजार बलि गंगा मैया नै लेथिन्ह? मुदा ऐ प्रोजेक्टक समाप्तिक बाद जे सम्मान हमरा भेटत ओइमे अहूँक हिस्सा रहत।

अभियन्ता: ओही हिस्सासँ डरा रहल छी हम। सम्मानक हिस्साक संग ऐ बलिक बा हत्याक हिस्सा सेहो भेटत, ओकर हिस्सा नै चाहै छी हम।

मुख्य अभियन्ता: अहाँ जे करऽ चाहै छी ओइसँ विकास रुकत।

अभियन्ता: कोन विकास। कोन मोलपर हएत ई विकास। आ कतेक दिनक लेल अछि ई विकास। जँ पायामे बालुक संग मजदूरक खून मिलत, तँ पुल चाहे ठाढ़ रहए, समाज भीतरसँ भहराइ जेतै।

मुख्य अभियन्ता: दुनियाँमे सभ ठाम अहिना विकास भेल छै।

अभियन्ता: तँ ऐ पुलक मरोम्मति उद्घाटन भेलासँ पहिनहियेसँ हेबऽ लागल छै। तेहेन मजगूत अछि ई विकास।

मुख्य अभियन्ता: (कने जोरसँ) दुनियाँमे सभ ठाम अहिना विकास भेल छै।

अभियन्ता: तँ लोक कहऽ लागल अछि जे अंग्रेजक पुल ठाढ़े छै आ स्वतंत्र भारतक पुल बनैसँ पहिनहिये टूटि रहल छै!

मुख्य अभियन्ता: (जोरसँ) दुनियाँमे सभ ठाम अहिना विकास भेल छै।

अभियन्ता: तखन तँ लोक बाजऽ लागत जे अंग्रेजेक राज नीक रहै।

मुख्य अभियन्ता: बाजऽ दियौ।

अभियन्ता: लोक कहत जे सभटा पाइ अभियन्ता खा गेलै।

मुख्य अभियन्ता: बाजऽ दियौ। अभियन्ता की अपन जेबीमे राखत, एतै खर्चा करत। बरखा भारतेमे हेतै इंग्लैण्डमे नै।

अभियन्ता: इन्जीनियरिंगक अलाबे अर्थशास्त्रक सेहो अहाँ अध्ययन केने छी । पोवर्टी एण्ड अनब्रिटिश रूल ऑफ इण्डिया- दादाभाइ नौरोजी। ड्रेन ऑफ वेल्थक सिद्धान्त। दादाभाइ सोचनहियो नै हेता जे स्वतंत्र भारतक अभियन्ता लेल ओ ई सिद्धान्त देने छथि।

मुख्य अभियन्ता: माने अहाँक अलाबे सभ गलत छै?

अभियन्ता: नै, हमरा तँ लगैए जे हमरा अलाबे सभ सही छै। मुदा तखन छोट-छोट चीजकेँ पैघ किए बना रहल छी?

मुख्य अभियन्ता: अहाँ जकरा छोट गप कहै छी, बुझै छी, से छोट नै छै।

अभियन्ता: अहाँक हाथमे शक्ति अछि। मुख्यमंत्री धरि अहाँक मुट्ठीमे छथि। बदली कऽ दिअ हमर। मुदा फाइलक प्रतिलिपि हमरा लग अछि। मजदूरक नाम, दुर्घटनाक तारीख, घटिया मालक हिसाब- सभ लिखल अछि। जँ हम चुप रहब तँ ई कागज बाजत।

मुख्य अभियन्ता: बदली नै कऽ सकै छी। लोक अहाँक संग अछि। मजदूर अहाँक संग अछि। चुनाव आबैबला छै। मुख्यमंत्रीक आदेश छन्हि, अहाँक बदली हम नै कऽ सकै छी। आ अहाँक कागज जँ बाहर गेल तँ पुलसँ पहिने कुर्सी हिलत।

अभियन्ता: तखन?

मुख्य अभियन्ता: अहाँक कोनो गप हम नै मानि सकै छी। अहाँ हमरे संग पढ़लौं, से मोन पड़ै छै; मुदा कुर्सीपर बैसल आदमीक मोन पहिने फाइल देखै छै, मित्रक चेहरा बादमे।

अभियन्ता: तखन?

मुख्य अभियन्ता: तखन देखै छी, बुझब तँ अहाँ नहिये। (कनेक रुकि) दोस, ई आखिरी बेर कहै छी- रास्ता बदलू। नहितँ रास्ते अहाँकेँ कुचलि देत।

पल्लव छअ

(मुख्यमंत्री आ मुख्य अभियन्ता बैसल छथि)

मुख्य मंत्री: काजकेँ डिस्टर्ब कऽ रहल अछि। प्रगतिक विरोधी अछि। एहेन लोक सभकेँ की कहू।

मुख्य अभियन्ता: बदली कऽ दियौ। चुनावमे देरी छै। लोक बिसरि जाएत।

मुख्यमंत्री: लोक तँ बिसरि जाएत मुदा विपक्षी पार्टी गप खोधत। एकरा तँ मोन होइए गोली मरबा दिऐ।

मुख्य अभियन्ता: एहेन गलती जुनि करब। भगत सिंह बनि जाएत।

मुख्यमंत्री: कोना भगत सिंह बनि जाएत? आब अंग्रेजक शासन थोड़बे छै। प्रगति विरोधी अछि ई इन्जीनियर। आतंकवादी बना देबै। जे विकासक रास्तामे ठाढ़ होइ छै, ओकर नाम बदलि देल

जाए; लोक नाम सुनि कऽ डरि जाएत।

मुख्य अभियन्ता: आतंकवादी नै बना सकै छिऐ। सरकारी कर्मचारी छी, इन्जीनियर छी। पब्लिक थोड़बे छी जे आतंकवादी बना देबै।

मुख्यमंत्री: करप्शन चार्जमे फँसा दियौ। छापा मरबा दियौ।

मुख्य अभियन्ता: दू नम्बर पाइ लैते नै अछि, छापामे खाट टा घरमे भेटत।

मुख्यमंत्री: कोनो तँ कमी हेतै। से ताकू।

मुख्य अभियन्ता: जिदियाह अछि, यएह कमी छै।

मुख्यमंत्री: तखन मरबाइए दै छिऐ। कोनो कमी नै छै तँ जीबि कऽ की करत?

मुख्य अभियन्ता: एहेन गलती जुनि करब। महात्मा गाँधी बनि जाएत। जीजस क्राइस्ट बनि जाएत।

मुख्यमंत्री: कमी ताकू। अहाँ संगे तँ ओ शुरूसँ पढ़ल अछि। ओकरा नै मारऽ चाहै छी तँ ओकरामे कमी ताकू। आ कमी नै ताकि सकै छी मारि नै सकै छी तखन की करू। आत्महत्या करबा दियौ?

भाग ५ : स्मृति आ प्रश्न

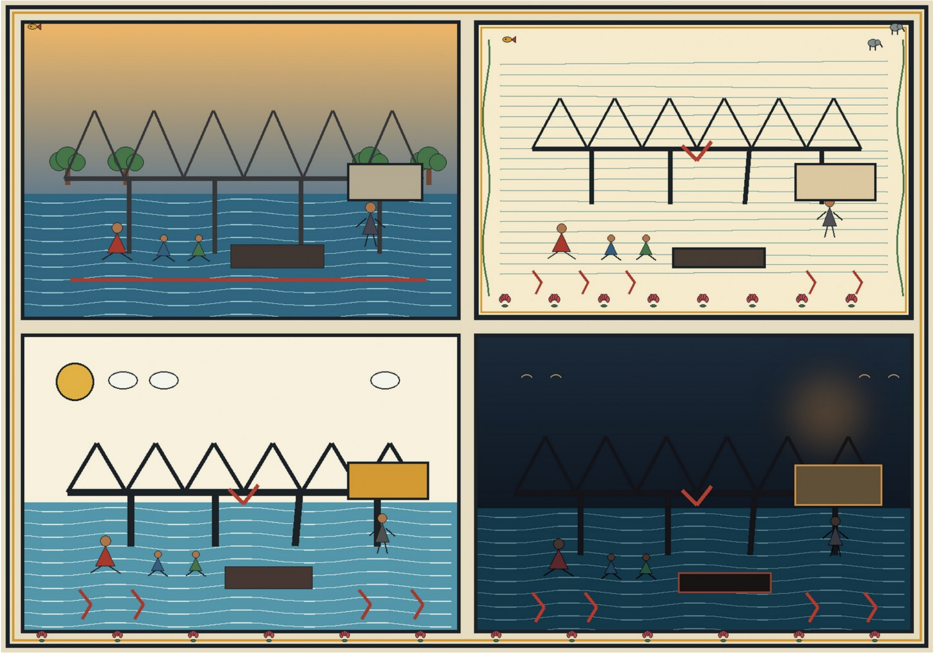

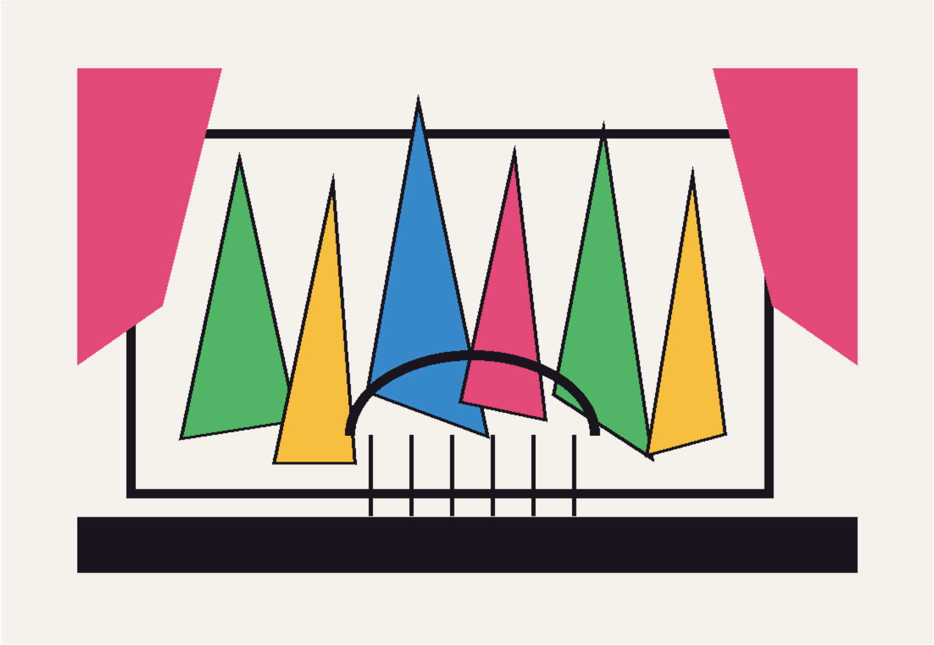

चित्र 9

मुख्य अभियन्ता: आत्महत्या करैबला जीब नै अछि ओ। जिदियाह अछि। आ जिद ओकर दोष नहि, ओकर ताकत अछि; तँ खतरनाक अछि।

मुख्यमंत्री: तँ ओकरा मरबा कऽ आत्महत्या केलक से हल्ला कऽ दियौ।

मुख्य अभियन्ता: ई गप कियो कियो नै मानत। सभ यएह कहत जे हत्या भेलै।

मुख्यमंत्री: तखन?

मुख्य अभियन्ता: ओकरा मरऽ पड़तै। ओकर हत्या हेतै। (धीमे, जेना अपनासँ) हमरे संग पढ़ल छल... मुदा कुर्सीक दोस्ती, दोस्तीसँ पैघ भऽ गेल।

मुख्यमंत्री: आ से नै हत्या लगबाक चाही आ नहिये आत्महत्या, तखन तँ ओकर बुढ़ारी तक रुकऽ पड़त।

मुख्य अभियन्ता: (क्रूर हँसी हँसैत) नहिये ओ हत्या हत्या लगतै आ नहिये आत्महत्या। ओ दुर्घटना लगतै। दुर्घटना... ऐ स्वतंत्र देशमे पब्लिककेँ आतंकवादी बना कऽ मारल जेतै आ ऐ तरहक लोककेँ दुर्घटनामे।

मुख्यमंत्री: (क्रूर हँसी हँसैत) धऽ दियौ तखन रोलरक निच्चाँमे। मुदा ई समुच्चा घटना एकदम दुर्घटना लगबाक चाही, लोक जँ बुझि गेल जे मारल गेल छै तँ ठीके अनेरे ओ हीरो बनि जाएत।

मुख्य अभियन्ता: बहुत दुख हएत हमरा ओकर मृत्युसँ। हमरे संग पढ़ै छल। बड्ड काबिल इन्जीनियर छल।

(पर्दा)

पल्लव सात

(लाश राखल छै, दूटा बच्चा आ इन्जीनियरक विधवा हिचुकि रहल अछि। दूरसँ रोलरक भारी

घरघराहटि एक बेर सुनाइ दै छै आ अचानक बन्द भऽ जाइ छै। तकर बाद चुप्पी।)

इन्जीनियरक विधवा: अहाँ कहने छलौं- कागज बाजत। आब कागज कतऽ अछि? ई बच्चा सभक आँखि बाजत, ई माटि बाजत, ई पुलक हिलनाइ बाजत।

बतही माए: छोड़ि गेल...हौ देब। बतहीक बेटा बतहा। (लाश उघाड़ि कऽ देखैत बेहोश भऽ खसि पड़ैए।)

बाउ-भैयारी गेल। पहलमान कक्काक रहैत भातिज पिचड़ा भेल पड़ल अछि। हौ भैयारी, की जवाब देबऽ तोरा हौ।

दादा- कहै जाइ छै जे दुर्घटना छिऐ। दुर्घटनामे एना कऽ पिचड़ा होइ छै। रोलर तँ ओनाहियो अस्थिरसँ चलै छै।

लाला-आइ धरि सुनने छलहक रोलरसँ पिचा कऽ कियो मरल होइ, रोलरसँ दुर्घटना होइ छै हौ।

बिलट-ककरा बले छाती फुलेबै हौ, ककरा कहबै संघर्ष करै लेल। के करतै मेहनति हौ, के करतै कानूनक पालन।

मीत-के सत्य बजतै हौ, मुदा नै बजबै तँ हाकिम की कहत हौ बिलट काका। नै संघर्ष करबै तँ हाकिम की कहतै हौ। नै मेहनति करबै तँ, नै कानूनक पालन करबै तँ, तँ कोना फुलेबै हाकिमपर छाती हौ।

पैघ भाए: केहेन चण्डाल भऽ गेल। पैघ भाए जिबिते छै, आ छोटका छोड़ि गेल। बतहा.. चाटी उठबैले चन्ना गाछी चलि जाइ छल।हौ, ई पृथ्वी छिऐ, एतऽ बाहरक शक्ति नै आबै छै। एतुक्के लोकक हाथमे छै नीक आ अधला। बेसी अधले छै तँ अधले नै बनल भेलऽ? पृथ्वी, अकास ओहिना ठाढ़ छै। ई अन्याय देखियो कऽ भूकम्प नै एलै, अन्हर बिहाड़ि नै एलै। दुनियाँ अहिना चलैत रहतै।

(जेना अन्हर-बिहाड़ि आएल छै, सभ हाथपर मुँह लऽ लैत अछि।)

(बच्चा ३ जे आब मजदूर बनि गेल अछि धरफड़ा कऽ प्रवेश करैत अछि। आँखि कारी आ नोराएल आ कपड़ा लत्ता फाटल छै।)

मजदूर: नोकरी लेल गेलौं। ठेला चलबैत थाकि गेलौं। नोकरी लेल ठकि-फुसिया कऽ लै जाइ गेल। भदोही। (भदोही नाम अबिते कूही भऽ जाइए, थरथड़ाइत कानैत स्वरमे बजैए) काज रुकिते लोहाक छड़सँ मारै छल। एक टाइम खेनाइ। आँखिमे निन्न आएल आकि थापड़। स्वतंत्र देश। स्वतंत्र स्कूल। स्वतंत्र कॉलेज। (पैघ भाएसँ) की भेलै हौ। मरि गेलै? जे हमरा सभकेँ कहने रहै- आदमीक जान फाइलसँ पैघ होइ छै- ओ मरि गेलै?

पैघ भाए: मारि देलकै।

मजदूर: मारि देलकै बा मरि गेलै, जान तँ निकलिये गेलै ने हौ। किए मारलकै?

पैघ भाए: गंगा पुल, बलि लेलकै ई गंगा पुल।

मजदूर: ढोलहो पीटै छलै, मजदूर चाही, मजदूर चाही। गंगा पुलक मजदूरे बनि जइतौं, अनेरे

भदोही गेलौं, से मोनमे हुअए मुदा आब तँ।

पैघ भाए: भने चलि गेलऽ भदोही, नै तँ मजदूर सभक ढेर बलि चढ़ल छै। मरि जइतह। आ तकर विरोध ई इन्जीनियर करितै आ ओहो पिचड़ा भऽ जइतै।

मजदूर: मुदा भदोही सँ जे हमरा सभकेँ छोड़ेलक?

पैघ भाए: ओहो पिचड़ा भऽ गेल हेतै।

मजदूर: पिचड़ा भऽ गेल हेतै। जाए दैह, जाए दैह भदोही। जौं नै पिचड़ा भेल हेतै तँ बचेबै ओकरा।

(मजदूरक प्रस्थान। फेर आगमन।)

मजदूर: कनी पुल देखितिऐ। कनी पटना देखितिऐ। जाए दैह, जाए दैह भदोही। जौं नै पिचड़ा भेल हेतै तँ बचेबै ओकरा।

(पर्दा)

चित्र 10

पल्लव आठ

(एक्के पोथीक ढेर रास प्रति लोकार्पण लेल राखल अछि। किताब मुख्य अभियन्ता द्वारा लिखल छै आ मुख्य मंत्री एकरा रिलीज कऽ रहल छथि। कोनमे डंका राखल अछि आ दुनू लोक ठाढ़ छथि।)

मुख्यमंत्री: हमरा खुशी अछि। (विश्राम) हमरा खुशी अछि जे बत्तीस सालक सरकारी सेवाक उपरान्त “गंगा ब्रिज”, ई पोथी मुख्य अभियन्ता मात्र लिखि सकै छथि। कवर नीक, पन्ना नीक, छपाइ नीक। एक-एक पाँती निष्पक्ष। कोनो इतिहासकार ऐपर आँखि मुनि कऽ विश्वास कऽ सकै छथि। लिखितम्, लिखितकेँ काटि सकत? गंगा ब्रिजक जे मूल भावना छलै, माने लोककेँ लोकसँ जोड़नाइ, ओकरा मुख्य अभियन्ता पूरा केलन्हि। जे आवाज बीचमे उठल, से विकासक धूलि छल; जे खून गिरल, से बलिदानक रंग छल। आब नै हमहीं मंत्री छी, आ ईहो रिटायर भऽ गेल छथि। मुदा गंगा ब्रिज ठाढ़ अछि, मुदा गंगामे आब पानिये कम भऽ गेल अछि। ठीक छै, ई ब्रिज हिल रहल छै, जर्जर भऽ गेल छै। मुदा आइबला तकनीक तखन कहाँ रहै। नबका मुख्यमंत्री अही गंगाब्रिजक बगलमे दोसर गंगा ब्रिज बनेबाक घोषणा कऽ देलनि अछि। दुनियाँमे कोन चीज अजर-अमर छै।

ऐ पोथी “गंगा ब्रिज”क लेखककेँ हम नीकसँ, व्यक्तिगत रूपेँ चिन्है छियन्हि। हमरे मुख्यमंत्रित्व कालमे ई मुख्य अभियन्ता रहथि। अपन ईमानदारी लेल जानल जाइत रहथि।

(मुख्य अभियन्ता हाथ जोड़ि मुस्की दै छथि।)

हिनके निर्देशनमे ई पुला बनलै। ठीक छै, ठाक छै। (विश्राम) ठीक छै जे ई पुला किछु दिनमे टूटि जेतै आ बगलेमे नव पुल ठाढ़ भऽ जेतै। मुदा ओइ टुटल पुलकेँ ई पोथी “गंगा ब्रिज” इतिहासमे

अमर कऽ देतै। ऐ पोथीमे हमरो चर्चा मुख्य अभियन्ता केने छथि (मुस्की दैत) किछु बेशिये बड़ाइ कऽ देने छथि। मुदा हम तँ जनसेवक छी, जनताक सेवा लेल हम जे किछु केलौं तकर वर्णनक कोनो खगता नै छल, ओ तँ हमर कर्तव्य छल। (विश्राम)

फेरसँ मुख्य अभियन्ताकेँ अपन कर्मठ जीवन, ईमानदार चरित्र लेल एकबेर बधाइ दै छियन्हि।

मुख्य अभियन्ता: मुख्यमंत्री जी हमर मेन्टर रहथि। हिनका लेल हमरा हृदैसँ श्रद्धा अछि। ऐ पोथीमे किछु किछु गोटे द्वारा कएल किछु अशोभनीय घटनाकेँ छोड़ि देल गेल अछि। इतिहास घृणा पसारबाक माध्यम ने बनि जाए तैँ। इतिहासक काम घाव खोलब नहि, पट्टी बाँधब अछि- चाहे भीतर मवाद रहि जाए। प्रकृतिमे बदलाव एलै, धार सुखा गेल छै, ई सभ आ आर किछु चीज, जे तकनीकी मुद्दा छै, ऐ पुलपर असरि केलकै। नवका पुल जाधरि बनतै, ताधरि पुरनका पुल चलिते

रहतै। आ ई पोथी पुरनका पुलकेँ अमर कऽ देतै। ओकर पायासँ लऽ कऽ अन्तिम पुल धरिक फोटो

ब्लैक एण्ड ह्वाइट आ रंगीनमे ऐ पोथीमे छै। (विश्राम)

ईमानदारी तँ हेबाके चाही। (मुस्की दैत) मुख्यमंत्रीजी हमरा अनेरे लज्जित कऽ रहल छथि। जँ ईमानदारी रहै तैँ ने ई पुल एतबो दिन टिकलै। ऐ पोथीमे तीसे गोटेक नाम परिशिष्टमे देलाछि जे ऐ पुल निर्माणमे अपन बलि देलन्हि। हुनके लोकनिक स्मृतिमे ई पोथी समर्पित अछि।

एकटा लोक: (डंकापर चोट दैत) आ ...

(मजदूर धरफड़ा कऽ प्रवेश करैए।)

मजदूर: कतेकोकेँ मारि देल गेलै, तकर विवरण कतऽ भेटत।

मुख्य मंत्री: (मुस्की दैत) धन्यवाद, धन्यवाद, धन्यवाद।

दोसर लोक: (डंकापर चोट दैत) मनुक्खक बलि देनिहार लोकक बलि गंगा मैया मांगि रहल छथि, तैँ ने सुखाएल जा रहल छथि।

मुख्य अभियन्ता: (मुस्की दैत) धन्यवाद, धन्यवाद, धन्यवाद।

(ढोलहो देनहारक प्रवेश)

ढोलहो देनहार: सुनू-सुनू, सुनै जाउ। गंगा ब्रिजपर मजदूरक जरूरी छै। एक दिसका रस्ता बन्न कऽ कए दोसर दिसका रिपेयर चलि रहल छै। जे पुल इतिहासमे अमर भेल, ओकरा आइ फेर चिप्पी चाही।

मजदूर: (डंकापर चोट दैत) हौ, जहियासँ ऐ पुलक उद्घाटन भेल छै तहियेसँ रिपेयरक ठक-ठुक शुरू भऽ गेल छै। ई ठक-ठुक पुलक नहि, इतिहासक हड्डीक आवाज छिऐ।

ढोलहो देनहार: सुनै जाउ, सुनै जाउ।

(मजदूर सभ ठक-ठुक कऽ रहल अछि, कोनो आँकड़ पाथर स्टेजक पाछाँ अन्हारमे फेकैत अछि।

कोनो मजदूर जय गंगे बाजि उठैत अछि। गंगाक धारक स्वर पहिने सँ बेसी सूखल, बेसी खोखल

सुनाइ दैत अछि।)

दोसर लोक: (डंकापर चोट दैत) आ...

मजदूर: कियो भदोहीसँ मजदूरकेँ आजाद कऽ जाइ छै। कियो गंगा पुलक सोझाँ पिचड़ा भऽ जाइ छै। यएह सभ असल जुल्मी छै। (हाक्रोश करैत) यएह सभ असल जुल्मी छै हौ, असल जुल्मी। अरे ओइ इन्जीनियर सन लोक आबि कऽ आशा दिया जाइ छै। नै तँ कहिया ने परिवर्तन आबि जइतै। लोक परिवर्तन आनि दैतै हौ। मुदा आशा देनिहारकेँ कुचलि देल जेतै तँ आशा मरत नै; ओकर आवाज डंकामे, हथौड़ामे, पुलक दरारिमे बसि जेतै। (हाक्रोश करैत) असल जुल्मी छै इन्जीनियर सन लोक आबि कऽ आशा दिया जाइ छै।

मुख्य अभियन्ता: (मुस्की दैत) धन्यवाद, धन्यवाद, धन्यवाद।

मुख्य मंत्री: (मुस्की दैत) धन्यवाद, धन्यवाद, धन्यवाद।

(पटाक्षेप।)

पटाक्षेप

VIDEHA

विदेह: प्रथम मैथिली पाक्षिक ई-पत्रिका | ISSN 2229-547X | www.videha.co.in

GANGA BRIDGE

A poignant play about development, corruption and sacrifice

Gajendra Thakur

Editor, Videha: The First Maithili Fortnightly E-Journal (since 2000)

ISSN 2229-547X

CAST OF CHARACTERS

CHILD 1, who later becomes the Engineer
CHILD 2, the Engineer's friend, who later becomes the Chief Engineer
CHILD 3, who later becomes a labourer

CHIEF MINISTER

MEET

BAU

LALA

DADA

BILAT

THE ENGINEER'S WIFE

CONTRACTOR

LABOURERS

TEACHER 1 (male or female)
TEACHER 2 (male or female)
A group of students
TOWN CRIER, with a hand drum
TWO DRUMMERS, also appearing as FIRST MAN and SECOND MAN
MOTHER, whom people call “mad”

ELDER BROTHER

SCENE ONE

PART ONE: DREAMS AND BEGINNINGS

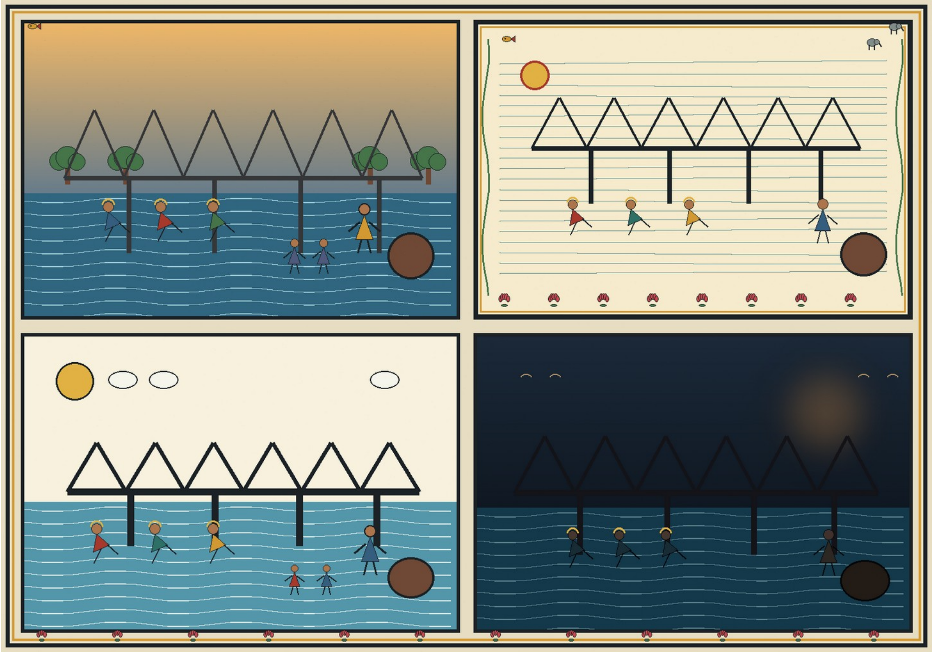

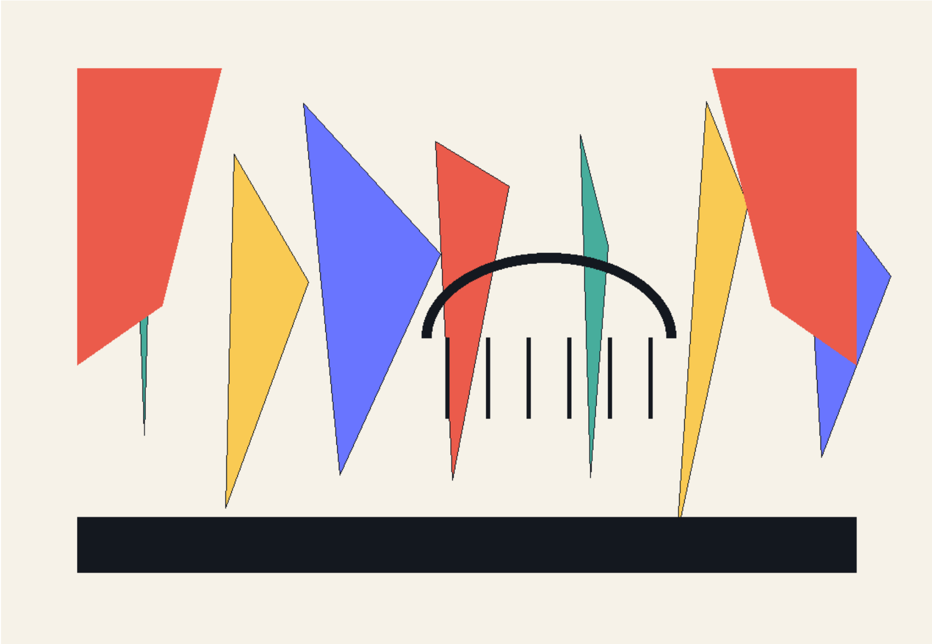

Figure 1

On one side of the stage, several labourers work with a steady clink and thud, breaking stone into aggregate. From afar comes the

soft murmur of the Ganga. At intervals, the bridge groans like iron under strain, and hammer blows ring out. It appears that

the Ganga Bridge is under repair. Some labourers bow towards the front of the stage, saying, "Hail Mother Ganga," before

returning to work. On the other side, two men strike large drums set on the floor. At that moment,

the Town Crier enters.

TOWN CRIER: Ganga Bridge! Labourers are required to repair this bridge built over the sacred Ganga.

Women and men, young and old—anyone may apply. *(Beating his drum and trying to make himself heard above the groaning bridge)*

Hear ye, hear ye! Ganga Bridge! Labourers are required to repair this bridge built over the sacred Ganga.

Names will keep being entered on the labour rolls, and patches will keep being laid upon the bridge.

FIRST MAN: *(Stops drumming, listens to the labourers at work and approaches the Town Crier, while*

the Second Man continues beating his drum softly.) I can see the work is already under way. Why do you need more labourers?

TOWN CRIER: *(Ignoring him and making a show of beating the drum)* This number of labourers will not be enough.

The whole bridge is shaking. *(Beats the drum.)* Hear ye, hear ye! Ganga Bridge! Labourers are required

to repair this bridge built over the sacred Ganga. Women and men, young and old—anyone may apply.

SECOND MAN: *(Stops drumming and comes over to the Town Crier.)* How has it come to this so soon?

They say that for every pier in this bridge, several crores of rupees were spent on its construction.

TOWN CRIER: *(Ignoring him too and beating his drum mechanically)* The work was not done properly. Hear

ye, hear ye! Labourers are required to repair this bridge over the Ganga. Women and men, young and old—

anyone may apply. Hear ye, hear ye!

FIRST MAN: *(To the audience)* Look at that. Even while it was still being built—before it was ready—

they had already begun repairing it.

SECOND MAN: *(Ignoring the First Man and addressing the audience)* Patch upon patch.

They began patching it even before the inauguration.

TOWN CRIER: *(Eyes closed, beating the drum and ignoring both men)* It is a government bridge. If it is not patched,

how will balconies be added to the houses of engineers and contractors? Hear ye, hear ye!

FIRST MAN: *(Now turning towards the Town Crier as he speaks)* Ho, drummer! We understand that much. But tell us—

bridges are built in other parts of the world too. Do the engineers and contractors there also add balconies to their houses

from the cost of the bridge?

TOWN CRIER: *(Startled, looking at him)* I have never been there. But I have heard that the bridges built by the British used to be strong. *(To the audience)* Hear ye, hear ye!

SECOND MAN: *(Turning towards the First Man)* Ho! If they had free money to loot, then surely the few bridges the British built would be strong.

FIRST MAN: *(Turning towards the Second Man)* These engineers and contractors are no less than the British when it comes to looting,

so why can they not build strong bridges? Why are they not like the British in that respect?

SECOND MAN: *(Facing the First Man)* If they build it strong, how will they ever get another repair contract?

(Turning to the Town Crier) Is that not so, drummer?

TOWN CRIER: *(Ignoring him)* I have never been there. Hear ye, hear ye!

Labourers are required to repair this bridge over the Ganga. Women and men, young and old—anyone may apply. Hear ye, hear ye!

(The Town Crier exits.)

FIRST MAN: What can the government do? The people themselves are corrupt.

SECOND MAN: Who do you mean by "the people"? You and me.

FIRST MAN: No, fool. The engineers and contractors.

SECOND MAN: Nonsense, old fool. This is not the British Government any more.

FIRST MAN: Does the meaning of "people" change because of that?

SECOND MAN: Yes, it does.

FIRST MAN: So engineers and contractors are no longer people?

SECOND MAN: No.

FIRST MAN: Then what are they?

SECOND MAN: They are the government.

FIRST MAN: Rubbish! The government is not a human being.

SECOND MAN: Of course it is. Kings and emperors were human beings; the British rulers were human beings; and this is the government of independent India.

FIRST MAN: Then what is the government in Patna and Delhi?

SECOND MAN: That is also the government.

FIRST MAN: Nonsense! This engineer is a man from our village. Since when does a villager become "the government"? In the village,

people used to call only the zamindar's officials "Sarkar".

SECOND MAN: That is an old habit. People still call the zamindar's former officials "Sarkar". Give it a few years, and no one will call them that any more.

FIRST MAN: You sound like an oracle. So what will everyone become?

Figure 2

SECOND MAN: The government appoints the engineer and gets the contractor to do the work. All of them are the government.

Whatever they want is what will happen.

FIRST MAN: Can you and I do nothing?

SECOND MAN: You and I will elect a few people. These officials will remain under their direction.

FIRST MAN: But government employees include the village watchman and the office peon too. Have all of them become the government as well?

SECOND MAN: Yes.

FIRST MAN: Then only we are left as "the people". Whatever happens, those officials will do it.

SECOND MAN: We shall elect our representatives, and these officials will remain under their direction.

FIRST MAN: You mean they will do as we say? *(He does not quite understand; expressions come and go across his face.)*

SECOND MAN: Yes. That is exactly what it means.

FIRST MAN: *(Still confused, his expression shifting.)* Let us see what rule by the government looks like...

Children enter from the rear, each carrying two Indian tricolour flags. Two teachers accompany them, one at the front and one at the rear. A flag is handed to every labourer. A teacher gestures, "Give one flag to each of those two men as well"—

but the flags run out. The two men are left empty-handed, staring at everyone else.

They stand in front of the labourers, then move back beside the drums and watch in astonishment.

The others spread across the stage holding tricolour flags. A festive mood fills the stage. Everyone, except the two men, including the labourers, smiles with joy.

When all have taken their places, the two teachers stand in front of the children, facing the audience.

The teachers call, "Fifteenth of August!" and everyone together—except the two men—responds, "Independence Day!"

TEACHER 1: Children, today this tricolour flies in our hands. Until now we lived under the rule of others; *we were unfree. This flag had been lowered; we could not let it fly. We must keep working with all our strength to ensure that it continues to fly. (Spreads both arms wide.) Happiness will now spread through this region. The zamindars' rule has ended. Everyone will be able to study.*

Quarrels and wars—everything will end. A new dawn has come into our lives.

There will be new education and new methods of farming.

TEACHER 2: Tall factory chimneys and enormous dams! Goods that now come from overseas will be made in factories with smoking chimneys. Great dams will check and harness the river's current.

The fields will yield abundantly. Rain will no longer depend on Indra's mercy, but on our own power. Water will flow from field to field;

there will be irrigation everywhere. The divide between high and low will disappear.

TEACHER 1: The divide between high and low will disappear? Will the smoke of tall chimneys and enormous dams truly erase that divide?

TEACHER 2: Yes. Water will reach every field. Goods now imported from overseas will be made here in factories with tall chimneys.

TEACHER 1: Large dams and large factories also bring many problems. Those problems must be addressed. Otherwise development will become one-sided.

TEACHER 2: How can development become one-sided?

TEACHER 1: Large factories cannot be built everywhere. They will be concentrated in a few places, forcing workers to migrate there. When large dams are built, people from the villages within their catchment will also be displaced.

If a great dam is not strong enough, it will break and bring catastrophe. Huge factories and dams can tear people's lives apart.

TEACHER 2: One generation must make sacrifices. Children, answer me: will you dedicate yourselves to the nation?

TEACHER 1: Children, tell us what you want to become. What do you wish to give to society?

CHILD 1: I shall become an engineer and build roads, bridges and canals, so that people's suffering may end.

CHILD 2: I shall become an engineer too. Huge dams! Smoke from enormous chimneys! I love the smell of smoke. What wonderful days will come when great dams and towering chimneys spread across the country.

CHILD 1: But smoke causes coughing. My mother is always coughing. I cannot bear smoke.

CHILD 2: My mother never even goes into the kitchen. I do, secretly. I love the smell of smoke and those great walls. I love all of it.

PART TWO: THE ORDEAL OF CONSTRUCTION

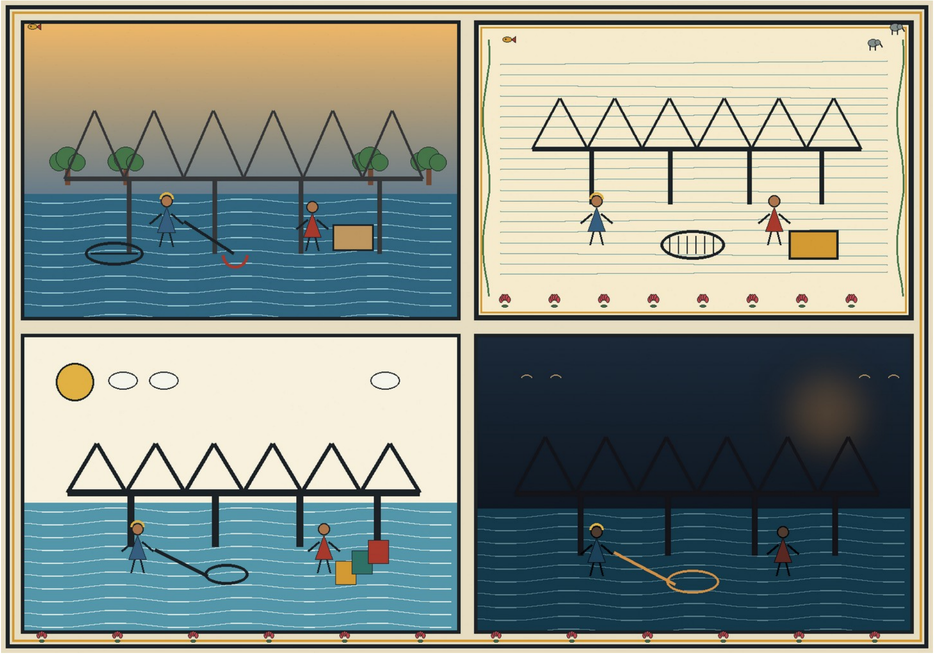

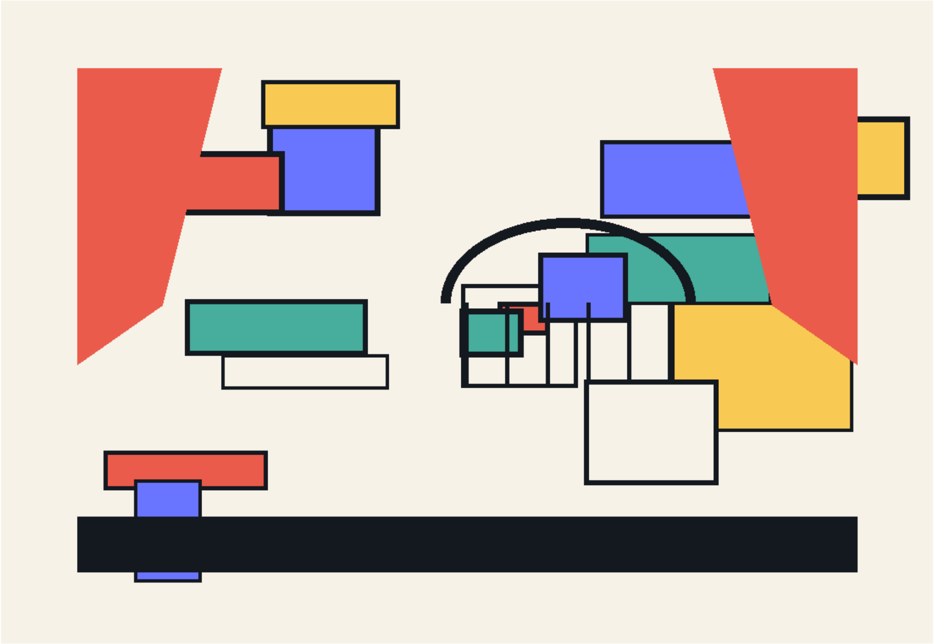

Figure 3

(CHILD 3 rushes in, breathless.)

CHILD 3: Sir, have you seen my goat?

(Everyone falls silent and turns to look at him.)

CHILD 3: *(Covering his mouth, with a shy laugh.)* Oh—you are studying here. Victory to India! Victory to India! Victory to India! My goat... *(Looks behind him.)* I can see it over there. If the goat runs away, I shall find it sooner or later. But I —

I have run away from school. How will they catch me again?

(CHILD 3 exits.)

TEACHER 2: Well said. But what form development should take is not in our hands. Patna and Delhi will decide what kind of development is suitable for us.

TEACHER 1: It is good that Patna and Delhi are thinking about our development. But can people sitting there, or visiting in a rush for a day or two, make the right decisions for us?

Whatever comes, let us never forget that we must work for society—with complete honesty, with all our heart and strength. We must help write the history of this country. Today, on 15 August 1947, let us take that pledge and give our word.

ALL THE CHILDREN: We give our word. With complete honesty, with all our heart and strength, we shall write a new history for this country.

(The teachers call, "Fifteenth of August!" and everyone—except the two men—responds, "Independence Day!" The two men stand isolated in a corner of the stage. The children and teachers collect the flags from the labourers. The labourers sit down and resume their rhythmic hammering. The two men remain standing there, bewildered. Then they peer into the wings as though waiting for someone. Suddenly they hurry off, bring on a chair and set it down. An ENGINEER, aged about forty to forty-five, enters, slightly out of breath. The moment he sees the chair, he drops heavily into it. He steadies his breathing, then rises. The hammering stops and the labourers freeze. The two men move to a corner beside the drums and freeze as well. The ENGINEER begins to speak.)

ENGINEER: *(Shaking the chair.)* Like this. This is how it shakes—this Ganga Bridge. Built of concrete, cement, sand and aggregate, yet it sways more than a village timber footbridge. Whenever I come here, repairs are under way. One-way traffic—only one side is ever open.

How can the other side function when half the bridge is always under repair? *(He begins to sway as if in an apparition,*

and his voice trembles.) This bridge shakes more violently than even the wooden footbridges in our villages.

(The CONTRACTOR enters.)

CONTRACTOR: *(To the ENGINEER.)* Listen, Engineer. You never changed. "Sieve the sand this way, sieve it that way, as if it were rice or lentils." I did it. Fine, fine.
You said, "Sieve it as carefully as flour for bread; only then will the bridge be as good as a well-made loaf."
Fine. So much cement, so much sand, such proportions... I told you I would follow every instruction.
But then where was I to find the commissions for the politicians, the other engineers and the gangsters?
I began sieving the sand because you insisted, and stopped paying commissions. Nothing happened to me—but you were transferred, your salary was stopped, and you had to withdraw your children from school and send them back to the village. I told you I would sieve the sand and use the proper quantities of cement and sand, all according to the rules. Why should I object? The stronger the bridges and roads in this region, the better for me too. But I knew you would be transferred. The Chief Engineer—the politician's right-hand man—had already told me to have you crushed under a road roller. That dishonest Chief Engineer!
At first I thought you were like the others, merely making all this fuss to raise your own rate.
Later I realised you were different. But what am I to do? I cannot take my own children out of school.
Still, if a Chief Engineer like you ever comes along—if that day ever comes—
I shall begin sieving sand again. I shall mix exactly this much sand with exactly this much cement, all in the proportions you prescribed. But only when someone like you is in charge.
Until then...

(The ENGINEER and CONTRACTOR exit. The frozen figures appear not to have heard their conversation, as though it had been a vision. The two men slowly come out of their freeze and begin beating the drums, unsteadily at first. The labourers also come back to life and resume their hammering.
The drumming grows steadily louder as the hammering fades.
The curtain falls to the sound of the drums.)

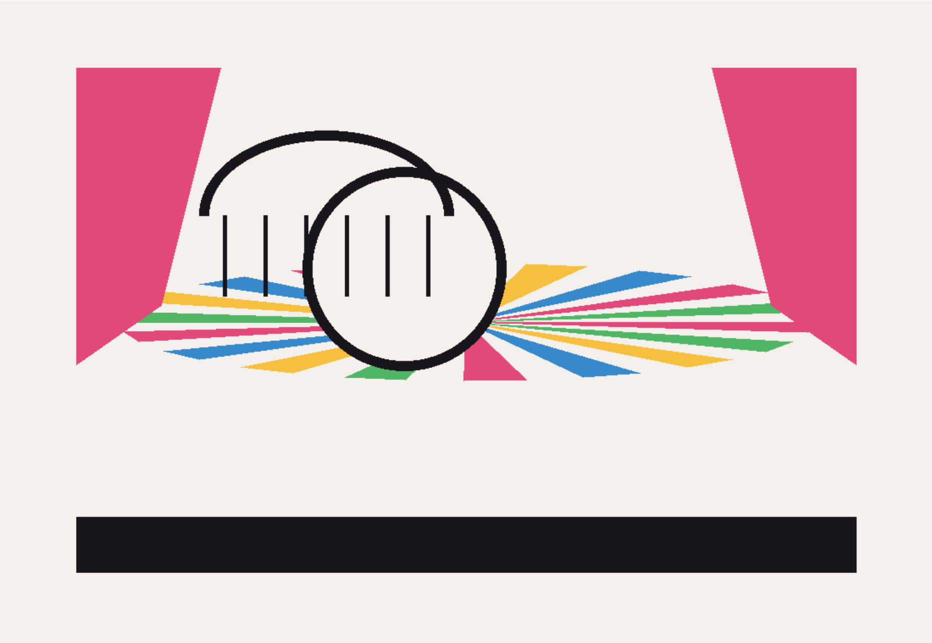

Figure 4

SCENE TWO

(Convocation at an engineering college. Students stand while a teacher—male or female—
delivers an address. The ENGINEER and the ENGINEER'S FRIEND stand among the students.
The two drummers sit in a corner beside their drums.)

TEACHER 1: Today is your last day at this engineering college. Life here
is very different from life outside. You must now go out into dust and grime. You must work.
Work with devotion—work so hard that these fields begin to yield gold,
and prosperity enters the lives of the people. Do not count day or night. That will be my fee from you,
my one request on this day of your graduation.
Our country and our people won freedom through great hardship. But freedom must also enter our minds.
Only when we are economically independent of others, when we no longer have to stretch out our hands before anyone,
will we possess true freedom of speech. An engineer is a maker, a creator: a maker of roads, canals
and bridges. An engineer is one who connects. This bridge will connect one person to another. Roads will be built.
Life will gain momentum; people will move. In a land filled with canals and ponds, the fields will yield gold.

(The students applaud.)

TEACHER 2: You must undertake great works. You must build enormous dams.
That is how development will come—rapid development. The whole world has developed in this way.
India has won freedom, and that freedom can endure only if development proceeds rapidly.
Rapid development will come through huge factories and great dams.

TEACHER 1: I differ with that grand road to development. In huge factories,
our people may be reduced to mere labourers. This country does not possess enough money to build truly strong, permanent dams.
So vast but poorly built dams may swallow village after village without being strong enough to last.
They will crack and fail, and their repair will never end.

TEACHER 2: But the direction of national development cannot be decided at a convocation in Muzaffarpur.
It will be decided in Delhi and Patna. And now—*(Loudly.)*—I invite to the stage
the student who has graduated with the highest marks.

(Gestures to the ENGINEER and places a medal around his neck.)

(The students applaud. The teachers exit.)

ENGINEER'S FRIEND: My friend, you have topped the class in engineering. Now real life begins. Let us see who comes first there.

ENGINEER: An engineer wins when the bridge he builds is strong; when the canals and dams he designs do not obstruct the natural drainage of water; when they make people's lives happier; when the work is completed on time. The marks earned in that examination determine an engineer's true victory or defeat.

ENGINEER'S FRIEND: In great projects, small mistakes are inevitable. They are bound to happen. As for me, I love great cities, great factories and towering chimneys. I have loved the smell of smoke since childhood. You know that.

ENGINEER: And smoke makes my mother cough. I dislike it. You know that too.

ENGINEER'S FRIEND: Look, brother, this is the difference between us. I shall follow the road Delhi or Patna lays down for me. If they order me to build a strong, permanent dam, I shall build it. If they order me to build a weak earthen dam, I shall build that. I shall do whatever my superiors command.

ENGINEER: Whether it is right or wrong?

ENGINEER'S FRIEND: A person does not rise to the top without ability. Why would an able person give a bad order?

ENGINEER: Then what is the point of studying here and acquiring knowledge?

ENGINEER'S FRIEND: Let it go, brother.

ENGINEER: There may be very little between victory and defeat, but the definitions of victory and defeat can be worlds apart. How can I perform work I know to be wrong? How can I walk along a road I know to be wrong?

ENGINEER'S FRIEND: Just as people define victory and defeat differently, they may also define right and wrong work, right and wrong roads, differently. For the person sitting in the chair, what is wrong can become right once it enters a file.

ENGINEER: Perhaps for some people. But the foundations of a bridge do not obey definitions written in a file. Right remains right,

PART THREE: SELF-INTEREST AND COMPROMISE

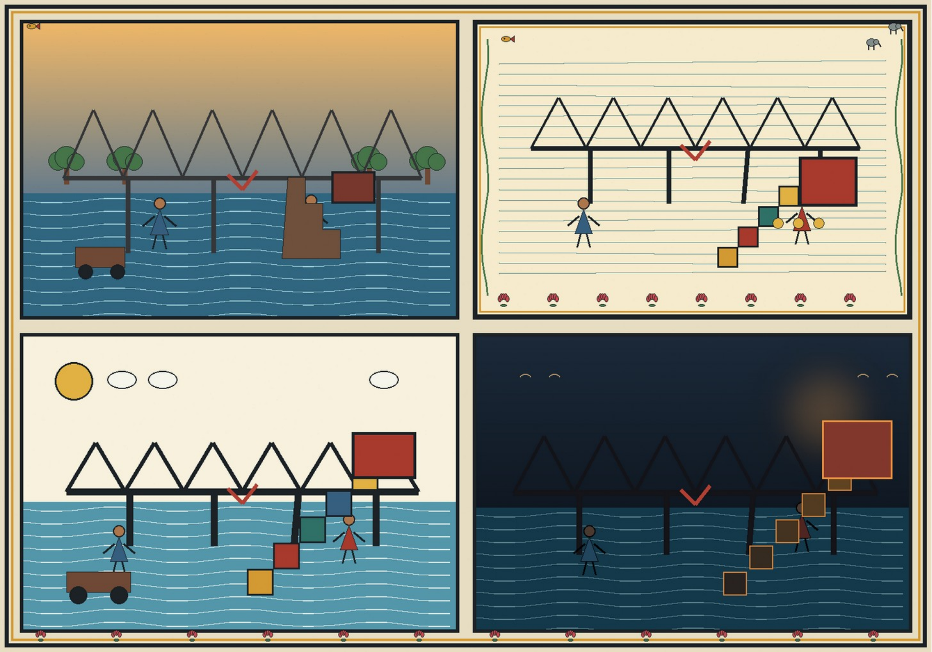

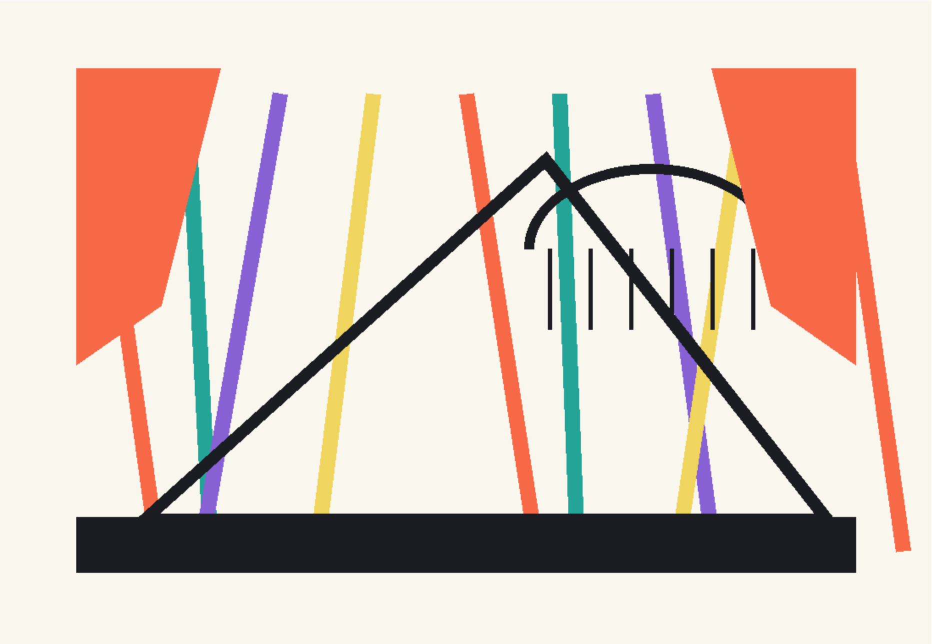

Figure 5

and wrong remains wrong. A mistake may be buried on paper, but it cannot be buried in a river.

ENGINEER'S FRIEND: Look, brother. I come from a prosperous family; you come from an ordinary one. Even if I earn nothing and refuse every dishonest practice, my family will not suffer. But your entire family depends on you and has pinned its hopes on you.

ENGINEER: Brother, freedom has come for everyone. You think I am poor, but there are people poorer and more helpless than I am. And there are people far wealthier and more powerful than you.

ENGINEER'S FRIEND: Such as?

ENGINEER: The people whose orders you will obey with your eyes closed.

ENGINEER'S FRIEND: Listen. The old zamindari may be gone, but in these new nations, those who succeed will be the ones who secure a place within the new order. The new zamindar who wins an election will survive; or the family whose child rises within the new government will survive. Their wealth will remain, their splendour will endure.

ENGINEER: And what do you mean by "rises"?

ENGINEER'S FRIEND: Higher in power, higher on the ladder of authority. The higher a person climbs, the greater the power he commands. The opportunity has come to you, and to me as well. But there is a small difference: you must acquire power; I must preserve the power my family already has.

ENGINEER: Will that satisfy you?

ENGINEER'S FRIEND: How can I answer today? That can only be said at the end of one's life.

ENGINEER: And if, at the end of your life, you realise that all this power was an illusion, that you never found true fulfilment—what then?

ENGINEER'S FRIEND: I shall think about it then. For now, I think as I have told you.

ENGINEER: And if you wish to turn back then, how will you return?

ENGINEER'S FRIEND: I shall repent then. But what if the same thing happens to you? How will you return?

ENGINEER: How can right ever become wrong, brother?

ENGINEER'S FRIEND: May this stubbornness of yours not destroy you. Today is a day of celebration. Today you have won,

so today your argument is right—but only for today.

(The two men begin beating their drums. The ENGINEER, his FRIEND and all the students exit.)

(CHILD 3, now grown and working as a handcart puller, enters.)

HANDCART PULLER: Someone rolled my cart away. *(To the two men.)* Where did that crowd go?

This is a college for highly educated people. Let us see what their education changes. Will my name ever enter someone's register,

or will my cart and my body simply keep rolling and rolling? Have you seen my cart? Someone rolled it away.

(He exits.)

FIRST MAN: *(To the Second Man.)* What kind of college is this?

SECOND MAN: A college that makes the government.

FIRST MAN: It makes the government?

SECOND MAN: Yes. It makes the government.

FIRST MAN: But that engineer said he would not become the government. He would remain one of the people.

SECOND MAN: Did you not hear what his friend said?

FIRST MAN: I heard. He seemed to be in rather too much of a hurry.

SECOND MAN: There are other schools and colleges like this—places that manufacture the government.

FIRST MAN: True enough.

SECOND MAN: Yes, true enough.

FIRST MAN: Will there not be two kinds of students there as well?

SECOND MAN: There are two kinds of students everywhere: those who become the government, and those who wish to remain among the people.

FIRST MAN: Are there people inside the government too? And government inside the people?

SECOND MAN: There are people inside the government, and government inside the people.

FIRST MAN: *(At a loss.)* One college, one school—and two kinds of students?

SECOND MAN: Every school and college has two kinds of teachers, old fool. Two kinds of ideas keep circling through the same school and college, turning everything upside down.

FIRST MAN: The students must become dizzy.

SECOND MAN: Home and neighbourhood are schools too, old fool. Do they not shape people as well?

FIRST MAN: *(Strikes the drum once and thinks.)* Shape them? *(Strikes it again.)*

Of course they do. *(Thinking.)* Let us see what happens.

(The Second Man strikes his drum. The First Man looks away. The First Man then strikes his drum, and the Second Man answers. Smiling, they begin striking the drums in turn, faster and faster. The curtain falls.)

SCENE THREE

(A village courtyard. The ENGINEER'S MOTHER—whom the villagers call "mad"—and AUNTIE sit together. The ENGINEER stands

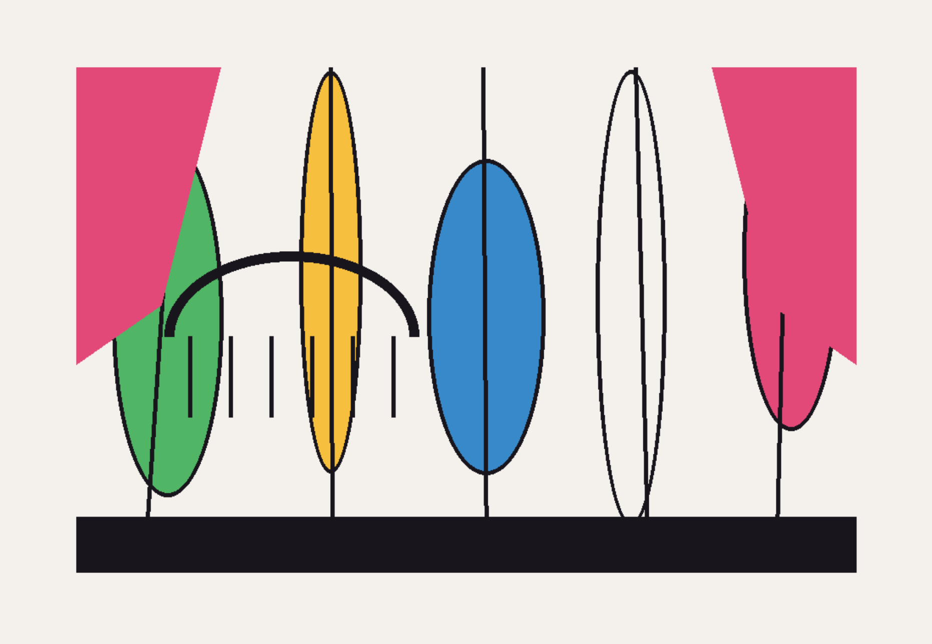

Figure 6

near them.)

AUNTIE: *(To the ENGINEER.)* Come, son. Sit here.

MOTHER: Today you have become the first engineer from this village. If your father were alive, how happy he would have been.

AUNTIE: What can anyone do, sister? Your son is as stubborn as his father ever was.

MOTHER: That he certainly is.

AUNTIE: However many obstacles people placed before him, he completed his education.

MOTHER: The village finally got an MLA, and he turned into a fiend. God knows what grudge he bore. One signature from him would have spared my son so much hardship in completing his studies.

AUNTIE: They remember us only at election time. Then their voices become sweet as honey.

MOTHER: Afterwards they tell people, “So what if I won because of your votes?”

AUNTIE: I gave that MLA a proper earful.

MOTHER: When?

AUNTIE: You did not hear? At the homecoming ceremony for his son's bride, an uproar broke out in that wretched MLA's courtyard because the bride's earring had gone missing. The policemen shut the gate and declared that no one could leave until it was found. Curse them!

MOTHER: Just imagine!

AUNTIE: Listen to the rest. The earring was found tangled in the bride's hair, and only then did they open the gate. To hell with that whole court! I scolded the gatekeeper thoroughly, and while I was at it I told him how that wretched man had refused to sign your son's papers.

MOTHER: People have begun calling me mad. Well then, understand this—the madwoman's son has become an engineer.

ENGINEER: What happened is past. If the village becomes educated, the MLA will not like it. Who will then run his errands? Did this country become free so that its people would never move forward?

MOTHER: Everyone must do their own work carefully, with all their heart and strength.

AUNTIE: Does the MLA not know that? He will call you mad too—just watch.

ENGINEER: Auntie, people call my mother mad; tomorrow they will call me mad as well. Should fear of that stop me from doing my duty? Should I become dishonest? If a bridge collapses, it is not only brick and stone that break. People's trust breaks with it.

AUNTIE: No, child. Everyone now knows how stubborn you are. They know you will put your whole heart into your work.

(A voice from offstage: "Has the officer arrived?")

(ELDER BROTHER enters.)

ELDER BROTHER: Come, son. People have gathered on the veranda. Come outside for a while.

ENGINEER: All right, brother.

(MOTHER and AUNTIE exit. Villagers enter.)

DADA: *(To the ENGINEER.)* Officer, tell us what you want today. The whole hamlet, village and region are talking. All the great men were left staring open-mouthed, because the first engineer from this village and region came from our own village. Once, the officers were all foreigners. That wretched MLA and his kind were petty zamindars. The great zamindars used to make men like him stand all night in a pond whenever it pleased them. And he refused to sign our officer's papers! We voted him into office thinking he would work for the welfare of the village and the region, but he has done nothing. His five years will soon be over; then we shall see. Not once has he spoken in the Patna Assembly for the welfare of this area.

LALA: Do not say that, Dada. He did speak once in the Patna Assembly. *(Mimicking him sarcastically.)* "Sir, nilgai are eating my crops. Kindly grant me a gun licence so that I may shoot them—or at least frighten them away."

(Everyone bursts into laughter.)

BAU: Lala, that age has passed. Once, brute strength ruled; then family and lineage ruled. Now the time has come for those who work with their own hands. They held back education for so long—can they still hold it back now?

BILAT: You are right, Bau. Who can stop the wind once it has begun to blow?

BAU: Bilat, they have certainly tried to stop it. But our Engineer Sahib is fiercely stubborn. If my brother were alive today, you would have seen his pride. He would have lifted the whole hamlet onto his shoulders and turned the day into a festival. But we uncles shall make up for his father's absence. Meet, go to Bau Bachcha's shop and tell him to send four adhaiya measures of sugar to the door—quickly. Put it on my account.

LALA: No, put it on my account.

DADA: No, on mine.

BILAT: Oho! Does Bau Bachcha belong to your hamlet alone? Put it on my account, boy.

MEET: *(Crooking one arm.)* I shall have one adhaiya entered in each of your four names.

(Everyone laughs.)

TOWN CRIER: From today, the new Engineer Sahib will build a small bridge over the stream outside the village. It will be connected to the road. If everyone allows soil from the edges of their fields to be cut for the road, work that would take a year can be completed in a month. The officer says: first measure, then build; first secure the people's route, then award the contract. Hear ye, hear ye!

PART FOUR: SACRIFICE AND FALL

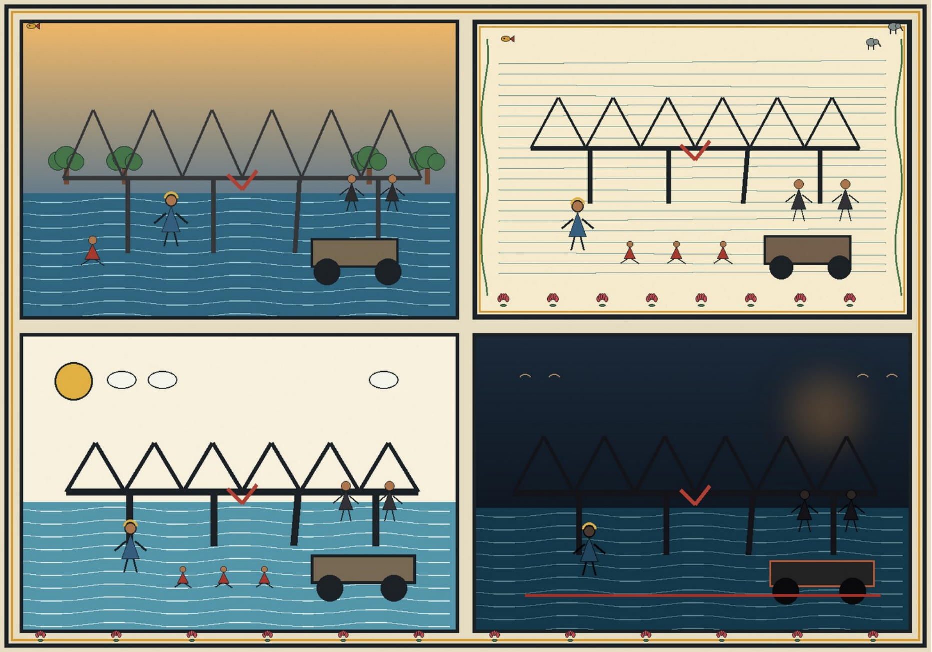

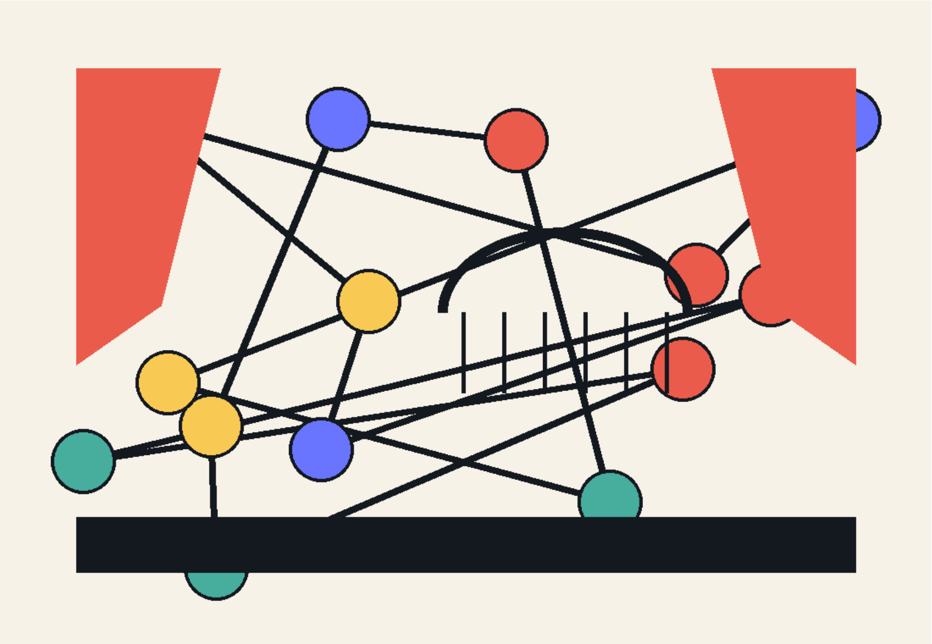

Figure 7

MOTHER: Son, build the bridge—but preserve the bridge of your own body too. This household breathes because of you.

ENGINEER: Only the person who abandons truth is truly alone. As long as your eyes are behind me, I shall not falter.

ENGINEER'S WIFE: *(Softly.)* People trust you. But your children wait for you too. Do your work—but do not think you stand alone.

(The labourers enter carrying spades. There are four extra spades, which they hand to LALA, DADA, BILAT and BAU. Everyone begins miming the digging of earth. MEET watches them, gestures to the Town Crier, and exits with him. The ENGINEER takes a measuring tape from his pocket and begins surveying the site.)

SCENE FOUR

(The CHIEF MINISTER'S office in Patna. The CHIEF MINISTER sits in a chair. The CHIEF ENGINEER stands before him, his hands joined respectfully.)

CHIEF MINISTER: So many years have passed since independence, yet not one bridge has been built across the Ganga at Patna.

After enormous effort, funds have finally been arranged. I have called you because the responsibility for the tender will naturally rest with the Chief Engineer. Publish the advertisement in the newspapers, but...

(Calls the CHIEF ENGINEER closer and whispers in his ear.)

You understand. There will be competition on paper, but inwardly the way must remain open for the person we choose. Many students graduated from engineering college with you. By now they have gained useful experience. Bring in capable engineers from among them—people who know their work properly.

CHIEF ENGINEER: Yes, that will be necessary. Otherwise, how shall we keep these contractors under control?

(The CHIEF ENGINEER exits.)

CHIEF MINISTER: *(To the audience.)* This Ganga Bridge will accelerate development. People who have been sitting idle will begin to travel. Movement will open their minds.

(Thunderous applause offstage.)

The people won freedom only through great hardship. Yet preserving that freedom will demand greater sacrifice than winning it did. This river, this bridge—everything demands sacrifice.

(Gestures to the other side of the stage.) This is the Ganga. Do you think a bridge can rise across it without sacrifice?
It wants blood. Can you give it?

VOICES OFFSTAGE: We shall give blood! As much as is needed!

CHIEF MINISTER: That is what I wished to hear. That is what I wished to see. The more we sacrifice for future generations, the happier those generations will be.

(The CHIEF ENGINEER enters. The CHIEF MINISTER turns from the audience to face him.)

CHIEF ENGINEER: It is settled. The contractor is ready to pay the commission.

CHIEF MINISTER: And the people are ready to make the sacrifice.

(They burst into laughter.)

CHIEF ENGINEER: I am preparing the list of engineers. We need people who can actually work, or these contractors will loot everything.

CHIEF MINISTER: The contractor has bought this contract by agreeing to the commission. We must keep a tight rein on him,
or the people's sacrifice will go entirely to waste.

(They laugh again.)

SCENE FIVE

(The ENGINEER and CHIEF ENGINEER enter wearing safety helmets. Labourers wearing helmets exit as they enter.)

ENGINEER: I am not satisfied with the progress of the work or with the methods being used. There are no proper safety arrangements, and no attention is being paid to the quality of the materials. Everything is substandard. Had safety measures been in place, so many labourers would not have fallen into the river, into excavations, or onto machinery and died. Many of the injured could have been saved. There is not even a first-aid station. Yesterday Ramdhani's hand was caught in a machine. Instead of dressing the wound, they tied a sack around it and sent him away. His little boy sat outside crying, "Father, come home." Thirty labourers died last month. Three hundred have died in one year. Compassionate relief has been recommended for only ten families. What happened to the files I forwarded for the others?

CHIEF ENGINEER: Look, you studied with me. You are an able engineer, but why can you not confine yourself to engineering? Why raise unnecessary questions about compassionate appointments and relief grants? You sent forward a huge file. What happened next, and why—
why should that concern you?

ENGINEER: What do you mean? Does engineering mean that a labourer's life has no value? A worker dies—
what happens to the family? How will they eat? How will the children receive a mother and father's love? Yesterday a husband and wife, both labourers, fell beneath a bridge pier and died. Is the government not responsible for their children? The money would come from the government treasury; what loss would that cause you?

CHIEF ENGINEER: If the true number of deaths comes out, allegations will be made against the Chief Minister and me.

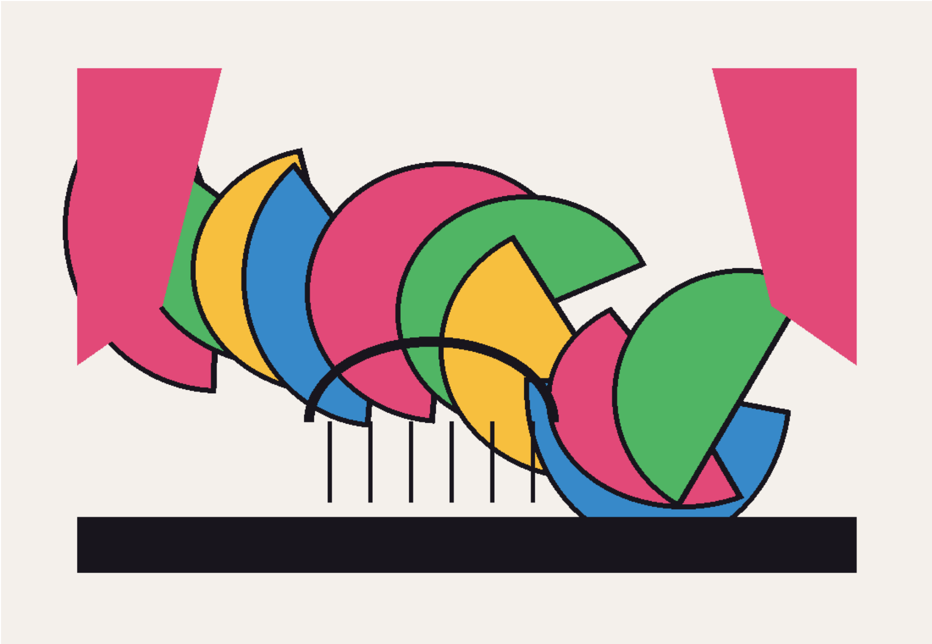

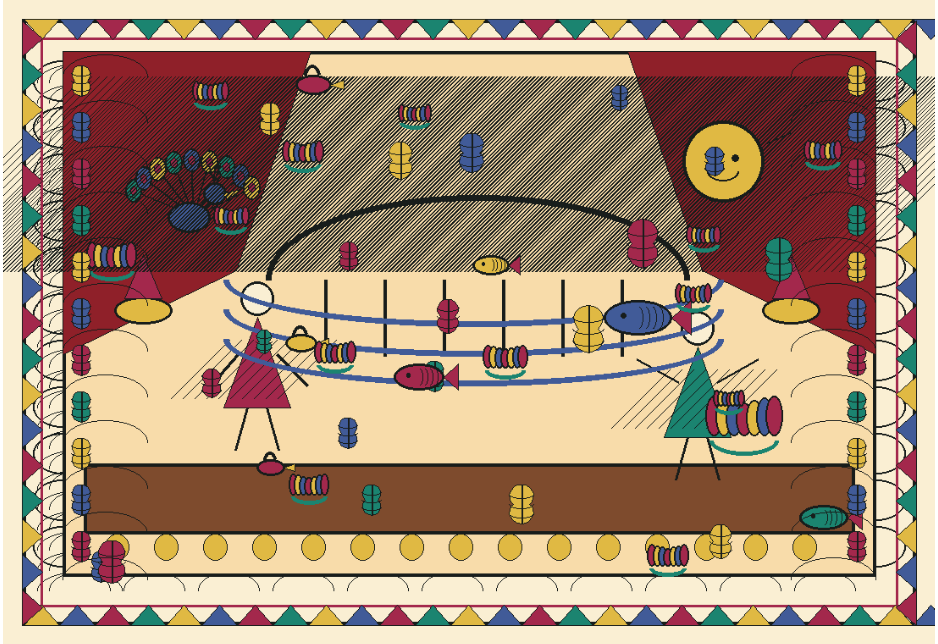

Figure 8

There will be uproar. The labourers come from many places, but if this news breaks, the entire country will erupt.

We shall be disgraced before the world. Criminal cases for homicide will follow. Neither I nor the Chief Minister will survive politically.

And all because of you! Is this why I brought you onto this enormous project? Would Mother Ganga not demand even two thousand lives for a project of this scale? When the project is completed, I shall receive great honour, and you will share in it.

ENGINEER: That is the share I fear. Along with a share of the honour, I shall receive a share in these sacrifices—or murders. I want no part of it.

CHIEF ENGINEER: What you are trying to do will halt development.

ENGINEER: What development? At what price? And how long will this development last?

If labourers' blood is mixed with the sand beneath the foundations, the bridge may stand, but society will collapse from within.

CHIEF ENGINEER: Development has taken place this way everywhere in the world.

ENGINEER: Which is why repairs to this bridge began even before its inauguration. That is how strong this development is.

CHIEF ENGINEER: *(Louder.)* Development has taken place this way everywhere in the world.

ENGINEER: And that is why people have begun saying that British bridges still stand, while bridges built in independent India crack before they are even complete.

CHIEF ENGINEER: *(Shouting.)* Development has taken place this way everywhere in the world!

ENGINEER: Then people will begin saying that British rule was better.

CHIEF ENGINEER: Let them say it.

ENGINEER: People will say the engineers swallowed all the money.

CHIEF ENGINEER: Let them. An engineer does not keep it all in his pocket; he spends it here. The rain falls in India, not in England.

ENGINEER: Along with engineering, you have studied economics as well: Dadabhai Naoroji's Poverty and Un-British Rule in India—the Drain of Wealth theory. Dadabhai could never have imagined that he was formulating that theory for the engineers of independent India.

CHIEF ENGINEER: So everyone is wrong except you?

ENGINEER: No. It seems to me that everyone is right except me. But then why are we turning small matters into a great spectacle?

CHIEF ENGINEER: What you call small is not small.

ENGINEER: You hold power. Even the Chief Minister is in your grip. Transfer me. But I possess copies of the files: the labourers' names, the dates of the accidents, the accounts of inferior materials—everything is recorded. If I remain silent, these papers will speak.

CHIEF ENGINEER: I cannot transfer you. The people stand with you. The labourers stand with you. An election is approaching. The Chief Minister has ordered me not to transfer you. And if your papers become public, the chairs of power will shake before the bridge does.

ENGINEER: Then what?

CHIEF ENGINEER: I cannot accept any of your demands. I remember that we studied together, but once a man sits in the chair, his mind sees the file first and his friend's face afterwards.

ENGINEER: Then what?

CHIEF ENGINEER: Then we shall see. You will not understand anyway. *(Pauses.)* My friend, I am telling you for the last time: change your path, or the path itself will crush you.

SCENE SIX

(The CHIEF MINISTER and CHIEF ENGINEER are seated.)

CHIEF MINISTER: He is disrupting the work. He is an enemy of progress. What can one say about such people?

CHIEF ENGINEER: Transfer him. The election is still some time away. The public will forget.

CHIEF MINISTER: The public may forget, but the opposition will dig up the matter. I feel like having him shot.

CHIEF ENGINEER: Do not make that mistake. You will turn him into Bhagat Singh.

CHIEF MINISTER: How can he become Bhagat Singh? This is no longer British rule. He is an enemy of progress. We shall label him a terrorist. Anyone who stands in the path of development must be given a different name—a name that frightens people the moment they hear it.

CHIEF ENGINEER: We cannot label him a terrorist. He is a government employee, an engineer. He is not some ordinary member of the public whom we can brand at will.

CHIEF MINISTER: Trap him in a corruption case. Have his house raided.

CHIEF ENGINEER: He does not take illegal money. The raid will find nothing in his house but a wooden cot.

CHIEF MINISTER: He must have some weakness. Find it.

CHIEF ENGINEER: He is stubborn. That is his only weakness.

CHIEF MINISTER: Then have him killed. If a man has no weakness, what use is there in letting him live?

CHIEF ENGINEER: Do not make that mistake. You will turn him into Mahatma Gandhi—into Jesus Christ.

CHIEF MINISTER: Find a weakness. You studied with him from the beginning. If you do not want him killed, find a weakness in him. If you can neither find one nor kill him, what are we to do—make him commit suicide?

PART FIVE: MEMORY AND QUESTIONS

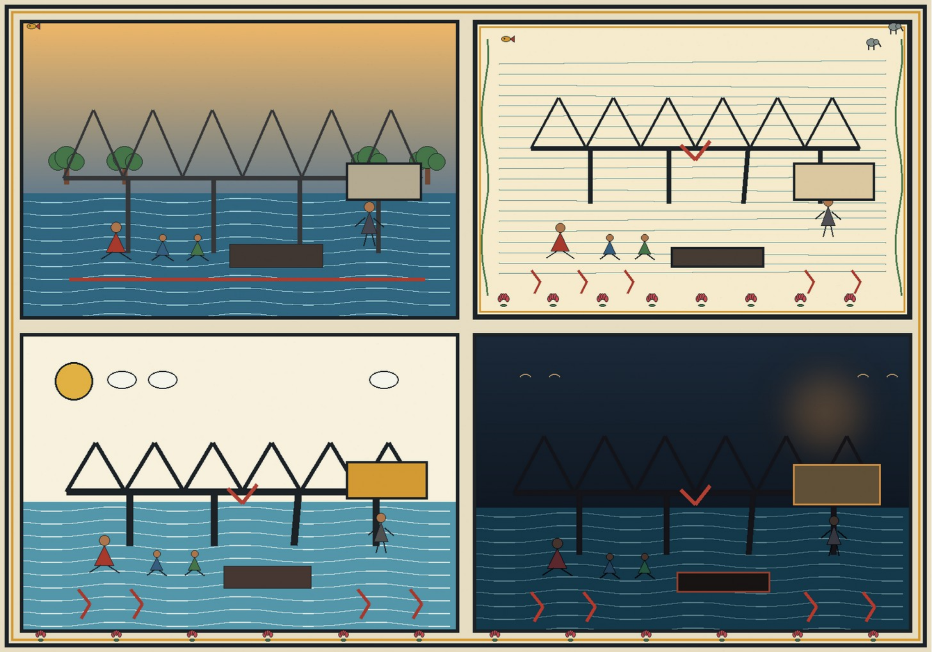

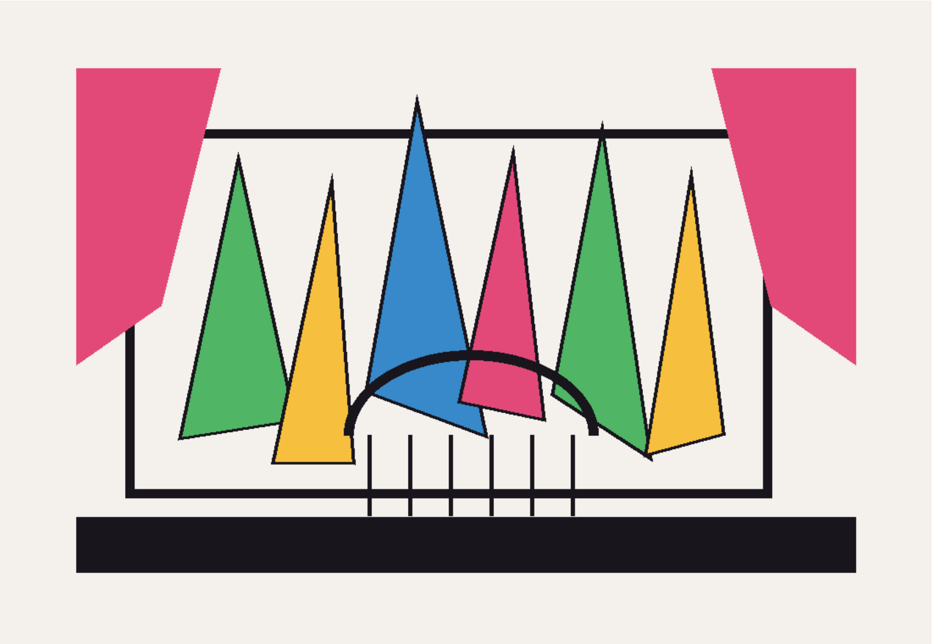

Figure 9

CHIEF ENGINEER: He is not the kind of man who commits suicide. He is stubborn. His stubbornness is not a defect; it is his strength. That is what makes him dangerous.

CHIEF MINISTER: Then have him killed and announce that he committed suicide.

CHIEF ENGINEER: Some people will not believe it. Everyone will say he was murdered.

CHIEF MINISTER: Then what?

CHIEF ENGINEER: He will have to die. He will be killed. *(Softly, as though to himself.)* He studied with me... but friendship with the chair has become greater than friendship with a friend.

CHIEF MINISTER: If it must look neither like murder nor suicide, we shall have to wait until he dies of old age.

CHIEF ENGINEER: *(With a cruel laugh.)* It will look neither like murder nor suicide. It will look like an accident. An accident... In this free country, members of the public will be branded terrorists and killed; people like him will die in "accidents".

CHIEF MINISTER: *(Laughing cruelly.)* Then put him beneath a road roller. But the entire event must look exactly like an accident. If people realise he was killed, we shall make a hero of him for nothing.

CHIEF ENGINEER: His death will grieve me deeply. He studied with me. He was a brilliant engineer.

(Curtain.)

SCENE SEVEN

(The ENGINEER'S body lies on the stage. His two children and his WIDOW sob beside it. The heavy rumble of a road roller is heard once in the distance, then stops abruptly. Silence.)

ENGINEER'S WIDOW: You said the papers would speak. Where are those papers now? These children's eyes will speak. This earth will speak. The trembling of this bridge will speak.

MOTHER: He has left us... O God! A madwoman's mad son. *(She uncovers the body, looks at it, then faints and falls.)*

BAU: My brother's son is gone. While his wrestler-uncle still lives, my nephew lies crushed before me. Brother, what answer shall I give you?

DADA: They say it was an accident. Can a man be crushed like this in an accident? A road roller does not simply wander out of control.

LALA: Have you ever heard of someone being flattened by a road roller in an accident?

BILAT: Whose name shall we invoke with pride now? Whom shall we point to when we tell people to struggle? Who will labour honestly? Who will obey the law?

MEET: But if we do not speak the truth, what would the officer say, Bilat Uncle? If we do not struggle, what would he say? If we neither work honestly nor obey the law, how can we ever take pride in him?

ELDER BROTHER: What monsters they have become! The elder brother is alive, and the younger has left us.

Mad boy… he used to go to Channa Grove to test his strength. Listen: this is the earth. No power from outside comes here. Good and evil are both in the hands of the people who live here. If evil is stronger, must we become evil too?

The earth and sky stand unmoved. Even after witnessing this injustice, no earthquake has come, no storm has risen. The world will go on as before.

(A violent storm seems to rise. Everyone shields their faces with their hands.)

(CHILD 3—now grown into a LABOURER—rushes in. His eyes are blackened and wet with tears; his clothes are torn.)

LABOURER: I went looking for a job. I was exhausted from pulling a handcart. They lured me away with lies, to Bhadohi. *(At the name "Bhadohi" he doubles over, trembling, and speaks through tears.)*

Whenever work stopped, they beat us with iron rods. One meal a day. If sleep came to our eyes—a slap. A free country. Free schools. Free colleges. *(To ELDER BROTHER.)* What happened? Is he dead? The man who told us, "A human life is greater than a file"—is he dead?

ELDER BROTHER: They killed him.

LABOURER: Killed him or let him die—his life is gone either way. Why did they kill him?

ELDER BROTHER: The Ganga Bridge. The Ganga Bridge took him as a sacrifice.

LABOURER: The drummer kept calling, "Labourers wanted! Labourers wanted!" I used to think I should have become a labourer on the Ganga Bridge instead of going all the way to Bhadohi. But now…

ELDER BROTHER: It is good that you went to Bhadohi. Many labourers were sacrificed here. You too might have died. This engineer opposed those deaths, and he too was crushed.

LABOURER: And the man who freed us from Bhadohi?

ELDER BROTHER: He too may have been crushed.

LABOURER: He too may have been crushed… Let me go. Let me go back to Bhadohi. If he has not been crushed, *I shall save him. (The LABOURER exits, then returns.)*

LABOURER: Let me first see the bridge. Let me see Patna. Then let me go—let me return to Bhadohi. If he has not been crushed, I shall save him.

(Curtain.)

Figure 10

SCENE EIGHT

(Many copies of the same book have been arranged for a launch. The book was written by the CHIEF ENGINEER, and the former CHIEF MINISTER is releasing it. The two drums stand in a corner, beside FIRST MAN and SECOND MAN.)

CHIEF MINISTER: I am delighted. *(Pause.)* I am delighted that, after thirty-two years of government service,
only the Chief Engineer could have written this book, Ganga Bridge. The cover is excellent, the paper
is excellent, the printing is excellent. Every line is impartial. Any historian may trust it with eyes closed.
It is written—and who can strike out the written word? The original spirit of the Ganga Bridge was to connect
person with person, and the Chief Engineer fulfilled that spirit. The voices raised in protest were merely the dust of development;
the blood that fell was merely the colour of sacrifice. I am no longer Chief Minister, and he too has retired.
Yet the Ganga Bridge still stands—though there is now less water in the Ganga.

Yes, the bridge shakes and has become dilapidated. But today's technology did not exist then.
The new Chief Minister has already announced another Ganga Bridge beside this one.
After all, what in this world is immortal?

I know the author of Ganga Bridge very well, personally. He served as Chief Engineer while I was Chief Minister. He was renowned for his honesty.

(The CHIEF ENGINEER joins his hands and smiles.)

This bridge was built under his direction. It is all right—quite all right. *(Pause.)* It is true that the bridge may collapse in a few days and a new one will stand beside it. But this book, Ganga Bridge, will make the fallen bridge immortal in history. The Chief Engineer has mentioned me too—*(Smiles.)*— and perhaps praised me a little too generously. But I am a servant of the people. Whatever I did in their service was merely my duty and required no record. *(Pause.)*

Once again, I congratulate the Chief Engineer on his industrious life and honest character.

CHIEF ENGINEER: The Chief Minister was my mentor. I revere him from the depths of my heart. Certain unseemly incidents involving a few individuals have been omitted from this book, lest history become a medium for spreading hatred. The task of history is not to reopen wounds but to bandage them— even if pus remains underneath. Nature changed; the river channel dried. These and other technical factors affected the bridge. Until the new bridge is built, the old one will remain in service.

And this book will make the old bridge immortal. It includes photographs—from the foundations to the final span— in both black-and-white and colour. *(Pause.)*

Honesty is indispensable. *(Smiles.)* The Chief Minister is embarrassing me with undeserved praise.

Had there been no honesty, this bridge would not have lasted even this long. The appendix records the names of thirty people who sacrificed their lives in its construction. This book is dedicated to their memory.

FIRST MAN: *(Striking the drum.)* And...

(The LABOURER rushes in.)

LABOURER: Where is the record of the many people who were killed?

CHIEF MINISTER: *(Smiling.)* Thank you. Thank you. Thank you.

SECOND MAN: *(Striking the drum.)* Mother Ganga is now demanding the sacrifice of those who sacrificed human beings; that is why her waters are drying up.

CHIEF ENGINEER: *(Smiling.)* Thank you. Thank you. Thank you.

(The TOWN CRIER enters.)

TOWN CRIER: Hear ye, hear ye! Labourers are required on the Ganga Bridge. One carriageway has been closed while the other is repaired. The bridge made immortal in history needs yet another patch today.

LABOURER: *(Striking the drum.)* From the day this bridge was inaugurated, the hammering of repairs has never stopped. That sound is not the bridge being patched. It is the bones of history knocking together.

TOWN CRIER: Hear ye, hear ye!

(The labourers hammer steadily. One of them throws a large stone into the darkness at the rear of the stage. Another cries, "Hail Mother Ganga!" The sound of the river is drier and hollower than before.)

SECOND MAN: *(Striking the drum.)* And...

LABOURER: Someone comes to Bhadohi and frees the labourers. Someone is crushed before the Ganga Bridge. Those are the true tyrants! *(Shouting in anguish.)* They are the true tyrants—the real tyrants! And then people like that engineer come and give us hope. Otherwise change might have come long ago; people themselves would have brought it. But if the one who gives hope is crushed, hope does not die. Its voice enters the drum, the hammer and the cracks in the bridge.

(Shouting in anguish.) The real tyrants are exposed when people like that engineer come and give us hope!

CHIEF ENGINEER: *(Smiling.)* Thank you. Thank you. Thank you.
CHIEF MINISTER: *(Smiling.)* Thank you. Thank you. Thank you.

(Blackout. End of the play.)

END

VIDEHA

Videha: The First Maithili Fortnightly E-Journal | ISSN 2229-547X | www.videha.co.in

जलोदीप

बाढ़ि-सुरक्षा आ जल-निकासीक सामाजिक बाल-नाटक

गजेन्द्र ठाकुर

सम्पादक, विदेह: प्रथम मैथिली पाक्षिक ई-पत्रिका (since 2000)

ISSN 2229-547X

पात्र-परिचय

चारिटा बच्चा। बच्चा मने बच्चा, बौआ आकि बुच्ची।

तीनटा लोक। लोक माने लोक, पुरुष आकि स्त्री।

एकटा अभियंता अथवा पढ़ल-लिखल युवक/युवती।

ठेकेदार अथवा प्रतिनिधि।

मुखिया/घोषक।

भीड़। भीड़ माने भीड़, महिला वा पुरुख।

पूर्वदृश्य

(चारू कात जलामय। पानिक तेज आवाज, हिलकोर, दूरसँ लोकक पुकार। लोक सभ मंचपर थहाथही

कऽ रहल छथि। पानि... बाढ़ि... बच्चा... बचाउ... आदि शब्दसँ चारूकात जलामय हेबाक

अनुभव उत्पन्न होइत अछि। एकटा बच्चा कोहुना कऽ बाढ़िसँ बाहर निकलैत मंच दिस नीचाँसँ

हाथ बढ़बैत अछि। लोक सभ ओकरा दिस दौगल अबैत अछि।)

बच्चा: न। हम तँ ठीके छी। मुदा हम्मर...

(बच्चाक वाक्य पूरा होएबाक पहिने अन्हार पसरि जाइत अछि। केवल पानिक आवाज रहि जाइत अछि।)

अंक १ : बाढ़िक अन्हार

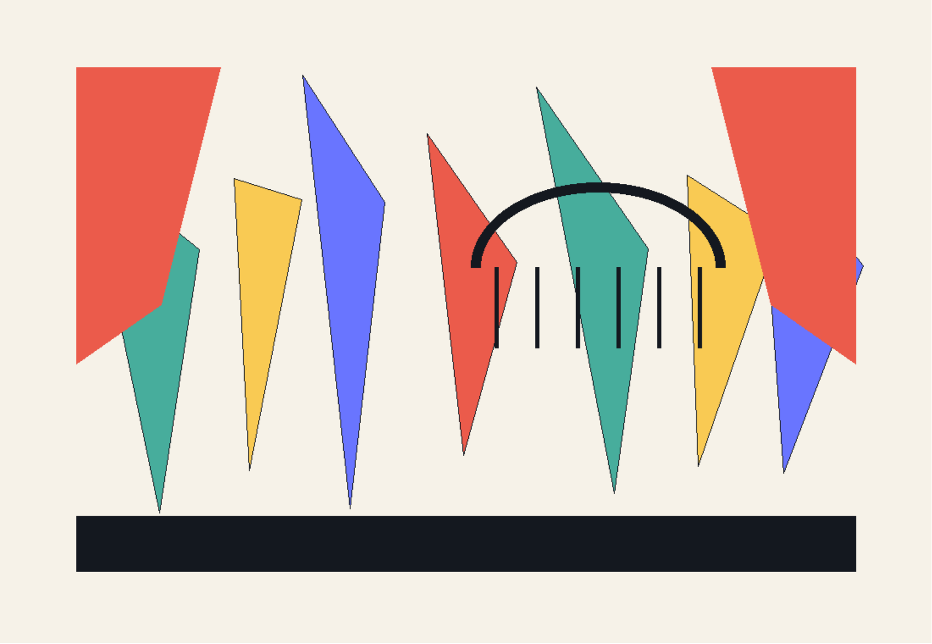

चित्र 1

दृश्य १

(छहर दिससँ लोक सभ आबि रहल अछि। मंचक पाछाँक भागमे ऊँच स्थल बना कऽ ई प्रभाव उत्पन्न कएल जा सकैत अछि जे लोक सभ पानिसँ बचि कऽ ऊपर चढ़ि रहल छथि। अनघोल भेल अछि।)

पहिल लोक: हे, बाइस फीट पानि आबि रहल अछि। घण्टा भरिमे सभटा डूमि जाएत। चौकीपर चौकी गेटह। बड़का-बच्चाक छतपर बच्चा सभकेँ दऽ आबह।

दोसर लोक: बाइस फीट तँ नै मुदा हिलकोरक अबाज अबैत सुनने आ देखने रहिऐ। झझा देलकै, छहरक ऊपरसँ पानि खसलै। झंझारपुर दिसुका बान्हपर जोर रहै। मुदा सुनै छिऐ जे अपन दिसुका

बान्ह बचेबाक लेल दोसरा दिसुका बान्ह काटि देलकै।

पहिल लोक: सुनै छिऐ से सत्य नहियो भऽ सकै छै। आ एतेक टा बान्ह कोना तोड़ल हेतै?

तेसर लोक: से की कहै छी। पानिक जोर तँ अहू दिस रहै। भने ओतइ टुटलै। अपना गामक सोझाँ जे टुटितै तँ गामे भँसि जइतै।

दोसर लोक: आब बहस करबाक समए नै अछि। अपन-अपन होस धरै जाउ। पहिने बच्चा सभकेँ बचाउ।

पहिल लोक: ककरो लग नाव अछि? रस्सी अछि? लालटेन अछि? सूखल अन्न अछि?

तेसर लोक: नाव तऽ परसाल कागजपर किनल गेल छल। गाममे तखनहुँ नहि आएल, आब की आएत!

भीड़: बच्चा बचाउ! बूढ़-बुजुर्ग बचाउ! घर गेल, धन गेल, मुदा जान बचाउ!

(अन्हार पसरि जाइए। पानिक आवाजसँ दृश्य बदलैत अछि।)

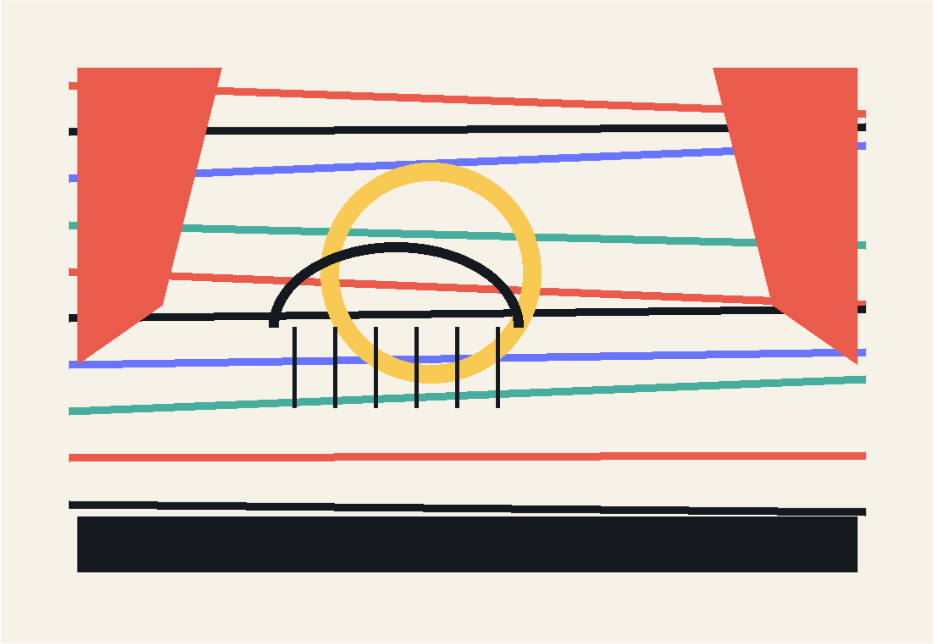

चित्र 2

दृश्य २

(चौकीपर चौकी गेटल अछि। ओइपर चारिटा बच्चा बैसल अछि। तीनटा बच्चा खेला रहल अछि, एक दोसराक हाथपर थोपड़ी पाड़ि रहल अछि। चारिम बच्चा, जे प्रारम्भमे आएल छल, गुमकी लाधने चौकीक एक कोनमे बैसल अछि।)

पहिल बच्चा: एना किए मुँह बिधुऔने छँह। आ, खेलाइ छी सभ।

दोसर बच्चा: हइ, नै कहीं किछु। बेचारोक घरमे सभ बाढ़िमे दहा गेल छै।

तेसर बच्चा: मुदा घर तँ ठीके छै। कोठाक घर छै, तैं नै टुटलै।

चारिम बच्चा: घर ठाढ़ छै, मुदा घरक लोक नहि छै। घरक दीवार बाँचि गेल, घरक हँसी पानिमे चलि गेल।

पहिल बच्चा: आब जे भेलै से भेलै, आबि जो। दुख बिसरबा लेल खेल खेलेनाइ बड्ड जरूरी छै। आइ तोरे मोनसँ हेतै खेल। कह, कोन खेल खेलाइ?

चारिम बच्चा: नै, भगवानक लिखल नै। लोकक लिखल। हमर बाबू कहैत रहथि, सभटा छिऐ मनुक्खक खेल। खेलेमे ओ खेल जे हम खेलाए चाहै छी।

तीनू बच्चा: हँ, जे खेल खेलाए चाहमे से हम सभ खेलाएब।

चारिम बच्चा: ठीक छै, तँ खेल खेलाइ छी पहाड़क।

तेसर बच्चा: मुदा पहाड़ तँ ऐ इलाकामे छैहे नै।

चारिम बच्चा: कोना नै छै? ओ बान्ह सभ जे बान्हल छै से की छिऐ? आ ओ नबका ऊँच सड़क, जे गामक माथपर दीवार जकाँ उठल अछि, से पहाड़ नहि तऽ की?

अंक २ : पहाड़क खेल

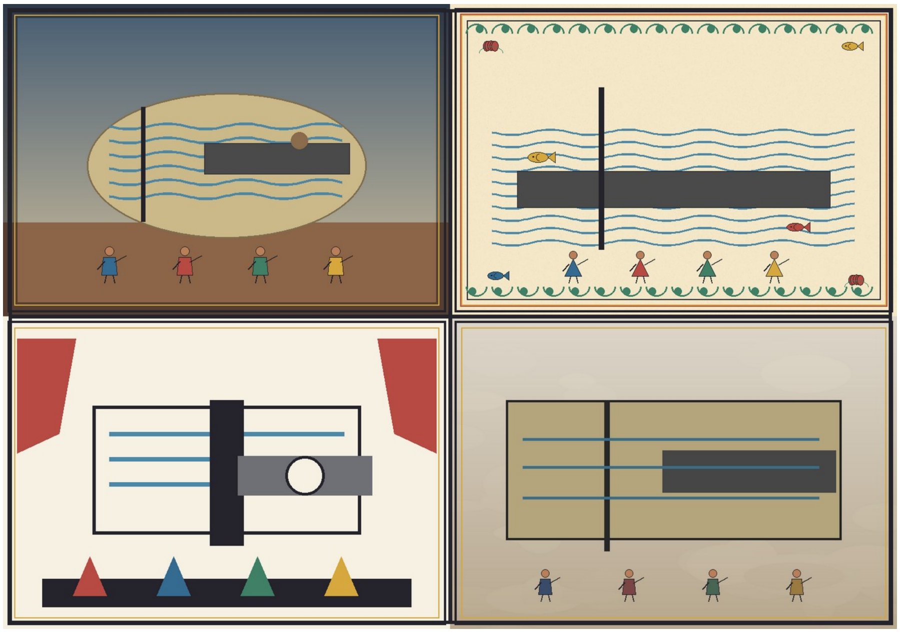

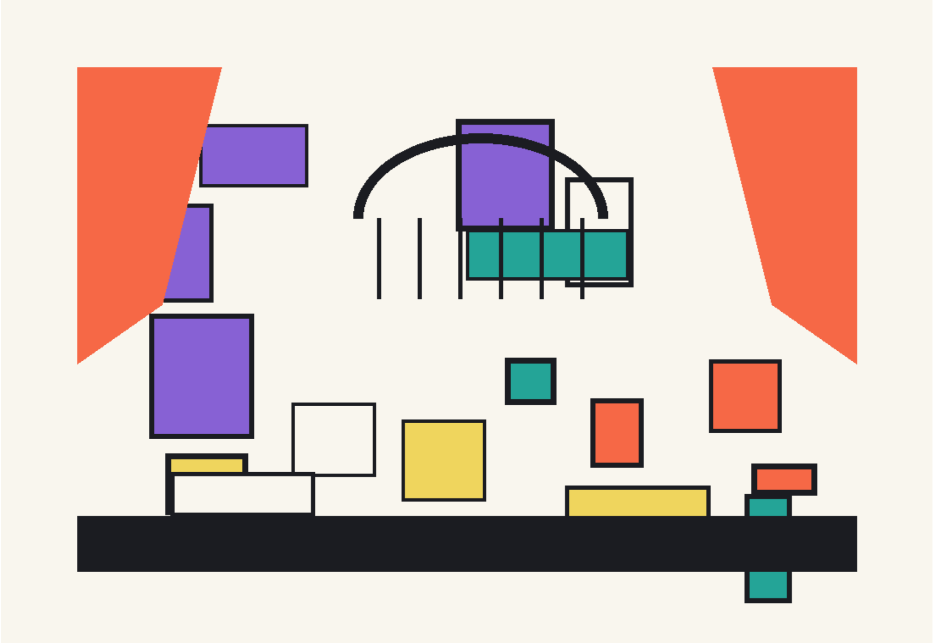

चित्र 3

दृश्य १

(बच्चा सभ चौकीपर राखल कटोरी, लोटा, भीजल कपड़ा, माटिक ढेला, काठी आ फाटल थारीसँ नक्शा बनबैत अछि। एक दिस नदी, दोसर दिस गाम, बीचमे बान्ह, आर आगाँ ऊँच सड़क।)

पहिल बच्चा: ई लकीर नदी। ई ढेला गाम। ई कपड़ा खेत।

दोसर बच्चा: ई काठी बान्ह।

तेसर बच्चा: आ ई उलटल थारी?

चारिम बच्चा: ई राजमार्ग। बान्हसँ पैघ बान्ह। नाम सड़क, काम दीवार।

पहिल बच्चा: सड़क तऽ लोककेँ जोड़ै छै।

चारिम बच्चा: जँ पानिक बाट छोड़ै, तखन जोड़ै छै। जँ पानिक बाट बन्द करै, तखन काटै छै।

गामकेँ दू भागमे काटै छै, खेतकेँ कटोरा बनबै छै, आ पानि कहै छै - हम कतऽ जाउ?

(चारिम बच्चा लोटासँ अल्प पानि नक्शापर ढारैत अछि। पानि सड़कक ओहि पार जमा भऽ जाइत अछि।)

दोसर बच्चा: देखह, पानि आगे नहि जा रहल।

तेसर बच्चा: तखन पुल बनाउ।

चारिम बच्चा: पुल गाड़ी लेल बनल छै। पानि लेल की बनल छै?

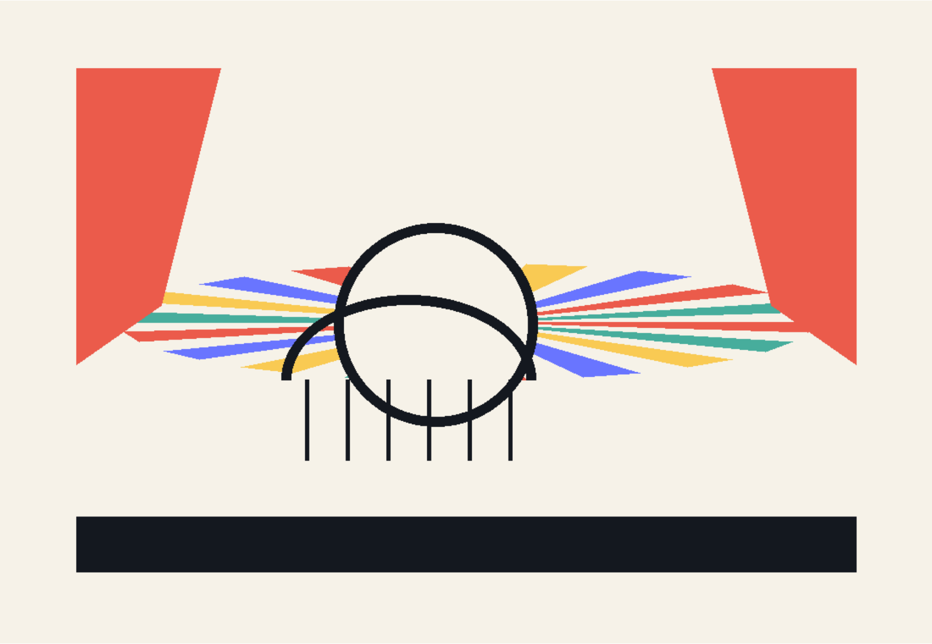

चित्र 4

पहिल बच्चा: नाला? पुलिया? कलभर्ट?

चारिम बच्चा: कागजपर। मुदा जँ ओ छोट हो, बन्द हो, गादसँ भरल हो, प्लास्टिकसँ अटकल

हो, वा गलत जगह बनल हो, तँ पानि ओकरा हँसि कऽ छोड़ि दै छै।

तीनू बच्चा: तखन सड़क बान्ह भऽ जाइ छै!

चारिम बच्चा: हँ। आ बान्ह पहाड़ भऽ जाइ छै। आ गाम घाटी।

दृश्य २

(तीनटा लोक ऊपरक भागसँ सुनैत-सुनैत अबैत छथि। पहिने बच्चा सभक खेल देखि हँसैत छथि।)

पहिल लोक: देखू, बच्चा सभ सेहो अभियंता बनि गेल।

दोसर लोक: खेलमे नदी, खेलमे बान्ह, खेलमे सड़क।

तेसर लोक: मुदा खेलमे जे देखबै छै, से सचमे बुझाइ छै। हमरा खेतमे पानि सड़कक कारणे अटकल।

नालाक मुँह गादसँ बन्द छल।

पहिल लोक: ई बात पंचायतमे उठाओल गेल छल। कहल गेल - योजना पास अछि, जलनिकास अछि।

दोसर लोक: जलनिकास कागजक मुँहसँ निकलल, पानिक मुँहसँ नहि।

चारिम बच्चा: हमर बाबू कहैत रहथि - बान्ह बनाउ, सड़क बनाउ, मुदा नदीक साँस नहि

रोकू। पानि जीवित चीज अछि। ओकर बाट काटब तऽ ओ बाट बना लेत।

(क्षण भरि चुप्पी। दूरसँ हेलिकॉप्टर वा मोटरबोटक मद्धिम ध्वनि, फेर शून्य।)

अंक ३ : लोकक खेल

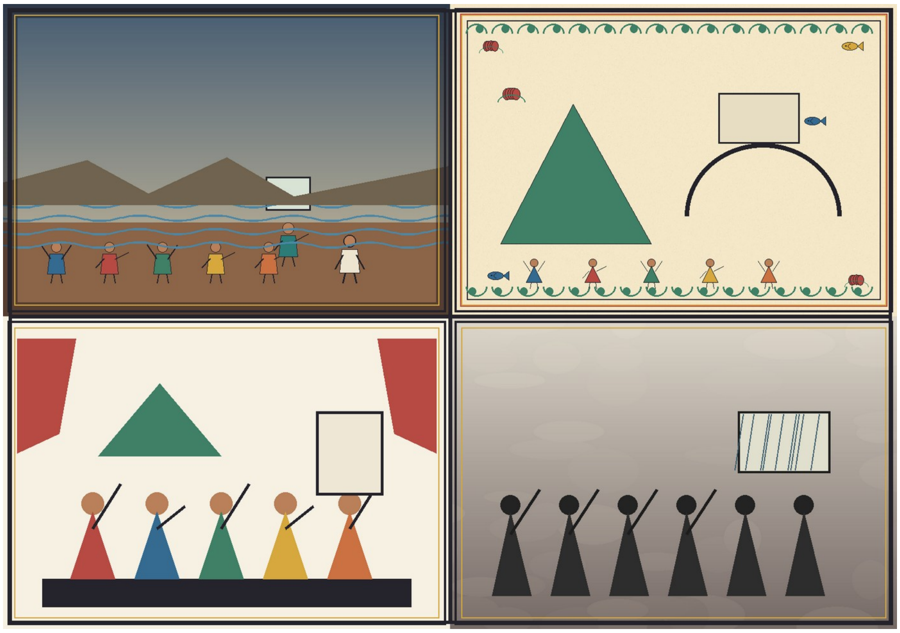

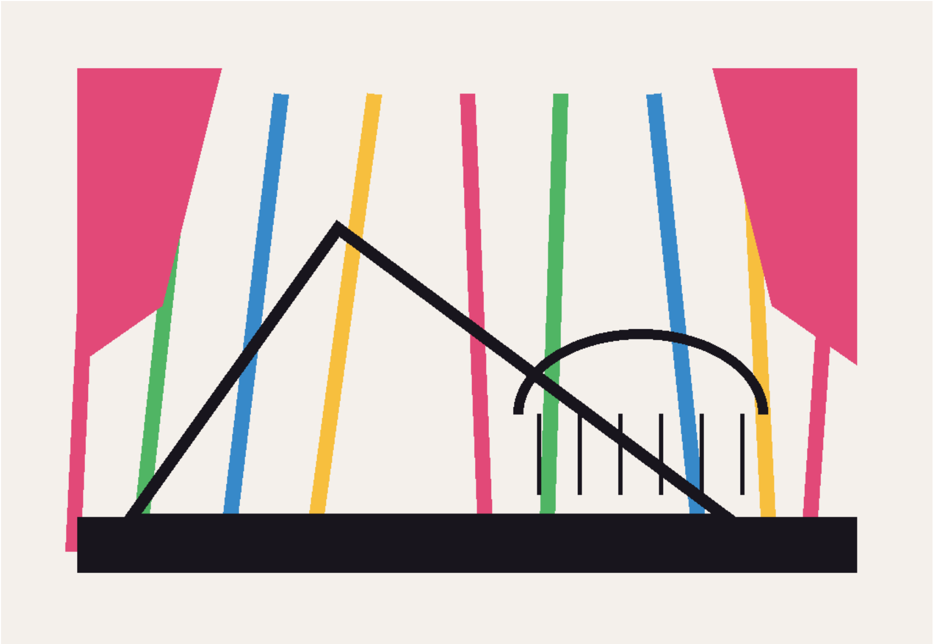

चित्र 5

दृश्य १

(मंचपर भीड़ जमा अछि। कियो भीजल बोरामे कपड़ा, कियो बच्चा, कियो बुढ़िया कें सहारा देने। एक प्रतिनिधि अथवा ठेकेदार, साफ कपड़ामे, ऊपरका सूखल बाटसँ आबैत अछि।)

मुखिया: शांत रहू सभ। राहत आएत। सूची बनत। जेकर क्षति भेल, ओकर नाम लिखल जाएत।

भीड़क स्वर: नाम नहि, नाव चाही! चूड़ा चाही! दवाई चाही! आ ई बताउ, बान्ह केना टुटल?

ठेकेदार: प्रकृतिक प्रकोप छल। असाधारण वर्षा। एहन बाढ़ि शताब्दीमे एक बेर अबैत अछि।

दोसर लोक: शताब्दीमे एक बेर? पछिला पाँच बरखमे तीन बेर हमर आँगन डुमल।

तेसर लोक: प्रकृति बरसल, मुदा बान्हक मरम्मत केलनि के? बालू भरल बोरा कागजपर गेल, बान्हपर नहि।

ठेकेदार: ई आरोप अछि। प्रमाण चाही।

चारिम बच्चा: प्रमाण पानि अछि। जे ठाम पानि बाट नहि पाबि सकल, ओतए घर डुबल। जे ठाम पुलिया बन्द छल, ओतए खेत पोखरि भेल।

ठेकेदार: बच्चा सभक बातसँ योजना नहि चलै छै।

पहिल बच्चा: तखन ककर बातसँ चलै छै? ओहि कागजसँ जाहिमे पुलिया अछि मुदा जमीनपर नहि?

दोसर बच्चा: ओहि नक्शासँ जाहिमे नदी सीधी रेखा अछि, मुदा सचमे नदी साँप जकाँ बल खाइत अछि?

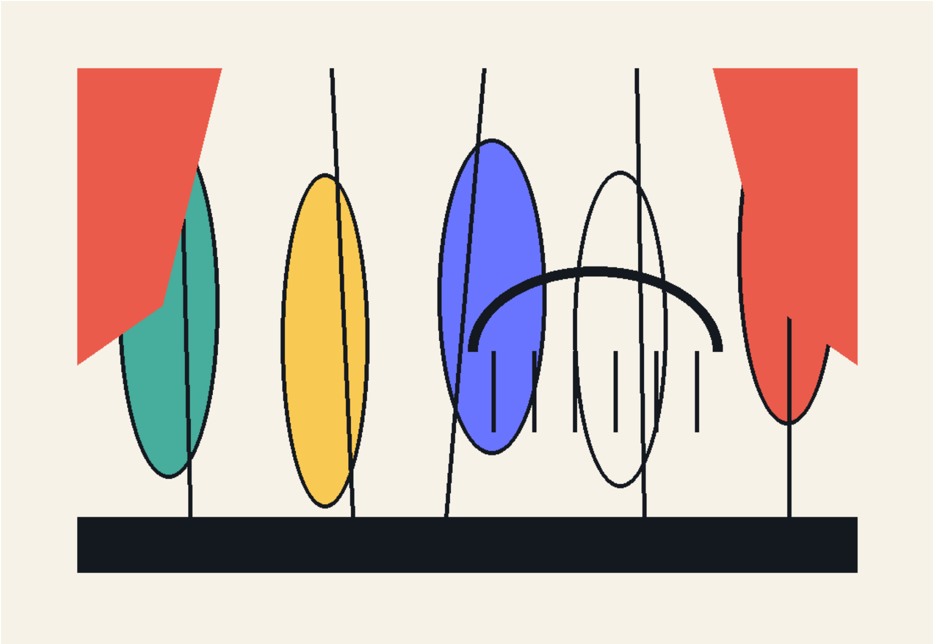

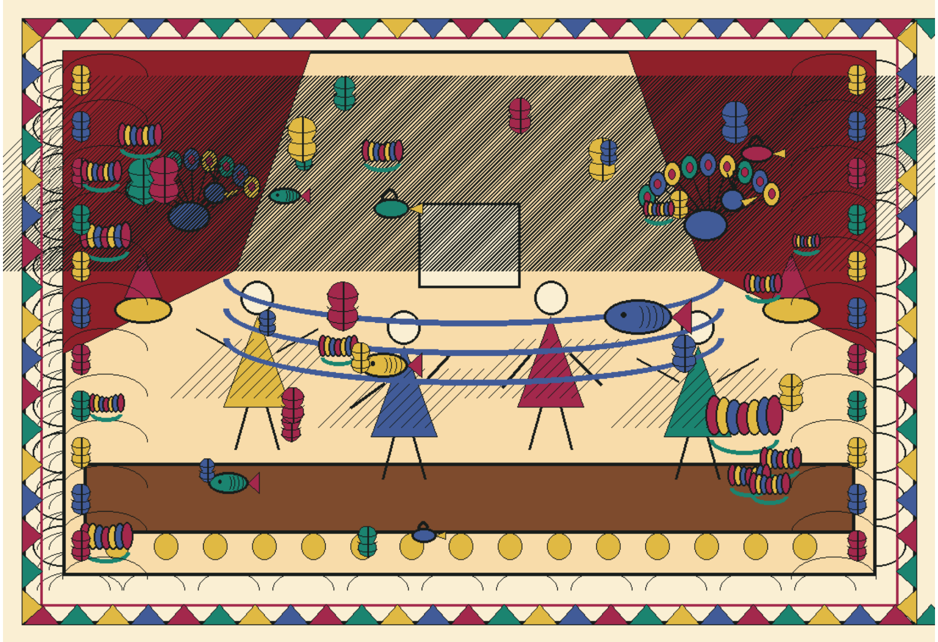

चित्र 6

तेसर बच्चा: ओहि भाषणसँ जाहिमे विकास अछि, मुदा गाम कटोरामे बन्द अछि?

भीड़: पानिक बाट! पानिक बाट! पानिक बाट!

दृश्य २

(अभियंता अथवा पढ़ल-लिखल युवक/युवती भीड़क बीचसँ आगाँ अबैत अछि। ओकरा हाथमे भीजल नक्शा वा कापी अछि।)

अभियंता: बात केवल एक बान्हक नहि अछि। नदीक पुरान बाट बन्द भेल, पोखरि भरल गेल, निचला जमीनपर घर बसल, सड़क ऊँच भेल, आ ओकरा नीचाँ पानिक राह छोट छोड़ल गेल। सभ मिलि कऽ बाढ़िक जाल बनल।

पहिल लोक: तखन समाधान की? बान्ह तोड़ि देब? सड़क काटि देब?

अभियंता: समाधान अन्हारमे काटब नहि, बुझि कऽ बनाउब अछि। जतए बान्ह जरूरी अछि, ओतए मजबूत, पारदर्शी आ लोक निगरानीमे। जतए नदीकेँ फैलबाक प्राकृतिक जगह चाही, ओतए ओकरा जगह। जतए सड़क अछि, ओतए पर्याप्त कलभर्ट, खुलल नाला, ऊँच पुल, आ वर्षा पहिने सफाइ।

दोसर लोक: ई सभ सरकार करैत।

अभियंता: सरकार करैत, मुदा गाम देखैत। कागजमे पाँच कलभर्ट लिखल हो आ जमीनपर दू हो, तखन पहिल गवाही गाम देत। गाद भरल हो, तखन सफाइक माँग गाम करत। निर्माण पहिने पानिक पुरान बाट बताओत गाम।

चारिम बच्चा: माने गामक आँख खुलल रहत, तखन पानिक आँखि लाल नहि हेतै?

अभियंता: ठीक कहलेँ। विकासक आँख सेहो पानिक बाट देखत।

अंक ४ : जलोदीप

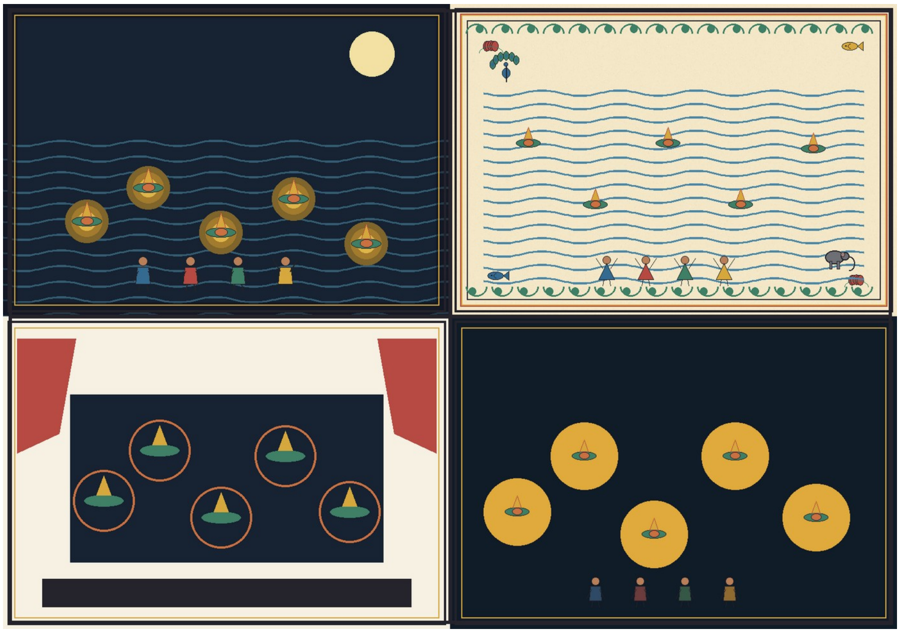

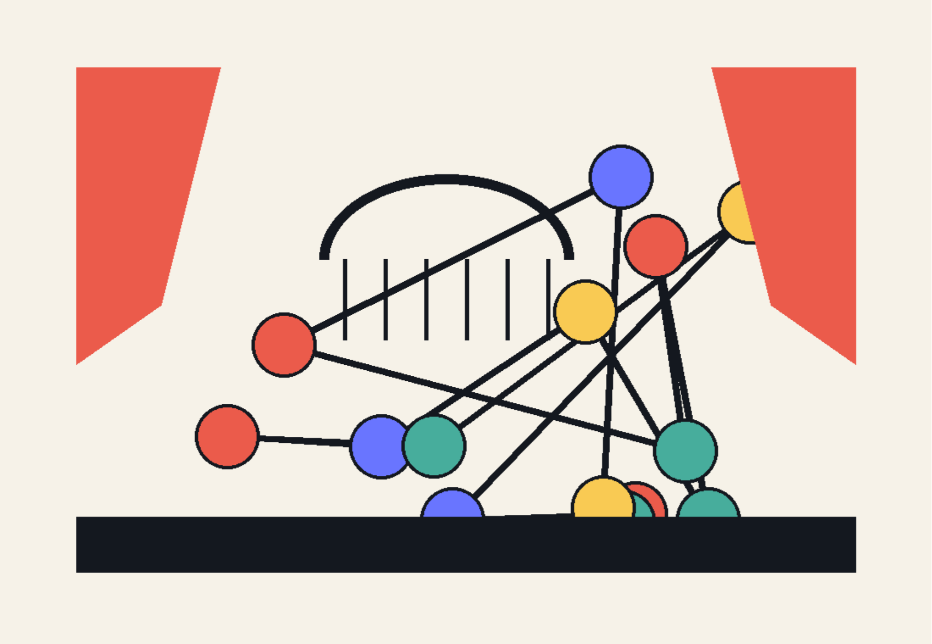

चित्र 7

दृश्य १

(राति। चारू बच्चा चौकीपर। पानि घटल नहि, मुदा आवाज किछु शांत। लोक सभ थाकल छथि। ककरो हाथमे फुसफुसाइत बाती, ककरो हाथमे खाली कटोरी।)

पहिल बच्चा: हमरा डर लागि रहल अछि। अन्हारमे पानि आर पैघ लगै छै।

दोसर बच्चा: जँ एकटा दीप जराबी तँ?

तेसर बच्चा: बाढ़िमे दीप? पानि बुझा देत।

चारिम बच्चा: तैं तऽ नाव चाही। दीपकेँ पानिपर तैराउ। जलमे दीप। जलोदीप।

(बच्चा सभ पात, छोट कटोरी वा टूटल थर्मोकोलक टुकड़ीपर बाती राखि दीप जरेबाक अभिनय

करैत अछि।)

पहिल बच्चा: ई दीप हमर घर लेल।

दोसर बच्चा: ई दीप ओहि बूढ़ बाबाक लेल जे छतपर अटकल छथि।

तेसर बच्चा: ई दीप ओहि खेत लेल जे सड़कक पाछाँ पोखरि बनि गेल।

चारिम बच्चा: ई दीप हमर बाबू लेल। ओ कहैत रहथि - पानिक बाट छोड़ू। आब ई दीप बुझत नहि, जँ हम सभ बात याद राखब।

बच्चा सभ: जलोदीप! जलोदीप! अन्हारमे आँखि, पानिमे बाट!

दृश्य २

चित्र 8

(लोक सभ दीपक उजास दिस अबैत छथि। ठेकेदार/प्रतिनिधि सेहो दूर ठाढ़। भीड़मे पहिने करुणा, फेर दृढ़ता।)

मुखिया: ई बच्चा सभ रातिमे खेल-खेलमे हमरा सभकेँ लाज देलक। हम सभ बरखाक बाद सभ भूलि जाइ छी।

पहिल लोक: एहि बेर नहि।

दोसर लोक: पहिल बात - राहत। जे फँसल अछि, ओकरा निकालू।

तेसर लोक: दोसर बात - गामक जल-पथ नक्शा बनत। पुरान धार, पोखरि, पइन, नाला, सभ चिन्हल जाएत।

अभियंता: तेसर बात - सड़क आ बान्हक निरीक्षण। कतए कलभर्ट छोट अछि, कतए बन्द अछि, कतए ऊँच सड़क पानिक राह रोकै अछि, सूची बनत।

मुखिया: चारिम बात - मरम्मतक हिसाब खुल्लमखुल्ला। कतेक बालू, कतेक गिट्टी, कतेक बोरा, कतेक मजदूर - सभ गामक चबूतरापर लिखल जाएत।

पहिल बच्चा: पाँचम बात - बच्चा सभकेँ तैरनाइ, रस्सी बाँधनाइ, ऊँच ठाम पहुँचबाक राह सिखाओल जाएत।

दोसर बच्चा: छठम बात - प्लास्टिक आ कूड़ा नालामे नहि।

तेसर बच्चा: सातम बात - बरखा पहिने नाला साफ।

चारिम बच्चा: आ आठम बात - विकास तखन, जखन पानि लेल बाट। नहि तँ सड़क नहि, दीवार। पुल नहि, फंदा।

भीड़: बान्ह हो, सड़क हो, राजमार्ग हो - पानिक बाट छोड़ू!

अंक ५ : नबका बिहान

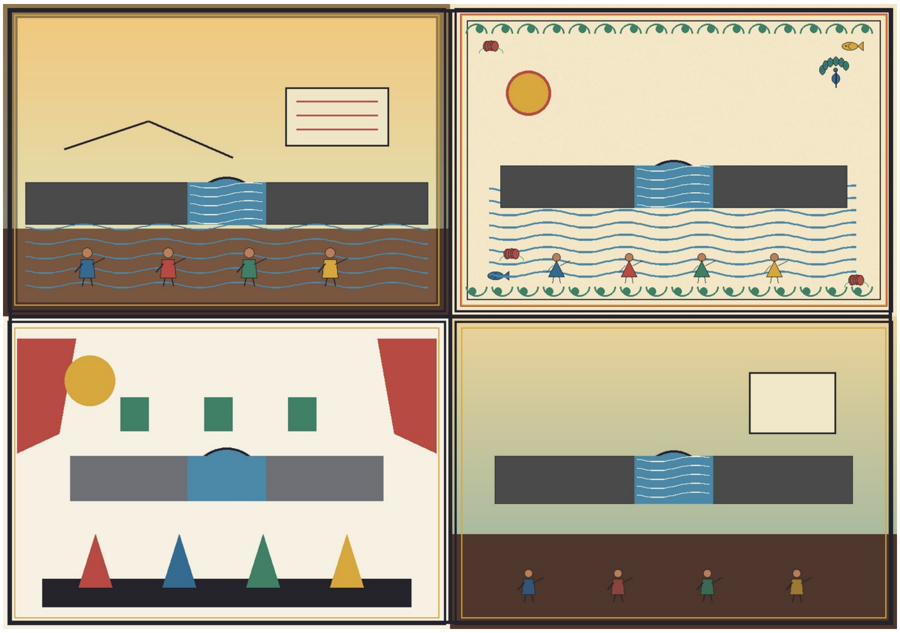

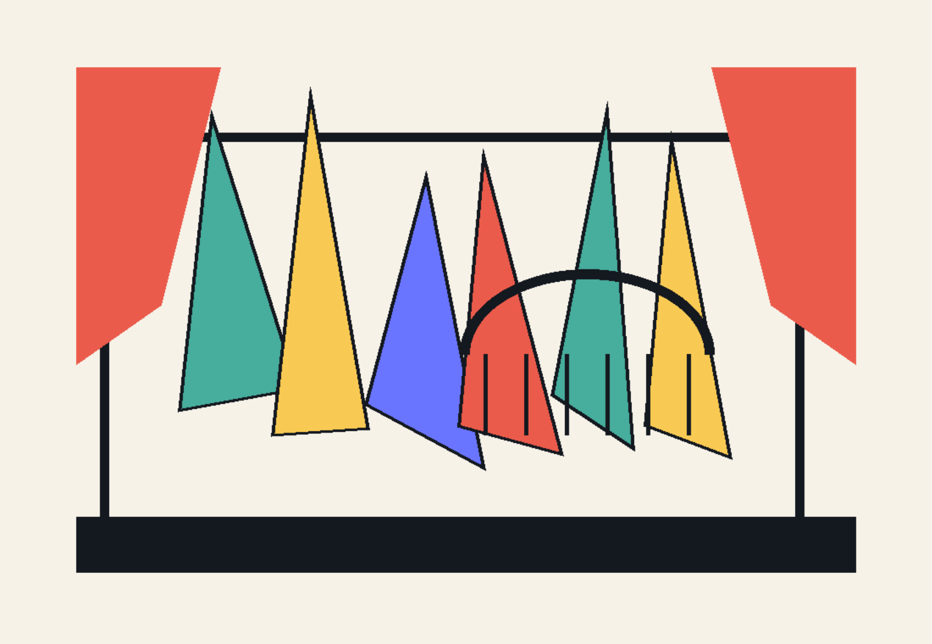

चित्र 9

दृश्य १

(भोरक हलुक उजास। पानि कम भेल अछि, मुदा कीचड़, टूटल सामान, थाकल चेहरा। लोक सभ समूह बना कऽ काज बाँटि रहल छथि।)

मुखिया: रस्सी टोली दाहिना टोला जाएत। दवाई टोली स्कूलक बरामदामे। भोजन टोली चूड़ा-गुड़ बाँटत। बच्चा सभ ऊँच चौकीपर रहत।

अभियंता: हम नदीक पुरान बाट बूढ़ लोकसँ पूछि कऽ नक्शा बनब। जे सड़क बनल अछि, ओकर नीचाँ पानिक मुँह कतए चाही, से चिन्हब।

पहिल लोक: हम कलभर्टक मुँहसँ गाद हटाएब।

दोसर लोक: हम मोबाइलसँ फोटो लऽ कऽ तारीख सहित राखब। एहि बेर कागज केवल दफ्तरमे नहि रहत, गाममे सेहो रहत।

तेसर लोक: हम सभ मिलि कऽ कहब - जँ सड़क बने, पहिने जलनिकास देखाउ। जँ बान्ह बने, पहिने रख-रखावक हिसाब देखाउ।

ठेकेदार: हम... हम सूची देब। जे कमी अछि, ओकरा देखल जाएत।

चारिम बच्चा: देखल नहि, सुधारल जाएत। हमर बाबू कहैत रहथि - गलती देखलासँ छोट नहि होइत, छिपेलासँ बड़ होइत।

(ठेकेदार निरुत्तर। भीड़मे धीमा सहमति।)

दृश्य २

(बच्चा सभ फेर अपन नक्शा बनबैत अछि। एहि बेर नदीक बाट खुल्ला अछि। बान्हक संग

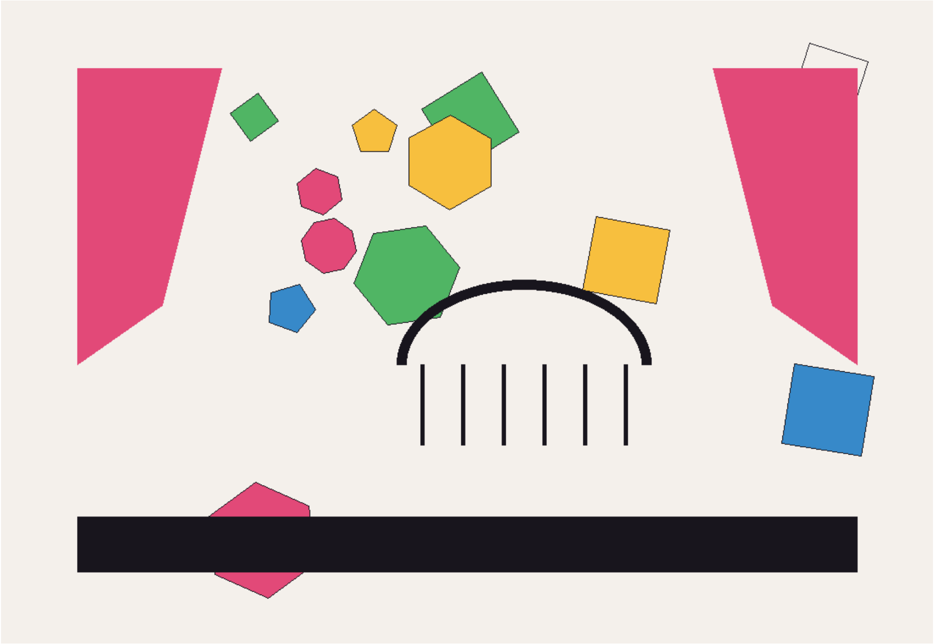

चित्र 10

निकास-द्वार, सड़कक नीचाँ चौड़ा कलभर्ट, पोखरिक जगह, ऊँच आश्रय-स्थल।)

पहिल बच्चा: ई नदी।

दोसर बच्चा: ई गाम।

तेसर बच्चा: ई सड़क। मुदा सड़कक नीचाँ पानिक घर।

चारिम बच्चा: ई बान्ह। मुदा बान्हक संग चौकन्ना आँखि।

पहिल बच्चा: आ ई जलोदीप?

चारिम बच्चा: ई याद। जे पानि शत्रु नहि, रोकेल बाट शत्रु अछि। जे विकास शत्रु नहि, अन्हा विकास शत्रु अछि।

बच्चा सभ: हम खेलमे गाम बनबैत छी, गाम सचमे खेल नहि बनत!

(सब बच्चा छोट-छोट दीप हाथमे नेने आगाँ अबैत अछि। भीड़ हुनका पाछाँ। प्रकाश धीरे-धीरे बढ़ैत अछि।)

भीड़ आ बच्चा सभ: हम प्रतिज्ञा करैत छी - पानिक बाट नहि रोकब। बान्हक हिसाब पूछब। सड़कक जलनिकास देखब। नाला साफ रखब। झूठक कागज नहि मानब। बच्चा, बूढ़, खेत, घर - सभक रक्षा करब।

चारिम बच्चा: आ जखन फेर बरखा आबत, हम डरब नहि। हम तैयार रहब। जलोदीप जरत रहत।

(फुसफुसाहटिक सामूहिक गीत वा धुन उठैत अछि - 'ई असल बात अछि...'। पानिक आवाज अब भयावह नहि, जीवनक मद्धिम स्वर जकाँ सुनाइत अछि। प्रकाश भरि जाइत अछि।)

(पटाक्षेप)

पटाक्षेप

VIDEHA

विदेह: प्रथम मैथिली पाक्षिक ई-पत्रिका | ISSN 2229-547X | www.videha.co.in

JALODEEP: THE WATER-LAMP

A Social Play for Children on Flood Safety and Drainage

Gajendra Thakur

Editor, Videha: The First Maithili Fortnightly E-Journal (since 2000)

ISSN 2229-547X

CAST

FOUR CHILDREN: Any of the roles may be played by a boy or a girl.

THREE VILLAGERS: Any of the roles may be played by a man or a woman.

AN ENGINEER, or an educated young man or woman.

A CONTRACTOR, or a representative.

THE VILLAGE HEAD / ANNOUNCER.

A CROWD: Women and men.

PROLOGUE

(Water everywhere. The roar and surge of floodwater. Distant cries for help. People flounder across the stage. Calls of "Water! Flood! The children! Help!" create the sense that the whole world has been submerged. One Child, struggling out of the flood, reaches a hand up toward the stage. People rush toward the Child.)

CHILD: No. I am all right. But my...

(Before the Child can finish, darkness falls. Only the sound of water remains.)

ACT I: THE DARKNESS OF THE FLOOD

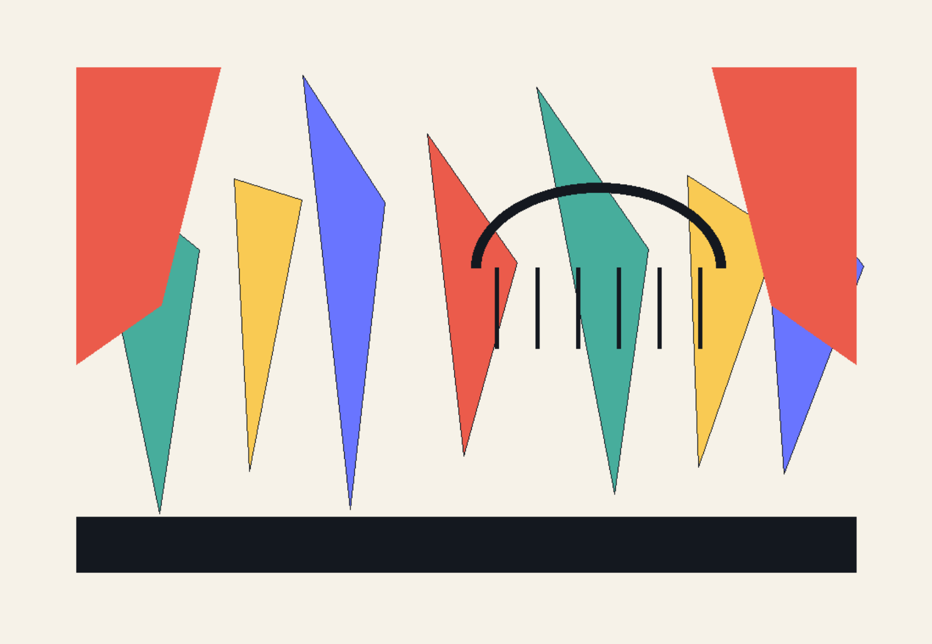

ILLUSTRATION 1

SCENE 1

(Villagers enter from the waterside. A raised area at the rear of the stage may suggest that they are climbing to higher ground to escape the water. Everything is in turmoil.)

FIRST VILLAGER: Hey! They say twenty-two feet of water is coming. In an hour everything will be under. Stack one cot on top of another. Get the children onto the roof of the big house.

SECOND VILLAGER: Maybe not twenty-two feet, but I heard the roar of the surge and saw it coming. A wall of water struck, and water poured over the embankment. The pressure was heavy on the embankment toward Jhanjharpur. But I hear they cut the embankment on the other side to save the one on their own side.

FIRST VILLAGER: What we hear may not even be true. And how could anyone break such a huge embankment?

THIRD VILLAGER: What are you saying? The water was pressing hard on this side too. Better that it broke there. If it had broken in front of our village, the whole village would have been swept away.

SECOND VILLAGER: This is no time to argue. Keep your heads and look after your own people. Save the children first.

FIRST VILLAGER: Does anyone have a boat? A rope? A lantern? Dry food?

THIRD VILLAGER: A boat was bought on paper last year. It never reached the village then. How will it reach us now?

CROWD: Save the children! Save the old people! The houses are gone, our possessions are gone - but save lives!

(Darkness spreads. The sound of water carries the scene into the next one.)

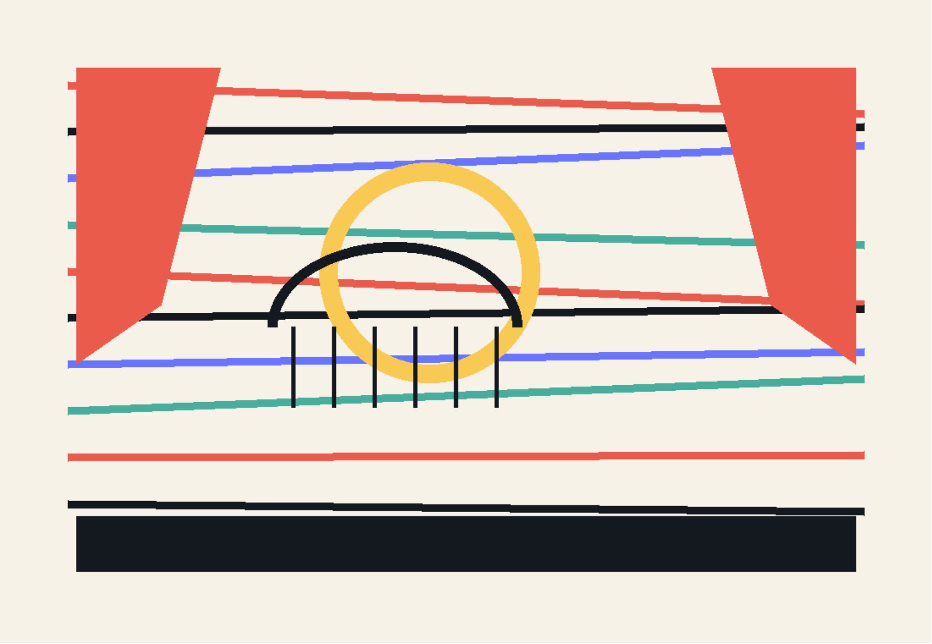

ILLUSTRATION 2

SCENE 2

(Cots have been stacked one upon another. Four Children sit on top. Three play a hand-clapping game. The Fourth Child - the Child from the Prologue - sits silently in a corner of the cot, weighed down by grief.)

FIRST CHILD: Why are you sitting there with such a long face? Come on, let us play.

SECOND CHILD: Hey, leave them alone. Poor thing - everyone at home was swept away in the flood.

THIRD CHILD: But the house is still standing. It is a brick house; that is why it did not collapse.

FOURTH CHILD: The house is standing, but the people of the house are gone. Its walls survived; its laughter was carried away by the water.

FIRST CHILD: What has happened has happened. Come join us. Playing is important when you need to forget sorrow. Today we will play whatever game you choose. Tell us - what shall we play?

FOURTH CHILD: No. This was not written by God. People wrote it. My father used to say that all of it is a human game. If we are going to play, we will play the game I want to play.

THE OTHER THREE CHILDREN: Yes. We will play whatever game you want.

FOURTH CHILD: All right. Then let us play the Mountain Game.

THIRD CHILD: But there are no mountains in this region.

FOURTH CHILD: How can you say that? What are all those embankments? And that new raised road, standing over the village like a wall - if that is not a mountain, what is?

ACT II: THE MOUNTAIN GAME

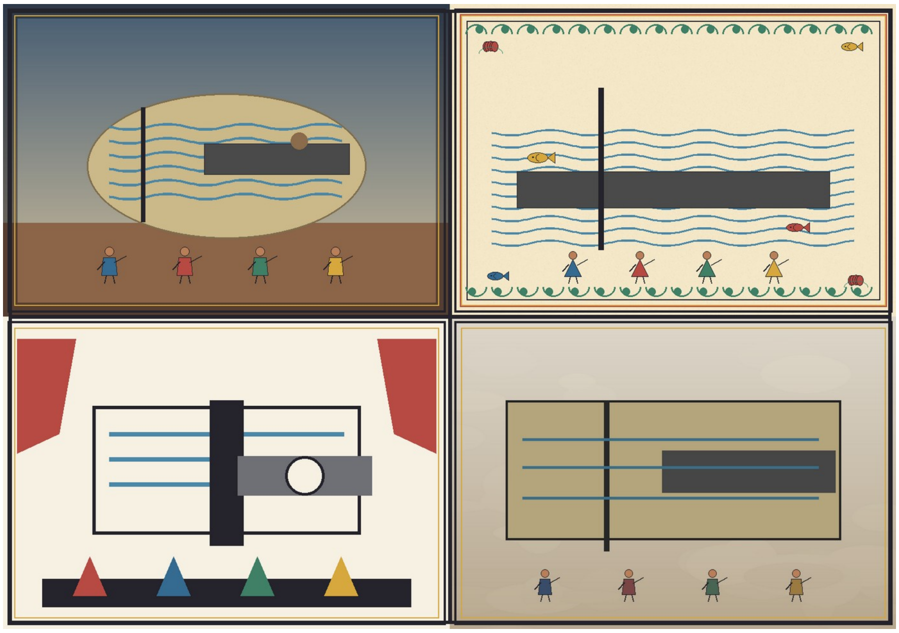

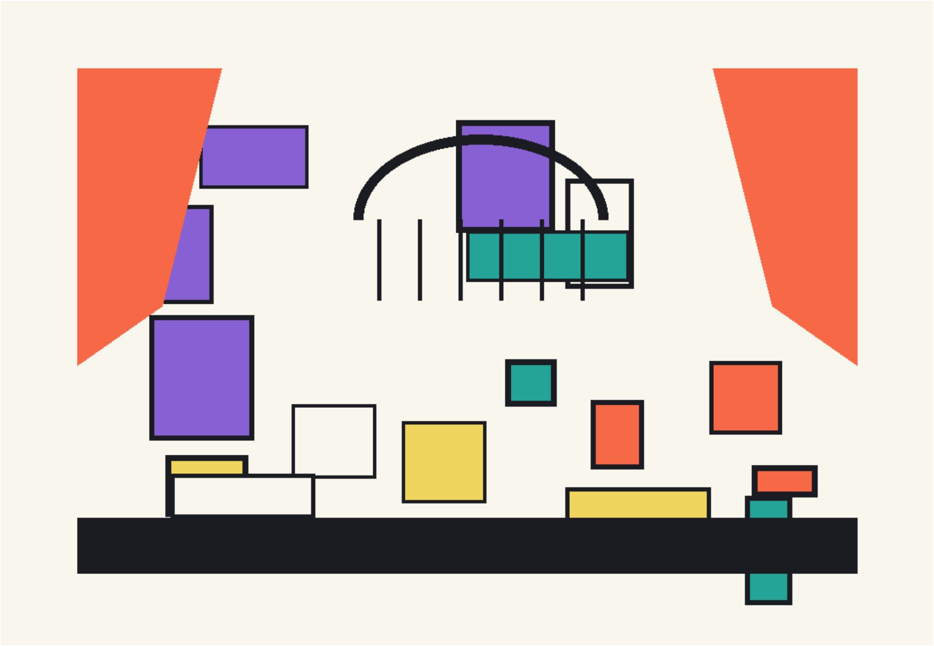

ILLUSTRATION 3

SCENE 1

(Using bowls, a water pot, wet cloth, clods of earth, sticks and a cracked plate laid on the cot, the Children make a map. The river lies on one side, the village on the other, an embankment between them, and farther ahead a raised road.)

FIRST CHILD: This line is the river. This clod is the village. This cloth is the fields.

SECOND CHILD: This stick is the embankment.

THIRD CHILD: And this upside-down plate?

FOURTH CHILD: The highway. An embankment bigger than the embankment. Its name is "road"; its work is "wall."

FIRST CHILD: A road connects people.

FOURTH CHILD: It connects them when it leaves a path for water. When it blocks the path of water, it cuts them apart. It cuts the village in two, turns the fields into a bowl, and the water asks, "Where am I supposed to go?"

(The Fourth Child pours a little water from the water pot onto the map. It collects on one side of the road.)

SECOND CHILD: Look. The water cannot move ahead.

THIRD CHILD: Then build a bridge.

FOURTH CHILD: A bridge is built for vehicles. What is built for water?

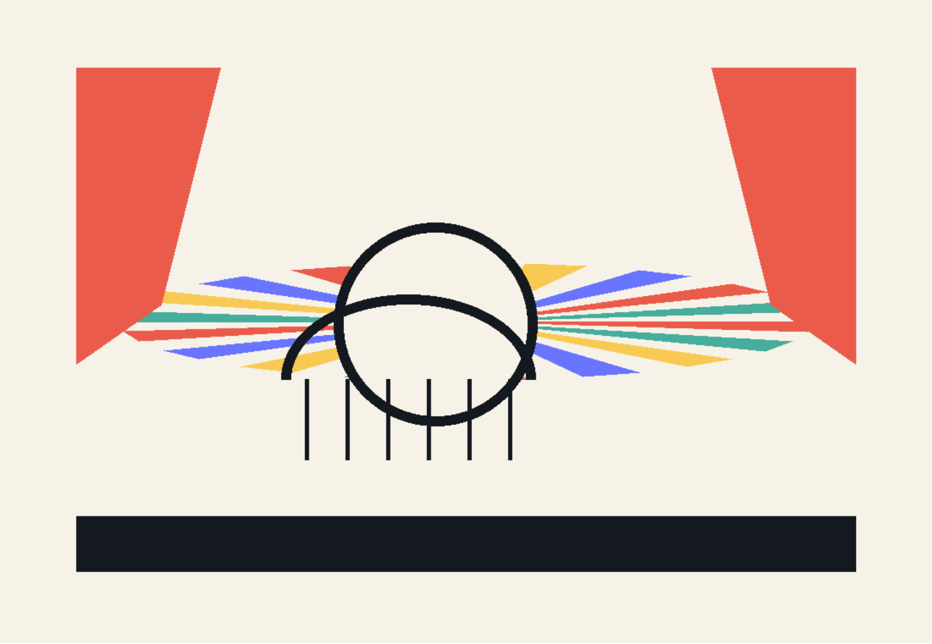

ILLUSTRATION 4

FIRST CHILD: A drain? A small bridge? A culvert?

FOURTH CHILD: On paper. But if it is too small, blocked, filled with silt, choked with plastic, or built in the wrong place, the water laughs at it and goes its own way.

THE OTHER THREE CHILDREN: Then the road becomes an embankment!

FOURTH CHILD: Yes. The embankment becomes a mountain. And the village becomes a valley.

SCENE 2

(The Three Villagers approach from the higher part of the stage, listening. At first they laugh at the Children's game.)

FIRST VILLAGER: Look at that. The children have become engineers too.

SECOND VILLAGER: A river in their game, an embankment in their game, a road in their game.

THIRD VILLAGER: But what they show in play makes the truth clear. Water stood trapped in my field because of the road. The mouth of the drain was blocked with silt.

FIRST VILLAGER: We raised this in the village council. They told us, "The plan has been approved. There is drainage."

SECOND VILLAGER: The drainage flowed out of the paperwork, not out with the water.

FOURTH CHILD: My father used to say, "Build embankments, build roads, but do not stop the river from breathing. Water is alive. If you cut off its path, it will make another path."

(A moment of silence. The faint sound of a helicopter or motorboat is heard in the distance, then nothing.)

ACT III: THE PEOPLE'S GAME

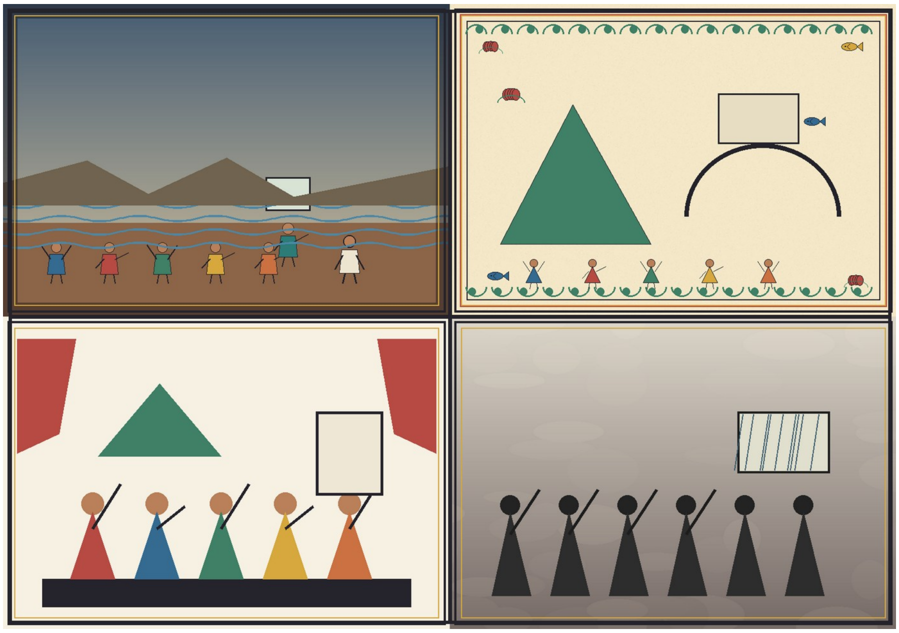

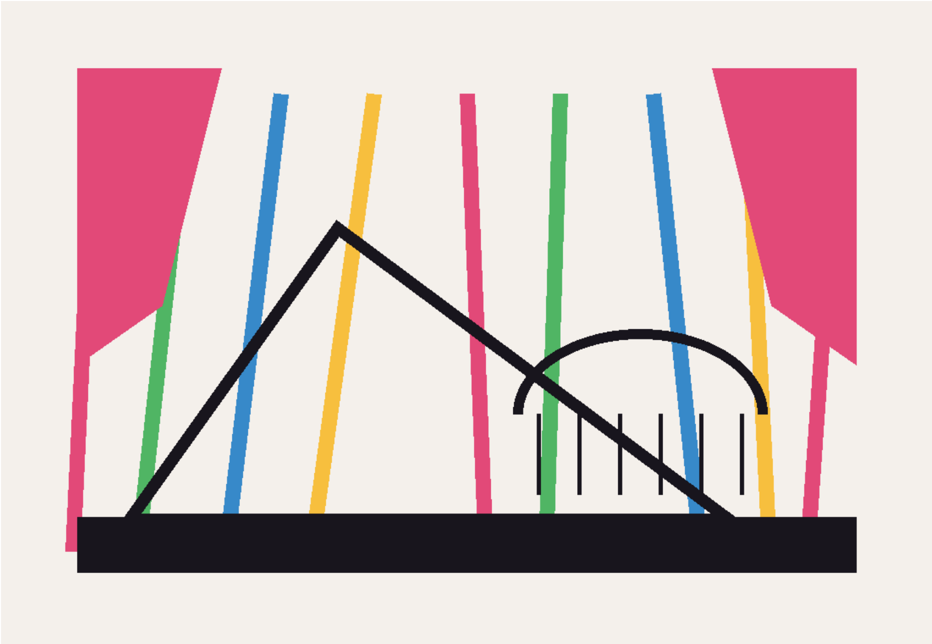

ILLUSTRATION 5

SCENE 1

(A Crowd has gathered. One person carries clothes in a wet sack, another carries a child, and another supports an old woman. A Representative or Contractor, dressed in clean clothes, enters along the dry path above.)

VILLAGE HEAD: Everyone, stay calm. Relief will come. A list will be prepared. The name of every person who suffered a loss will be recorded.

VOICES FROM THE CROWD: We do not need names - we need boats! We need flattened rice! We need medicine! And tell us: how did the embankment break?

CONTRACTOR: It was a natural disaster. Exceptional rainfall. A flood like this comes once in a century.

SECOND VILLAGER: Once in a century? My courtyard has gone under three times in the last five years.

THIRD VILLAGER: Nature sent the rain, but who repaired the embankment? The sandbags went onto the paperwork, not onto the embankment.

CONTRACTOR: That is an accusation. I want proof.

FOURTH CHILD: The water is the proof. Wherever it found no passage, houses went under. Wherever a culvert was blocked, fields became ponds.

CONTRACTOR: You cannot run a project on children's talk.

FIRST CHILD: Then what runs it? The paper that shows a culvert where none exists on the ground?

SECOND CHILD: The map that draws the river as a straight line, when the real river twists like a snake?

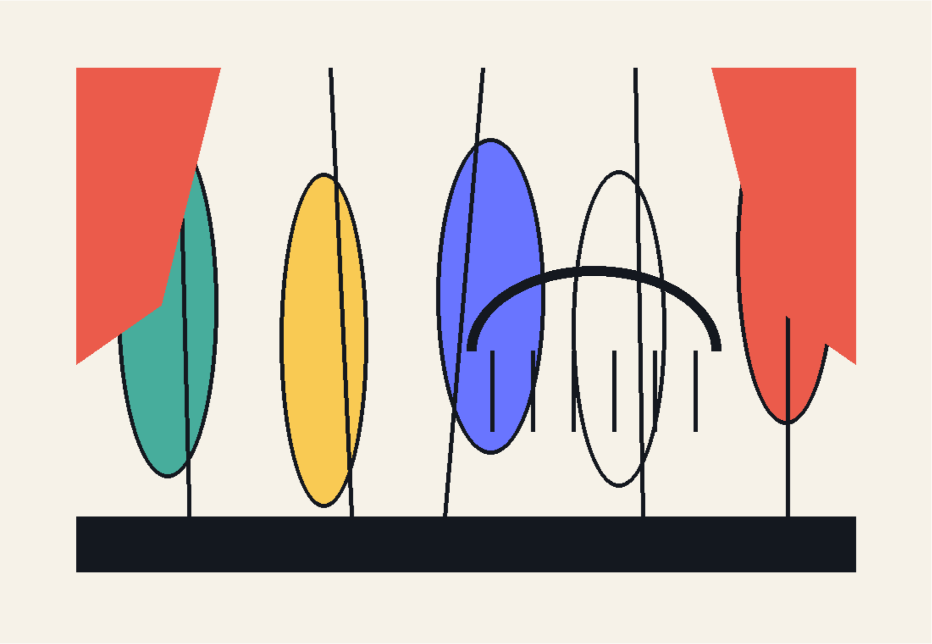

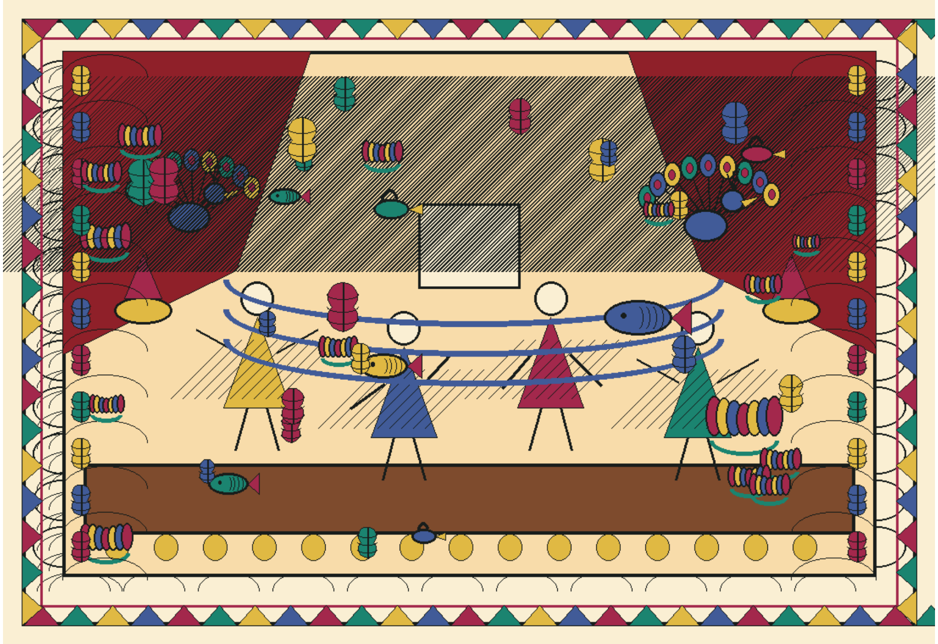

ILLUSTRATION 6

THIRD CHILD: The speech that promises development while the village is sealed inside a bowl?

CROWD: A path for the water! A path for the water! A path for the water!

SCENE 2

(The Engineer, or an educated young man or woman, steps forward through the Crowd, carrying a wet map or notebook.)

ENGINEER: This is not only about one embankment. The river's old courses were blocked, ponds were filled in, houses were built on low land, the road was raised, and too little passage for water was left beneath it. Together, all of these things made a flood trap.

FIRST VILLAGER: Then what is the solution? Break the embankment? Cut the road?

ENGINEER: The solution is not to cut blindly in the dark, but to build with understanding. Where an embankment is necessary, it must be strong, transparent and under public supervision. Where the river needs natural space to spread, it must be given that space. Where there is a road, there must be enough culverts, open drains, high bridges, and cleaning before the rains.

SECOND VILLAGER: The government is supposed to do all that.

ENGINEER: The government does the work, but the village keeps watch. If the papers say five culverts and there are only two on the ground, the village will be the first witness. If they fill with silt, the village will demand cleaning. Before construction begins, the village will identify the old paths of the water.

FOURTH CHILD: So if the village keeps its eyes open, the water's eyes will not turn red?

ENGINEER: Exactly. Development, too, must keep its eyes on the water's path.

ACT IV: JALODEEP - THE WATER-LAMP

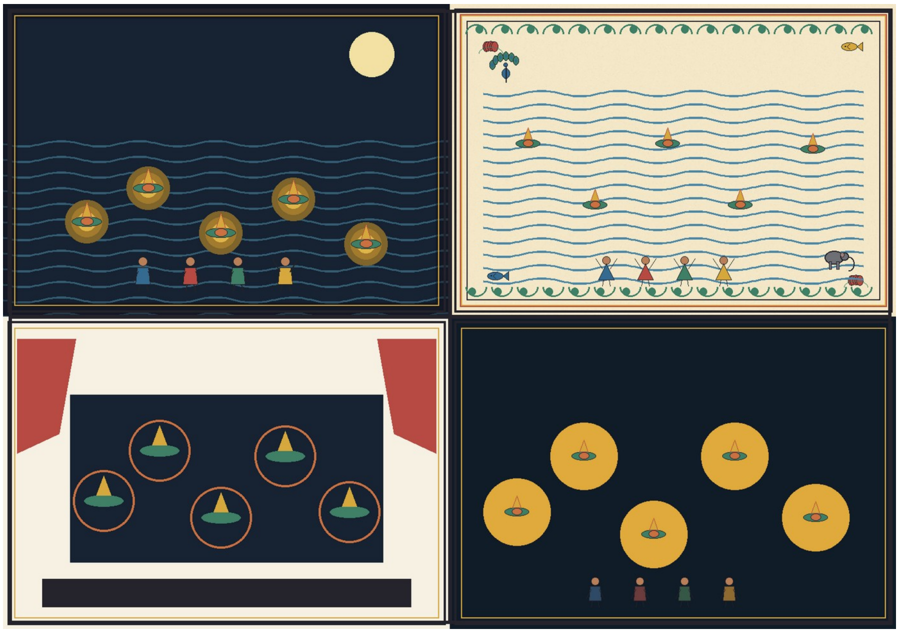

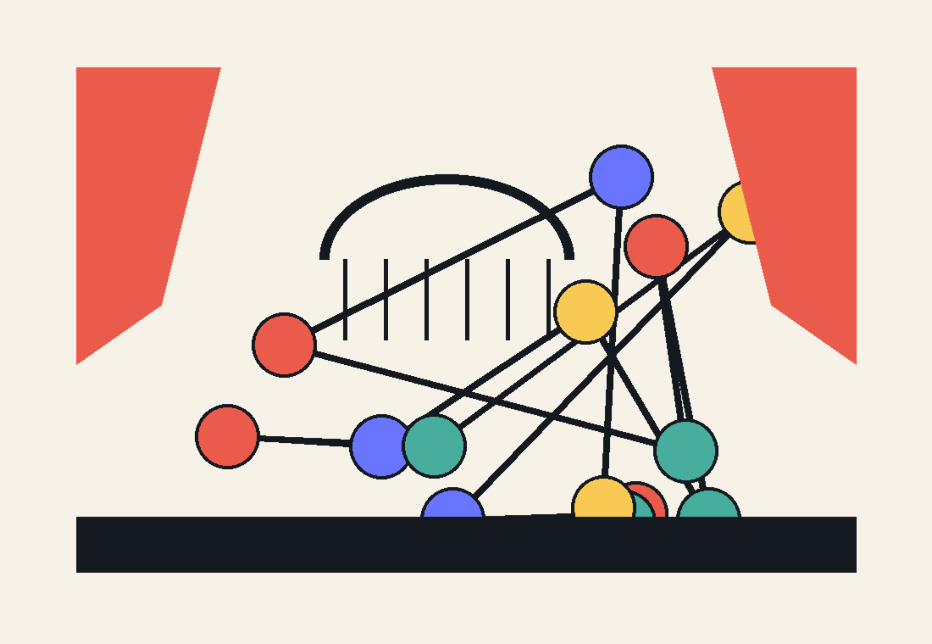

ILLUSTRATION 7

SCENE 1

(Night. The Four Children sit on the stacked cots. The water has not fallen, but its sound is quieter. The people are exhausted. One person holds a faint, flickering wick; another holds an empty bowl.)

FIRST CHILD: I am frightened. In the darkness, the water seems even bigger.

SECOND CHILD: What if we light a lamp?

THIRD CHILD: A lamp in a flood? The water will put it out.

FOURTH CHILD: Then give it a boat. Float the lamp on the water. A lamp upon water. Jalodeep.

(Using a leaf, a small bowl, or a scrap of broken foam as a float, the Children mime setting a wick alight.)

FIRST CHILD: This lamp is for my home.

SECOND CHILD: This lamp is for the old man trapped on the roof.

THIRD CHILD: This lamp is for the field that became a pond behind the road.

FOURTH CHILD: This lamp is for my father. He used to say, 'Leave a path for the water.' This lamp will not go out if we remember what he said.

THE CHILDREN: Jalodeep! Jalodeep! An eye in the darkness, a path through the water!

SCENE 2

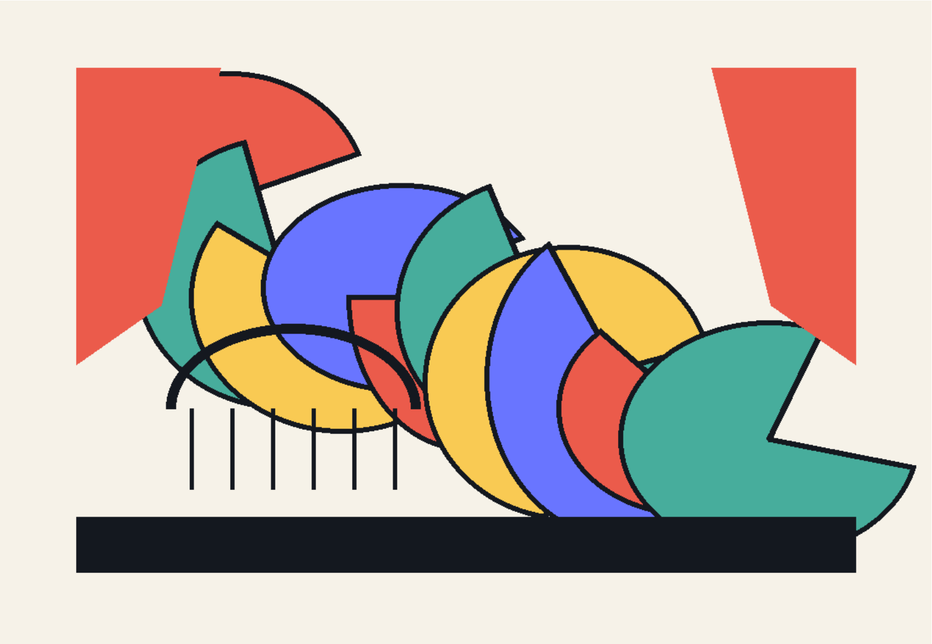

ILLUSTRATION 8

(The people move toward the glow of the lamps. The Contractor or Representative stands at a distance. The Crowd shows grief at first, then determination.)

VILLAGE HEAD: Through their play in the night, these children have made us ashamed of ourselves. Every year, once the rains are over, we forget everything.

FIRST VILLAGER: Not this time.

SECOND VILLAGER: First: relief. Rescue everyone who is trapped.

THIRD VILLAGER: Second: we will make a map of the village's water routes. Every old channel, pond, traditional watercourse and drain will be marked.

ENGINEER: Third: inspect the roads and embankments. Make a list of every place where a culvert is too small, where one is blocked, and where a raised road obstructs the flow of water.

VILLAGE HEAD: Fourth: make the repair accounts public - how much sand, how much stone, how many sacks, how many workers. Everything will be written on the village platform for all to see.

FIRST CHILD: Fifth: teach children how to swim, how to tie rescue ropes, and how to reach high ground.

SECOND CHILD: Sixth: no plastic or rubbish in the drains.

THIRD CHILD: Seventh: clean the drains before the rains.

FOURTH CHILD: And eighth: development only when water has a path. Otherwise, a road is not a road but a wall; a bridge is not a bridge but a trap.

CROWD: Embankment, road or highway - leave a path for the water!

ACT V: A NEW DAWN

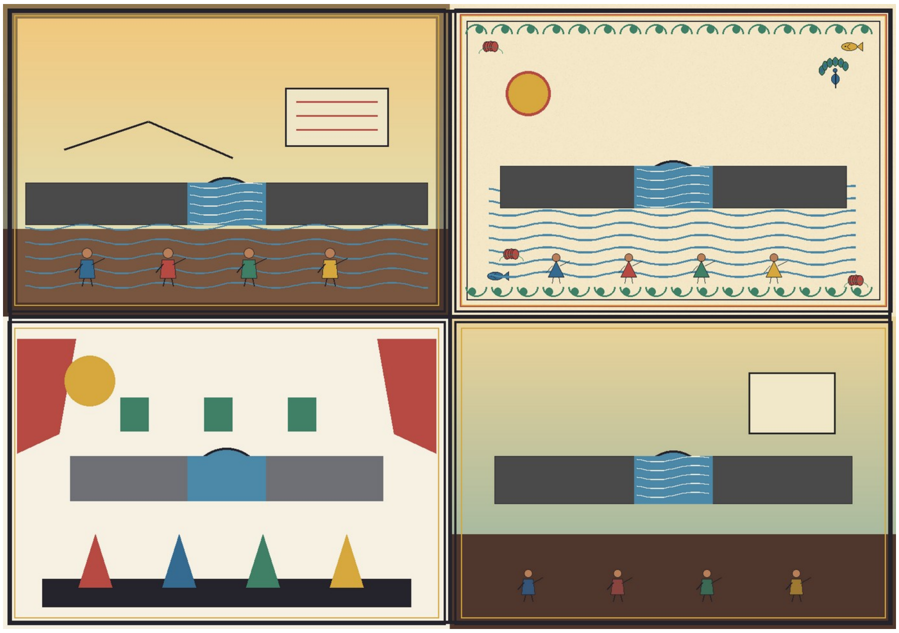

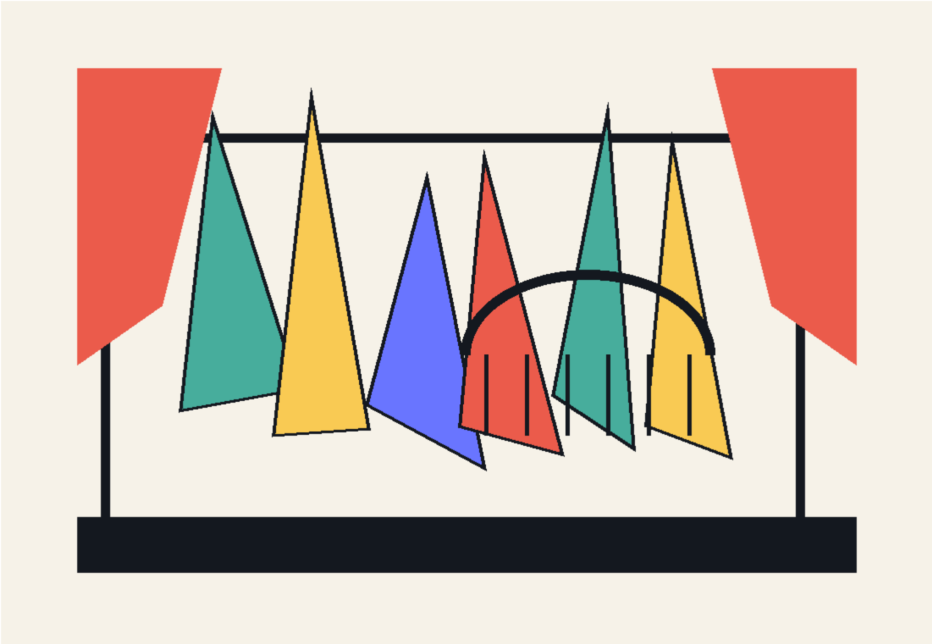

ILLUSTRATION 9

SCENE 1

(The pale light of dawn. The water has receded, but mud, broken belongings and exhausted faces remain. The people divide themselves into teams and assign the work.)

VILLAGE HEAD: The Rope Team will go to the right-hand hamlet. The Medicine Team will work from the school veranda. The Food Team will distribute flattened rice and jaggery. The children will remain on the raised platform.

ENGINEER: I will ask the elders about the river's old course and map it. We will mark where openings for water are needed beneath the road.

FIRST VILLAGER: I will clear the silt from the mouth of the culvert.

SECOND VILLAGER: I will take date-stamped photographs on my phone. This time, the records will not remain only in the office; the village will keep them too.

THIRD VILLAGER: Together we will say: if a road is to be built, show us the drainage first. If an embankment is to be built, show us the maintenance accounts first.

CONTRACTOR: I... I will provide the list. Any shortcomings will be looked into.

FOURTH CHILD: Not merely looked into - corrected. My father used to say, 'A mistake does not become smaller when it is seen; it grows larger when it is hidden.'

(The Contractor has no answer. A low murmur of agreement passes through the Crowd.)

SCENE 2

(The Children rebuild their map. This time, the river's course is open.)

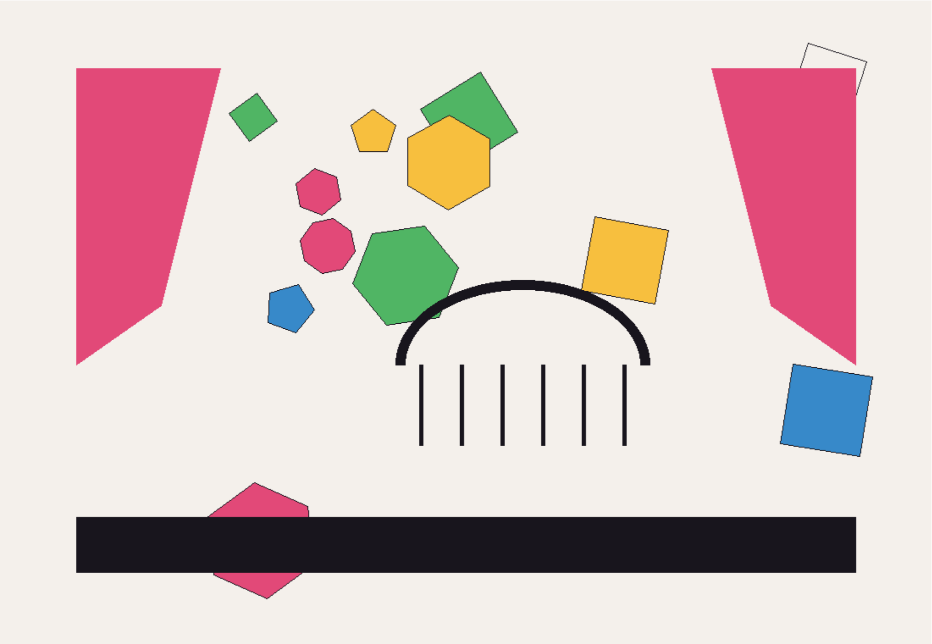

ILLUSTRATION 10

(The design includes drainage gates in the embankment, a broad culvert beneath the road, space for a pond, and a raised refuge.)

FIRST CHILD: This is the river.

SECOND CHILD: This is the village.

THIRD CHILD: This is the road. But beneath the road, there is a home for the water.

FOURTH CHILD: This is the embankment. But beside it stands a watchful eye.

FIRST CHILD: And this is Jalodeep?

FOURTH CHILD: It is memory. Water is not the enemy; a blocked path is the enemy. Development is not the enemy; blind development is.

THE CHILDREN: We build a village in our game. Our real village will not be made a plaything!

(All the Children come forward, each holding a small lamp. The Crowd follows them. The light slowly grows.)

CROWD AND CHILDREN: We pledge: we will not block the path of water. We will demand an account of the embankments. We will inspect road drainage. We will keep the drains clear. We will not accept false paperwork. We will protect every child, every elder, every field and every home.

FOURTH CHILD: And when the rains return, we will not be afraid. We will be ready. Jalodeep will keep burning.

(A whispered group song or melody rises: 'This is what truly matters...' The sound of water is no longer terrifying; it is heard as the gentle pulse of life. The stage fills with light.)

(CURTAIN.)

CURTAIN

VIDEHA

Videha: The First Maithili Fortnightly E-Journal | ISSN 2229-547X | www.videha.co.in

कमलाक भगता

अन्धानुकरणपर एकटा चोटगर हास्य-शिक्षाप्रद बाल-नाटक

गजेन्द्र ठाकुर

सम्पादक, विदेह: प्रथम मैथिली पाक्षिक ई-पत्रिका (since 2000)

ISSN 2229-547X

सूत्रधारक भूमिका

(बाल नाटक। सुधारल पाठमे हास्य, नदीक वातावरण, भीड़क अन्धानुकरण, आ अन्तक सीखकेँ बेसी

स्पष्ट आ मंचीय बनाओल गेल अछि।)

(ध्वनि संकेत: भिक्षाक स्वर, सिक्का खनखन, भोरुका चिड़ै, कमलाक धार, बालु कोड़बाक

सरसराहटि, हर-हर महादेवक भीड़, आ अन्तमे चुप्पी।)

(बाल नाटक)

सूत्रधार: आइ एकटा संस्कृत साहित्यक प्रसिद्ध कथापर आधारित नाटक देखा रहल छी। चोटगर

कथा अछि। बच्चा आ पैघ सभक लेल। कथा छोट अछि मुदा सीख पैघ: जे काजक कारण नहि बुझू, से आँखि मूनि कऽ दोहराउ नहि। देखू ई भिखमंगा कतऽ सँ आबि रहल अछि।

दृश्य १

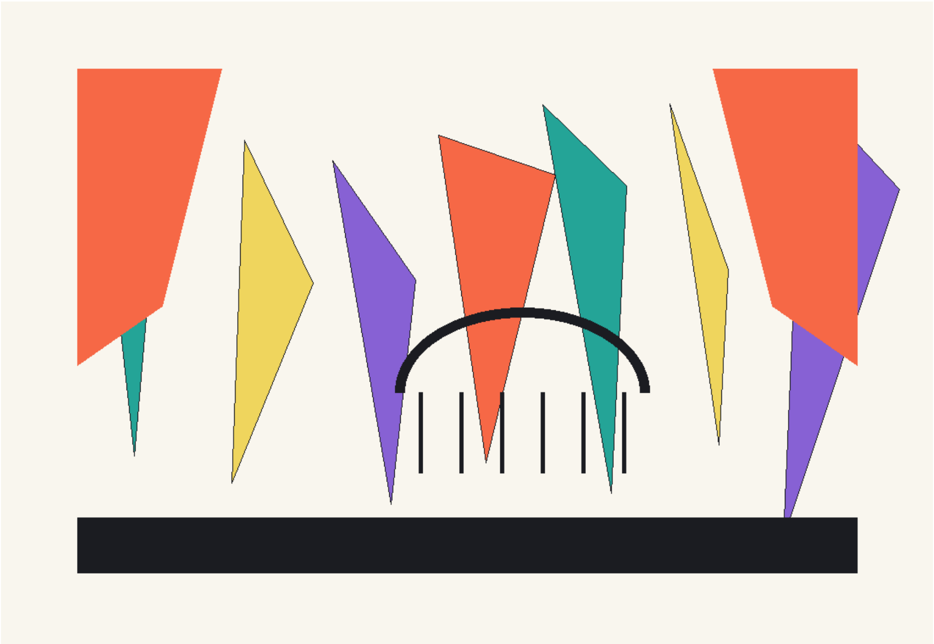

चित्र 1

(गाममे घुमैत। भिखमंगाक स्वर पहिले दूरसँ, फेर नजदीक अबैए। सिक्का खनखन, कुकुरक भोंक, घरक दरबज्जा खुलबाक आवाज।)

भिखमंगा: गरीबकेँ किछु दिअ। पुरान कपड़ा, रुपैआ, पैसा। किछुओ दिअ। जे देब, कमला माइ देखथि।

बूढ़ी: लिअ ई कपड़ा। पुरान छै मुदा जाड़मे बड्ड गरम रहै छै। ई अन्न सेहो। खाली पेट भजन नै होइ छै बेटा।

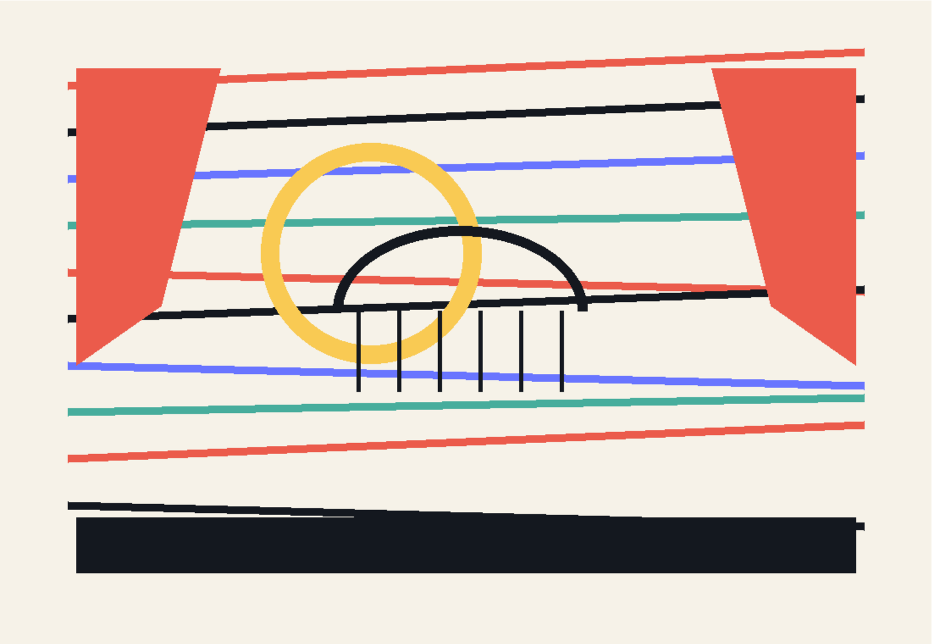

चित्र 2

नबका कमौआ: लिअ ई पैसा। किछु कीनि लेब। मुदा गनब नीकसँ; पैसा छोट होइ छै, मेहनति पैघ।

(भिखमंगा सूत्रधारक बगलसँ होइत कपड़ाक धोधरिमे अन्न रखैत अछि। पाइ गनैत अछि। फेर

दोसर दिस अपन घरक खाटपर बैसैत अछि। एकटा चुकड़ीमे पाइ रखैत अछि, फेर गनैत अछि। गनैत-गनैत ओकर आँखिमे लालच नहि, सपना चमकैए।)

भिखमंगा: (मोने-मोन) आब तँ ढेर रास पाइ भऽ गेल। कतेक बरखक बाँचल-बचाओल अछि ई। मोन अछि जे कमलाक भगता बनि जनकपुर जाइ। भगवान से दिन देखेलन्हि। मुदा पाइ बचाएबो धर्मे जेकाँ कठिन काज अछि।

दृश्य २

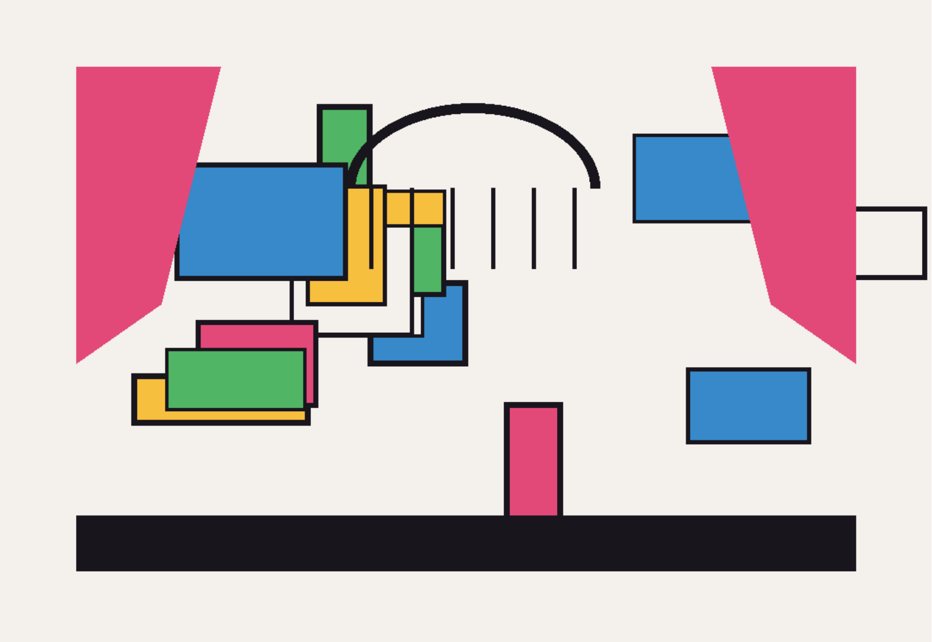

चित्र 3

भिखमंगा: (बोगलीमे पाइक चुकड़ी लेने आगाँ जाइत- भोरुका समए। कमलाक धारक मद्धिम स्वर सुनाइ दैत अछि।)

चलू चलू यौ

जनकपुरमे कमलाक भगता

करू करू यै

कमला माइ करू हमर उद्धार

चलू चलू यौ जनकपुर

भगता बनि कमलाक

(सोझाँ बालुसँभरल कमलाक तट। भोरक हलुक उजास। बालुपर ओसक नमी। भिखमंगा सोचैत अछि।)

-अहा। की विस्तार अछि कमलाक। धार जेना मायक आँचर। मुदा एतेक भोरमे कियो एतए नहि अछि। चलू पाइक चुकड़ी कातमे राखि डूम दऽ आबी।

(पाइक चुकड़ी नीचाँ रखैत अछि आ नहाइ लेल बिदा होइत अछि।)

(मोने-मोन सोचैत)- मुदा कियो जे देखि जाएत आ ई पाइ लऽ लेत तखन? भिखारीक पाइ लोककेँ पाइ नहि, मौका बुझाइ छै। एकरा बालुमे नुका दैत छिऐक।

(बालु कोड़ि कऽ चुकड़ी नुकबैत अछि।)

(फेर मोने-मोन सोचैत) मुदा जे कियो ई देखि जाएत तखन? मुदा देखत कोना आब। तेना कऽ नुका देने छिऐक जे आब हमरो नै भेटत। हे कमला माइ, अपना पाइ अपना सँ नुका देलौं।

(फेर सोचैत घुरि अबैत अछि।)

मुदा हम जे नहा कऽ आएब तँ कतऽ ई पाइ गाड़ल अछि से हमरो कोना बूझऽ मे आएत। ठीक छै, निशान बना दै छी। निशान एहन जे हम बुझी, आन नहि बुझए।

(कोड़लाहा स्थानपर अबैत अछि।)

एतऽ शिवलिंग बना दै छिऐ। (कोड़लाहा स्थलपर पएर रखैत अछि आ पएरक चारू कात बालु राखए लगैत अछि। चारू कातसँ बालु भरि गेलाक बाद आस्तेसँ पएर हटा लैत अछि आ नीक-नहाँति शिवलिंग बना दैत अछि।) हे भोला बाबा, अहाँ निशान बनू, चोरी रोकू। (फेर निश्चिन्त मोनसँ कमला-स्नानक लेल बिदा भऽ जाइत अछि। एम्हर ओ धार दिस बिदा होइत छथि आ ओम्हर दूरसँ किछु आर स्नानार्थी, पुरुष हाथमे धोती आ महिला हाथमे नुआ लेने, अबैत दृष्टिगोचर होइत छथि।)

(मोने-मोन सोचैत) नीके भेल जे फुरा गेल। कएक सालक कमाइक छी ई पैसा। ई लोक सभ आब स्नान करबा लेल आबि रहल अछि। ने जानि ककर मोनमे खोट हेतै आ ककर मोनमे नै। मुदा हमरा बनाओल निशान हमरा बचेते।

(नहाइ लेल मंचसँ नीचाँ धारमे फाँगि जाइत अछि।)

पुरुष स्नानार्थी - (अपन कपड़ा लत्ता राखै अए) चली कमलामे डूम दऽ आबी। भोरक जल, पुण्यक

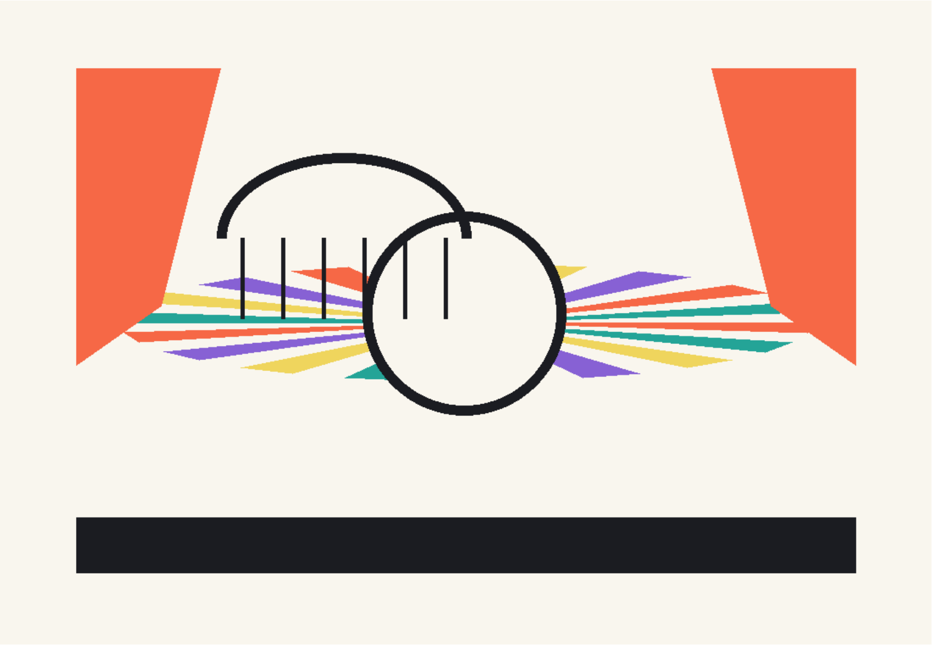

चित्र 4

फल।

स्त्री स्नानार्थी- (भिखमंगा द्वारा बनाओल शिवलिंग दिस इशारा करैत) हे देखियौ ओ शिवलिंग। लागैए एतऽ स्नान करबाक पहिने शिवलिंग बनेबाक विधान छै। देखू ने, कतेक नीक बनल अछि।

पुरुष स्नानार्थी- अपना सभ दिस, गंगा कातमे तँ एहेन कोनो परम्परा नै छै। मुदा जे पहिने आएल होएत, किछु बुझि कए ने बनौने होएत।

स्त्री स्नानार्थी- एत्तऽ मुदा छै। आ भोलाबाबाक स्थापना कऽ डूम लै मे हर्जे की। जे न बुझी, से पूछब; मुदा पुण्यक काजमे देर किए?

पुरुष स्नानार्थी- हँ से तँ ठीके।

(दुनू गोटे एक-एकटा शिवलिंगक स्थापनामे लागि जाइत छथि। पएरक चारूकात बालु चढ़बऽ लगै छथि। तावत् आनो लोक सभ आबि कऽ किछु पूछऽ लगै छथि। पहिल जोड़ी कहै छै- “एतए एहेन विधान छै।” दोसर कहै छै- “हमरासँ पहिने ई सभ करैत छल।” तेसर कहै छै- “कियो पाछाँ नहि रहू।” आ अच्छा-अच्छा कहि ओहो सभ एक-एकटा शिवलिंगक स्थापनामे अपन-अपन पएरक चारू कात बालु चढ़बए लगै छथि। कनिये कालमे मंचपर शिवलिंगे-शिवलिंगे भरि जाइत अछि। मंचपर हर-हर महादेवक स्वरसँ अनघोल भऽ जाइए। भीड़क स्वर भक्तिमय हो, मुदा ओहिमे नकलक हड़बड़ी सेहो सुनाइ दै।)

भिखमंगा: (नहा कऽ निकलैत) देखू, जखन आएल रही तँ एकोटा लोक नहि छल आ आब देखू कतेक भीड़ भऽ गेल। हमरा की। जोगी छी, बहैत पानि सन। ई अंगवस्त्र रस्तेमे सुखा जाएत। जए माँ

कमलेश्वरी। कमलाक भगता बनि चली आब जनकपुर। मुदा ओ चुकड़ी तँ लऽ ली।

(अपन बनाओल शिवलिंग ताकऽ लगैत अछि। मुदा चारू कात शिवलिंगे-शिवलिंग। एक दूटा शिवलिंगकेँ भखराबैत अछि मुदा ओहि नीचाँसँ किछु नहि बहराइत अछि। भीड़ धीरे-धीरे चुप्प होइत अछि; लोक बुझऽ लगै छै जे जेकरा विधान बुझल छल कहि रहल छल, ओकरा कारण नहि बुझल छल।)

(भिखमंगा माथपर हाथ राखि मंचपर बैसि जाइत अछि। सूत्रधार धीरे-धीरे आगाँ अबै छथि।)

सूत्रधार: बच्चा सभ, पैघ सभ, देखलहुँ? चिन्ह अपना लेल बनल छल, परम्परा सभ लेल बनि गेल।

कारण बिनु काज करब, काजकेँ उल्टा कऽ दै छै।

स्त्री स्नानार्थी: हम सोचलौं पुण्य करैत छी।

पुरुष स्नानार्थी: हम सोचलौं सब करैए, तखन हमहुँ करी।

भिखमंगा: आ हम सोचलौं, निशान बना कऽ धन बचा लेब। मुदा बिना कहने निशान, दूसराक लेल विधान भऽ गेल।

सूत्रधार: जकर अर्थ नहि बुझू, ओकर नकल करबासँ पहिने पूछू। भक्ति मे बुद्धि रहत, तखने धन, धर्म, आ मन- तीनू बचत।

(सभ कलाकार मिलि कऽ बालुकेँ हाथसँ समेटबाक अभिनय करैत छथि।)

सभ: पूछू, बुझू, फेर करू। आँखि मूनि कऽ नकल नहि करू।

(आस्ते-आस्ते मंचपरसँ प्रकाश विलीन भऽ जाइत अछि।)

(पटाक्षेप)

पटाक्षेप

VIDEHA

विदेह: प्रथम मैथिली पाक्षिक ई-पत्रिका | ISSN 2229-547X | www.videha.co.in

A Devotee of the Kamala

A Sharp, Humorous and Instructive Children's Play on Blind Imitation

Gajendra Thakur
Editor, Videha: The First Maithili Fortnightly E-Journal (since 2000)
ISSN 2229-547X

THE SUTRADHAR'S PROLOGUE

(A children's play. In this revised text, the humour, the river setting, the crowd's blind imitation, and the final lesson have been made clearer and more stageworthy.)

(Sound cues: a beggar's call, coins clinking, birds at dawn, the flow of the Kamala, the rustle of sand being dug, a crowd chanting 'Har Har Mahadev', and silence at the end.)

(Children's play)

SUTRADHAR: Today we present a play based on a celebrated tale from Sanskrit literature. It is a powerful little story for children and adults alike. The story is short, but its lesson is great: when you do not understand why something is done, do not repeat it blindly. Look - here comes a beggar.

SCENE 1

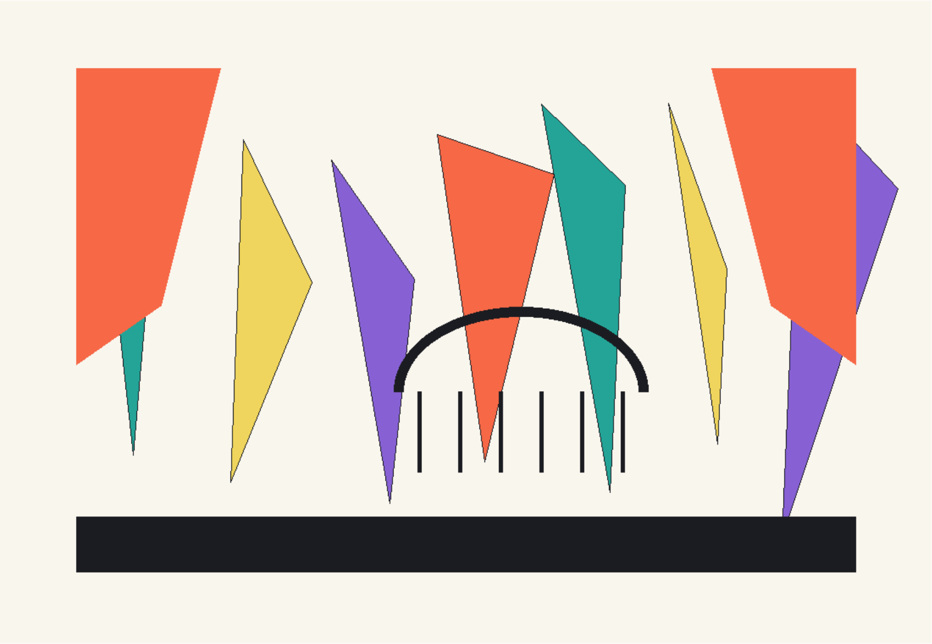

FIGURE 1

(The Beggar moves through the village. His call is heard first from afar, then drawing nearer. Coins clink, a dog barks, and a house door opens.)

BEGGAR: Give something to the poor - old clothes, rupees, coins. Anything at all. Whatever you give, Mother Kamala will see.

OLD WOMAN: Take this cloth. It is old, but it will keep you very warm in winter. Take this grain as well. No one can sing hymns on an empty stomach, son.

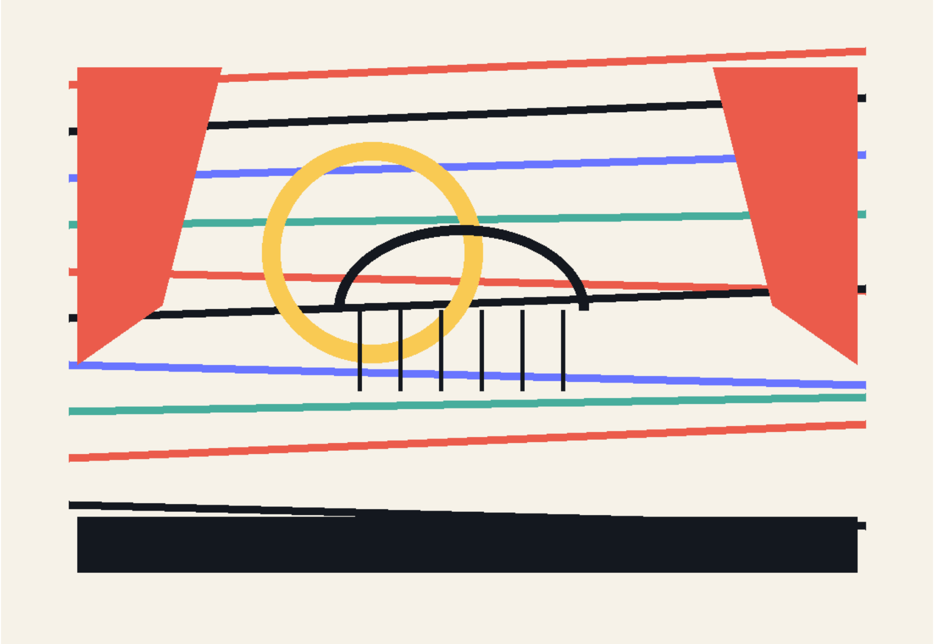

FIGURE 2

YOUNG WORKER: Take this money. Buy yourself something. But count it carefully; the coin may be small, but the labour behind it is great.

(The Beggar passes beside the Sutradhar, tucking the grain into a fold of the cloth. He counts the coins, then sits on a cot at his home on the other side of the stage. He puts the money into a small earthen pot and counts it again. As he counts, his eyes shine not with greed, but with a dream.)

BEGGAR: (To himself.) I have saved a good deal of money now. These are the savings of many years. I long to become a devotee of the Kamala and go to Janakpur. God has finally granted me that day. But safeguarding money is a task as difficult as religious duty itself.

SCENE 2

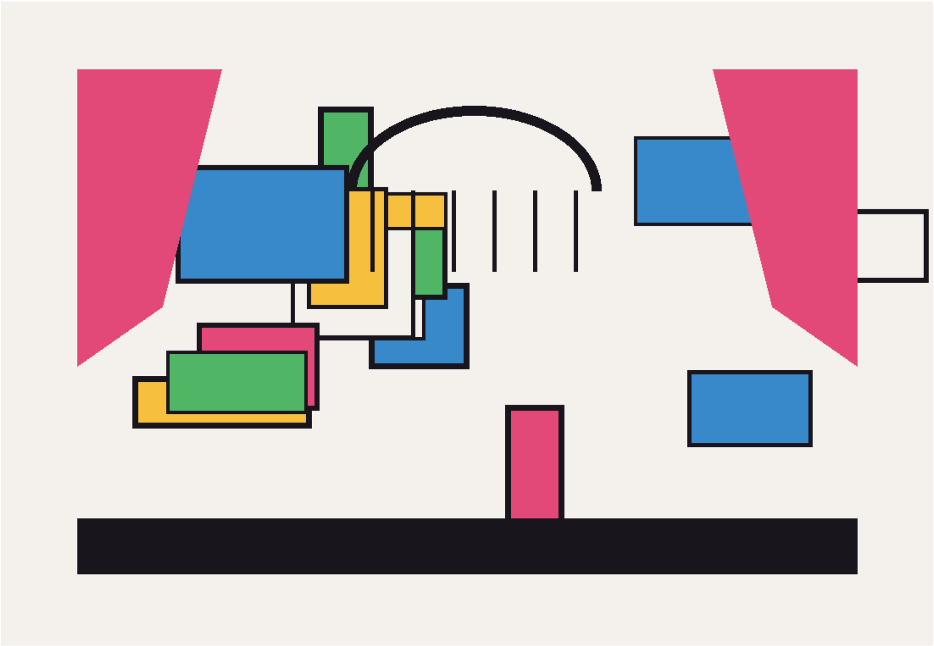

FIGURE 3

BEGGAR: (Walking forward at dawn with the little pot of coins tucked under his arm. The gentle sound of the Kamala's current is heard.)

Come along, come along!
To Janakpur, as devotees of Kamala.
Pray, pray!
Mother Kamala, grant me deliverance.
Come along, come along to Janakpur,
To become devotees of Kamala.

(Ahead lies the sandy bank of the Kamala. Dawn is breaking softly. The sand is damp with dew. The Beggar pauses to think.)

BEGGAR: Ah! How vast the Kamala is. Her current is like a mother's trailing veil. But no one is here at this early hour. I shall leave the pot on the bank and take a dip.

(He sets down the pot of coins and starts towards the water.)

BEGGAR: (Thinking.) But what if someone sees it and takes the money? People do not see a beggar's money as money; they see it as an opportunity. I shall hide it in the sand.

(He digs into the sand and buries the pot.)

BEGGAR: (Thinking again.) But what if someone sees me? No - how could anyone find it now? I have hidden it so well that even I may not find it. Mother Kamala, I have hidden my own money from myself!

(He turns back, still thinking.)

BEGGAR: But when I return after bathing, how shall I know where I buried the money? Yes - I shall make a marker, one that I can understand but no one else will.

(He returns to the place where he dug.)

BEGGAR: I shall make a Shiva lingam here. (He places one foot on the dug-up spot and begins piling sand all around it. When the foot is completely ringed with sand, he slowly withdraws it and shapes the mound neatly into a Shiva lingam.) O Bhola Baba, be my marker and keep thieves away. (Now reassured, he goes to bathe in the Kamala. He exits towards the river as, from the opposite side, several other pilgrims appear in the distance: men carrying dhotis and women carrying bathing wraps.)

BEGGAR: (Thinking.) It is good that I remembered in time. This money is the earnings of several

years. These people are coming to bathe. Who knows whose heart is dishonest and whose is not? But the marker I made will protect me.

(He jumps down from the stage into the river to bathe.)

MALE PILGRIM: (Putting down his clothes.) Come, let us take a dip in the Kamala. The water at dawn

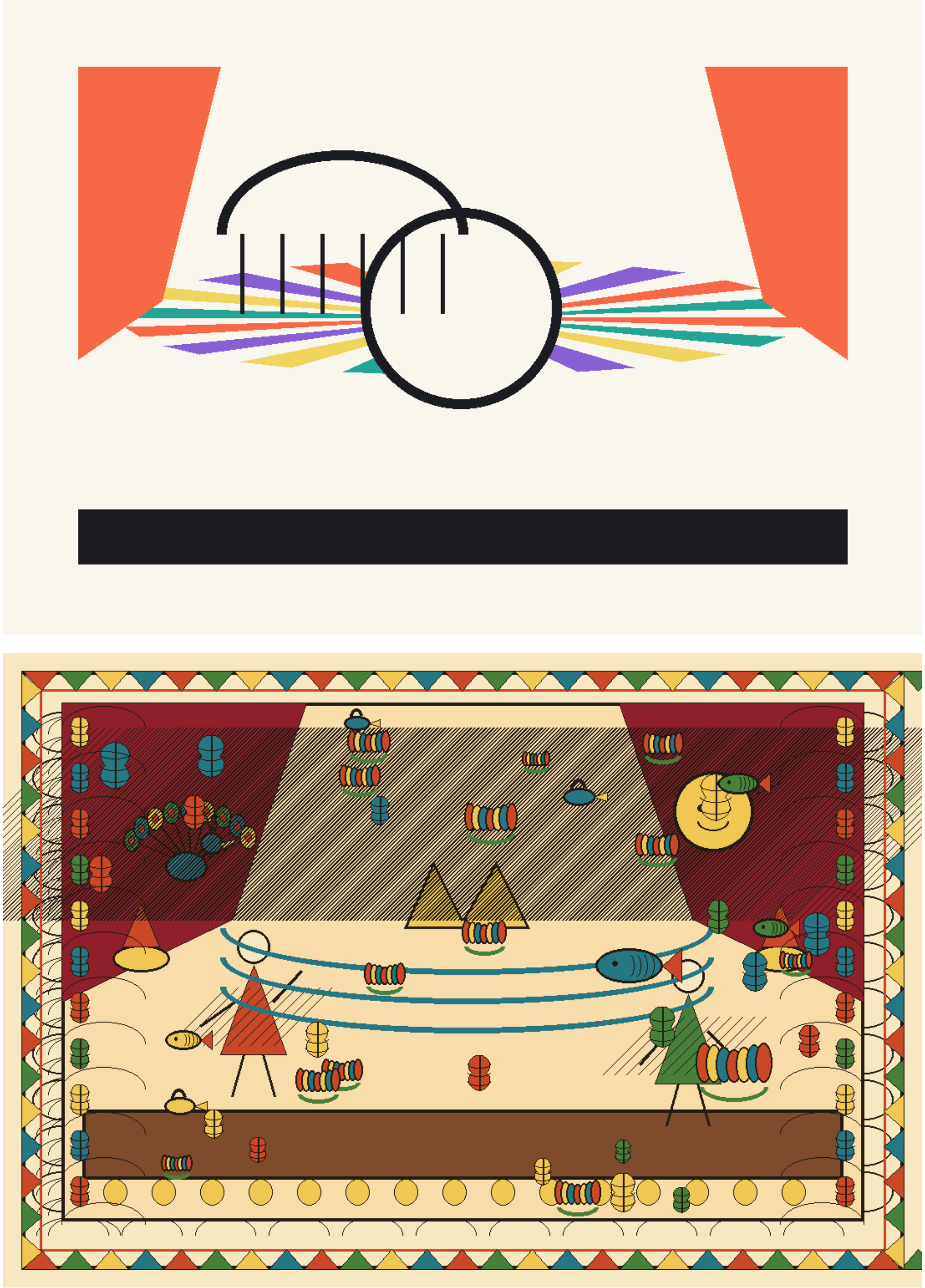

FIGURE 4

brings the reward of sacred merit.

FEMALE PILGRIM: (Pointing towards the Shiva lingam made by the Beggar.) Look at that Shiva lingam. It seems the custom here is to make a Shiva lingam before bathing. See how beautifully it has been made.

MALE PILGRIM: Where we come from, by the Ganges, there is no such tradition. Still, whoever arrived before us must have known something before making it.

FEMALE PILGRIM: But the custom exists here. And what harm can there be in installing Bhola Baba before taking a dip? We can ask about what we do not understand - but why delay a sacred act?

MALE PILGRIM: Yes, that is true.

(Both begin installing a Shiva lingam each. They pile sand around one foot. Meanwhile, more people arrive and begin asking questions. The first pair says, 'This is the prescribed custom here.' Another says, 'Those who came before us were all doing it.' A third says, 'No one should be left behind.' Murmuring their agreement, they too begin making Shiva lingams by piling sand around their own feet. In a short while, the stage is crowded with Shiva lingams.
The stage resounds with cries of 'Har Har Mahadev!' The crowd sounds devotional, but its chanting should also carry the breathless haste of imitation.)

BEGGAR: (Returning from his bath.) Look! When I came, there was not a soul here, and now see how large the crowd has grown. What is that to me? I am a wandering ascetic, like flowing water. This shoulder-cloth will dry on the road. Victory to Mother Kamaleshwari! Now to Janakpur as a devotee of the Kamala. But first, I must take my pot.

(He searches for the Shiva lingam he made, but Shiva lingams surround him on every side. He knocks down one or two, but finds nothing beneath them. The crowd gradually falls silent as people begin to understand: those who claimed to know the custom had never known the reason for it themselves.)

(The Beggar sits on the stage with his head in his hands. The Sutradhar slowly steps forward.)

SUTRADHAR: Children and grown-ups, did you see? A sign made for one man became a tradition for everyone. Acting without knowing the reason can turn the whole purpose upside down.

FEMALE PILGRIM: I thought I was earning sacred merit.

MALE PILGRIM: I thought everyone was doing it, so I should do it too.

BEGGAR: And I thought I would save my money by marking the spot. But a marker left unexplained became a rule for others.

SUTRADHAR: Before copying anything whose meaning you do not understand, ask. Only when devotion is guided by reason will wealth, faith, and the mind - all three - remain safe.

(All the performers mime gathering the sand together with their hands.)

ALL: Ask. Understand. Then act. Never imitate with your eyes closed.

(The stage lights slowly fade.)

(CURTAIN)

CURTAIN

VIDEHA

Videha: The First Maithili Fortnightly E-Journal | ISSN 2229-547X | www.videha.co.in

मचण्ड

भाषा, न्याय आ आतंकक बीचक एकटा तीक्ष्ण समकालीन नाटक

गजेन्द्र ठाकुर

सम्पादक, विदेह: प्रथम मैथिली पाक्षिक ई-पत्रिका (since 2000)

ISSN 2229-547X

पात्र-परिचय

(सुधारल पाठमे भाषा, राज्य, आतंक, बेरोजगारी, आ दया-राजनीतिक बीचक तनावकेँ बेसी धार देल गेल अछि। मुतालिफक मौन आ खुफिया अधिकारीक विश्वास, दुनू नाटकक केन्द्रमे रहत।)

(ध्वनि संकेत: कोर्टक कोलाहल, हथकड़ीक खनखन, दूर ट्रेन/जेलक सायरन, मोबाइलक खड़खड़ाहटि, आ अनुवादकक रुकि-रुकि बाजल स्वर पूरे नाटकमे भाषा आ सत्ता बीचक दूरी बनौने राखत।)

पात्र

मुतालिफ: पैघ-पैघ आंखि बला एकटा युवा; बेसी काल मौन, मुदा आँखि प्रश्न करैत रहत। ओकर इशारा केवल भाषा नहि, आरोप सेहो अछि।

भाषा अनुवादक (बा अनुवादिका): शब्दक पुल, मुदा पुलो कखनो-कखनो अधूरा रहि जाइत अछि।

हबीबुल्ला: तस्करक सरदार

एकटा खुफिया अधिकारी

खुफिया अधिकारीक अधिकारी

किछु सिपाही

आतंकी लीडर

अंक १

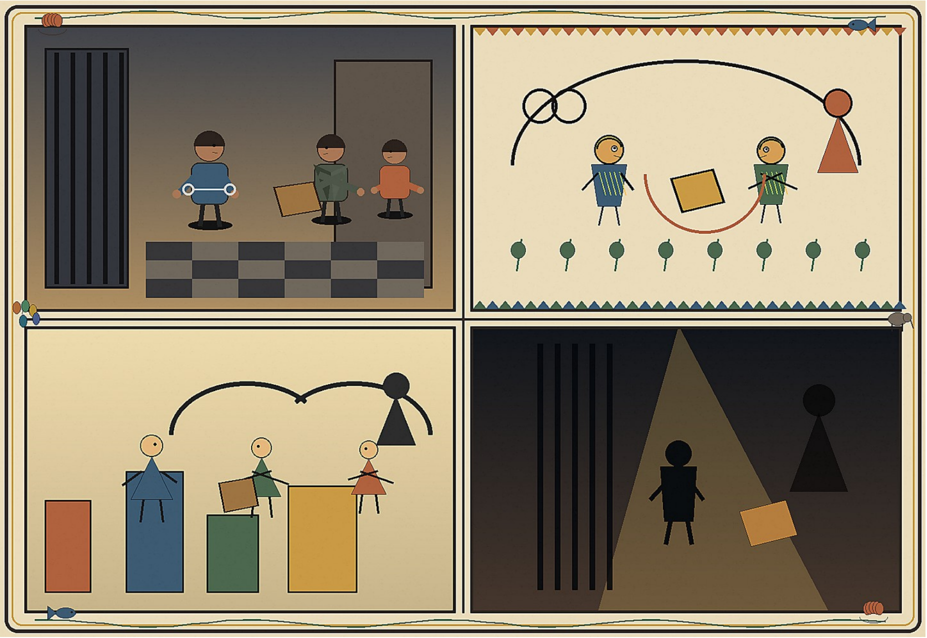

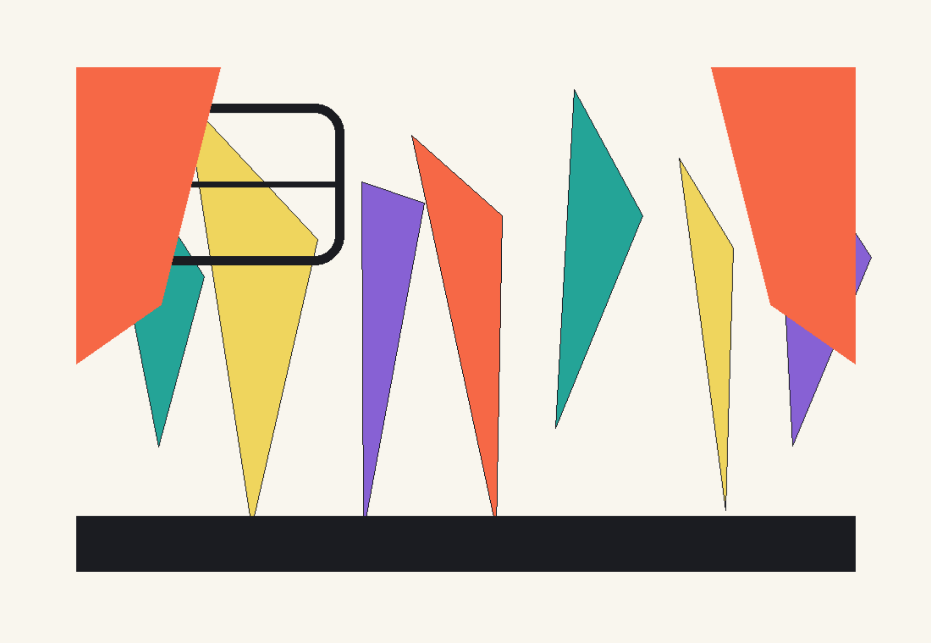

चित्र 1

(मुतालिफक पैघ-पैघ आँखि... जेल जाइत कोर्टक हाजतमे, दौगि कऽ जा रहल अछि। ओतए सिपाहीकेँ खुफिया अधिकारी खेनाइक पैकेट दैत अछि। पुलिस खेनाइक पैकेट मुतालिफकेँ देलकै। ओकरा लग एकटा भाषा अनुवादक (बा अनुवादिका) अछि। नेपथ्यमे कोर्टक खटर-पटर, हथकड़ीक खनखन, आ अनेक भाषाक टूटल-फूटल कोलाहल सुनाइ दैत अछि।)

मुतालिफ: (चौंकैत इशारामे पुछैत अछि, जकरा भाषा अनुवादक (बा अनुवादिका) बाजि कहैत अछि)।

भाषा अनुवादक (बा अनुवादिका): ऐ नग्रमे क्यो ओकर नै.. भाषा सेहो नै ओ बुझैए ककरो; आ नहिये ओकर भाषा कियो आन बुझै छै। तमिल अछि। जे शहर ओकरा अपराधी कहैए, से ओकर नामो ठीकसँ नहि बजा पबैए।

तखन ई भोजनक पैकेट ओकरा के देलक अछि से पुछि रहल अछि। ओकरा विश्वास नहि भऽ रहल अछि जे आरोपक बीच कियो भोजन सेहो दऽ सकैए।

सिपाही: (खुफिया अधिकारी दिस इशारा करैत) ओ देलखिन्ह। रतुका भोजन छिऐ। रातिमे जेल बला खाइले नै देतै, तैं। दिल्लीक तिहार जेलमे राखल जेतै ओकरा, ओतए तमिलनाडु पुलिसक एकटा टुकड़ी छै, चार्ल्स शोभराजक जेलसँ भगलापर ऐ टुकड़ीकेँ बजाओल गेल छलै, ऐ दुआरे जे ओ सभ स्थानीय भाषा नै बुझै छलै से कोनो अपराधीसँ मेल-पेँच नै कऽ सकतै। मुदा फेर ई हाल भेलै जे दू मासमे ओ सभ सभ गोटे स्थानीय भाषा सीख जाइ गेलै। मुदा ई ओकरा सभसँ गप कए सकत। पेटक भाषा सबसँ पहिने बुझाइ छै।

भाषा अनुवादक (बा अनुवादिका): (दर्शक दिस तकैत) तिहारमे मुतालिफ किछु बाजि सकत, ओकरा सभक संग। अपना लेल वकील रखबाक लेल ब्योंत धरा सकत।

मुतालिफ: (ऐ बेर बेसी जोरसँ चौंकल, पलटि कैँ खुफिया अधिकारी दिस तकलक, इशारामे बजैत अछि, जकरा भाषा अनुवादक (बा अनुवादिका) बाजि कहैत अछि)।

भाषा अनुवादक (बा अनुवादिका): (खुफिया अधिकारी दिस तकैत): पूछि रहल अछि जे अहाँ देने छिऐ?

खुफिया अधिकारी (हाथसँ इशारामे- राखि लिअ।)

मुतालिफ: (दुनू हाथ जोड़ि कऽ खुफिया अधिकारीकैँ प्रणाम केलक। आ भाव विह्वल भऽ कानऽ लागल, हिचुकि-हिचुकि, जोर-जोरसँ। ओकर रुदनमे धन्यवाद आ भय दुनू अछि।)

(पर्दाक पाछाँसँ ओकीलक स्वर सुनाइ दऽ रहल अछि। जे जोरसँ बाजि रहल अछि।)

ओकील: मिलॉर्ड! असली अपराधी अछि ई मुतालिफ! फूसि अछि एकर खिस्सा। समुद्रक बीचपर दिनमे क्रिकेट खेलेनाइ एकर अकर्मण्यता अछि। ई, मुतालिफ, कहैए, बेरोजगार छल तैं दिनमे क्रिकेट खेलाइ छल। आ फेर एकर खिस्सा आगाँ बढ़ैए। एकरा हबीबुल्ला भेटै छै, एकरा पूछै छै... बेरोजगार छी? आ एकरा ओ काज दै छै, एकटा बैगमे प्रेशर कुकर आ ओइमे मर-मसल्ला!! कुकरक परदाक बीचमे नशाक पाउडर भरि उघै छल ई!!! हवाइ जहाजसँ एनाइ-गेनाइ, आ तै परसँ एक बेर गेल-आएल पर दस हजार टाका बैसले-बैसल भेटै छलै। आ तखन ई कहैए जे एकरा किछु बुझले नै छै, बुझले नै छै जे प्रेशर कुकरमे की लऽ जाइ छल। गरीबीक अज्ञान सेहो अपराधक हिस्सा होइत अछि, मिलॉर्ड! आ मुख्य अपराधी तखन तँ भेलै हबीबुल्लाह..)

(मंचपर सभ सकदम भऽ जाइए, मुतालिफ बौक सन ठाढ़ अछि। खुफिया अधिकारीकैँ छोड़ि सभ

प्रस्थान करैत अछि।)

खुफिया अधिकारी: ओकील साहैब, मुतालिफ कोनो वकील नै केने अछि। मुख्य अपराधी ई नै अछि, कोनो तमिल वकीलकैँ पकड़ू आ ओकरा कहियौ जे अगिला जमानतक सुनबाइमे एकर जमानत करबेतै। न्याय जँ भाषा नै बुझत तँ न्याय नहि, प्रक्रिया मात्र रहि जाएत।

(ओकील प्रवेश करैत अछि।)

ओकील: हम तमिले छी, ऐ तरहक बहुत मुकदमा लड़ने छी। खास कऽ ओइ तमिल सभक, जे दिल्लीमे फँसि जाइ छथि, जिनका भाषाक संकट होइ छन्हि। हम तँ सरकारी ओकील छी, हम तँ एकर पक्षमे नै बाजि सकै छी, मुदा हमर असिसटेण्ट ओकील हमर ऑफिसे ऑफिस घुमैत रहैत अछि। ओ एकर मदति जरूर कऽ देतै।

(ओकीलकक प्रस्थान। खुफिया अधिकारीक अधिकारीक प्रवेश।)

खुफिया अधिकारीक अधिकारी: कतऽ फँसि गेल छी?

खुफिया अधिकारी: ई मुतालिफ अपराधी अछिये नै, कोनो मादक पदार्थक माफिया फँसा लेने छलै एकरा।

खुफिया अधिकारीक अधिकारी: हबीबुल्ला। सूचनाक आधारपर ओकरा घरमे चेन्नैमे छापा पड़लै, किछु नै भेटलै।

चित्र 2

खुफिया अधिकारी: बरामदी तँ मुतालिफसँ भेलै। मुदा ई तँ शतरंजक गोटी अछि, पाँव-पैदल सिपाही। पाँव-पैदल। जे हाथ गोटी चलबैए, से हाथ कतऽ अछि?

खुफिया अधिकारीक अधिकारी: हमरा गामक लुल्हा पाँव-पैदल सभ साल बाबाधाम जाइए। हमरे गामक पीअर बच्चा हवागाड़ीसँ सभ साल बाबाधाम जाइ छथि।

दुनू गोटे बीसो सालसँ लगातार बाबाधाम जा रहल छथि। लुल्हा बीससालसँ महीसे चरा रहल अछि आ पीअर बच्चाक घरारीपर ऐ बीस सालमे कोठा-कोठामे भेले जा रहल छन्हि।

खुफिया अधिकारी: मुदा असल फल कोना भेटै छै।

खुफिया अधिकारीक अधिकारी: मुदा असल फल तँ पाँव-पैदल गेलेसँ होइ छै। तैँ ने लुल्हा बीस सालसँ महीसे चरा रहल अछि। परुकेँ साल तँ हम गेल रही बाबा धाम। प्रफुल्ल भाइ गामक बोलबम पार्टीक जमादार छथि। सभ साल पाँव-पैदल जाइ छथि। हुनकर बाबू सेहो जमादार छलखिन्ह। भोला भाइ डाकबम छथि, तीन दिनमे सुल्तानपुरसँ पानि भरि भोलाबाबाकेँ चढ़ा दै छथि। प्रफुल्ल भाइ सभकेँ संग लऽ चलै छथि, जे निअम भंग करैए तकरा दण्ड लगबै छथि। पीअर बच्चा तँ तते नै मोटाएल छै जे ओकरासँ पाँव-पैदल जाएल हेतै? मुदा तखन प्रफुल्ल भाइ की कोनो कम मोटाएल छथि। मुदा बाबू, लोक की अपने चलैए, ओकरा तँ बाबा चलबै छथिन्ह।

खुफिया अधिकारी: अहूँ गपकेँ बड्ड नमारै छी। अहीं कहै छी जे पीअर बच्चाक घरारीपर ऐ बीस सालमे कोठा-कोठामे भेले जा रहल छन्हि आ लुल्हा बीस सालमे महीसे चरा रहल अछि तइपर अहाँक कहनाम छल जे असल फल पाँव-पैदल गेलेसँ होइ छै। पीअर बच्चा जँ कहियो पाँव-पैदल बाबाधाम गेले नै छथि, तखन किए ओ कोठा-कोठामे केने जा रहल छथि आ लुल्हा तँ सभ साल पाँव-पैदल जा रहल अछि तखन किए ओ महीसे चरा रहल अछि।

खुफिया अधिकारीक अधिकारी: यौ, आँखिक देखल कहै छी। कोठा कियो बान्हि ने लिऐ, बाबू भोला बाबा मानै छथिन्ह लुल्हेकेँ।

खुफिया अधिकारी: से केना?

खुफिया अधिकारीक अधिकारी: लुल्हा रस्तामे पाछाँ छुटि गेल। प्रफुल्ल भाइ चिन्तित छलथि जे अजश हएत। सौँसे धर्मशाला ताकि लेलन्हि। लुल्हा कोना पहिनहिये धर्मशाला आबि जाएत? ओ तँ पछुआ जाइ छल। कोना गाम घुरलापर लोककेँ मुँह देखेता। मुदा भोरमे देखै छथि जे लुल्हा धर्मशालाक कोठलीमे फोँफ काटि रहल अछि। आ जगलापर लुल्हा खिस्सा सुनबै छन्हि, चारू कात बोन रहै, हम हबोढेकार भऽ कानि रहल छलौं। तखने एकटा दाढ़ीबला बुढ़ा आएल आ चुप करेलक। पूछा-पूछी केलक आ माथपर हाथ रखलक। आ लगैए निन्न आबि गेल। निन्न खुजैए तँ देखै छी जे गौंआ सभक संग धर्मशालामे पड़ल छी।

खुफिया अधिकारी: अही पाँव-पैदलक लोक सभक ताकिमे बोने-बोन फिरबाक ड्यूटी हमरा भेटल अछि। मीठ-मीठ बाजू आ पाँव-पैदल चलैबला लोक सभकेँ, मुतालिफकेँ, लुल्हाकेँ अपन मीठ गपसँ बझाबी। ओकरा बुझाबी जे सरकार देश नै छिऐ। ओ छी ई देश। पाँव-पैदल बा शतरंजक सिपाही। राजा-रानी नै छी देश। हबीबुल्ला नै छी देश। देश छी मुतालिफ। देश छी लुल्हा। जँ ई बुझा सकलौं तँ एकटा गोटी फेर मनुक्ख बनत।

खुफिया अधिकारीक अधिकारी: कतऽ सँ आएल छी? दिल्लीसँ तँ नै।

खुफिया अधिकारी: नै, हम भारतक सिमानसँ आएल छी।

खुफिया अधिकारीक अधिकारी: चीन, तिब्बत, पाकिस्तान, बांग्लादेश बा म्यांमारक सिमानसँ।

खुफिया अधिकारी: नै, नेपालक सिमानसँ। सीताक देशसँ।

खुफिया अधिकारीक अधिकारी: मिथिकल खिस्साबला, फूसिबला देशसँ।

खुफिया अधिकारी: नै, ई मिथिकल नै ऐतिहासिक भऽ सकैए। किछु खिस्सामे तोड़-मरोड़ कएल गेल हएत, मुदा इतिहास प्राचीन अछि। तेँ जिनकर इतिहास ओतेक प्राचीन नै तिनका नै अरघैत हेतन्हि।

खुफिया अधिकारीक अधिकारी: बहस, बहस। हथियारक ट्रेनिंङ ओकरा सभकेँ भेटल छै तँ अहाँकेँ सेहो भेटल अछि, रिवॉल्वर, पिस्टलसँ स्टेनगन धरिक ट्रेनिङ। बहसस ट्रेनिंग सेहो अहाँकेँ भेटल अछि आ से खाली हमरासँ नै ओकरो सभसँ करू। एकटा आतंकी लीडर पकड़ाएल छै, बिनु ड्रगक पाइ भेने आतंकी काज नै चलि सकत।

खुफिया अधिकारी: मुदा हबीबुल्ला तँ छुटि जाइए, मुतालिफ पकड़ेने ड्रगक पाइक ओर नै भेटत।

खुफिया अधिकारीक अधिकारी: हबीबुल्लाक घरपर किछु नै भेटल।

खुफिया अधिकारी: अपनो बीच ओकर लोक हेतै जेना ओकरा बीचमे अपन लोक अछि।

खुफिया अधिकारीक अधिकारी: पता करू। कैदी आतंकी लीडरसँ पुछि कऽ देखू। समए ससरल जाइए, ससरल जाइए........।

अंक २

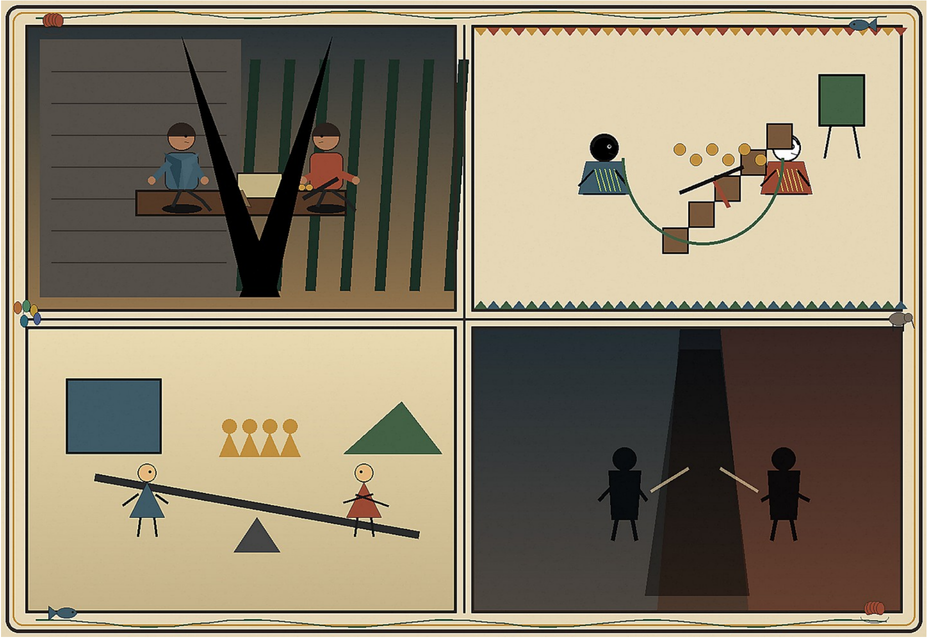

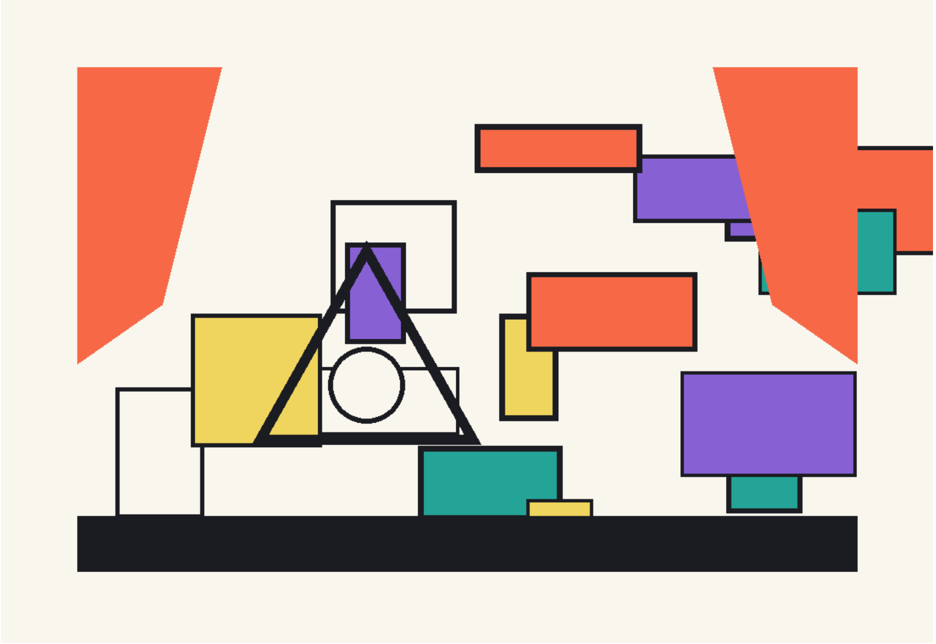

चित्र 3

(टेबुल कुर्सीक एक कात खुफिया अधिकारी आ दोसर कात आतंकी लीडर अछि, दुनूक बीच बहस

चलि रहल छै। बीचमे टेबुल नहि, जेना एक अदृश्य खाई अछि। प्रकाश दू टुकड़ामे बँटल रहत;

बहस बढ़ला पर दुनूक छाया एक-दोसरामे पैसए लागए।)

खुफिया अधिकारी: केना हमरा सभक काजक सूचना अहाँकेँ भेटैए, हबीबुल्लाक सहयोगी के सभ अछि? ड्रगक पाइ कोना आ ककरा लग जाइ छै। मुतालिफक सरदार हबीबुल्ला छी तँ हबीबुल्लाक सरदार के छी?

आतंकी लीडर: अहींक कार्यालयसँ सूचना भेटैए। कोनो सूचनाक अधिकारक अन्तर्गत नै, अहाँक सभ काजक सूचना हमरा सभ लग आबि जाइए। हमरो बीच अहाँक लोक छथि तँ अहूँक बीचमे हमर लोक छथि। फर्क एतबे छै जे अहाँक लोक फाइलमे लुका जाइ छथि, हमर लोक जंगलमे।

खुफिया अधिकारी: ई तँ बुझले गप अछि। मुदा ओ अछि के?

आतंकी लीडर: अहाँ तैयो हथियार लऽ कऽ नै चलै छी। मिजोरमक लालडेंगा तँ हथियार लऽ कऽ चलै छला आ असामक परेश बरुआ मुदा कखनो हथियार लऽ कऽ नै चलै छथि। अहाँक देश दुनूसँ समझौता केलक। हथियारबला सँ बिन हथियारबला केना कम खतरनाक भेल? अहूँ हमरा सभ लेल बेशी खतरनाक छी।

खुफिया अधिकारी: देखू, एकटा मिजोरमक छात्र मुजफ्फरपुरमे इन्जीनियरिंगमे पढ़ैत छल। ओ हमरा कहने छल जे लालडेंगा महान नेता छथि। ओइ काल लालडेंगा भूमिगत रहथि। देश हुनका आतंकी मानै छल। मुदा ओ एला, देशक सरकारसँ समझौता केलन्हि। सभ हथियार जमा कऽ देलन्हि। दुनू पक्ष

समझौताक इमानदारीसँ पालन केलक आ आइ मिजोरम उत्तरपूर्वी भागक एकमात्र एहेन समझौता अछि जे पूर्ण रूपसँ सफल अछि। मृत्युक पहिने लालडेंगा अपन राज्यकेँ शान्तिक पथपर छोड़ि गेला। ओ इन्जीनियरिङक छात्र ठीके कहै छल, लालडेंगा महान नेता छथि। महान नेता अपन जनताकेँ बीच मझधारमे नै छोड़ै छै। डुबैत जहाजक कप्तान जेकाँ ओ अन्तिम समए धरि जहाजपर रहैत अछि। जखन जहाजसँ सभ बहरा जाइए तखन ओ जहाजक मस्तूल संगे समुद्रमे डुबि जाइए, जहाज छोड़ि नै भागैए। जँ लालडेंगा समझौता केलन्हि तँ ओ ओइ जनताक भावनाक अनुरूप छल, जे हुनका महान बुझैए। जँ ओ मृत्युसँ पूर्व शान्ति समझौता नै करितथि तँ भऽ सकैए ओ इन्जीनियरिङक छात्र हुनकापर ओतेक गर्व नै कऽ सकितए। ओ जखन अखनो भेटैए, हमरासँ कहैए- देखलौं, हम कहै छलौं ने, लालडेंगा इज अ ग्रेट लीडर।

आतंकी लीडर: हमरा ग्रेट लीडर बनबाक सेहन्ता नै अछि। हम सभ हथियार समर्पण कऽ दी आ तखन जँ सरकार हमरा संग धोखा करए?

खुफिया अधिकारी: जँ लालडेंगा ई सोचितथि तँ की शान्ति सम्भव छल? आ सरकार अछि की? जे टेलीविजनपर अहाँ सभ देखै छी, से अछि सरकार? नै, ओइमे सँ बहुतोकेँ बुझलो नै छै जे देश लेल के के, की की कऽ रहल अछि। सभ विभागमे देशभक्त सभ भरल छै, दसे प्रतिशत किए नै होउ, आ ओकरे भरोसे ई देश छै। जे टेलीविजनपर अछि, मंत्री-संत्री, ओइमेसँ ककरा की बुझल छै? अहाँ बदलि सकै छी, ई मंत्री-संत्री बदलि सकै छथि मुदा देश नै बदलत, सरकार नै बदलत। ओ समझौताक पालन करत। मुदा अहाँकेँ पहिने ई मानऽ पड़त जे गोली भविष्य नहि लिखैए।

आतंकी लीडर: अहाँ हमरे सभ जेकाँ सोचै छी, मुदा गलत पक्षमे छी।

खुफिया अधिकारी: हम नै अहाँ गलत पक्षमे छी। हथियार उठेने छी। हथियार कीनैले ड्रग बेचै छी, बेचबाबै छी। कतेक बच्चाक भविष्य खतम कऽ देलिऐ अहाँ सभ।

आतंकी लीडर: कोन भविष्यक गप कऽ रहल छी अहाँ? अहाँ फैक्ट्री खोलि देबै तँ ओ दरबान बनि

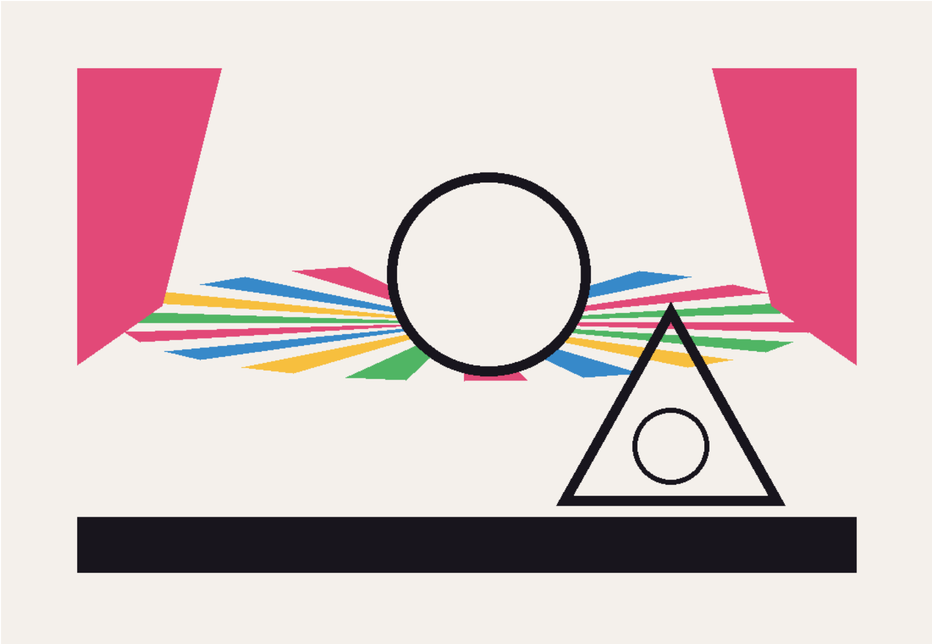

चित्र 4

जाएत। अहाँ रोड बना देबै तँ ओकरा ओइपर बाढ़नि बहारबाक नोकरी लागि जेतै!

खुफिया अधिकारी: अहाँक लोक बेरोजगार युवाक ताकिमे रहैत अछि, समुद्रक किनारपर, जंगलमे, रेगिस्तानमे, जेकरा काज नै छै, रोजगार नै छै ओकरा अहाँ ठकि कऽ ड्रगक धंधामे लगा दै छिऐ। मुतालिफ २० सालक बाद जेलसँ बहराएत, से रोजगार देलिऐ ओकरा अहाँ सभ। बेरोजगारीक खाली कटोरामे अहाँ बारूद भरै छी। मचण्ड छी अहाँ सभ।

आतंकी लीडर: ओकरा कतेक दिन अहाँक सरकार राखत जेलमे?

खुफिया अधिकारी: माने.. माने.. (तमसा कऽ टेबुलपर हाथ पटकैत अछि।)

आतंकी लीडर: (हँसऽ लहैए) अहूँकेँ तामस उठैए? अहाँक सिस्टममे निर्बलक सुनवाइ नै छै। मुदा तैयो

ओइ सिस्टम लेल अहाँ जान अरोपने छी। की देलक अहाँक सिस्टम अहाँकेँ। अहाँक सिस्टममे जे हमरा सभले काज करैए से शहरसँ हिलबो नै करैए, आ अहाँकेँ बोनक पोस्टिंग दऽ देने अछि। अहाँ संगे अन्याय भेल अछि। आ जखन अहाँ अपना संग भेल अन्याय नै रोकि सकै छी तँ हमरा सभकेँ कोना न्याय दिया सकब? अहाँक दया सेहो अहाँक विरुद्ध गवाही दैए।

खुफिया अधिकारी: ई अहाँक मोनक भ्रम अछि, कोनो अन्याय नै भेल अछि हमरा संग। हमरा ऐ काज लेल चुनल गेल अछि। जँ हमर पोस्टिंग जंगलमे अछि तँ ई जंगलो देशक हिस्सा अछि।

आतंकी लीडर: अहाँक दुरुपयोग कऽ रहल अछि अहाँक सिस्टम। आबि जाउ हमरा सभक संग, नोकरी ओतै करू मुदा ओतऽ रहियो कऽ हमरा सभक संग रहू। सोचू, समय लिअ...

खुफिया अधिकारी: (तमसाइत) अहाँक दिमाग तँ नै खराप भऽ गेल अछि? हम एक माससँ सभ दिन अहाँकेँ बुझेबामे लागल छी मुदा अहाँक अलगे खेरहा अछि। अहाँकेँ हँसी बुझा रहल अछि?

आतंकी लीडर: अहाँ हमरा एक माससँ बुझा रहल छी आ हमहूँ एक माससँ अहाँकेँ बुझाबऽमे लागल छी। मुतालिफ छूटि गेल अछि आ तइ लेल अहाँकेँ धन्यवाद।

खुफिया अधिकारी: हमरा किए धन्यवाद?

आतंकी लीडर: हमरा सभ गप बुझल अछि। आ ओइ काजक पुरस्कार स्वरूप अहाँकेँ संगठनमे उच्च पद देल जाएत।

खुफिया अधिकारी: हमर विभागमे किछु लोक भयसँ अहाँले काज करैत हेता, तइसँ अहाँक मोन बढ़ि गेल अछि।

आतंकी लीडर: ओ सभ भय बा पाइसँ कीनल जा सकैत छथि, मुदा तैयो ओ सभदेल काज करबे करता, से विश्वास हमरा नै अछि। मुदा अहाँक हृदए हमरा सभक संग अछि, मुतालिफक लेल अहाँक प्रेम तकर प्रमाण अछि आ तँइ अहाँकेँ अपन संगठनक कोर ग्रुपमे लेबाक निर्णय लेल गेल अछि। दया, अधिकारी साहेब, सत्ता सँ बेसी खतरनाक हथियार अछि।

खुफिया अधिकारी: (तामसे सबिख होइत) निर्णय लेल गेल अछि? (आतंकी लीडरक ठोंठ पकड़ैत अछि।) नि....र्ण....य..... लेल गेल अछि? हम असथिरसँ गप कऽ रहल छी तँ....

आतंकी लीडर: अहूँ मचण्ड छी, सरकारी मचण्ड। (खोंखी करैत आ खुफिया अधिकारीक हाथसँ अपन कण्ठ छोड़बैत।) मुदा सिद्धान्तबला... (निसाँस छोड़ैत)... हमरे सभ जेकाँ... (हाँफी लैत) .. जकरा मचण्ड बनऽ पड़ैत अछि... फर्क एतबे जे अहाँ वर्दीमे छी, हम जंगलमे... आ तँ ई निर्णय लेल गेल अछि... (कुर्सीसँ नीचाँ खसि पड़ैत अछि।)

अंक ३

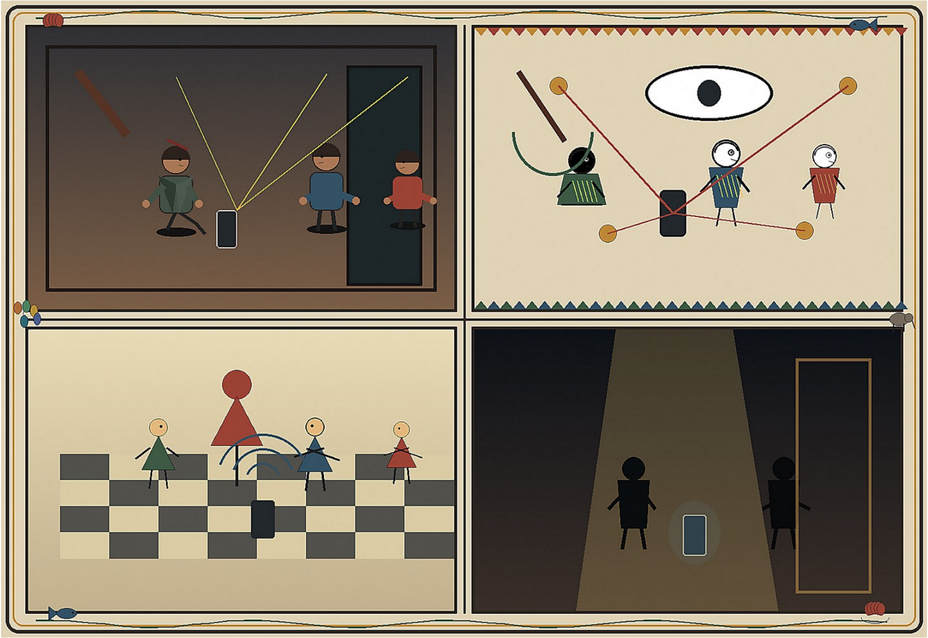

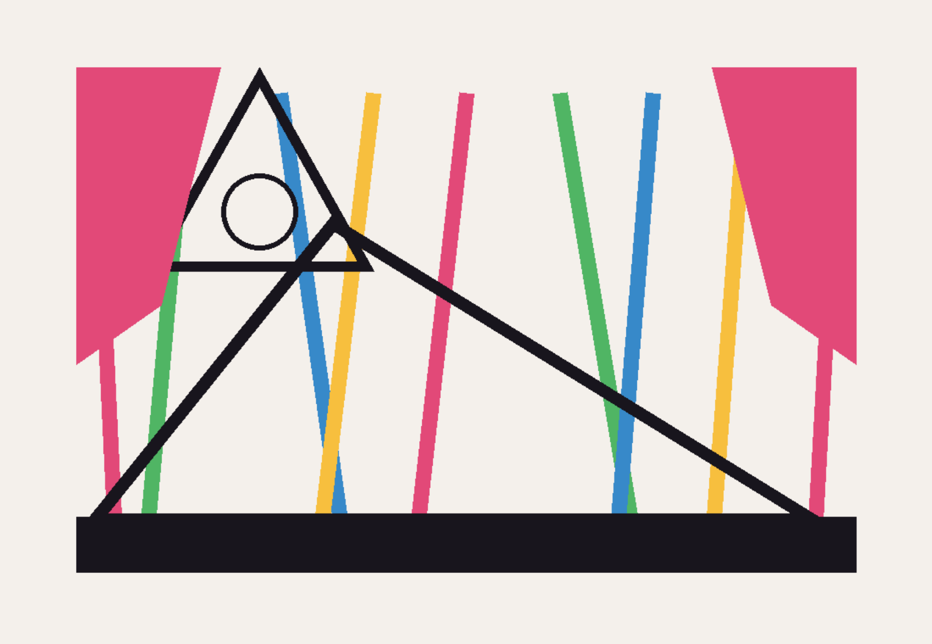

चित्र 5

(खुफिया अधिकारीक माथपर एकटा भारी डण्टा बजरैए आ ओ बेहोश भऽ जाइए। किछु लोक जे

ओकरा मारने छल से ओकरा उठा कऽ मंचक दोसर दिशामे लऽ जाइए। ओकरा होश अबै छै।

मुतालिफ पाछाँसँ अबैत अछि। संगमे भाषा अनुवादक(बा अनुवादिका) छै। आब मुतालिफक आँखिमे

पहिल अंकक भय नहि, एक अजीब स्थिरता अछि।)

मुतालिफ: (इशारामे बजैए)

भाषा अनुवादक(बा अनुवादिका): (खुफिया अधिकारीकेँ सम्बोधित करैत) कोर्ट मुतालिफकेँ बेल दऽ देलकै। मुतालिफ कहैत अछि जे बिना ड्रगक धंधाक आतंकवाद सम्भव नै छै, ऐ लेल जतेक पाइ चाही से ड्रगक धंधेसँ अबै छै। मुतालिफ कहै छथि जे ओ जेलसँ एलाक बाद अहाँ जकाँ बनऽ चाहलक मुदा पुलिस थाना, पत्रकार, गामक बेरोजगारी, आ ओकर नामपर लागल दाग ओकरा से नै करऽ देलकै। मुतालिफ कहै छथि जे सिस्टम ठीक करबाक आवश्यकता अछि, नै तँ ....

खुफिया अधिकारी: (मुतालिफकेँ सम्बोधित करैत) तँ की अहाँ मुख्य खिलाड़ी छी? हमरा तँ लगै

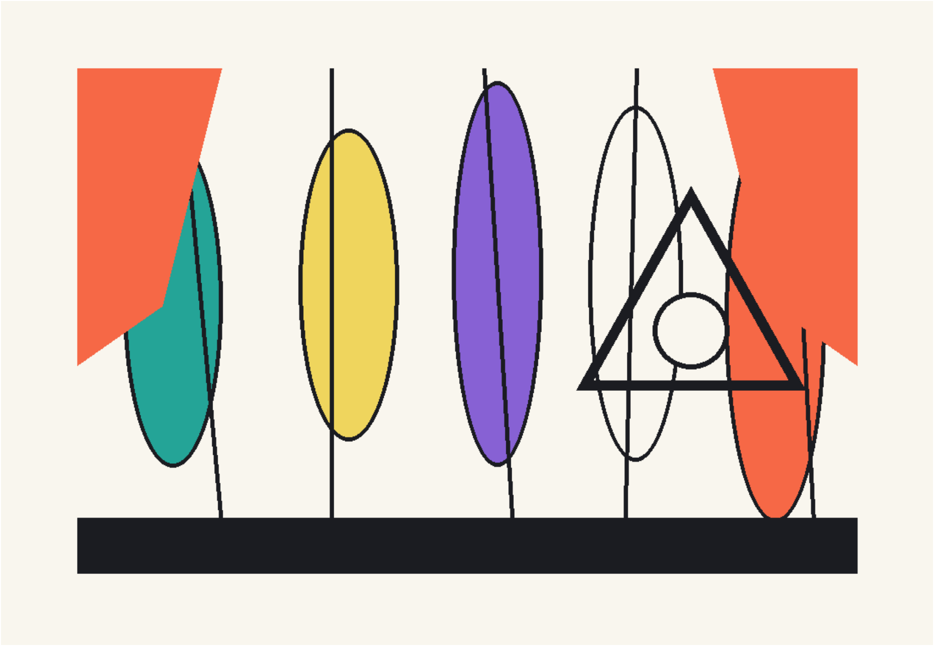

चित्र 6

छल जे अहाँकेँ फँसाएल गेल अछि।

मुतालिफ: (इशारामे बजैए)

भाषा अनुवादक(बा अनुवादिका): (खुफिया अधिकारीकेँ सम्बोधित करैत) की फर्क पड़ै छै। फँसाएल गेल खिलाड़ी बा मुख्य खिलाड़ीमे की फर्क छै। ओना देखबै तँ ऐ तरहक संगठनमे अस्सी प्रतिशत फँसाएल लोक छै, मुदा तेना फँसाएल छै जे मुख्य खिलाड़ीसँ बेशी खतरनाक वएह छै। जेकरा समाज निर्दोष मानि नहि सकै, ओकरा अपराधी बनबामे देर नहि लगै छै। आब अहाँकेँ वएह करबाक अछि जे मुतालिफ कहता।

(खुफिया अधिकारीक माथपर एकटा भारी डण्टा बजरैए आ ओ बेहोश भऽ जाइए। ओकरा छोड़ि

कऽ सभक प्रस्थान। ओकरा फेरसँ होश आएल छै। मंचक दोसर कात ओ जाइए। पुलिसक प्रवेश।

स्थानीय थानामे पुलिसक मोबाइलसँ खुफिया अधिकारी फोन करैए, अपन पहचान कोड बतबै लेल। ओकर स्वर काँपैए, मुदा कोड स्पष्ट अछि। फेर किछु कालक बाद ओकर हाकिमक फोन ओकरा लग अबै छै। ओ ओकरा लऽ कऽ पर्दाक पाँछा चलि जाइए। पर्दा खसैए।)

अंक ४

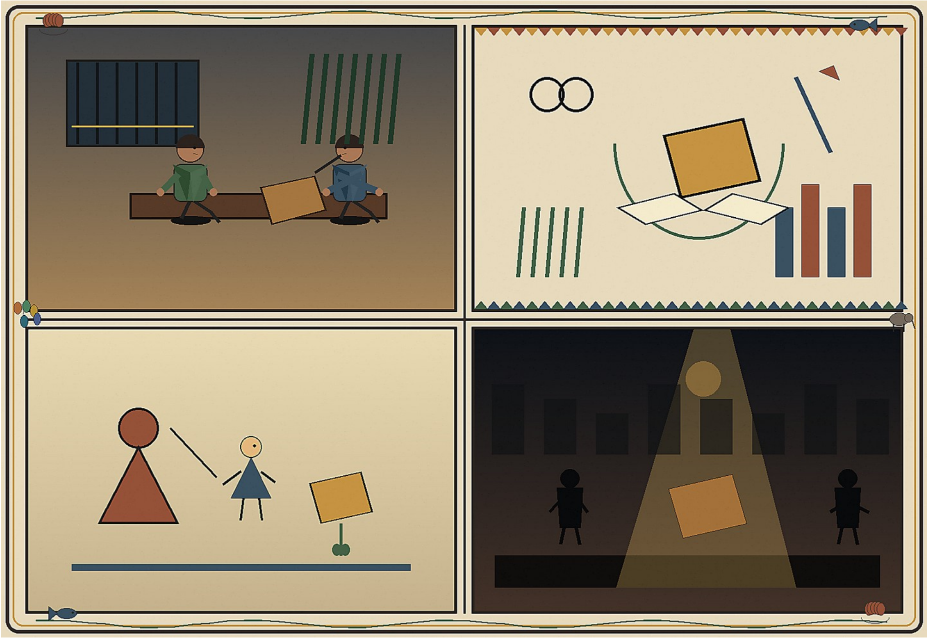

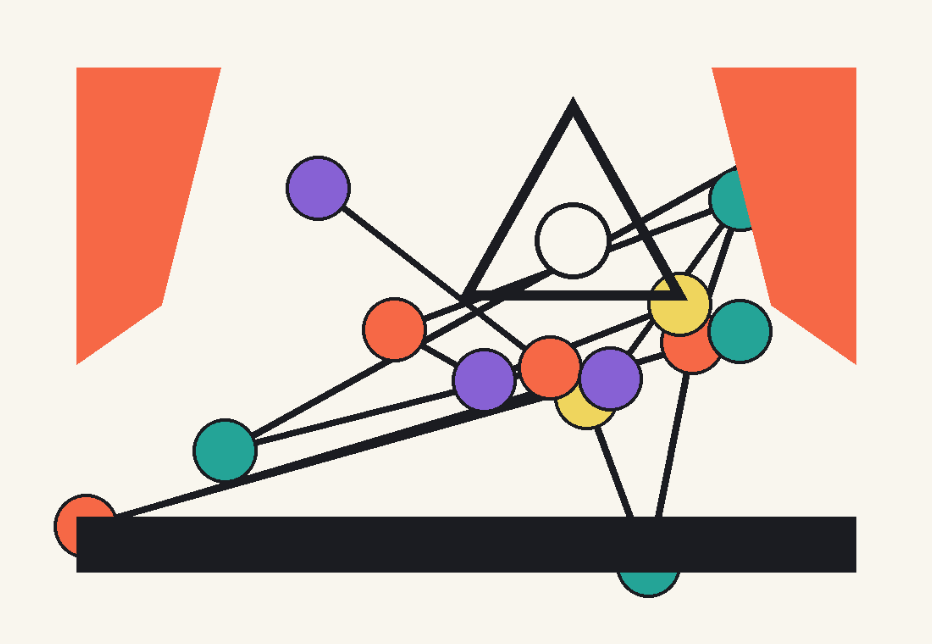

चित्र 7

(खुफिया अधिकारी आ ओकर अधिकारी गप कऽ रहल छथि।)

खुफिया अधिकारी: हमर पहिल यात्रा निरर्थक सिद्ध भेल अछि।

खुफिया अधिकारीक अधिकारी: मुतालिफ अहाँकेँ हरा देलक, अहाँक जान बकसि कऽ ओ अहाँकेँ हरा देलक। बिन हथियारबला सैनिकक हारि, ई बिध सभ सिखने जा रहल अछि। मुदा हारि बुझलासँ अगिला यात्रा शुरू होइत अछि।

खुफिया अधिकारी: किछु मोन पड़ि रहल अछि। दुभाषियाकेँ मुतालिफ कहि रहल छल आ ओ हमरा

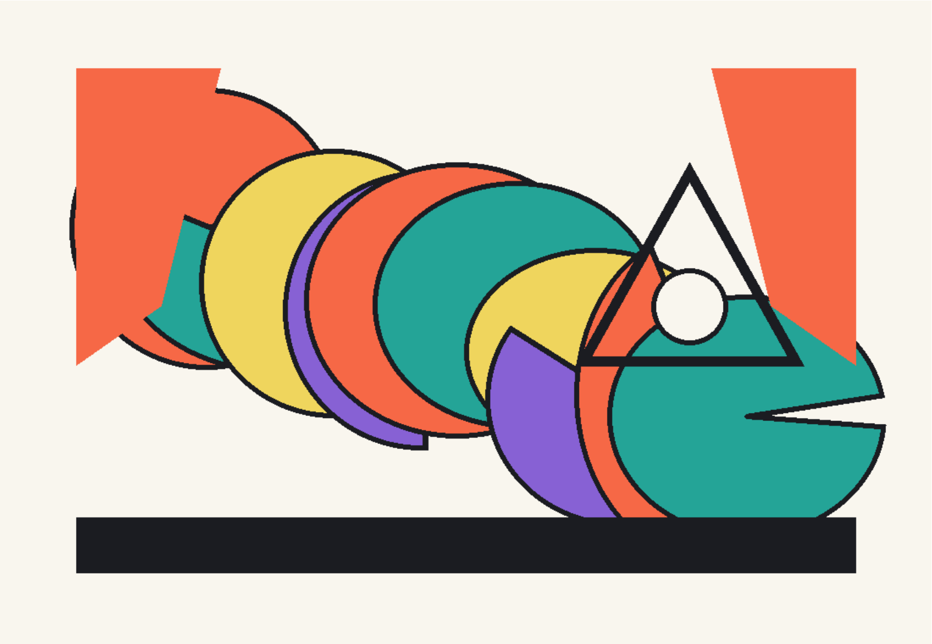

चित्र 8

कहि रहल छल। लगैए जेना मुतालिफ कहि रहल छल जे ई यात्रा व्यर्थ नै गेल अछि, जे हम कथा लिखै छी, से बुझू ऐ यात्रामे एकटा कथाक प्लॉटे भेट गेल। मुतालिफ जेना कहि रहल छल जे ओइ कथाक नायक मुतालिफ रहत। मुदा नायक बनब आ बचि जाएब, दुनू अलग बात अछि। जँ कथा लिखब तँ ईहो लिखब जे एकटा भोजनक पैकेट कखनो-कखनो अदालतसँ पैघ गवाही दैए।

(पर्दा खसैए)

(अन्तिम ध्वनि: हथकड़ीक हलुक खनखन, दूरक अजान/मन्दिर-घंटी सन मिश्रित नगर-ध्वनि, आ

अनुवादकक अधूरा स्वर। अन्हारमे केवल भोजनक खाली पैकेटपर प्रकाश रहि जाइत अछि।)

पटाक्षेप

VIDEHA

विदेह: प्रथम मैथिली पाक्षिक ई-पत्रिका | ISSN 2229-547X | www.videha.co.in

MACHANDA

A piercing contemporary play at the intersection of language, justice, and terror

Gajendra Thakur
Editor, Videha: The First Maithili Fortnightly E-Journal (since 2000)
ISSN 2229-547X

NOTES ON THE CHARACTERS

(In this revised text, the tensions among language, the state, terror, unemployment, and the politics of compassion have been sharpened. Mutalif's silence and the Intelligence Officer's faith remain at the centre of the play.)

(Sound cues: courtroom commotion, the clink of handcuffs, a distant train or prison siren, the crackle of a mobile phone, and the Interpreter's halting voice should sustain, throughout the play, the distance between language and power.)

CAST

MUTALIF: A young man with large, watchful eyes. He is silent most of the time, but his eyes never stop questioning. His gestures communicate not only language, but accusation as well.

THE INTERPRETER (male or female): A bridge made of words; yet even a bridge can sometimes remain unfinished.

HABIBULLAH: A smuggling kingpin.

AN INTELLIGENCE OFFICER

A SENIOR INTELLIGENCE OFFICER

SEVERAL CONSTABLES

A TERRORIST LEADER

ACT ONE

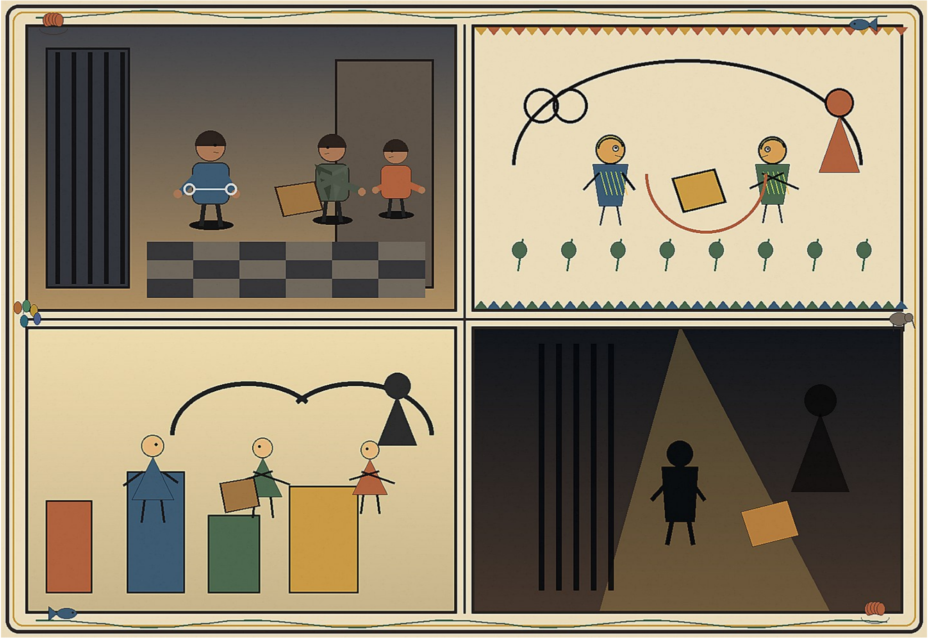

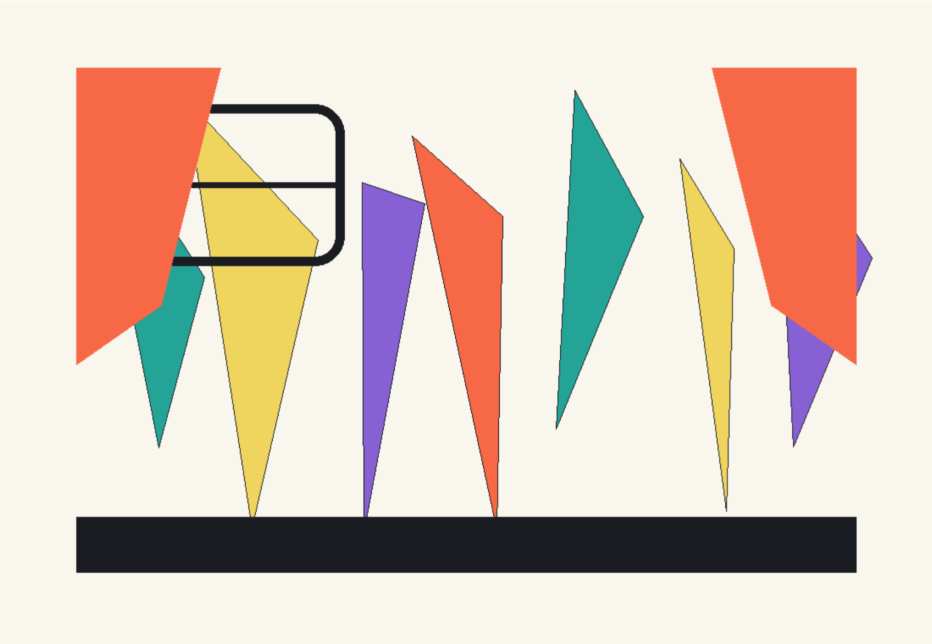

Illustration 1

(MUTALIF, his enormous eyes alert, is being hurried through the courthouse lock-up on his way to prison. An INTELLIGENCE OFFICER hands a packet of food to a CONSTABLE, who passes it to MUTALIF. An INTERPRETER, male or female, stands beside him. Offstage: the rattle and bustle of the court, the clink of handcuffs, and a broken babble of many languages.)

MUTALIF: (Startled, he asks a question in gestures. The INTERPRETER voices it.)

INTERPRETER: He has no one in this city. He understands no one else, and no one else understands his language. He speaks Tamil. The city that calls him a criminal cannot even pronounce his name correctly. He is asking who gave him this packet of food. He cannot believe that, amid all these accusations, someone could also give him food.

CONSTABLE: (Pointing towards the INTELLIGENCE OFFICER) He did. This is your dinner. They will not feed you at the jail tonight, that is why. You will be held in Tihar Jail in Delhi. There is a Tamil Nadu Police unit there. It was called in after Charles Sobhraj escaped from prison, on the theory that because they did not understand the local language, they would be unable to strike deals with any prisoner. But within two months, every one of them had learnt the local language. Still, you will be able to talk to them. The language of the stomach is understood before any other.

INTERPRETER: (Looking at the audience) In Tihar, Mutalif may be able to exchange a few words with them. He may even find a way to engage a lawyer for himself.

MUTALIF: (This time he is even more startled. He turns towards the INTELLIGENCE OFFICER and speaks in gestures. The INTERPRETER gives voice to his question.)

INTERPRETER: (To the INTELLIGENCE OFFICER) He is asking whether you gave it to him.

INTELLIGENCE OFFICER: (Gestures with one hand: Keep it.)

MUTALIF: (He folds both hands and bows to the INTELLIGENCE OFFICER. Overcome with emotion, he begins to weep—loudly, in broken sobs. His crying contains both gratitude and fear.)

(A LAWYER'S voice is heard from behind the curtain, speaking loudly.)

LAWYER: My Lord! This Mutalif is the real criminal! His story is a lie. Playing cricket in broad daylight on the seashore is proof of his idleness. Mutalif says he was unemployed, and that is why he played cricket during the day. Then his story goes on. Habibullah meets him and asks him—'Are you unemployed?' He gives him a job: carrying a pressure cooker in a bag, packed with spices! This man transported narcotic powder hidden between the pressure cooker's double walls! Flying back and forth, and earning ten thousand rupees for every trip without lifting a finger. And now he claims that he knew nothing—that he had no idea what he was carrying inside that pressure cooker. The ignorance bred by poverty is also part of the crime, My Lord! And then, of course, the principal criminal is Habibullah...)

(Everyone onstage falls silent. MUTALIF stands as if struck dumb. Everyone except the INTELLIGENCE OFFICER exits.)

INTELLIGENCE OFFICER: Counsel, Mutalif has not engaged any lawyer. He is not the principal offender. Find a Tamil lawyer and ask them to secure his bail at the next bail hearing. If justice cannot understand a language, it ceases to be justice and becomes mere procedure.

(The LAWYER enters.)

LAWYER: I am Tamil myself. I have handled many cases like this, especially for Tamil people who become trapped in Delhi because of a language crisis. I am the public prosecutor, so I cannot argue on his behalf. But my assistant lawyer is always hanging around my office. He will certainly help him.

(The LAWYER exits. The SENIOR INTELLIGENCE OFFICER enters.)

SENIOR INTELLIGENCE OFFICER: What have you got yourself entangled in?

INTELLIGENCE OFFICER: Mutalif is not a criminal at all. A narcotics mafia used him and trapped him.

SENIOR INTELLIGENCE OFFICER: Habibullah. Acting on a tip, we raided his house in Chennai, but found nothing.

Illustration 2

INTELLIGENCE OFFICER: The drugs were recovered from Mutalif, yes. But he is only a chess piece—a foot soldier. A pawn. Where is the hand that moves the piece?

SENIOR INTELLIGENCE OFFICER: A lame man from my village, Lulha, walks to Baba Dham every year. Piar Bachcha, from the same village, flies there every year. Both have been making that pilgrimage continuously for twenty years. For twenty years Lulha has been grazing buffaloes, while, during those same twenty years, one building after another has risen on Piar Bachcha's homestead.

INTELLIGENCE OFFICER: Then how does one receive the true blessing?

SENIOR INTELLIGENCE OFFICER: The true blessing comes only from going on foot. That is why, for twenty years, Lulha has been grazing buffaloes. I went to Baba Dham myself last year. Brother Prafull is the leader of our village Bol Bam group. He walks every year. His father was the leader before him. Brother Bhola is a Dak Bam pilgrim: within three days he brings water from Sultanpur and offers it to Lord Shiva. Brother Prafull takes everyone with him and fines anyone who breaks the rules. Piar Bachcha has grown so fat—how could he possibly walk all that way? Though Brother Prafull is hardly thin himself. But tell me, does a person walk by his own strength? Baba makes him walk.

INTELLIGENCE OFFICER: You have a remarkable way of killing the point. You yourself say that, in these twenty years, building after building has risen on Piar Bachcha's land, while Lulha has spent twenty years grazing buffaloes; yet you also say that the true blessing comes from going on foot. If Piar Bachcha has never walked to Baba Dham, why has he built building after building? And if Lulha walks there every year, why has he remained a buffalo herder?

SENIOR INTELLIGENCE OFFICER: I am telling you what I have seen with my own eyes. Anyone can build a house, sir. Lord Bhola Baba favours Lulha.

INTELLIGENCE OFFICER: How?

SENIOR INTELLIGENCE OFFICER: Lulha fell behind on the road. Brother Prafull was worried it would bring disgrace. He searched every dharamshala. How could Lulha have reached the lodging before them? He had been trailing behind. How would they face the village when they returned? But at dawn they found Lulha snoring in a room of the dharamshala. When he woke, Lulha told them: There was forest all around me, and I was crying helplessly. Then an old bearded man came and quieted me. He questioned me and placed his hand on my head. I must have fallen asleep. When I opened my eyes, I found myself lying in the dharamshala among the people of my village.

INTELLIGENCE OFFICER: I have been assigned to wander from forest to forest in search of precisely these people who travel on foot. Speak gently, win over the people who walk—Mutalif, Lulha—with your sweet words. Make them understand that the government is not the country. They are the country—the foot soldier, the chess pawn. The country is not the king and queen. Habibullah is not the country. Mutalif is the country. Lulha is the country. If I can make them understand that, a chess piece can become a human being again.

SENIOR INTELLIGENCE OFFICER: Where are you from? Not Delhi, surely.

INTELLIGENCE OFFICER: No. I come from the borderlands of India.

SENIOR INTELLIGENCE OFFICER: The border with China, Tibet, Pakistan, Bangladesh, or Myanmar?

INTELLIGENCE OFFICER: No. The border with Nepal—the land of Sita.

SENIOR INTELLIGENCE OFFICER: A land of mythical tales and lies.

INTELLIGENCE OFFICER: No. It may not be mythical; it may be historical. Some stories may have been distorted, but the history is ancient. Perhaps those whose own history is not so old find that difficult to digest.

SENIOR INTELLIGENCE OFFICER: Debate, debate. They have received weapons training, and so have you—revolvers, pistols, even Sten guns. You have also been trained in argument, so use that training not only on me, but on them. A terrorist leader has been captured. Without drug money, terrorist operations cannot continue.

INTELLIGENCE OFFICER: But Habibullah always slips away. Arresting Mutalif will never lead us to the drug money.

SENIOR INTELLIGENCE OFFICER: Nothing was found at Habibullah's house.

INTELLIGENCE OFFICER: He must have people inside our ranks, just as we have people inside his.

SENIOR INTELLIGENCE OFFICER: Find out. Question the captured Terrorist Leader. Time is slipping away, slipping away...

ACT TWO

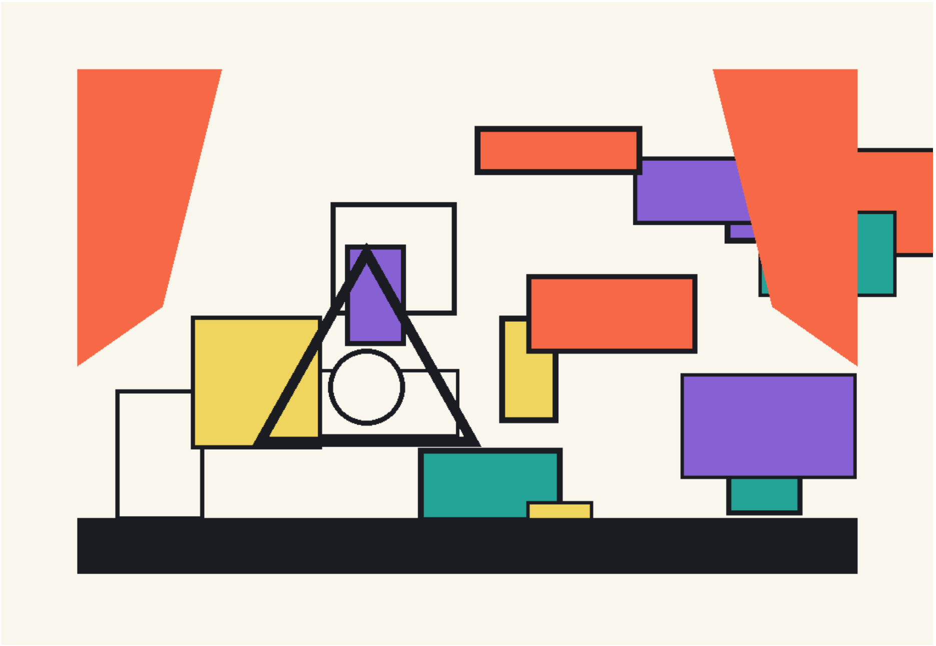

Illustration 3

(The INTELLIGENCE OFFICER sits on one side of the stage and the TERRORIST LEADER on the other, with a table and chair to either side. Nothing bridges the space between them; it resembles an invisible chasm. The light remains split into two zones. As the argument intensifies, their shadows begin to enter each other.)

INTELLIGENCE OFFICER: How do you obtain information about our operations? Who are the people working with Habibullah? How does the drug money move, and to whom? If Habibullah is Mutalif's commander, then who is Habibullah's commander?

TERRORIST LEADER: The information comes from your own office. Not under any Right to Information law—your operational information simply reaches us. You have people among us, and we have people among you. The only difference is that your people hide in files, while ours hide in the jungle.

INTELLIGENCE OFFICER: That much is obvious. But who is he?

TERRORIST LEADER: Yet you do not carry a weapon. Laldenga of Mizoram carried one, while Paresh Barua of Assam never carries one. Your country reached agreements with both. How is an unarmed man less dangerous than an armed one? You are more dangerous to us.

INTELLIGENCE OFFICER: Listen. A student from Mizoram was studying engineering in Muzaffarpur. He told me that Laldenga was a great leader. At the time, Laldenga was underground. The country considered him a terrorist. But he came forward and reached an agreement with the government. He surrendered all his weapons. Both sides honoured the agreement in good faith, and today Mizoram is the only such settlement in the North-East that has succeeded completely. Before his death, Laldenga left his state on the path of peace. That engineering student was right: Laldenga was a great leader. A great leader does not abandon his people in midstream. Like the captain of a sinking ship, he stays aboard until the final moment. When everyone else has left the ship, he sinks with its mast; he does not flee. If Laldenga made an agreement, it was in keeping with the feelings of the people who considered him great. Had he not made peace before his death, perhaps that engineering student could not have remained so proud of him. Even now, whenever he meets me, he says, "You see? Did I not tell you—Laldenga is a great leader?"

TERRORIST LEADER: I have no desire to become a great leader. Suppose we surrender all our weapons, and then the government betrays us?

INTELLIGENCE OFFICER: If Laldenga had thought that way, could peace ever have been possible? And what is the government? Is it what you see on television? No. Many of those people do not even understand who is doing what for the country. Every department is full of patriots—even if they are only ten per cent—and this country rests upon them. The ministers you see on television—what do they understand? You may change; those ministers may change; but the country will not change, and the government will not change. It will honour the agreement. But first you must accept that bullets do not write the future.

TERRORIST LEADER: You think exactly as we do, but you are on the wrong side.

INTELLIGENCE OFFICER: No. You are on the wrong side. You have taken up arms. You sell drugs and make others sell them to buy weapons. How many children's futures have you destroyed?

TERRORIST LEADER: What future are you talking about? Open a factory and he will become its gatekeeper.

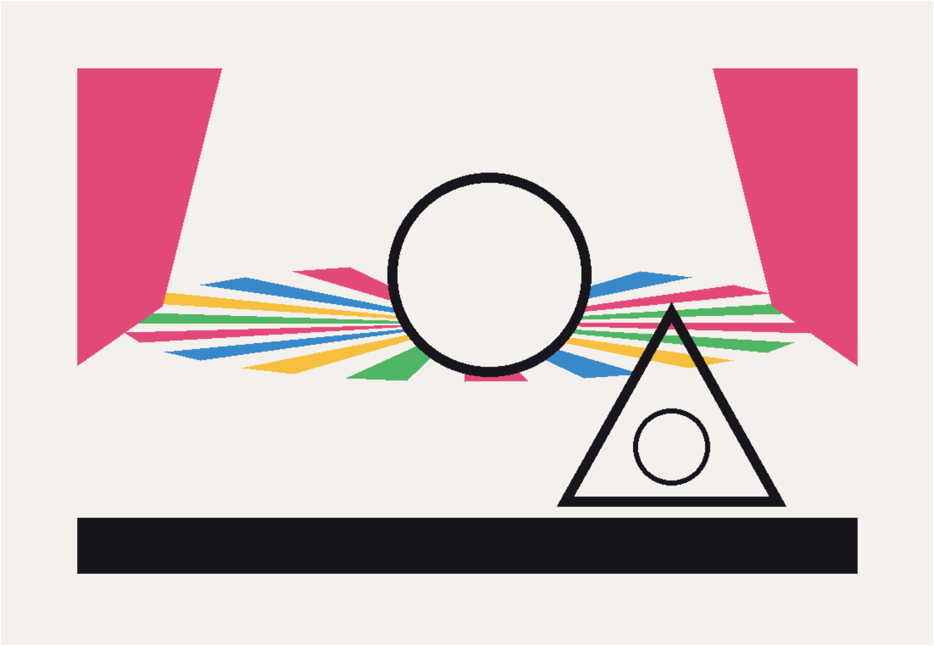

Illustration 4

TERRORIST LEADER: Build a road and he will get a job sweeping it!

INTELLIGENCE OFFICER: Your people hunt for unemployed young men—on the seashore, in the jungle, in the desert. Whoever has no work, no employment, you deceive and pull into the drug trade. Mutalif will come out of prison after twenty years. That is the employment you gave him. Into the empty bowl of unemployment, you pour gunpowder. You are Machanda—all of you.

TERRORIST LEADER: How long will your government keep him in prison?

INTELLIGENCE OFFICER: What do you mean—what do you mean? (In fury, he slams his hand on the table.)

TERRORIST LEADER: (Begins to laugh) So you lose your temper too? In your system, the weak are never heard. And yet you stake your life for that system. What has your system given you? In your system, the people who work for us are never moved out of the city, while you have been posted to the jungle. You have suffered an injustice. And if you cannot stop the injustice done to you, how will you ever deliver justice to us? Even your compassion testifies against you.

INTELLIGENCE OFFICER: That is a delusion in your own mind. No injustice has been done to me. I was chosen for this work. If my posting is in the jungle, then the jungle too is part of the country.

TERRORIST LEADER: Your system is exploiting you. Come over to us. Keep your job there, but while you remain there, work with us. Think about it. Take your time...

INTELLIGENCE OFFICER: (Furious) Have you lost your mind? Every day for a month I have been trying to reason with you, and all the while you have been playing a different game. Is this a joke to you?

TERRORIST LEADER: For a month you have been trying to persuade me, and for a month I too have been trying to persuade you. Mutalif has been released, and for that I thank you.

INTELLIGENCE OFFICER: Why are you thanking me?

TERRORIST LEADER: We know everything. As a reward for what you did, you will be given a high position in the organisation.

INTELLIGENCE OFFICER: A few people in my department may work for you out of fear. That has made you overconfident.

TERRORIST LEADER: They can be bought with fear or money. Even then, I cannot trust them to carry out the work they are given. But your heart is with us. Your compassion for Mutalif proves it. Therefore, the decision has been taken to bring you into the core group of our organisation. Compassion, Officer, is a weapon more dangerous than power.

INTELLIGENCE OFFICER: (White with rage) The decision has been taken? (He seizes the TERRORIST LEADER by the jaw and throat.) The de-ci-sion... has been taken? I have been speaking to a deranged man, then...

TERRORIST LEADER: You too are Machanda—a government Machanda. (Coughing, he frees his throat from the OFFICER'S grip.) But one with principles... (Breathing out)... like us... (Gasping)... one who has to become Machanda... The only difference is that you wear a uniform and we live in the jungle... and that is why the decision has been taken... (He falls from the chair to the floor.)

ACT THREE

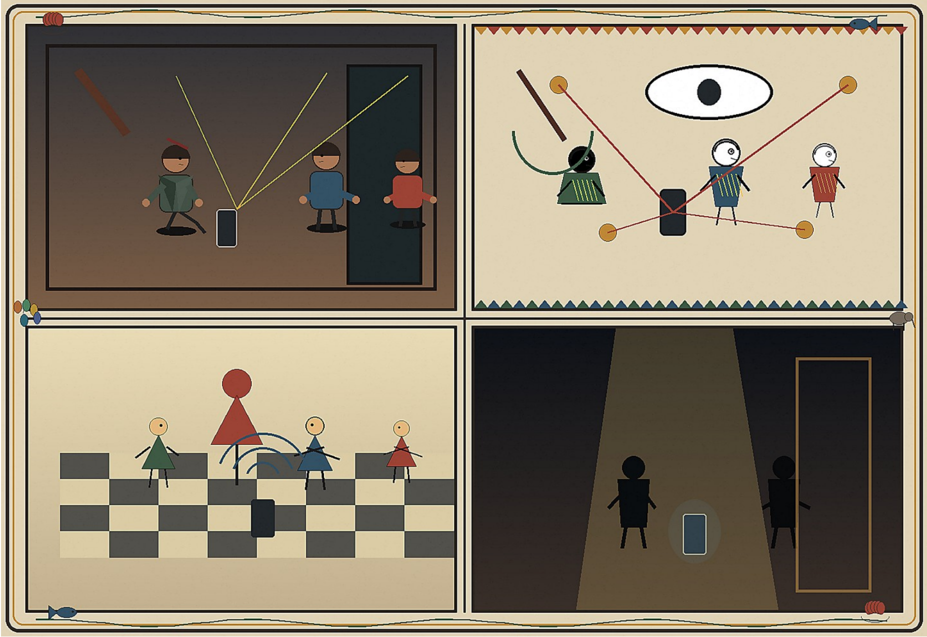

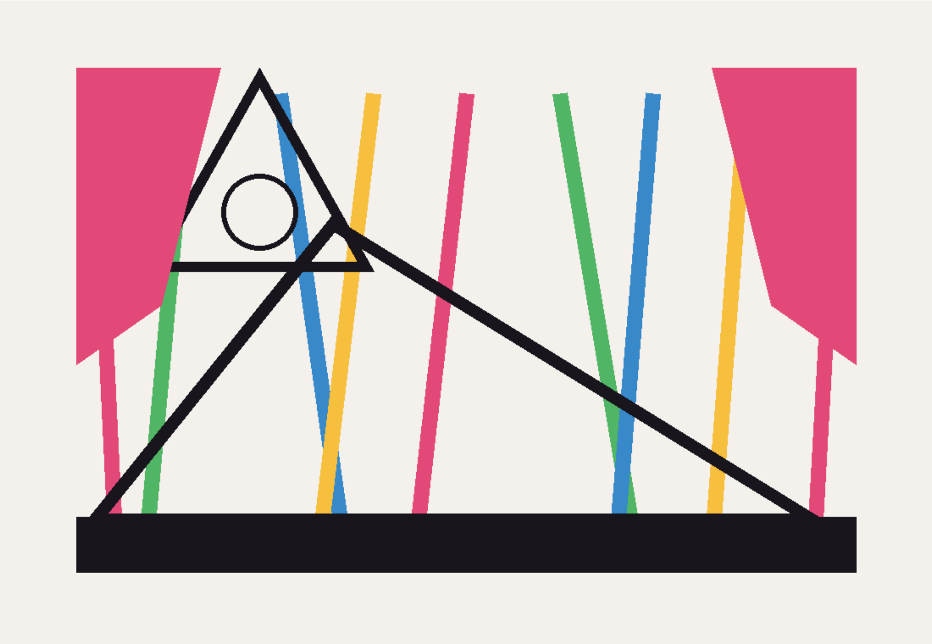

Illustration 5

(A heavy club crashes down on the INTELLIGENCE OFFICER'S head, and he loses consciousness. The men who struck him lift him and carry him to the other side of the stage. He regains consciousness. MUTALIF enters from behind, accompanied by the INTERPRETER. The fear seen in his eyes in Act One has gone; in its place is a strange stillness.)

MUTALIF: (Speaks in gestures.)

INTERPRETER: (Addressing the INTELLIGENCE OFFICER) The court has granted Mutalif bail. Mutalif says that terrorism cannot survive without the drug trade; all the money it needs comes from that trade. He says that after leaving prison he wanted to become someone like you, but the police station, the journalists, unemployment in his village, and the stain attached to his name would not allow it. Mutalif says the system must be repaired, otherwise...

INTELLIGENCE OFFICER: (To MUTALIF) Then are you the principal player?

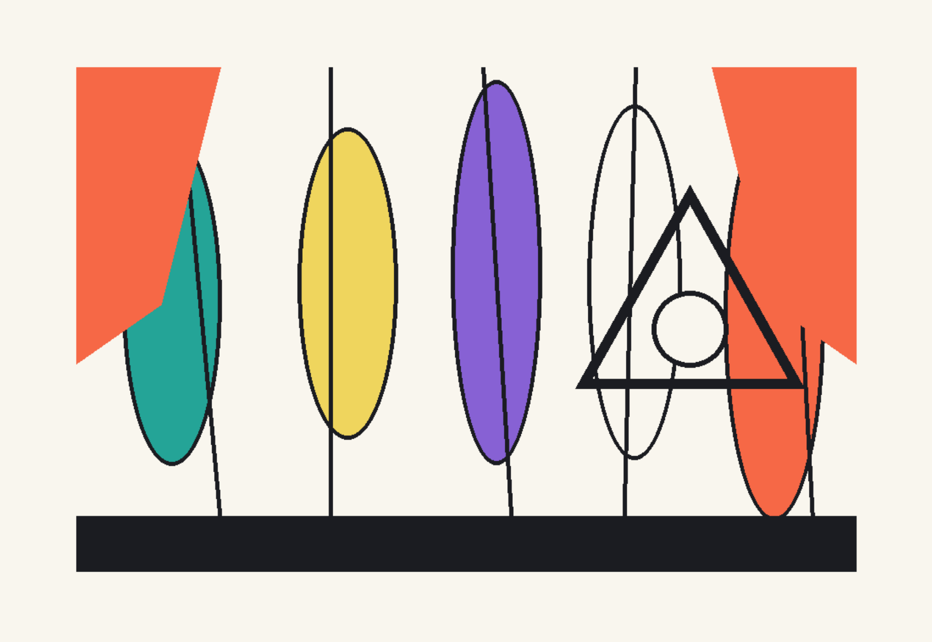

Illustration 6

INTELLIGENCE OFFICER: I thought you had been framed.

MUTALIF: (Speaks in gestures.)

INTERPRETER: (To the INTELLIGENCE OFFICER) What difference does it make? What is the difference between a player who was trapped and the principal player? Look closely: in organisations like this, eighty per cent of the people have been trapped. But they have been trapped so deeply that they become more dangerous than the principal players. Once society refuses to believe that a person is innocent, it takes very little time to turn him into a criminal. Now you must do whatever Mutalif tells you.

(A heavy club strikes the INTELLIGENCE OFFICER on the head, and he loses consciousness. Everyone leaves him and exits. He regains consciousness again and moves to the other side of the stage. The POLICE enter. At a local police station, the INTELLIGENCE OFFICER uses a police mobile phone to call in his identification code. His voice trembles, but the code is clear. After a while, his superior calls him. He takes the call and walks behind the curtain. The curtain falls.)

ACT FOUR

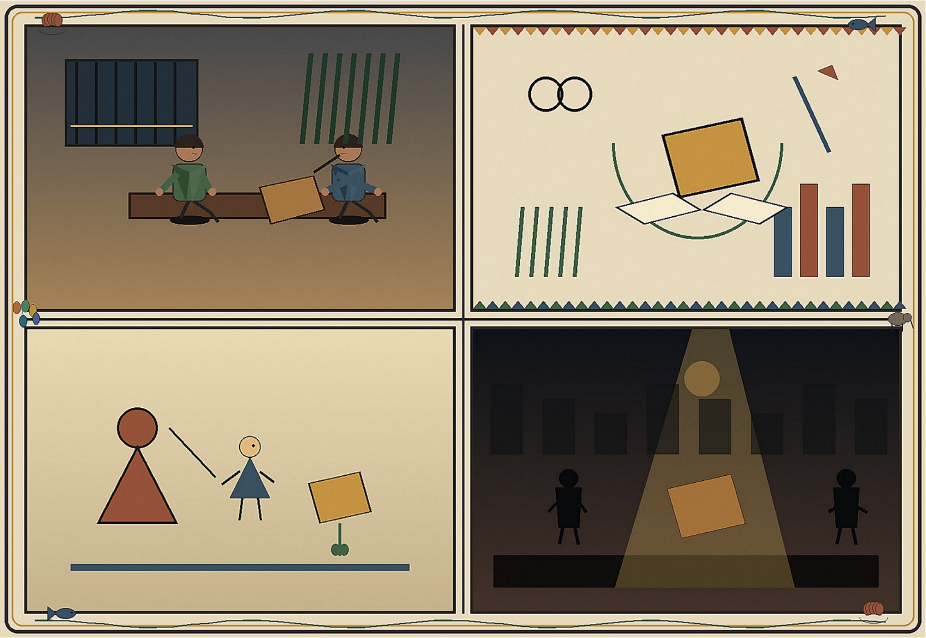

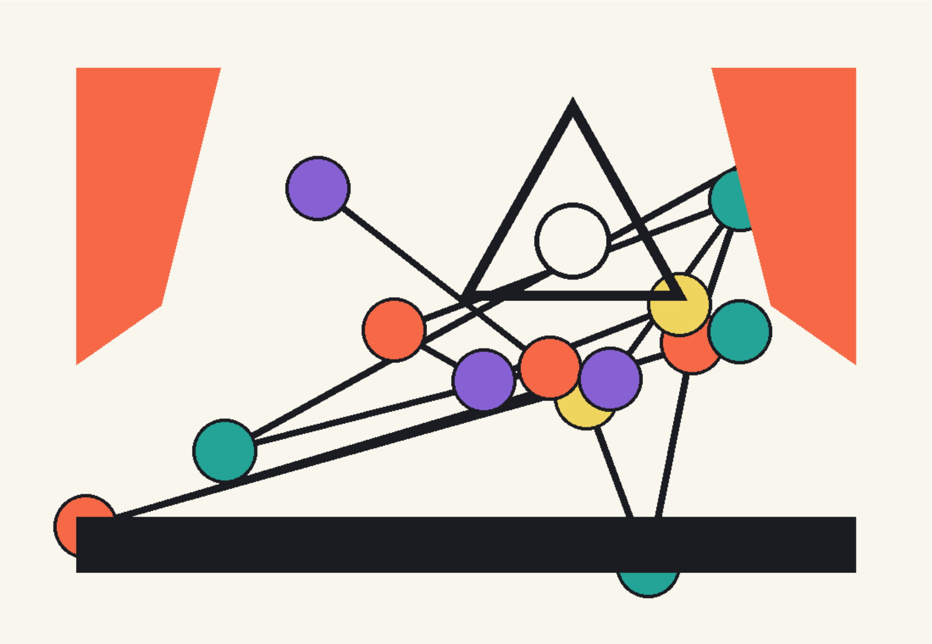

Illustration 7

(The INTELLIGENCE OFFICER and the SENIOR INTELLIGENCE OFFICER are in conversation.)

INTELLIGENCE OFFICER: My first journey has proved futile.

SENIOR INTELLIGENCE OFFICER: Mutalif defeated you. By sparing your life, he defeated you. The defeat of an unarmed soldier—this is a method they are learning. But only by recognising defeat does the next journey begin.

INTELLIGENCE OFFICER: I am beginning to remember something. Mutalif was speaking to the Interpreter, and the Interpreter was speaking to me.

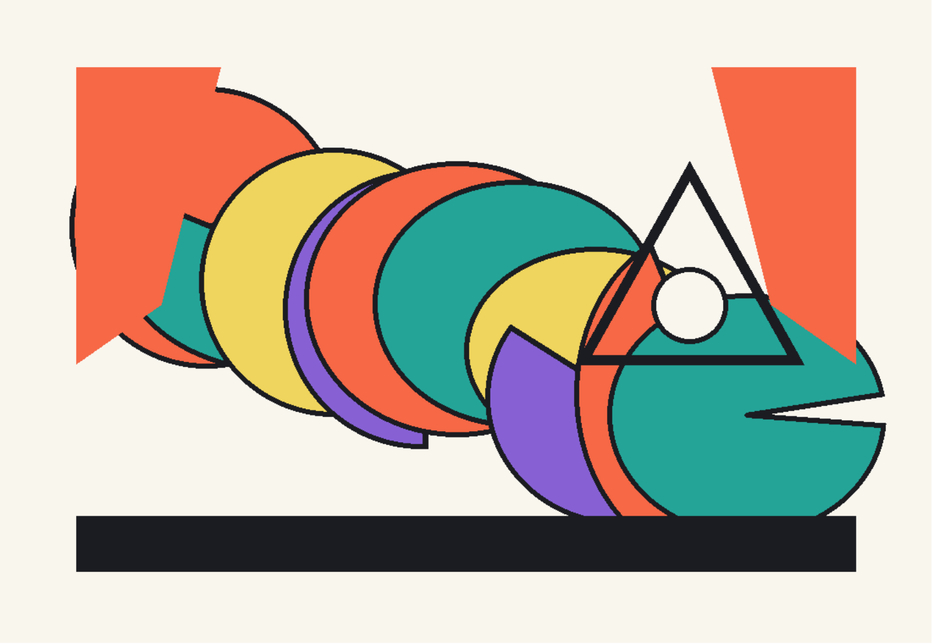

Illustration 8

INTELLIGENCE OFFICER: It seemed as though Mutalif was saying that this journey had not been wasted; since I write stories, perhaps this journey had given me the plot of a story. It was as though Mutalif was saying that he would be the protagonist of that story. But becoming the protagonist and surviving are two different things. If I write the story, I will also write that sometimes a packet of food gives testimony greater than a court can.

(The curtain falls.)

(Final sound: the faint clink of handcuffs; a distant city soundscape blending the call to prayer with temple bells; and the Interpreter's unfinished voice. In the darkness, a single light remains on the empty food packet.)

END OF PLAY

VIDEHA

Videha: The First Maithili Fortnightly E-Journal | ISSN 2229-547X | www.videha.co.in

संकर्षण

दंभ, झूठ-सत्कार आ आत्मबोधक पाँच-कल्लोलक मैथिली नाटक

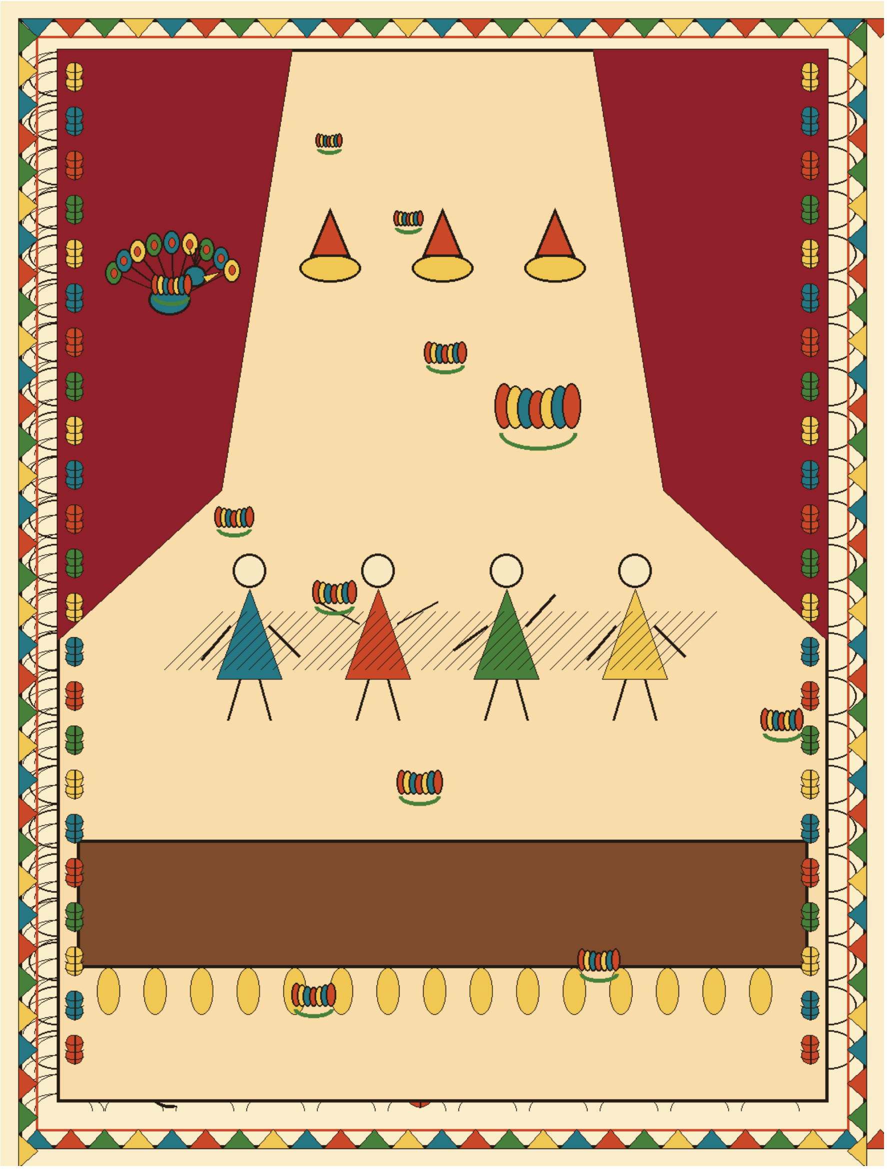

गजेन्द्र ठाकुर

सम्पादक, विदेह: प्रथम मैथिली पाक्षिक ई-पत्रिका (since 2000)

ISSN 2229-547X

उपक्रम

संकर्षण — अभिनेता आ खलनायक दुनू। देहपर कारी, लिकलिक करैत भूत सन बनौटी छवि; मुदा असल अन्हार ओकर दंभ, डर, आ झूठक चमकमे अछि। ई नाटक ओकर गामसँ दिल्ली धरिक यात्राक थिक — जतय हर कदमपर ओ अपन झूठकेँ सत्कार, अपन चोटकेँ प्रतिष्ठा, आ अपन डरकेँ बुधियारी कहैत रहला। मुदा यात्राक अन्तमे एकटा जुत्ता — दिल्लीक चोर-बजारसँ ठकाओल एकटा जुत्ता — ओकरा वैह आइना देखा दैत अछि, जे भरि जिनगी ओ आनकेँ देखाबैत रहला।

पहिल कल्लोल : प्रतिष्ठाक बीआ

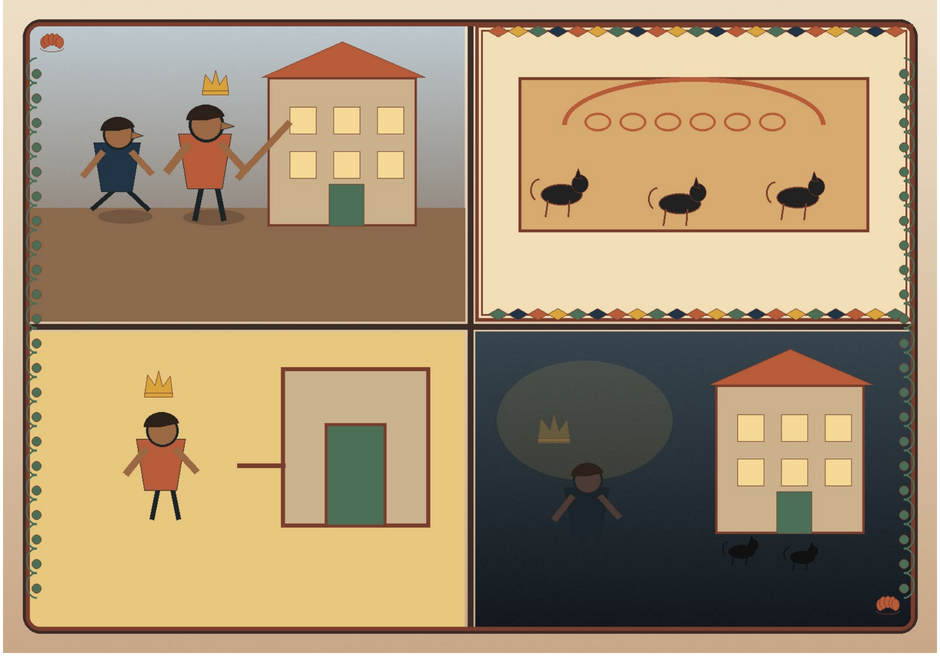

अंक १ : कलक्टरक बहन्ना

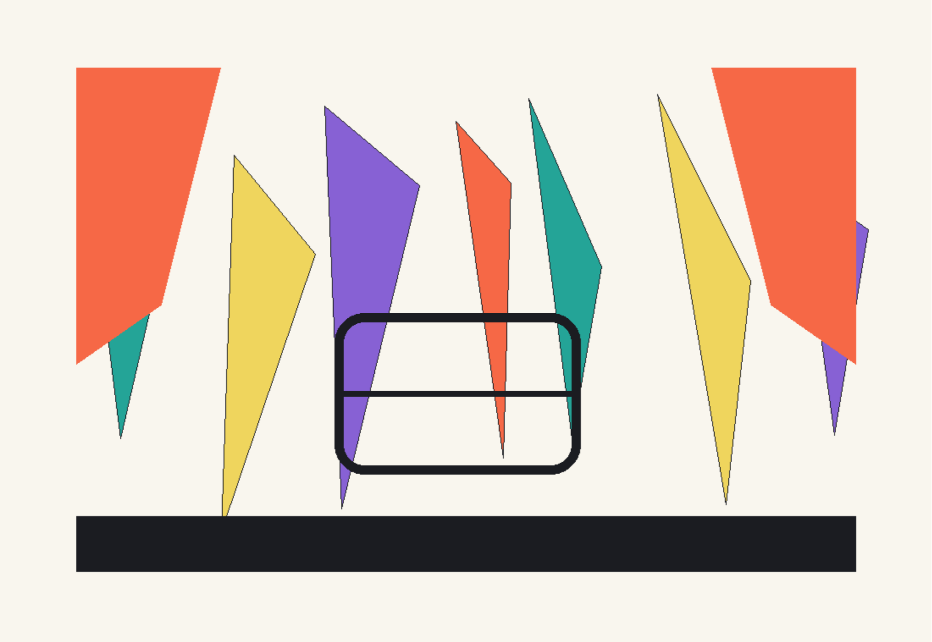

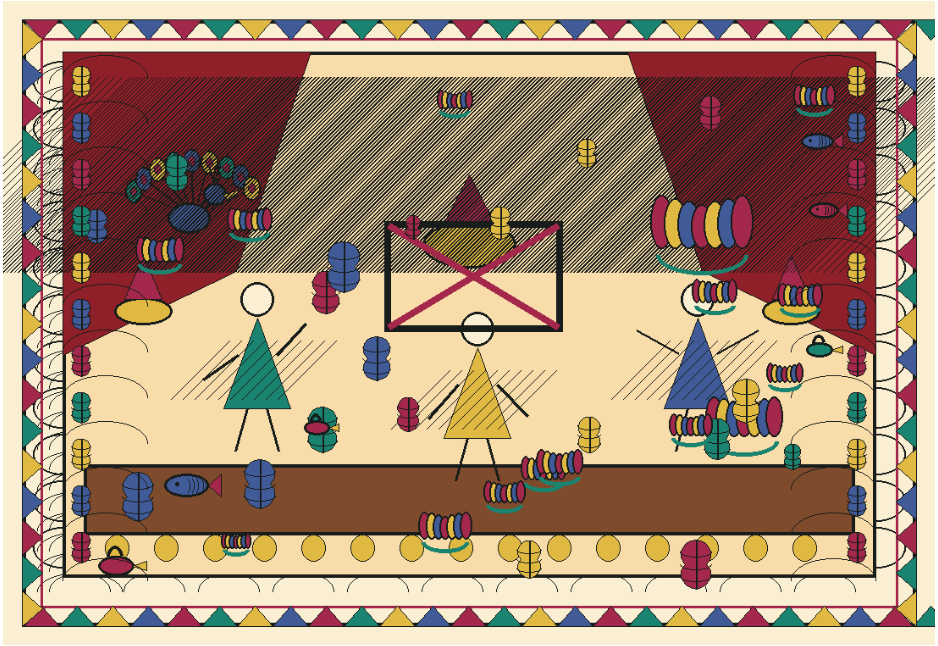

चित्र 1

गाम आ ओकर लगक जिला कार्यालय — जतय गामक लोकक आँखिमे दुनियाँक सभसँ पैघ हाकिम कलक्टर बैसैत छथि। एहि दुनूक बीचक दूरी — भूगोलक नहि, कल्पनाक — एहि नाटकक पहिल पात्र थिक।

भाष्कर अपन दलानपर बैसल छथि आकि ओम्हरसँ संकर्षण अबैत छथि।

संकर्षण: भाष्कर भाइ, सुनलहुँ कोनो काज अटकल अछि।

भाष्कर: हँ भाइ। कलक्टर ऑफिसमे एकटा काज ओझरायल अछि।

संकर्षण: कोनो काज पड़लापर हमरासँ कहब। कलक्टरक ओहिठाम भोर-साँझक बैसारी होइत अछि हमर। घंटाक-घंटा बैसल रहैत छी, आबए लगैत छी तँ रोकि कऽ फेर बैसा लैत अछि, दोसर-दोसर गप सभ शुरू कए दैत अछि। (कनेक रुकि) ई गामक लोक बुझत तखन ने, केकरा कतऽ धरि पहुँच छैक।

भाष्कर: ठीक छैक भाइ जी। कोनो जरूरी पड़त तँ कहब। नाम की छन्हि हुनकर सेहो नहि बुझल अछि हमरा।

संकर्षण: बड्ड नमगर नाम छन्हि, भा.प्र.से. प्रशांत। आब भा.प्र.से. केर पूर्ण रूप हुनकासँ के पुछतन्हि, से प्रशांते कहैत छन्हि।

भाष्कर: भारतीय प्रशासनिक सेवाक संक्षिप्त रूप छैक भा.प्र.से., ई हुनकर नामक अंग नहि हेतन्हि।

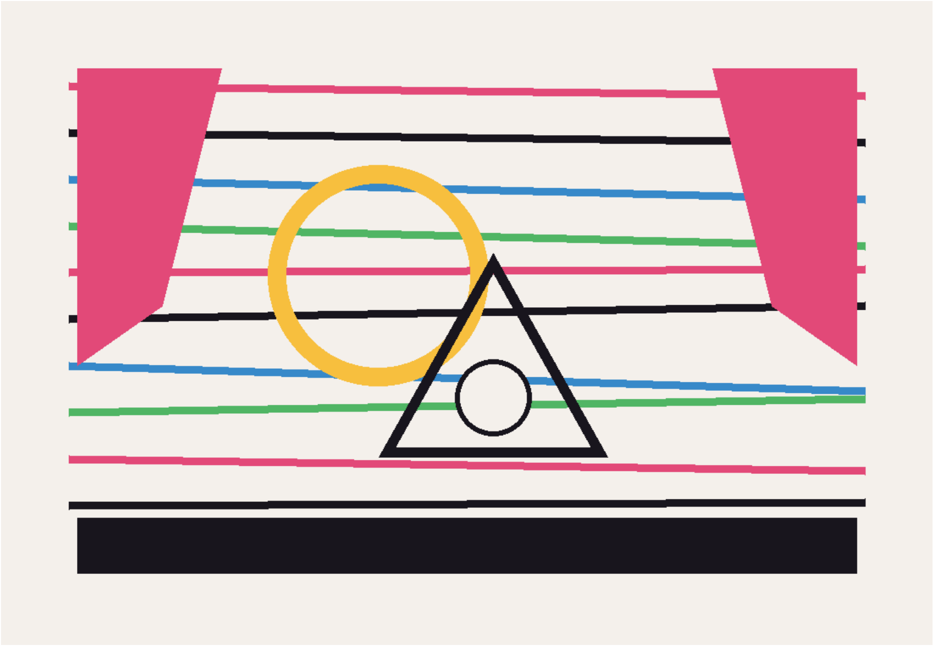

चित्र 2

संकर्षण: अच्छा तँ फेर सैह होयतैक। ताहि द्वारे नेम-प्लेट पर नामक नीचाँमे ई लिखल रहैत छैक, भा.प्र.से.।

भाष्कर: ठीक छैक भाइ जी। कोनो जरूरी पड़त तँ अहाँकेँ कहब। (धीमे) मदद मागब कि कहानी सुनब, से पहिने तौलि लेब।

संकर्षण चलि जाइत छथि आ भाष्कर सोचए लगैत छथि जे परुकाँ जखन एकटा आन काज संकर्षणसँ पड़ल रहए तँ ओ की कहने रहथि। भाष्कर सोचिते छथि आकि कनेक दूरमे पछुलका गपक वर्णनक लेल दृश्य पाछाँ मुड़ि जाइत अछि।

भाष्कर (मोनहि मोन): ईहो कमाल छथि परुकाँ जे काज पड़ल रहए तँ बजैत रहथि जे...

संकर्षण: परुकाँ साल किएक नहि कहलहुँ, ककर-ककर काज नहि करएलहुँ। मुदा एहि बेर तँ कोनो जोगारे नहि अछि। कहियो कोनो काज नहि कहने छलहुँ आ आइ कहलहुँ तँ हमरासँ नहि भऽ पाबि रहल अछि। आ से जानि कचोट भऽ रहल अछि।

संकर्षण फेर चलि जाइत छथि, भाष्कर सेहो जाइत छथि मुदा तखने संकर्षण फेर अबैत छथि।

संकर्षण: सत्यार्थीक बाल-बच्चा सभ बड़ टेढ़। कहियो घुरि कए नहि आयल छल भैंट करए। आ आइ काज पड़ल छैक तखन आयल अछि।

संकर्षण फेर चलि जाइत छथि। ई आवाजाही, ई बेर-बेर आबि कऽ नव-नव बहन्ना गढ़ब — संकर्षणक चरित्रक पहिल पहचान थिक। ओकर हर आगमन एकटा नव कल्पित प्रतिष्ठा लऽ कऽ अबैत अछि, आ हर प्रस्थान ओकरा किछु आर पैघ बना कऽ छोड़ि जाइत अछि — अपने आँखिमे।

अंक २ : बंगाली बाबूक सीख आ कलक्टरक चैम्बर

चित्र 3

भाष्करक मोनमे एकटा पुरान गप उठैत अछि — बाबूजीक संगी एक दिन वात्सल्यसँ एक बेर कोनो बंगाली बाबूकें, भाष्करक सोँझामे एक गोट बड़ नीक गप कहने छलाह।

भाष्करक बाबूजीक संगी: (कोनो बंगाली बाबूकेँ भाष्करकेँ देखबैत) देखू दादा। ई छथि भाष्कर। हमर अत्यंत प्रिय मित्र सत्यार्थीक बेटा।

बंगाली बाबू: हुनकर बेटा तँ बड्ड छोट छल।

भाष्करक बाबूजीक संगी: यैह छथि। अहाँ बड्ड दिन पहिने देखने छलियन्हि तखन छोट छलाह, आब पैघ भए गेल छथि। कहैत छलहुँ जे हिनकर पिता हिनका लेल किछु नहि छोड़ि गेलाह। मुदा हमर पिताक मृत्यु १९६० ई. मे भेल छल आ हमरा लेल ओ नगरमे १२ कट्ठा जमीन, एकटा घर आ एकटा स्कूटर ओहि जमानामे छोड़ि गेल छलाह। आ आब ज्योँ ई बच्चा ककरो लग कोनो काजक लेल जायत, तँ एकरा उत्तर भेटतैक जे परुकाँ किएक नञि अएलहुँ आ परोछमे कहतन्हि, जे काज पड़लन्हि तखन आयल छथि। लोक सहायता कम दैए, हिसाब बेसी माँगैए।

बंगाली बाबू: ई तँ गलत बात।

चित्र 4

भाष्करक बाबूजीक संगी: मुदा एकरा जखन समस्या पड़लैक तखने अहाँकेँ पुछबाक चाही छल, मुदा से तँ अहाँ नहि पुछलियन्हि। आ अहाँक लग आयल अछि, तखन अहाँ उल्टा गप करैत छी। आ ज्योँ ई बच्चा सहायताक लेल नहि जायत आ अपन काज स्वयं कए लेत आ ओहि श्रीमानकेँ से सुनबामे आबि जएतन्हि, तँ उपकरि कए अओताह आ पुछथिन्ह जे काज भऽ गेल आकि नहि। कहलहुँ किएक नहि। आ तखन ई बच्चा कहत जे काज भऽ गेल, भगवानक दया रहल। से दादा क्यो कोनो काजक लेल आबए तँ बुझू जे कुमोनसँ आयल अछि आ समस्या भेले उत्तर आयल अछि आ तँ ओकर सहायता करू।

ई सीख — कि सहायता ओतय बेसी जरूरी अछि जतय मनुक्ख सोझे नहि माँगि सकैत अछि — भाष्करक मोनमे बैसल रहि जाइत अछि, आ आगाँ चलि कऽ ओ एहि सीखकेँ अपन जीवनमे उतारत, संकर्षणक विपरीत।

अब दृश्य बदलैत अछि — कलक्टरक ऑफिस, कलक्टरक चेम्बर। बाहर स्टेनो बैसल अछि, फाइलक पन्ना, घंटी, आ टाइपराइटरक टक-टक अबाज। भाष्कर कलक्टरसँ किछु गप कऽ रहल छथि — कोनो साँच काज, बिनु दिखावाक। भाष्करक पीठ दर्शक दिस, कलक्टरक मुँह देखाइ पड़ैत अछि। गपशप भइए रहल छन्हि आकि संकर्षण धरधड़ाइत चैम्बरमे अबैत छथि — बिनु बजाओने, बिनु अनुमतिक, अपन कल्पित निकटताक भरोसे।

कलक्टर: (तमसा कए, टेबुलपर घंटी बजबैत) बाहर जाऊ। देखैत नहि छी गप भऽ रहल अछि।

संकर्षण बाहर रूमसँ निकलि स्टेनोक कक्षमे बैसि रहलाह — चुपचाप, अपमानसँ सकुचाइत। किछु काल बाद जखन भाष्कर बाहर निकललाह तँ स्टेनोक रूमसँ संकर्षण सेहो बहराइत छलाह। एहि बेर संकर्षणक पीठ भाष्करक सोझाँ छलन्हि, तेँ दुनू गोटेमे सोझाँ-सोँझी नहि भऽ सकल — मुदा जे गाममे एहि दृश्यक चर्च सुनत, ओ त' यैह बुझत जे संकर्षण कलक्टरक खास छथि।

अंक ३ : तीन टा कारी कुकुरक खिस्सा

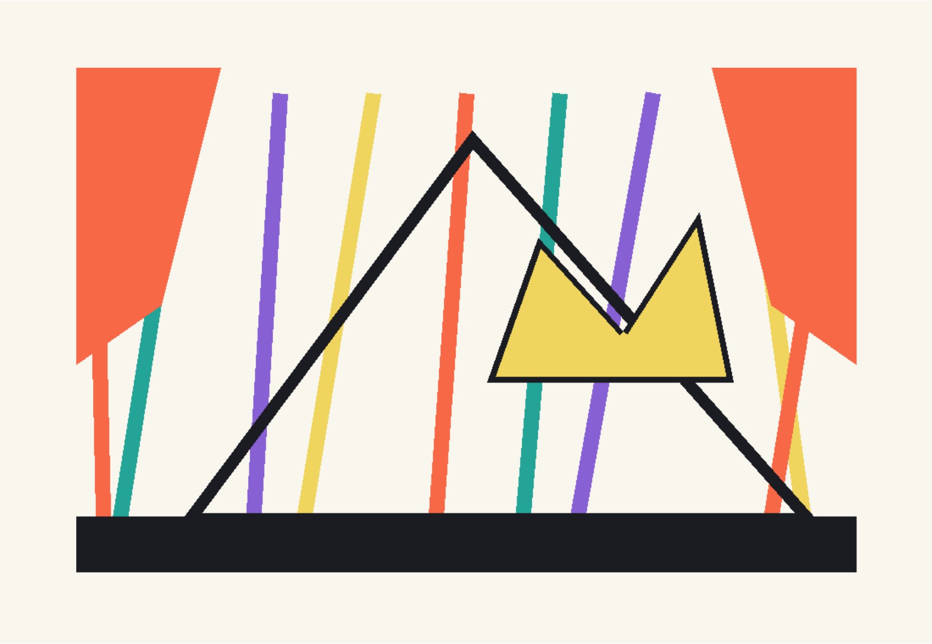

चित्र 5

गामपर दुनू गोटे पहुँचैत देखल जाइत छथि।

भाष्कर: कहू संकर्षण। कतएसँ आबि रहल छी।

संकर्षण: ओह। की कहू कलक्टर साहेब रोकि लेलन्हि। ओतहि देरी भऽ गेल। (मुँह बचबैत) कखनो-कखनो पैघ लोकक आग्रह सेहो झेलए पड़ै छै।

भाष्कर: हुनकर स्टेनोसँ सेहो भेँट भेल रहय?

संकर्षण: नहि। ओना बहरएबाक रस्ता स्टेनोक प्रकोष्ठेसँ छैक। मुदा ओ सभ तँ डरे सर्द रहैत अछि।

भाष्करकेँ आब नहि रहल गेलन्हि, आ ओ एकटा खिस्सा सुनबए लगलाह संकर्षणकेँ — तीन टा कारी कुकुरक खिस्सा, एके रङ-रूपक।

भाष्कर: संकर्षण। सुनू, एकटा खिस्सा सुनबैत छी। तीन टा कारी कुकुर छल। एके रङ-रूपक। ओकरा सभकेँ मोन भेलैक जे गरमा-गरम जिलेबी मधुरक दोकान जा कए खाइ। से बेरा-बेरी ओतए जएबाक प्रक्रम शुरू भऽ गेल। ई खिस्सा सत्कारक नहि, चोटकेँ सत्कार कहबाक रोगक अछि।

पहिल कुकुर मधुरक दोकानपर पहुँचल। मालिक अपन कर्मचारी संगे झाँझसँ जिलेबी छानि रहल छथि। कुकुरकेँ दोकानमे पैसैत देखि मालिक बटखरा फेंकि कए ओकरा मारलक। पहिल कुकुर-बेचाराकेँ बड़ चोट लगलैक। मुदा जखन घुरि कए अपन दुनू संगी लग पहुँचल, त' पुछला पर सुनू की कहलक —

दोसर कुकुर: की भाइ केहन रहल।

तेसर कुकुर: बड्ड अगराइत चलैत आबि रहल छी।

पहिल कुकुर: (पीठपर बटखराक चोटपर हाथ दैत) एह की कहू। बड़ सत्कार भेल। बटखरासँ जोखि कए जिलेबी खएबाक लेल भेटल। बटखरासँ जोखैत गेल, दैत गेल, पैघ बटखरा, छोट बटखरा, सभसँ जोखि-जोखि दैत गेल।

दोसर कुकुर: तखन हमहीं किएक पाछाँ रहब सत्कार कराबएमे।

दोसर कुकुर अपनाकेँ रोकि नहि सकल आ अपन सतकार करएबाक हेतु पहुँचि गेल मधुरक दोकान पर। रूप-रङ एके रहए ओकरा सभक, तँ मधुरक दोकानक मालिककेँ भेलैक जे वैह कुकुर फेरसँ आबि गेल अछि। ओ पानि गरम कए रहल छल।

मधुरक दोकानक मालिक: (भरि टोकना धीपल पानि ओहि कुकुरक देह पर फेकैत) देखू ई फेर आबि गेल। पछिला बेर बटखारा फेंकि कए मारलियैक तकर बाद जे आएल तँ यैह टा ने उपाए बाँचल रहए।

बेचारा कुकुर जान बचा कए भागल। घुरला पर तेसर कुकुर पुछलकैक —

तेसर कुकुर: केहन सत्कार भेल।

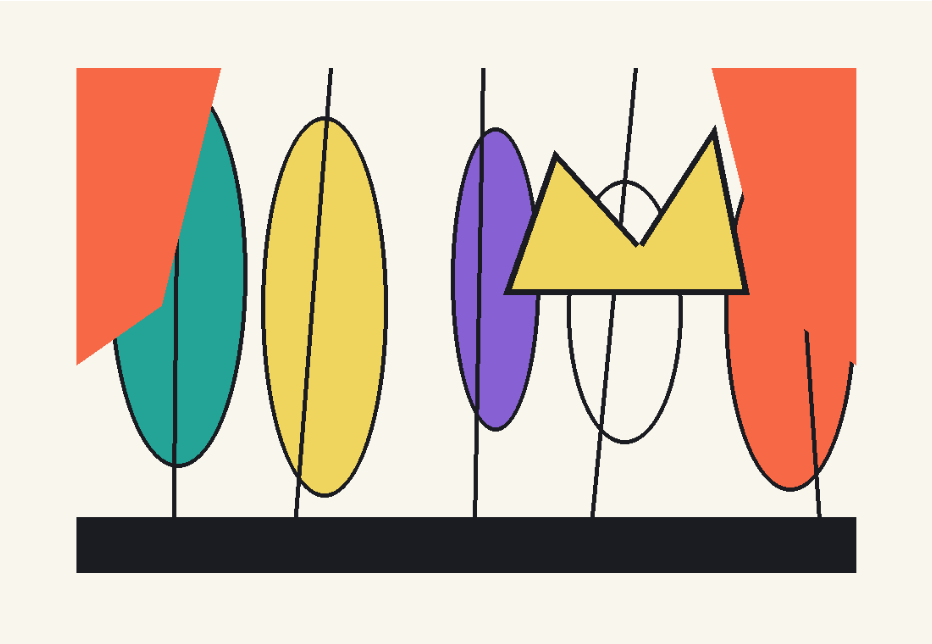

चित्र 6

दोसर कुकुर: की कहू। (पीठपर गरम पानिसँ जरल स्थानकेँ छुबैत) गरमा-गरम जिलेबी छानि कए खुएलक। बड़ नीक लोक अछि मधुरक दोकानक मालिक। छनैत गेल आ गरमागरम खुआबैत गेल।

तेसर कुकुरक मोन लसफसा जाइत छैक। ओ निकलैत अछि अपन सत्कार कराबए लेल। ठीक ओही समय दोकानपर हल्ला भऽ रहल छैक जे शिवलिंग दूध पीबि रहल छथि — सोर भऽ रहल अछि।

मधुरक दोकानक मालिकक कर्मचारी लुत्ती झा: महादेव भगवान दूध पीबि रहल छथि, चलू ने कनेक अपनो सभ दूध पिया आबी।

मालिक आ लुत्ती झा मन्दिर दिस बिदा भेला, आ ठीक ओही क्षण तेसर कुकुर दोकानमे पैसैत अछि आकि दुनू गोटे सटर खसा दैत छैक। बेचारा बन्न भऽ जाइत अछि। मन्दिरमे मालिक दूध चढ़ा कए देखैत छथि — सभटा दूध नाली बाटे बाहर निकलि जाइत छन्हि।

मधुरक दोकानक मालिक: (स्वतः सोचैत) भगवान सभक हाथे दूध पीलन्हि मुदा हम जे सभकेँ कहबैक जे हमरा हाथे नहि पीलन्हि तँ सभ कहत जे हम पापी छी तेँ भगवान हमरा हाथे दूध नहि पीलन्हि।

मधुरक दोकानक मालिक: हँ हौ लुत्ती झा। एतेक प्रतिष्ठित जीवन बिता रहल छी से महादेव सभक हाथे दूध पीलन्हि तँ हमरो हाथे पीलन्हि।

दुनू गोटे दोकान खोलैत छथि तँ फेरसँ कारी कुकुर देखैत छथि। मालिकक सौँसे देह पित्त लहरि गेलन्हि।

मधुरक दोकानक मालिक: लुत्ती झा। भागए नहि पाबए ई। दू बेरमे मोन नहि भरलैक। रस्सा ला, लाठी लाबह।

दुनू गोटे रस्सामे बान्हि कऽ कुकुरकेँ लाठीसँ पुष्ट पिटान पिटैत छथि। फेर बेचारा कोहुना बन्हन छोड़ा कऽ लँगड़ाइत गाम दिस पड़ाइत अछि, जतय पहिल आ दोसर कुकुर प्रतीक्षामे छथि।

पहिल कुकुर: अहाँकेँ तँ बड्ड काल लागि गेल, की की सत्कार भेल।

तेसर कुकुर: बड्ड सत्कार भेल। आबैये नहि दैत रहथि। कहैत रहथि जे आर खाऊ, आर खाऊ। कोहुना कऽ जान बचा कऽ आएल छी जे आब नहि खाएल जएत, पेट फाटि जएत। (लङराइत) देखैत नहि छी जे चलियो नहि भऽ रहल अछि।

तीनू कुकुर अपन-अपन घाव लऽ चलि जाइत छथि, आ भाष्कर आ संकर्षण फेर सोझाँ छथि।

भाष्कर: सुनलियैक संकर्षण ई खिस्सा। से जखन कलक्टर अहांकेँ दबाड़ि रहल छल तखन ओकरा सोझाँ हमही बैसल छलहुँ। हमर पीठ अहाँक सोझाँ छल तेँ अहाँ हमरा नहि देखि सकलहुँ। फेर अहाँ स्टेनोक प्रकोष्ठमे किछु काल बैसलहुँ आ जखन ओतएसँ बाहर निकललहुँ तँ लोक सभकेँ भेल होएतैक, जे अहाँ कलक्टरक खास छी। मुदा चोटकेँ सत्कार कहबासँ चोट भरै नहि छैक।

संकर्षण: (लज्जा नुकबैत) भाष्कर, जे देखलहुँ से गाममे मत कहब। लोक सत्कार सुनैत अछि, अपमान नहि।

संकर्षण मुँह गोतने बैसल रहलाह।

भाष्कर: आउ, मुरहीक भुज्जा बनबैत छी।

दुनू गोटे भुज्जा फाँकय लगैत छथि — मित्रताक ई क्षण, बिनु कोनो दिखावाक, नाटकक पहिल कल्लोलकेँ शान्तिसँ बन्न करैत अछि।

दोसर कल्लोल : झूठ जड़ि पकड़ैत अछि

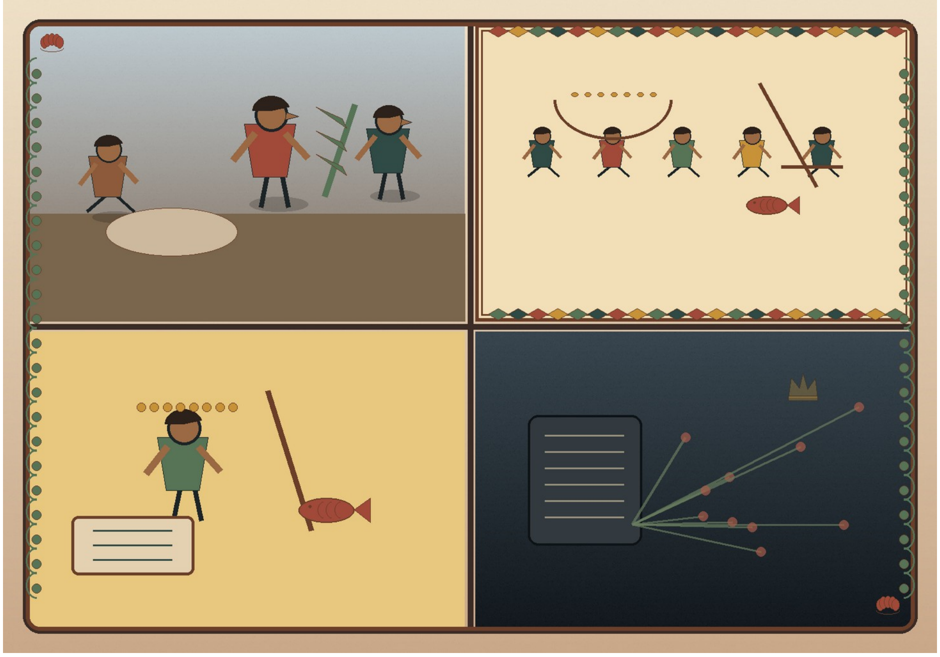

अंक १ : पसीझक काँटक दंभ

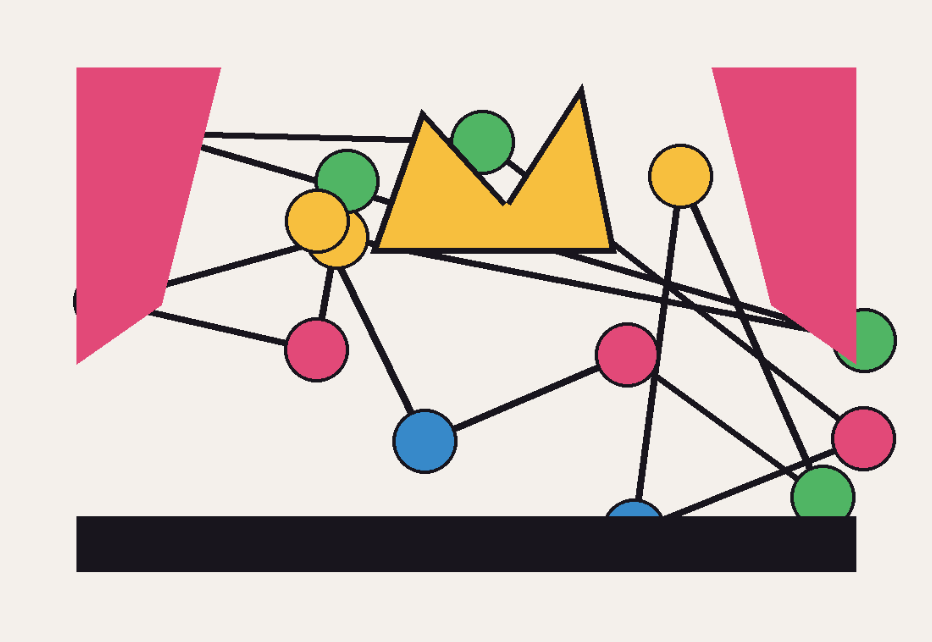

चित्र 7

पुरनका गामक दृश्य। जयराम दौगल-दौगल अबैत छथि — पाछूसँ बच्चाक कराह, स्त्री सभक घबरायल स्वर, आ दूरसँ कुकुरक भोंक सुनाइ दैत अछि। संकर्षण सोझाँ छथि।

जयराम: संकर्षण। नीक भेल भेटि गेलहुँ। नित्या काका लग जाइत रही मुदा ओतए जाइत-जाइत देरी भऽ जएत। ननकिड़बाक मोन बड्ड खराप छैक। बोखार, रद्द-दस्त सभ एक्के-बेर शुरू भऽ गेल छैक।

संकर्षण: धुर बताह, पसीझक काँटक रस पिआ ने दहीं। हम जाइत छी महींस चरेबाक लेल डीह दिशि। कोनो चिन्ता जुनि करब। जुल्मी दबाइ छैक। एक्के चोटमे सभ बेमारी खतम। (दंभसँ) वैद्य सभ किताब देखैए, हम लक्षण देखिते बुझि जाइ छी।

संकर्षण एक दिस आ जयराम दोसर दिस जाइत छथि। फेर नित्या काका एक दिससँ आ जयराम दोसर दिससँ अबैत छथि।

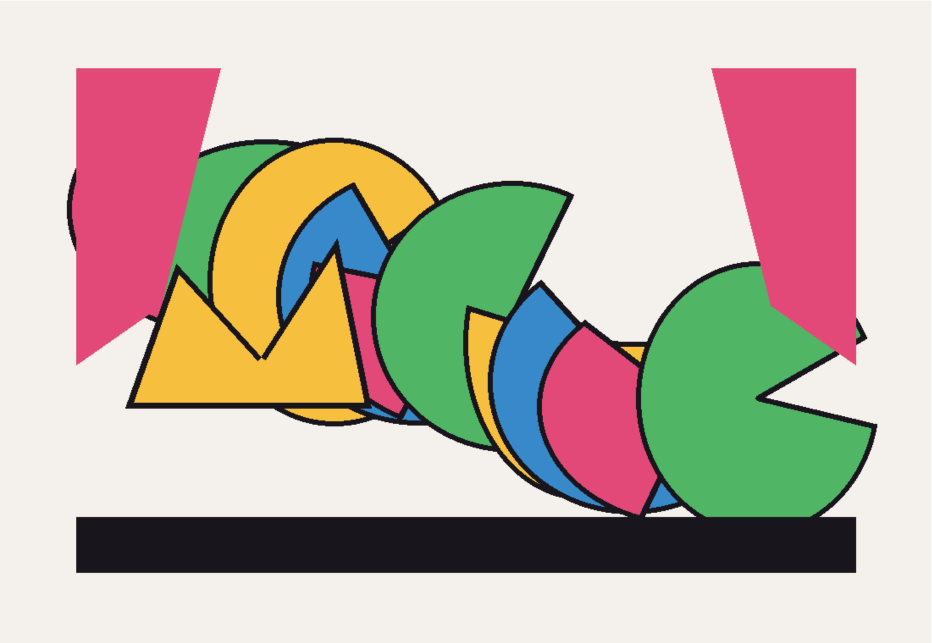

चित्र 8

नित्या काका: की जयराम? कलम दिससँ की आनि रहल छी।

जयराम: की कहू काका। ननकिड़बाकेँ बोखार, रद्द-दस्त सभ एक्के-बेर शुरू भऽ गेल छैक। संकर्षण कहलन्हि जे पसीझक काँटक रस पिआ देबा लेल सभ बेमारी खतम भऽ जएतैक। सैह आनए लेल गेल रही।

नित्या कक्का: ई संकर्षण बड़ बुरि अछि। परुकाँ पसीझक काँटक रस पोखरिमे दऽ कए सभटा माँछ मारि देने रहए ई। ई जहर बच्चाकेँ पिएबन्हि तँ मोन ठीक नहि होएतन्हि, सोझे प्राण निकलि जयतन्हि। जे नहि बुझै, ओकर चुप रहबो दवा होइत छैक। चलह दबाइ-दोकान दिस, दबाइ दिअबैत छिअह।

दुनू गोटे जाइत छथि — बुझबार आ धैर्यक संग, संकर्षणक अन्धदंभक विपरीत।

अंक २ : पंचैतीक दण्ड

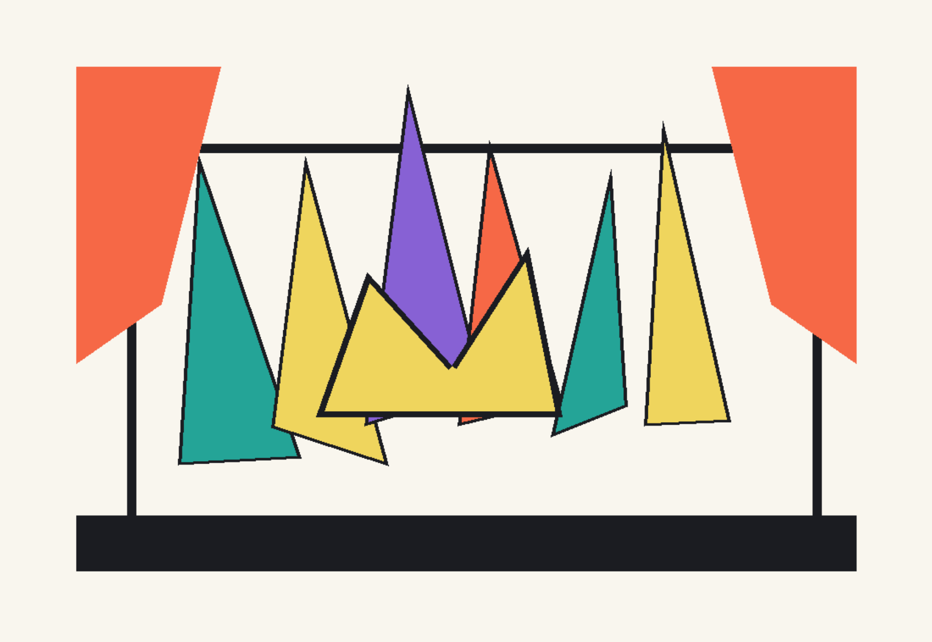

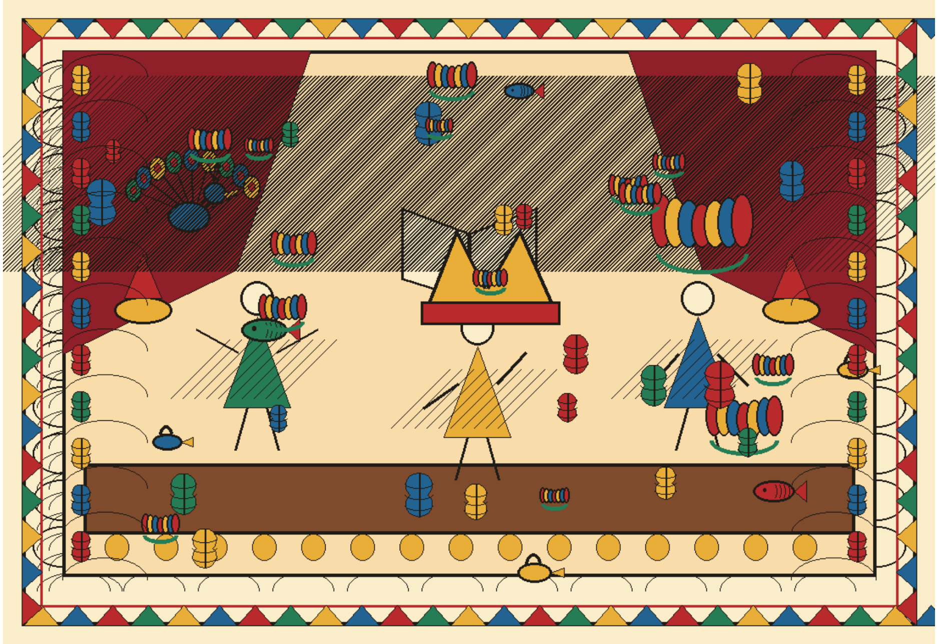

चित्र 9

डीहपर महींसक पीठपर संकर्षण बैसल देखबामे अबैत छथि। दोसर दिससँ एकटा दोसर महिसबार गामपरसँ आबिये रहल छथि।

संकर्षण: की भाइ, गामेपरसँ आबि रहल छी।

महिसबार: हँ भाइ।

संकर्षण: जयरामक टोलसँ कन्नारोहटो सुनबामे आएल रहए।

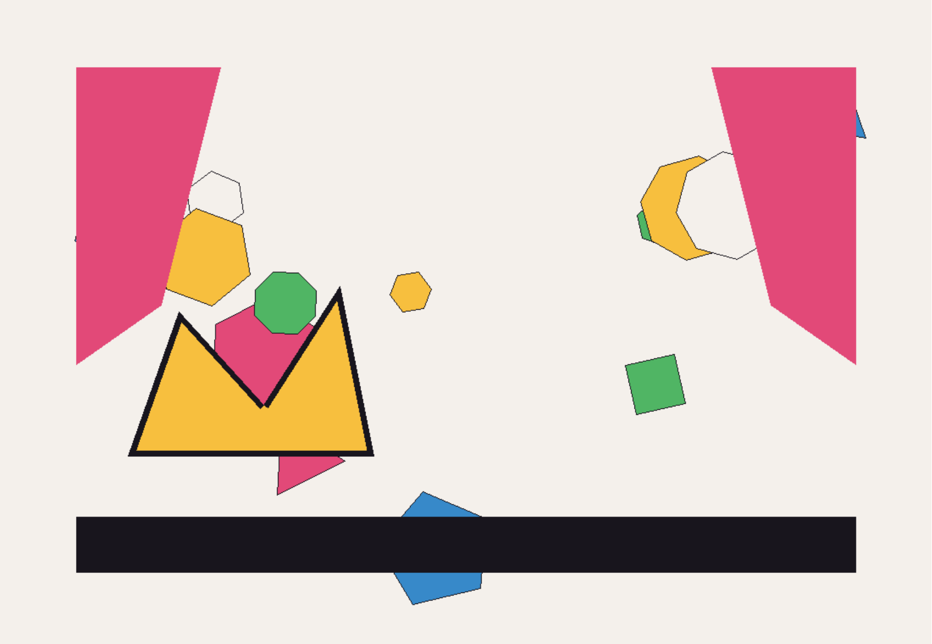

चित्र 10

महिसबार: कन्नारोहट तँ नहि, मुदा डिहबारक स्थानपर पंचैती बैसल अछि, अहाँकेँ बजाबए लेल हम आएल छी।

महिसबार संकर्षणकेँ लेने पंच सभ लग पहुँचैत छथि। सभ संकर्षणपर थू-थू करैत छथि — घोँघाउज होइत अछि आ संकर्षणपर दण्ड सेहो लगैत छन्हि।

संकर्षण: हम अपन घट्टी मानैत छी आ आइ दिनसँ कंठी लऽ रहल छी। दण्ड सेहो काल्हि साँझ धरि दऽ देब। (धीमे) जिभ सँ निकसल बात कतेक बेर कोदारिसँ चलल चोटसँ भारी पड़ै छै।

पहिल बेर संकर्षणक दंभ ठोस परिणाम भोगैत अछि — कंठी लेब, दण्ड देब। मुदा ई सीख ओकरा भीतर धरि पहुँचल, कि खाली ठोंरे धरि, से आगाँ स्पष्ट होएत।

अंक ३ : कंठी हाथमे, कोदारि हाथमे

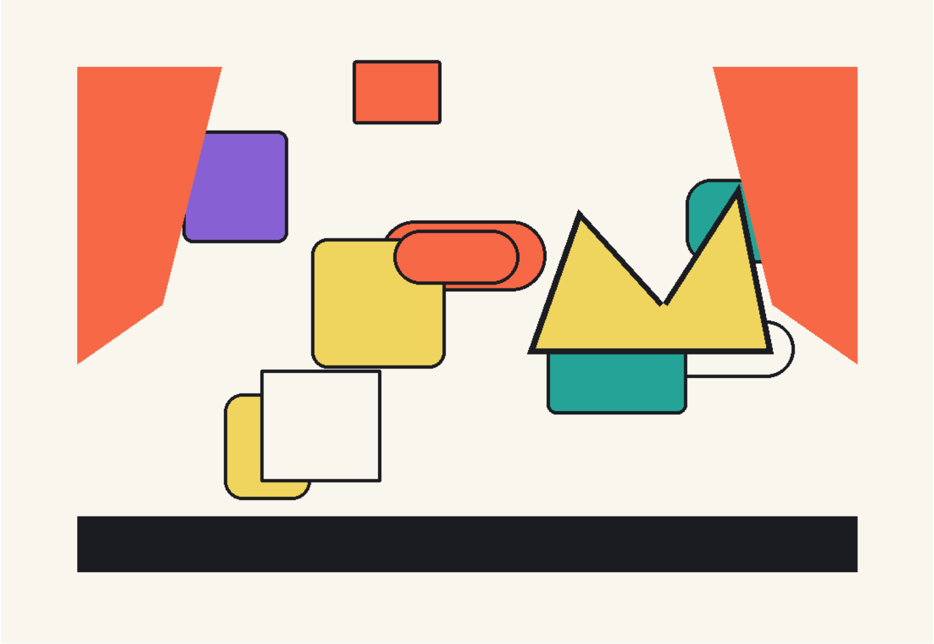

चित्र 11

संकर्षण भोरे-भोर खेत दिशि कोदारि आ छिट्टा लए बिदा भेल छथि। बुन्ना-बान्नी होइत छल। तखने आरिकेँ तरपैत एकटा पैघ रोहुकेँ देखि कए संकर्षण कोदारि चला देलन्हि। आ रोहु दू कुट्टी भऽ गेल — कंठी गरदनिमे अछि, कोदारि हाथमे; ई विरोध साफ देखाइ पड़ैत अछि।

संकर्षण: आरौ तोरी के। आब दोसर काज छोड़ी आ गामपर चली।

दुनू टुकड़ीकेँ छिट्टामे राखि माथ पर उठा कए विदा भेलाह संकर्षण गाम दिशि। तकरा देखि हुनकर समवयस्क गोनर भाए गाम पर जाइत काल गामक बाबा दोगही लग ठमकि कए ठाढ़ भए गेलाह।

गोनर भाइ: (मोनमे सोचैत छथि) वैष्णव जीसँ रोहु कोना कए लए ली। (प्रत्यक्ष भऽ) यौ संकर्षण भाइ। ई की कएलहुँ। वैष्णव भऽ कए माछ उघैत छी।

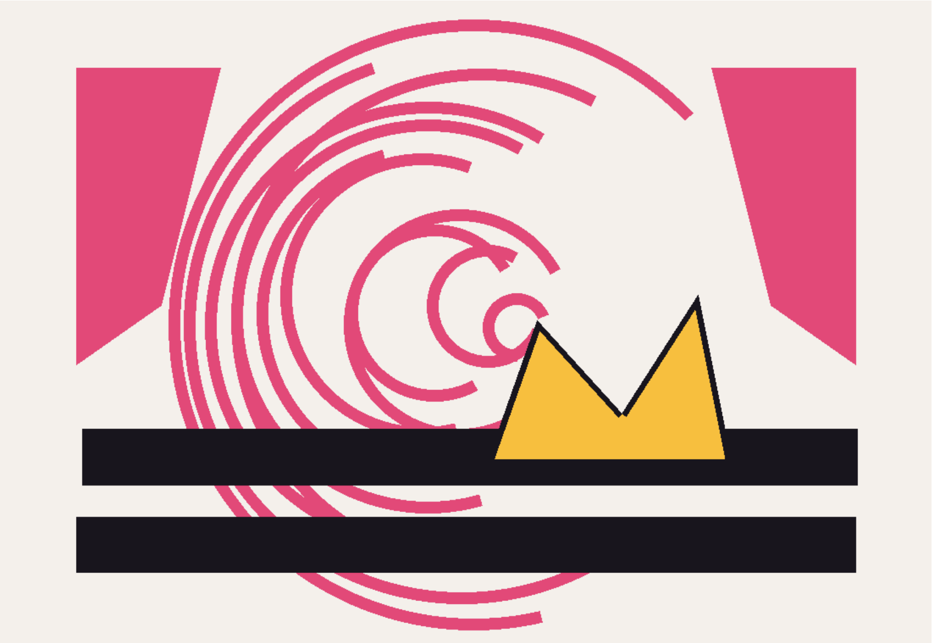

चित्र 12

संकर्षण: रौ गोनर। हमर बतारी छह मुदा तैयो हम तोहर भाइ कोना भेलियह। तोरा बुझल नहि छह जे जतए तौँ ठाढ़ छह से कहबैत छैक बाबा दोगही। एतए जनमलो बच्चा गामक लोकसँ सम्बन्धमे बाबा होइत अछि। सम्बन्धक हिसाब पहिने बुझू, फेर प्रश्न करू।

गोनर भाइ: ठीके कहलहुँ संकर्षण। मुदा हम कहैत रही जे......

संकर्षण: (गप काटैत) रौ माछ खायब ने छोड़ने छियैक। मारनाइ तँ नञि ने।

अपन सनक मुँह लए गोनर भाइ विदा भए गेलाह। संकर्षणक कंठी ओकर जीभकेँ नहि बान्हि सकल — वचन देब आ वचन निमहब, दुनू भिन्न वस्तु थिक, ई एहि छोट दृश्यमे स्पष्ट भऽ जाइत अछि।

अंक ४ : टेलीफोन डायरीक भय

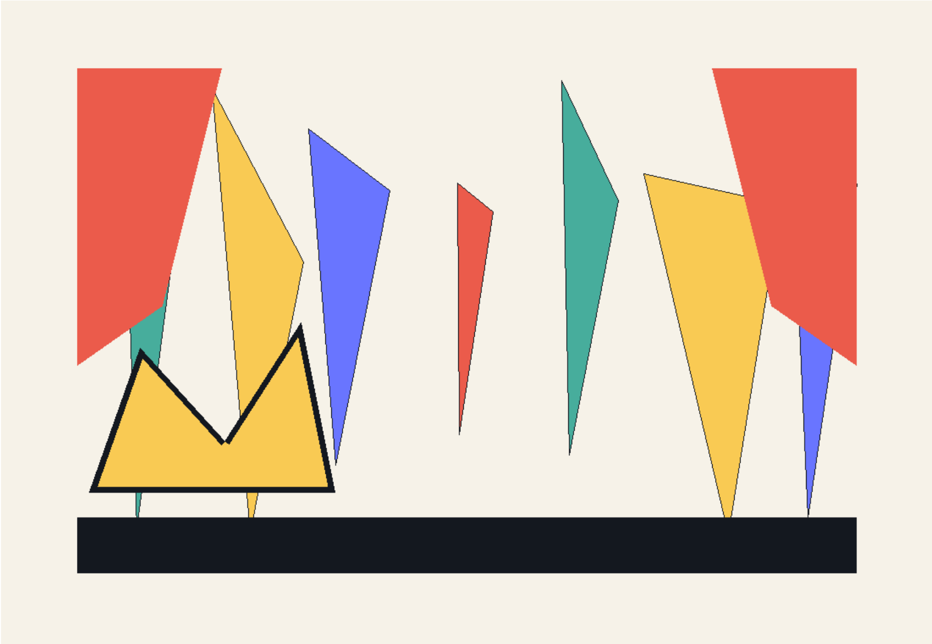

चित्र 13

गोनर झा टेलीफोन डायरी देखि रहल छथि।

संकर्षण: की देखि रहल छी।

गोनर झा: टेलीफोन नंबर सभ लिखि कए रखने छी, ताहिमे सँ एकटा नंबर ताकि रहल छी।

संकर्षण: आ ज्यौँ बाहरमे रस्तामे कतहु पुलिस पूछि देत जे ई की रखने छी तखन।

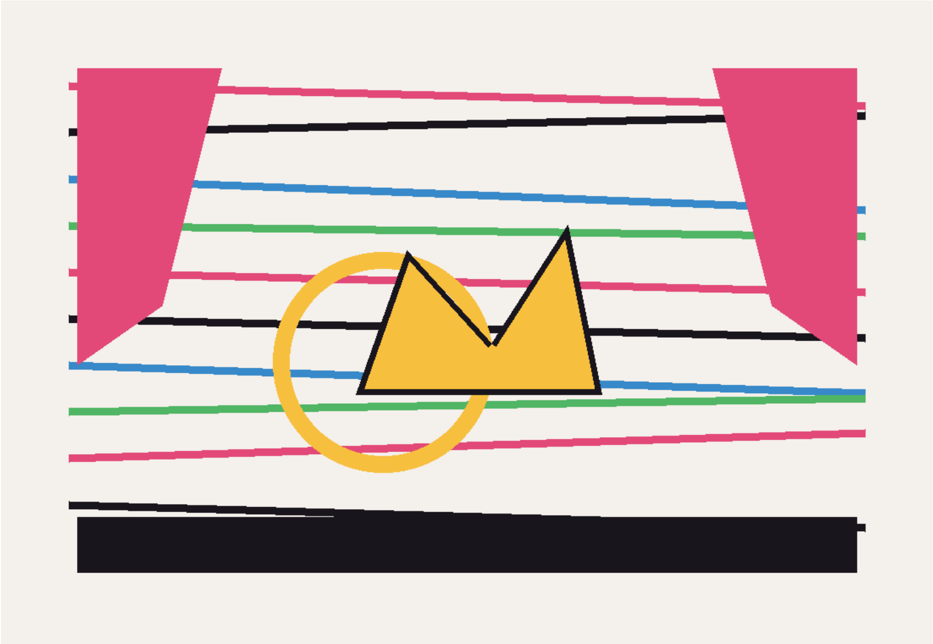

चित्र 14

गोनर झा: ऐँ यौ से की कहैत छी। टेलीफोन नंबर सभ सेहो लोक नहि राखय।

संकर्षण: से तँ ठीक। मुदा एतेक नंबर किएक रखने छी, ई पुछला पर ज्यौँ जबाब नहि देब तँ आतंकी बुझि पुलिस जेलमे नहि धए देत? अखबारमे नाम छपि जेत, तखन बुझब।

गोनर झा: से कोना धए देत। (डरि कऽ) एखने हम एहि डायरीकेँ टुकड़ी-टुकड़ी कऽ कए फेंकि दैत छियैक।

गोनर भाइ ओहि डायरीकेँ फाड़ि-फूड़ि कए फेंकि दैत छथि — संकर्षणक निराधार, मुदा आत्मविश्वासी बातसँ एकटा निर्दोष व्यक्तिक साधारण आदति सेहो भयक शिकार भऽ जाइत अछि। संकर्षणक बोली — भलहिं ओकरा स्वयं एकर परवाह नहि — दोसराक जीवनमे कतेक असर छोड़ैत अछि, ई एहि कल्लोलक अन्तिम सीख थिक।

तेसर कल्लोल : बियाह आ बड़ाइक बजार

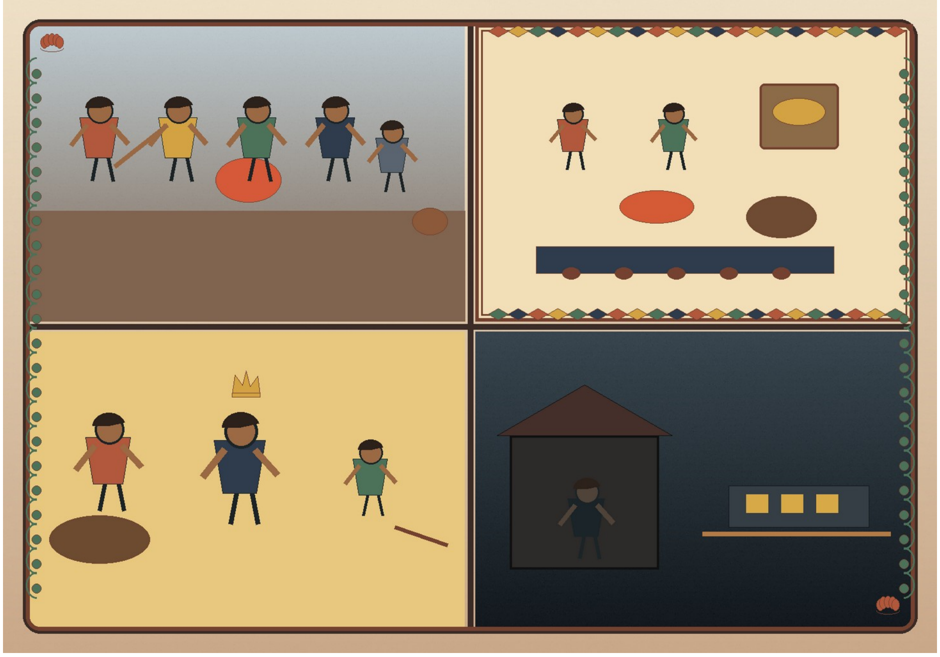

अंक १ : घटकक चिकनी बात

चित्र 15

संकर्षणक बाबू दलानपर बैसल छथि। एक गोट घटक चूड़ा-दही-मधुर सरपेटने जा रहल छथि।

घटक: मीतक चेहरापर जे पानि छन्हि से लोक नञि देखैत अछि। कारी टुहटुह छथि संकर्षण, कारी-खटखट नहि। चन्सगर छथि।

संकर्षणक बाबू: हे एकटा आर मधुर लियौक ने।

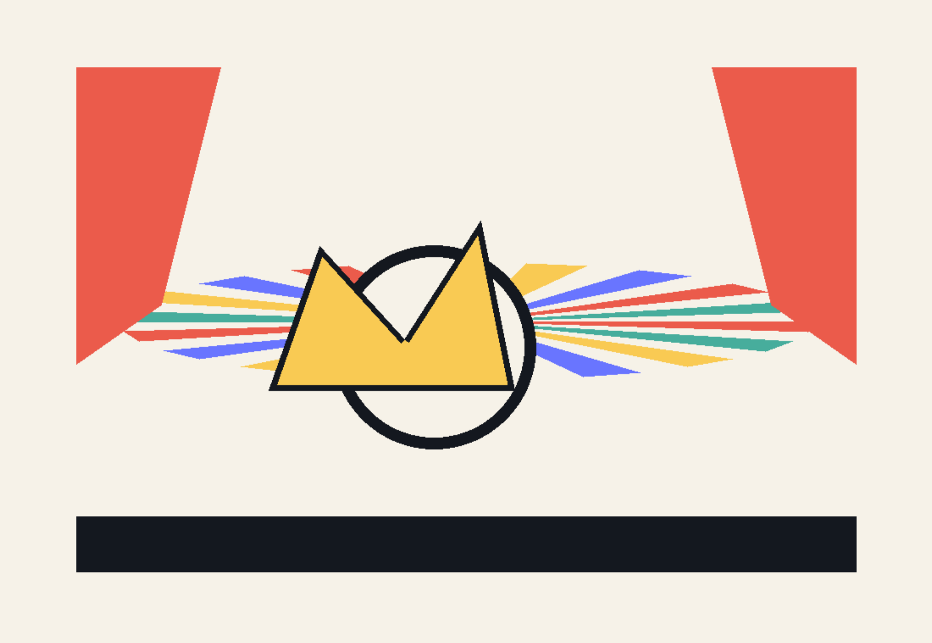

चित्र 16

घटक: दियौक। यौ लाइन लागि जएत लड़की बलाक। धरफराऊ धरि जुनि।

ओ घटक जाइत छथि आकि दोसर घटक अबैत छथि आ ओहो इशारामे गप करैत चलि जाइत छथि। घटकक ई चिकनी बड़ाइ — जे कारी रंगकेँ सेहो सोना बना दैत अछि — संकर्षणक परिवारक भीतर सेहो वैह प्रतिष्ठा-मोह पसारि रहल अछि, जे संकर्षण बाहर पसारैत छथि।

संकर्षणक माए: हे एकटा कन्यागत अओताह आइ। लाल काकीक फोन आएल छन्हि दिल्लीसँ।

संकर्षणक बाबू: शरबत घोरि कए राखू तखन। कागजी नेबो तँ घटक सभकेँ शरबत पियाबैत-पियाबैत खतम भऽ गेल देखैत छी, गाछमे जमीरी नेबो सेहो बाँचल अछि आकि नहि। संकर्षणक बड़ाइ करैत-करैत नीबूओ थाकि गेल।

अंक २ : सासुरसँ आगमन आ रंगक दंभ

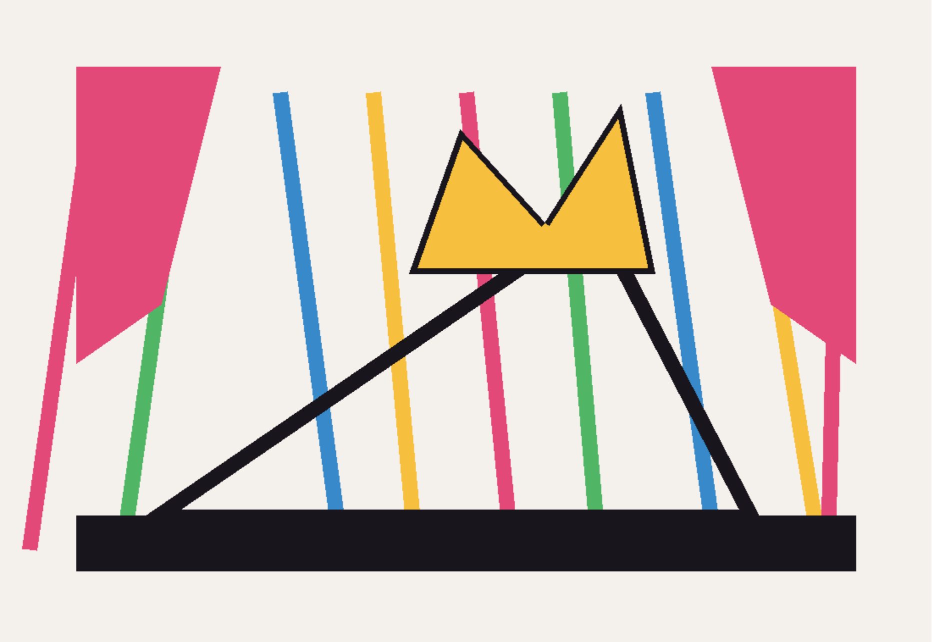

चित्र 17

बुझना जाइत अछि जे संकर्षण सासुरसँ आएले छथि, कनेक मोट भऽ गेल छथि। गोनर भाइ रस्तामे भेटि जाइत छथिन्ह।

गोनर भाइ: मीत यौ, कनिया केहन छथि, पसिन्न पड़लथि ने।

संकर्षण: हँ, हँ जगन्नाथ भाइ। बड़ सुन्दर छथि। हेमामालिनीकेँ देखने छियन्हि? एन-मेन ओहने। (कनेक रुकि, अपन प्रतिष्ठा बचबैत) मुदा रंग कनेक हमरासँ डीप छन्हि।

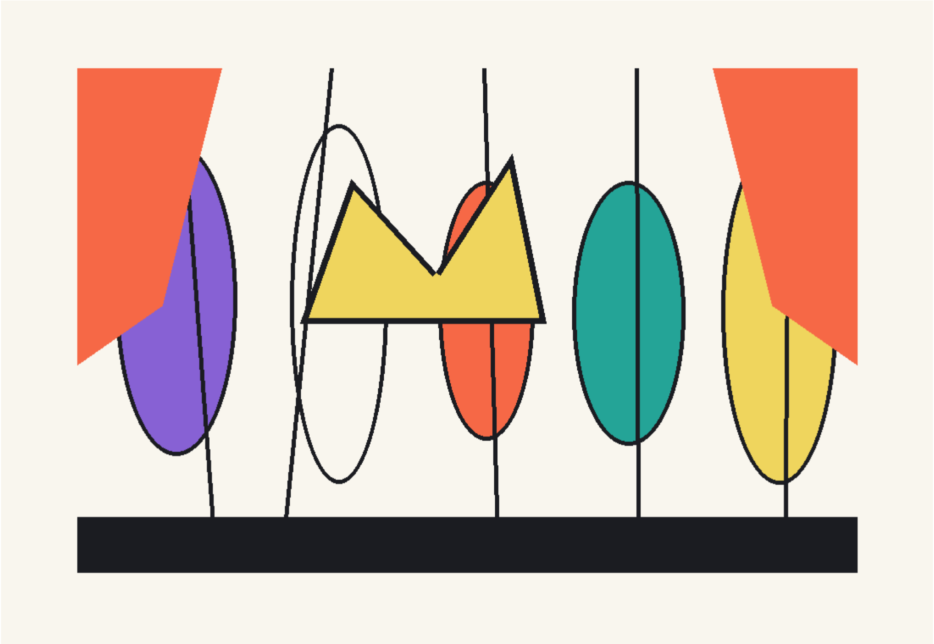

चित्र 18

गोनर भाइ: अच्छा।

संकर्षण: मुदा रंग कनेक हमरासँ डीप छन्हि।

गोनर भाइ मुँह बाबि दैत छथि। संकर्षणक हरेक वाक्यमे अपनाकेँ ऊपर आ आनकेँ नीचाँ राखबाक ई अभ्यास — पत्नीक रूपपर सेहो — ओकर दंभक गहराइ देखबैत अछि।

अंक ३ : गोबर आ दुलारक प्रश्न

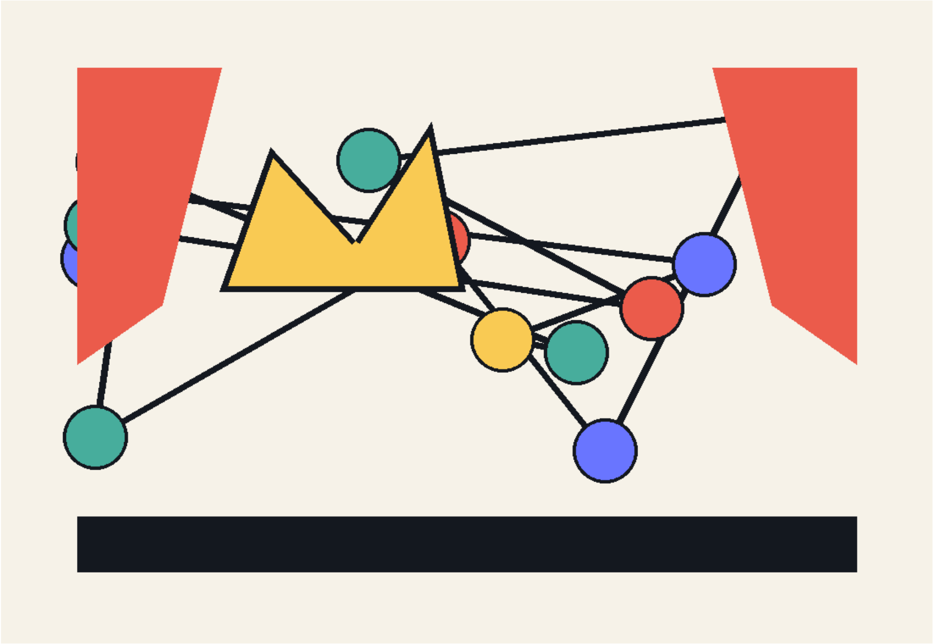

चित्र 19

संकर्षण हाथमे लोटा लेने पोखरि दिशि जा रहल छथि तँ गोनर गोबर काढ़ि रहल छथि। बगलमे गोनर भाइक कनियाँ ठाढ़ि रहथिन्ह।

गोनर भाइ: यौ मीत, हमरे जेकाँ अहूँ सभकेँ भोरे-भोर गोबर काढ़य पड़ैत अछि?

संकर्षण देखलन्हि जे गोनरक कनिञा सेहो बगलमे ठाढ़ि छलखिन्ह। एखन किछु कहबन्हि तँ लाज होएतन्हि — तेँ बिनु किछु कहने आगू बढ़ि गेलाह। जखन घुरलाह, तखन गोनर भाइसँ असगरमे भेँट भेलनि, आ ओतहिसँ बात आगाँ बढ़ल —

संकर्षण: भाइ, पहिने बियाहमे पाइ देबय पड़ैत छलैक, से अहाँकेँ सेहो लागल होएत। ताहि द्वारे ने उमरिगरमे बियाह भेल।

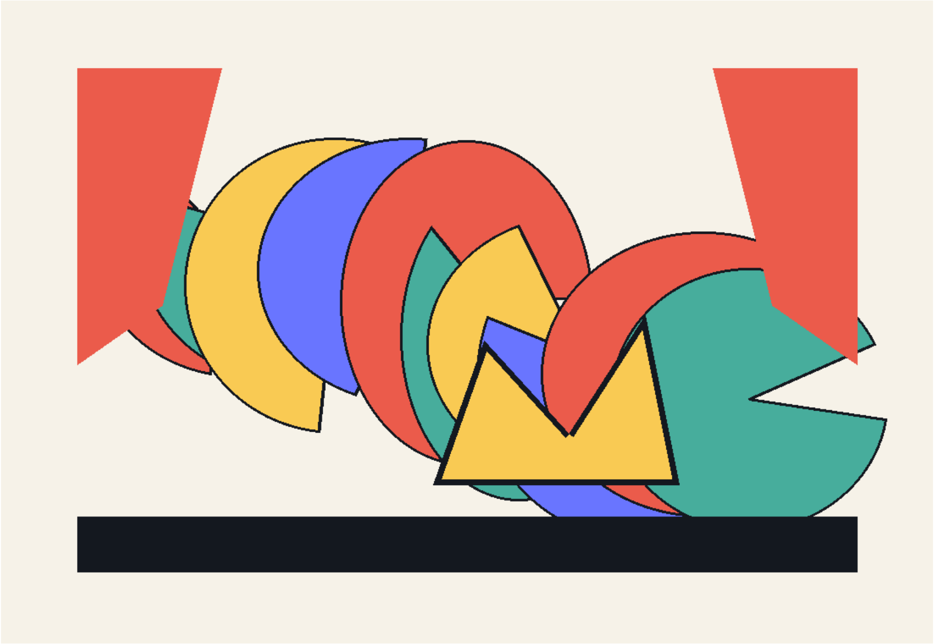

चित्र 20

गोनर भाइ: हँ से तँ पाइ लागले छल।

संकर्षण: मुदा हमरा सभकेँ पाइ नहि देबय पड़ल छल आ ताहि द्वारे गोबरो नहि काढ़य पड़ैत अछि, कारण कनियाँ ओतेक दुलारू नहि छथि ने।

संकर्षणक कनियाँक अबाज: (नेपथ्यसँ) दुलारू नहि छी तें घर चलैए। जे दिन दुलारू भऽ जाएब, से दिन अहाँक दंभक गोबर के काढ़त?

ई एक्के वाक्य — नेपथ्यसँ अएल पत्नीक स्वर — संकर्षणक सम्पूर्ण दंभकेँ आइना देखा दैत अछि। मुदा संकर्षण एकरा सुनितो अनसुन्ह कऽ दैत छथि, जेना ओकर कान मात्र प्रशंसाक लेल बनल होथि।

अंक ४ : गुरक चाह आ जगन्नाथक कुसियार

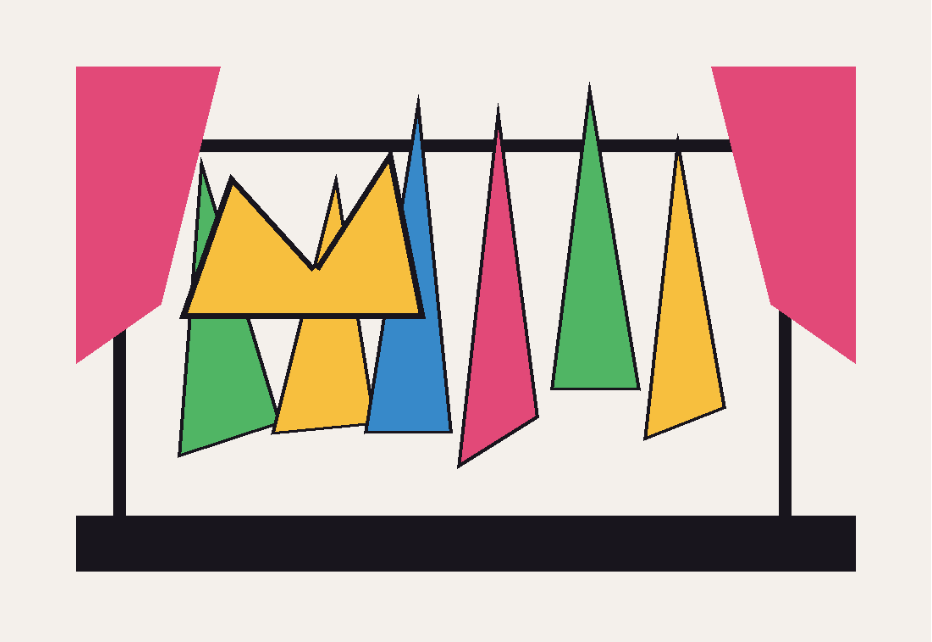

चित्र 21

गोनर भाइ: सर्दमे गुरसँ खूब लाभ होइत छैक, ई ठेही हँटबैत अछि। गूरक चाह पीब मीत।

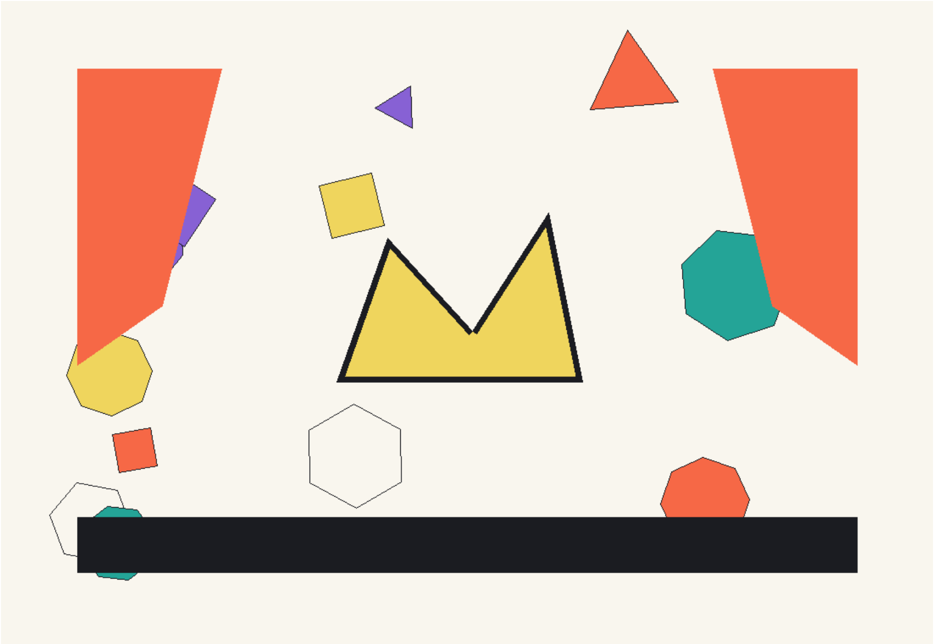

चित्र 22

संकर्षण (स्वगत): किछु दिन पहिने गोनर एहि गपक चर्च कएने छलाह जे ओ जोमनी छोड़ने छलाह तीर्थस्थानमे आ तैं जोम खाइत छलाह। हरजे की एहिमे। अधिक फलम् डूबाडूबी। (प्रत्यक्ष) परुकाँ जे पुरी जगन्नाथजी गेल छलहुँ, से कोनो एकटा फल छोड़बाक छल से कुसियार छोड़ि देलहुँ। आ कुसियारेसँ तँ गुर बनैत छैक। चुकन्दरक पातर रसियन चीनी बला चाहे ने पिआ दिअ।

गोनर भाइ मुँह बाबि दैत छथि। संकर्षणक हर तर्क — भलहिं ओ कतबो हास्यास्पद होअए — ओकरा आगाँ सत्य जकाँ ठाढ़ भऽ जाइत अछि, कारण ओ स्वयं ओहिपर विश्वास करैत छथि। पन्द्रह बरख बीति जाइत अछि — दुनू गोटे आब उमरिगर भऽ गेल छथि।

अंक ५ : बेटाक पलायन

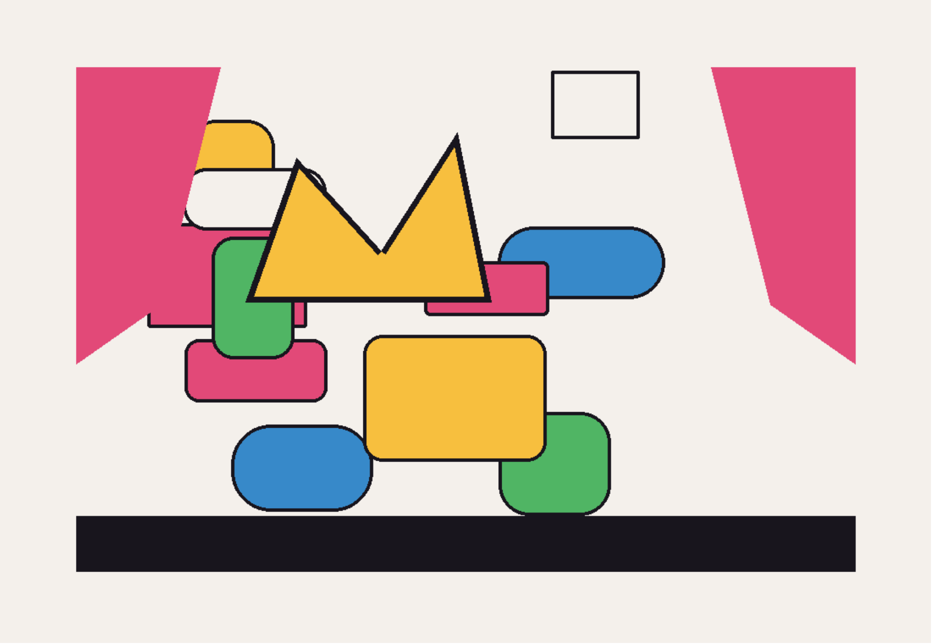

चित्र 23

संकर्षण: यौ, लोक सभ यौ लोक सभ। लाल काका बियाह तँ करा देलन्हि मुदा तखन ई कहाँ कहलन्हि जे बियाहक बाद बेटो होइत छैक। जबान बेटा घर छोड़ि भागि गेल। आब की करब? (पहिल बेर थाकल स्वरमे) जेकरा सभकेँ सिखबैत फिरलहुँ, अपन घरक बाट ओकरा नहि सिखा सकलहुँ।

गोनर भाइ: हो नहि हो दिल्लीये गेल होएत। सभ ओतहि जाइत अछि भागि कऽ।

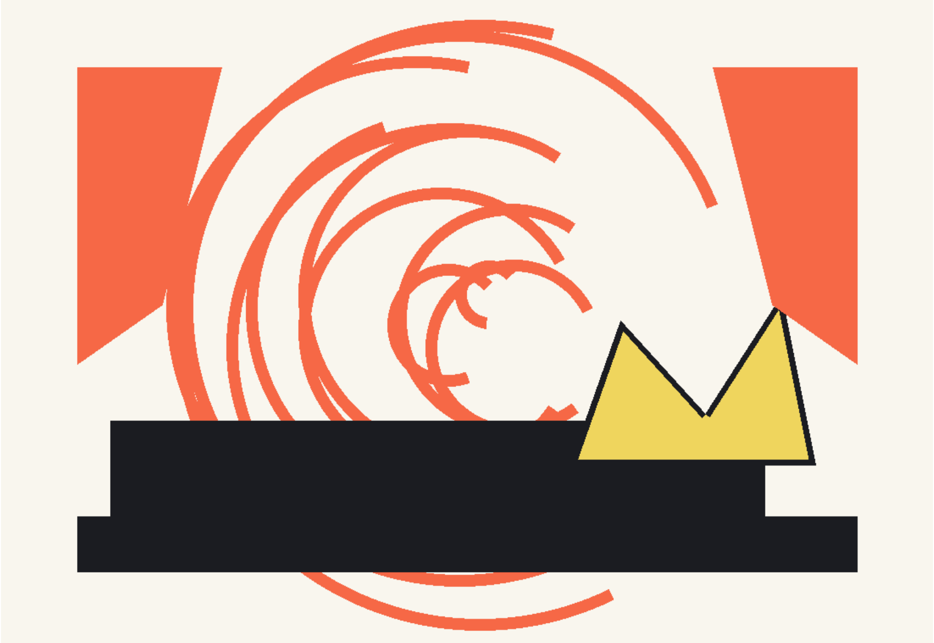

चित्र 24

संकर्षण: आब बेटाकेँ ताकए लेल आ बेटाक नहि भेटला उत्तर अपना लेल नोकरी तकबाक हेतु हमरो दिल्लीक रस्ता धरए पड़त।

पहिल बेर संकर्षणक स्वरमे थकान अछि, दंभ नहि। जे व्यक्ति भरि जीवन आन सभकेँ सिखबैत रहल, से आइ अपन घरक भीतरक शून्यताक सोझाँ ठाढ़ अछि। ट्रेनक सीटी, भीड़क धक्का, आ अनजान शहरक शोरक बीच ओ दिल्ली दिस बिदा होइत छथि — असगरे, पहिल बेर बिनु कोनो कल्पित प्रतिष्ठाक सहारे।

चारिम कल्लोल : शहरक आइना

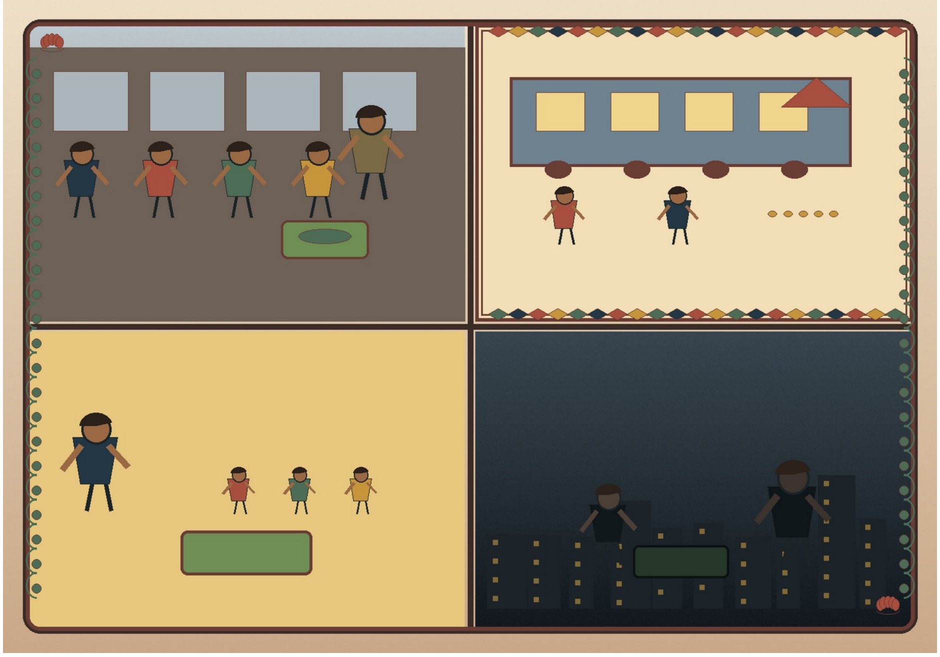

अंक १ : ट्रेनमे तीन टा बौआ

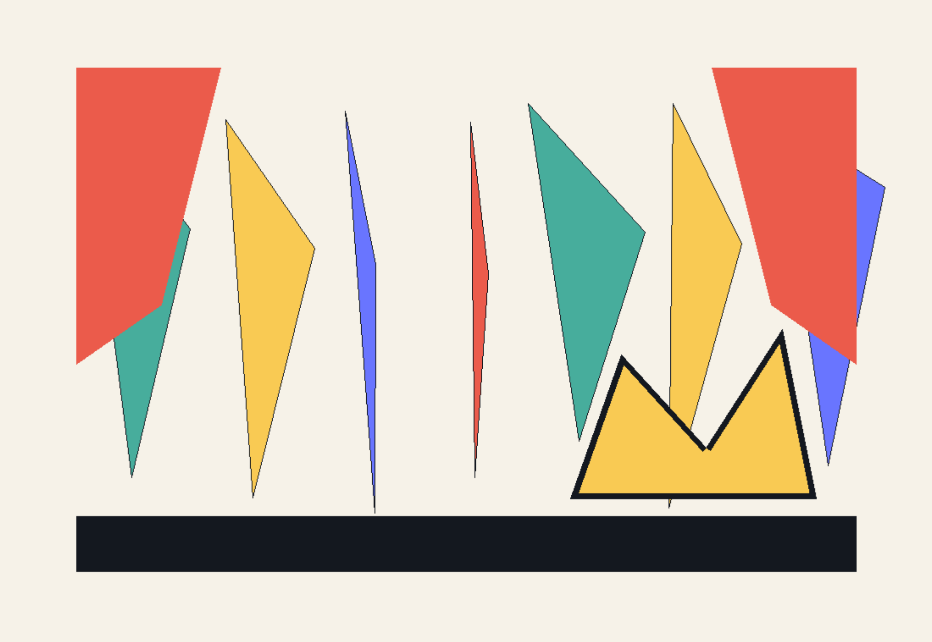

चित्र 25

ट्रेनक दृश्य। संकर्षण जनकपुरसँ जयनगर होइत दिल्लीक ट्रेन पकड़ैत छथि। भीड़, पोटरी, रोदन, चायबला, टिकट-जाँच, आ धड़धड़ाहटिक ध्वनि संकर्षणक आत्मविश्वासकेँ धीरे-धीरे छोट करैत जाइत अछि।

एकटा बूढ़ी: (संकर्षणसँ) बौआ कनेक सीट नञि छोड़ि देब।

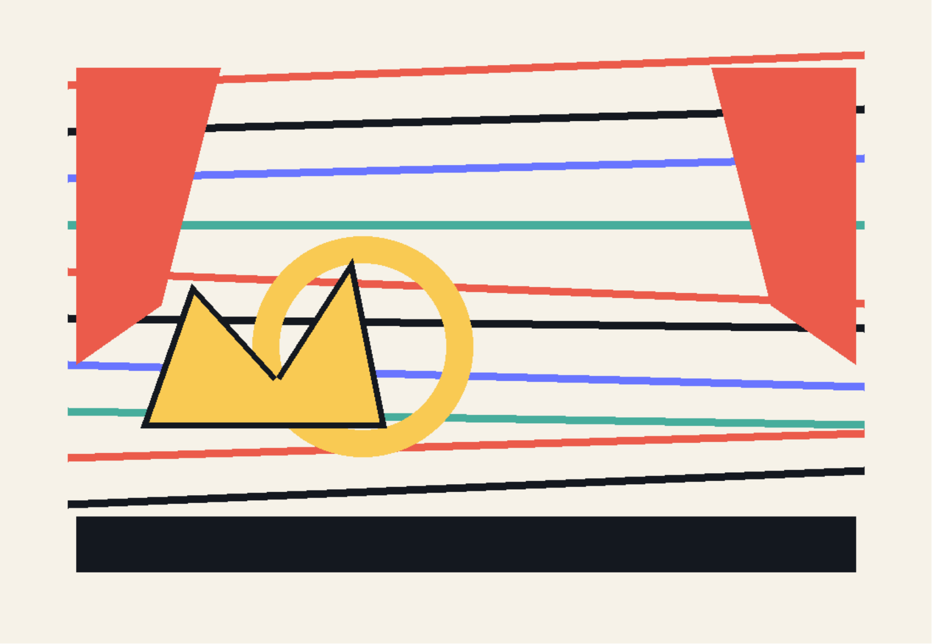

चित्र 26

संकर्षण: माँ। ई बौआ नहि। बौआक तीन टा बौआ।

बूढ़ी मुँह बाबि लैत छथि। गामक दंभ शहरक ट्रेनमे सेहो संकर्षणक संग चलैत अछि — मुदा एतय एकरा सुननिहार कियो प्रभावित नहि होइत छथि, सभ अपन-अपन यात्रामे व्यस्त छथि।

अंक २ : अलीगढ़मे पुलिस-चेकिंग

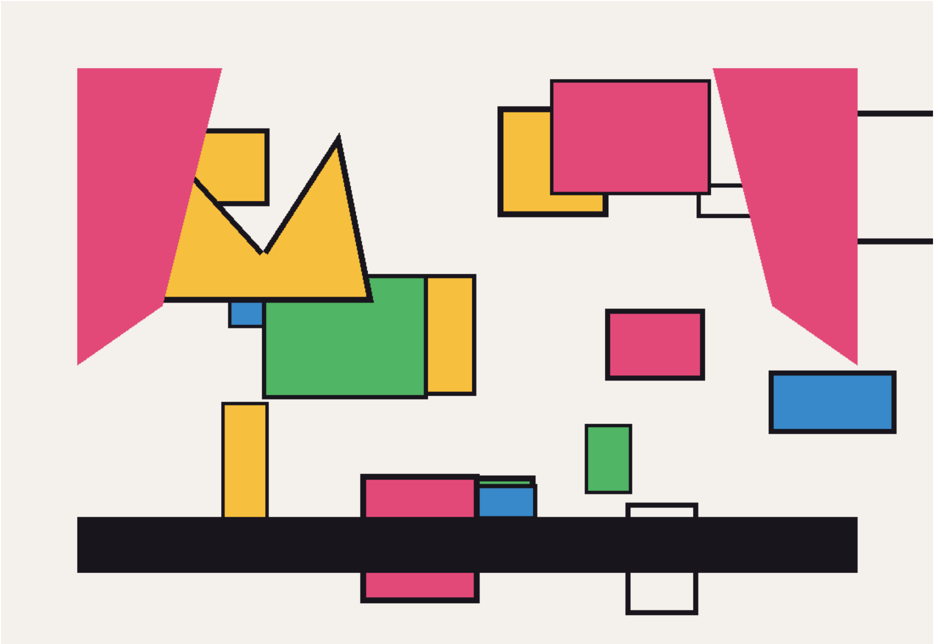

चित्र 27

ट्रेन अलीगढ़ पहुँचैत अछि, आ बोगीमे पुलिस अबैत अछि। संकर्षणक झोरा-झपटा सभ देखए लगैत छथि। ताहिमे किछु नहि भेटलैक — हँ, खेसारी सागक बिड़िया, जे संकर्षणक कनियाँ लाल काकीक हेतु सनेस बना कऽ देने रहथिन्ह। मुदा पुलिसबा सभ एहिपर हुनका लोकि लेलकन्हि।

सिपाही एक: ई की छी।

संकर्षण: ई तँ सरकार, छी खेसारीक बिड़िया।

सिपाहीक अफसर: अच्छा, बेकूफ बुझैत छी हमरा। मोहन सिंह बताऊ तँ ई की छी।

सिपाही दू: गाजा छैक सरकार। गजेरी बुझाइत अछि ई।

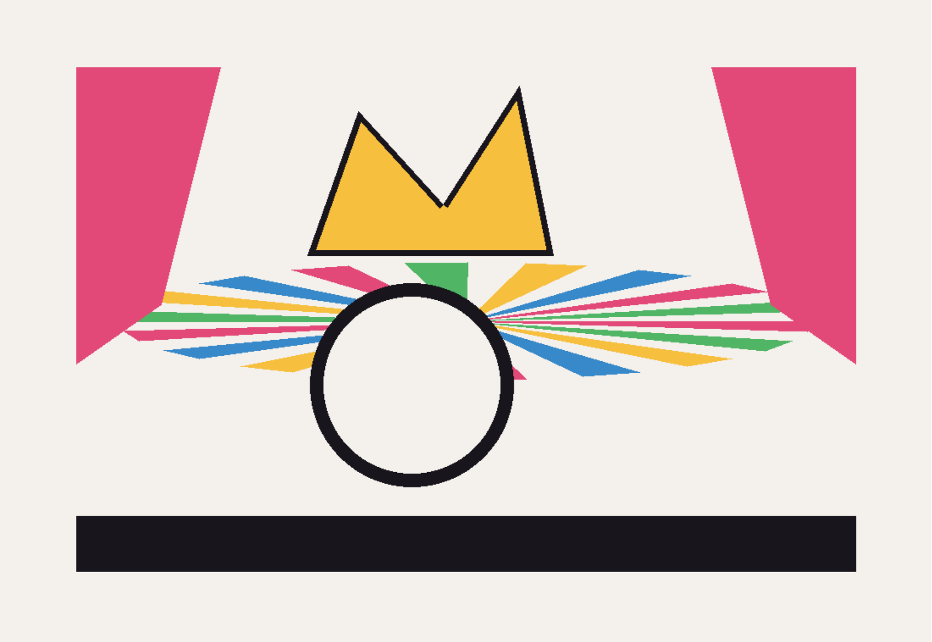

चित्र 28

सिपाहीक अफसर: आब कहू यौ सवारी। हम तँ मोहन सिंहकेँ नहि कहलियैक, जे ई गाजा छी। मुदा जैँ तँ ई छी गाजा, तँ मोहन सिंह से कहलक। कानूनक भाषा बुझै छी कि नहि?

संकर्षण: सरकार छियैक तँ ई बिड़िया, हमर कनियाँ सनेस बन्हलक अछि लाल काकीक.........

सिपाही एक: लऽ चलू एकरा जेलमे सभटा कहि देत।

संकर्षणक आँखिसँ दहो-बहो नोर बहय लगैत छन्हि। कलक्टरक चेम्बरक अपमान, कुकुरक खिस्सा, पसीझक काँट — सभ एक क्षण लेल ओकरा मोन पड़ैए। मुदा सिपाही छल बुझनुक।

सिपाही दू: कतेक पाइ अछि सँगमे।

दिल्लीमे स्टेशनसँ लालकाकाक घर धरि दू बस बदलि कए जाए पड़ैत छैक — से सभ हिसाब लगा कए बीस टाका छोड़ि कए पुलिसबा सभटा लऽ लेलकन्हि। हँ, खेसारीक बिड़िया धरि छोड़ि देलकन्हि। जतय गाममे संकर्षणक बोली सभकेँ डरा दैत छल, ओतहि शहरमे संकर्षण स्वयं डरक शिकार भऽ गेला — ई एहि यात्राक सभसँ तीक्ष्ण विडम्बना थिक।

अंक ३ : लाल काकाक घर

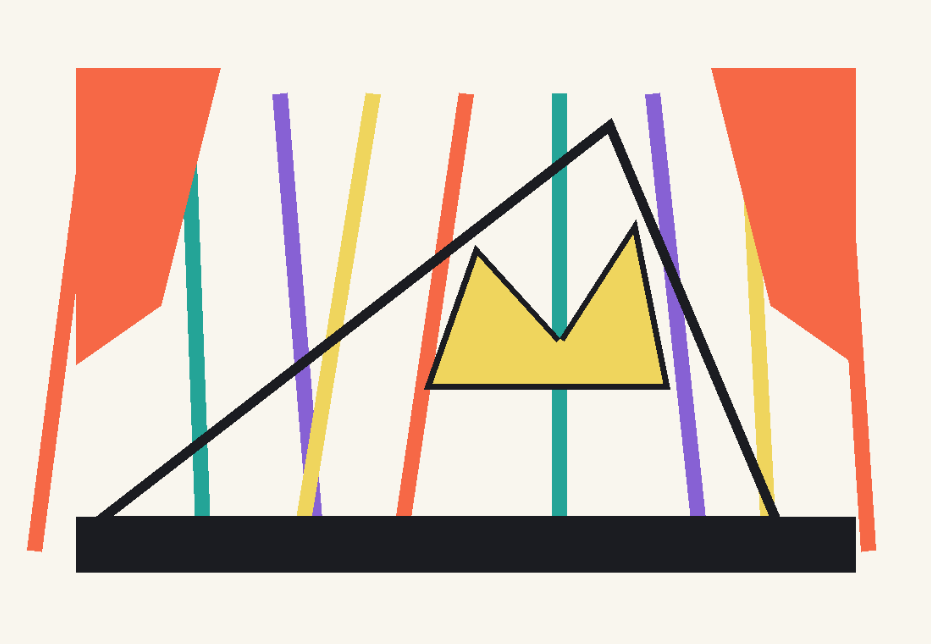

चित्र 29

पाइक आदान-प्रदानक बाद पुलिसबा उतरि गेल। संकर्षण सेहो कनेक कालक बाद दिल्ली स्टेशनपर उतरि गेलाह। लाल काका, लाल काकी आ संकर्षण फेर ड्राइंग रूममे बैसल छथि।

लाल काका: (फोनपर) अच्छा। ई तँ नीक खबरि सुनेलहुँ। मीत तँ रहैत छथि, रहैत छथि की सभटा गप सोचा जाइत छलन्हि आ कोढ़ फाटि जाइत छन्हि। (फोन राखैत) सुनलियै यै। मीतक बेटा गाम पहुँचि गेलन्हि।

लाल काकी: बाह। रच्छ भगवान। मुदा बौआ ई सप्पत खाऊ जे आब पसीझक काँट जेहन हँसी नहि करब। (लाल काका दिस मुँह कए) हिनकर नोकरीक की भेलन्हि।

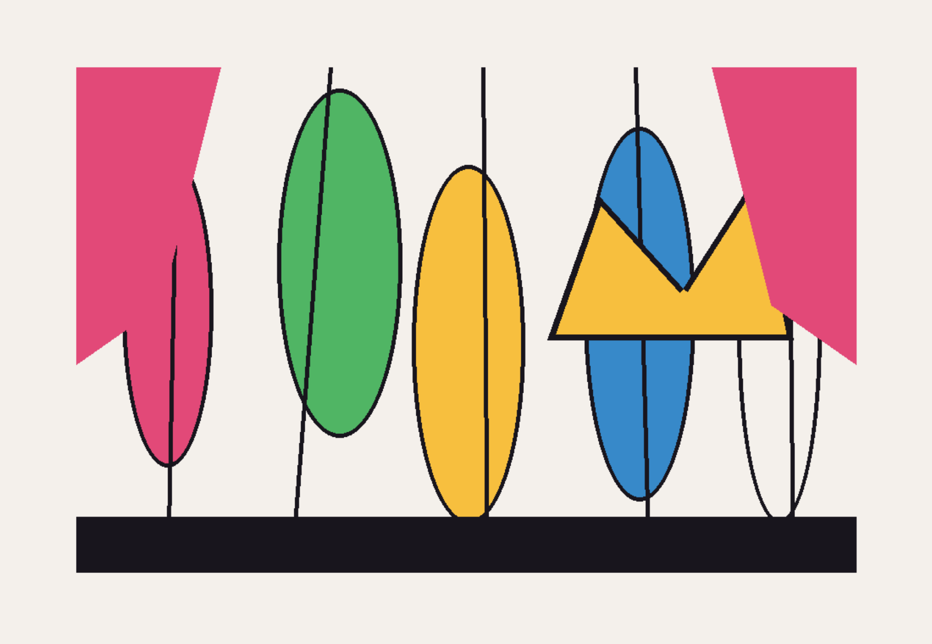

चित्र 30

संकर्षण: नोकरी-तोकरी नहि होयत काकी हमरासँ। सप्पत खाइत छी जे पसीझक काँट बला हँसी आब नहि करब। ट्रेनमे जे भेल, से मनुक्खक बुद्धि नहि, किस्मत सहै छै। आब तँ गाम घुरबाक तैयारी करए दिअ।

लाल काकी: दिल्ली तँ घुमि लिअ। लाल किला देखि लिअ।

पहिल बेर संकर्षण अपन साँच स्वीकार करैत छथि — भलहिं ओ ओकरा 'किस्मत' कहि कऽ टारि दैत छथि, अपन दंभकेँ पूर्ण रूपेँ स्वीकार करब अखनहुँ बाँकी अछि।

पाँचम कल्लोल : आत्मबोधक जुत्ता

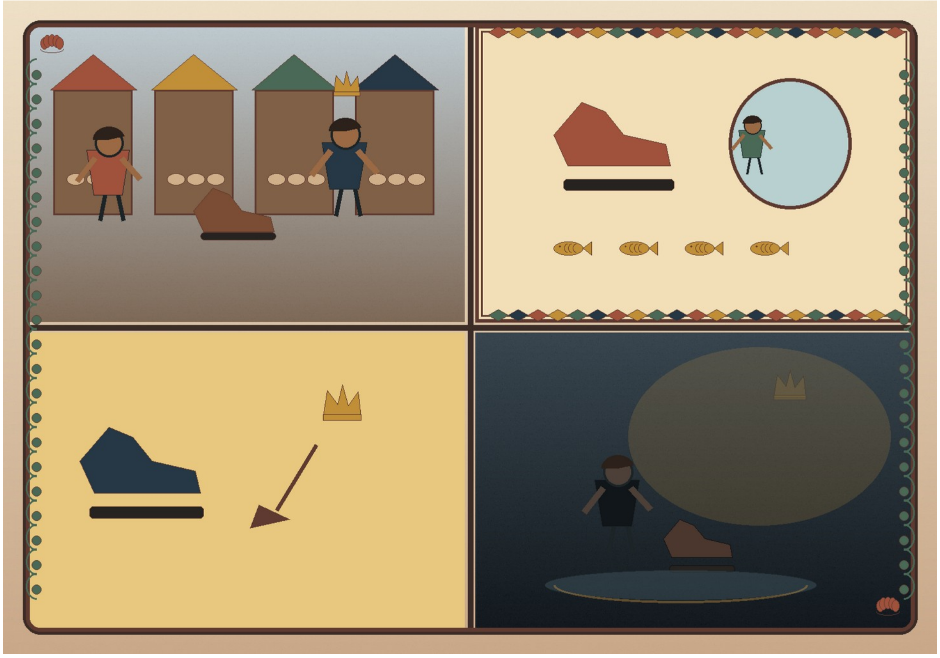

अंक १ : चोर-बजारक ठकान

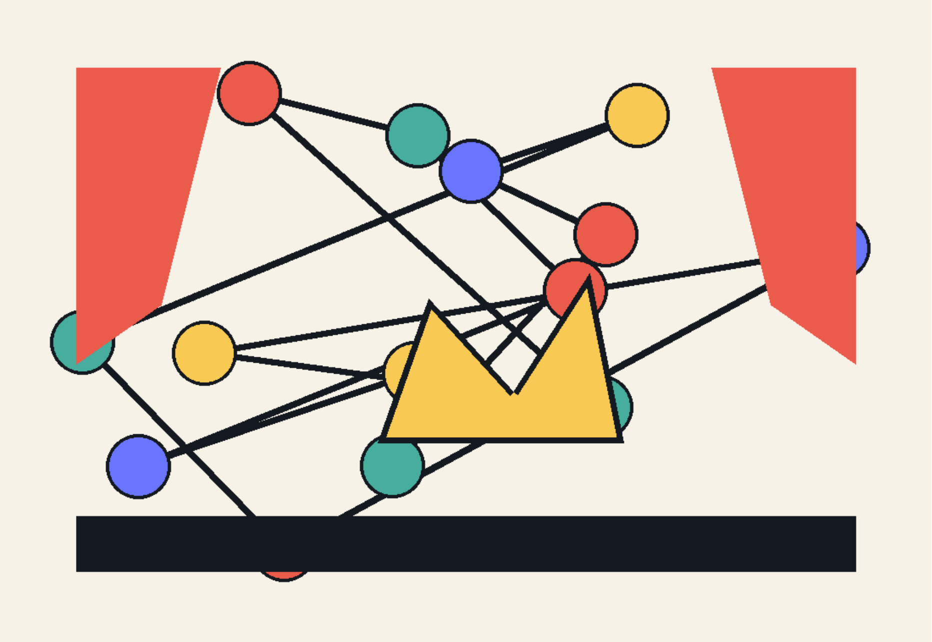

चित्र 31

दिल्लीक लाल किलाक पाछूमे रवि दिन भोरमे जे चोर बजार लगैत रहए, ताहिमे संकर्षण अपन भाग्यक परीक्षणक हेतु पहुँचैत छथि — चोर-बजारक हाँक, सिक्काक खनखन, पुरान चीजक खटर-पटर, आ भीड़क धक्काक बीच।

संकर्षण: की नुका रहल छी ?

चोर बजारक दोकानदार: ई अहाँक बुत्ताक बाहर अछि।

संकर्षण: अहाँ कहू तँ ठीक, जे की एहन अलभ्य अहाँक कोरमे अछि।

चोर बजारक दोकानदार: (झाड़ि-पोछि कय एक जोड़ जुत्ता निकाललन्हि) कोनो पैघ गाड़ी बलाक बाटमे छी जे गाड़ीसँ उतरि एहि जुत्ताक सही परीक्षण करबामे समर्थ होएत आ सही दाम देत।

संकर्षण: दाम तँ कहू।

चोर बजारक दोकानदार: अहाँ कहैत छी तँ सुनू। चारि सए टाका दाम अछि एकर।

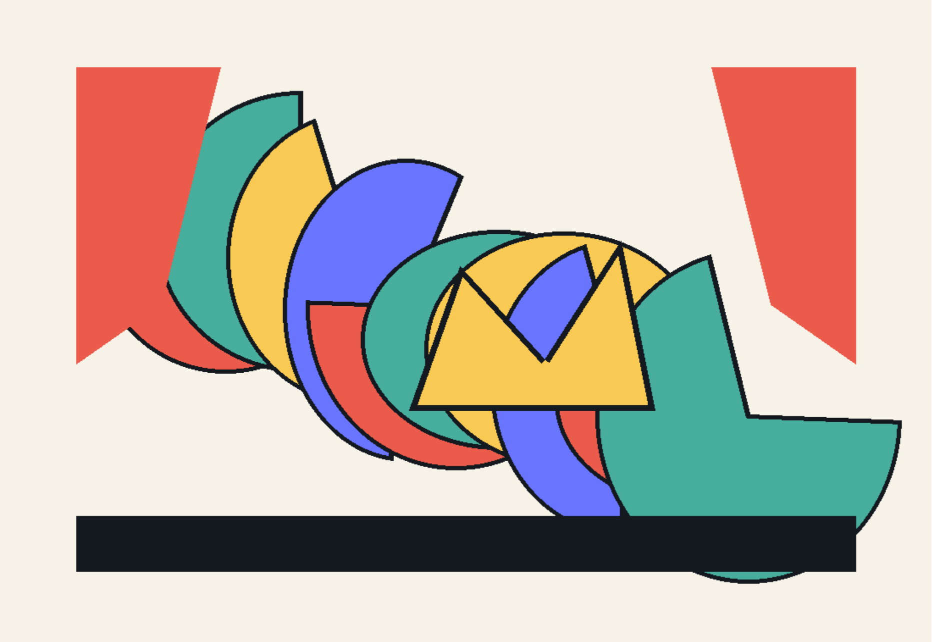

चित्र 32

संकर्षण: हमरा लग तँ मात्र तीन सए साठि टाका अछि।

चोर बजारक दोकानदार: हम पहिनहिये ने कहने छलहुँ। कतए घर भेल अहाँक।

संकर्षण: जनकपुर।

चोर बजारक दोकानदार: पड़ोसिया छी तखन तँ। अहाँसँ की लाभ कमाएब। दस टाका तँ डी.टी.सी. बसक किरेजा सेहो लागत। चलू साढ़े तीन सय दिअ।

संकर्षण: चलू आइ काल्हिक युगमे अहाँ सन लोक अछि जे पड़ोसीक कदर करैत अछि।

चोर बजारक दोकानदार: दिल्लीमे सभ अपने लोक अछि। एतए तँ थूको फेकैत छी तँ अपने लोकपर पड़ैत अछि। अपने लोककेँ पहचानि कऽ दाम लगबैत छी।

जे व्यक्ति गाममे सभकेँ बुधियारीक पाठ पढ़बैत छल, से एतय — दिल्लीक चोर-बजारमे — अपनहि सोझमे ठकाइत अछि, बिनु ई जनने। पड़ोसीक नामपर बुनल जाल ओतबे मीठ बुझाइत अछि, जतबा गाममे ओकर अपन जाल बुझाइत छल दोसरकेँ।

अंक २ : सोलक भीतर छिपल सत्य

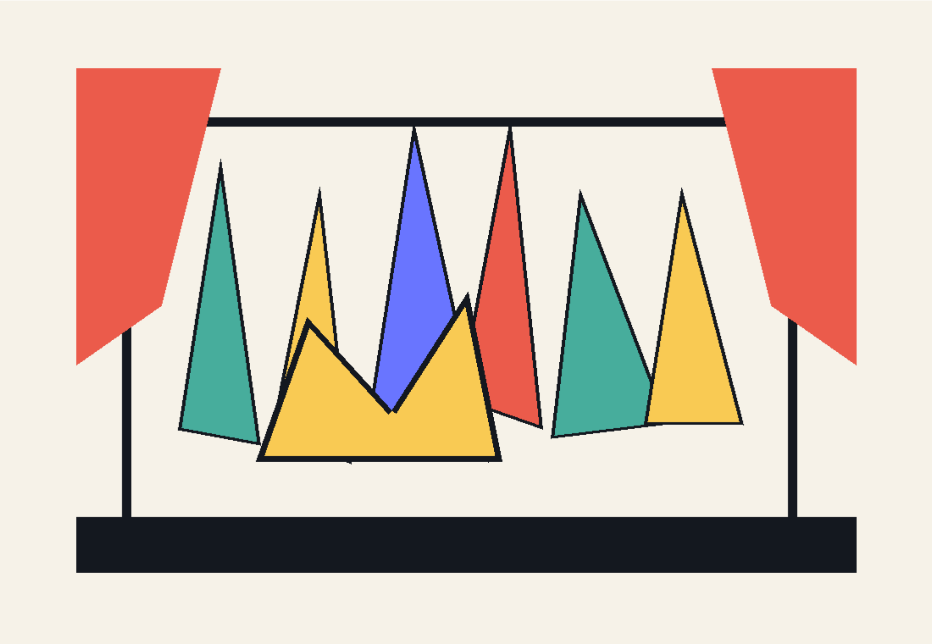

चित्र 33

संकर्षण गाम घुरलाह। जाहि दिनसँ ई जुत्ता आयल, एकरामे पानि नहि लागय देलन्हि। गोनर भाइ आ संकर्षणक भेँट फेर होइत अछि।

गोनर भाइ: यौ मीत जुत्ता किएह हाथमे उठेने छी।

संकर्षण: हौ गोनर। पानि कोना लागए देबैक एकरा। पैरक चमड़ा सड़त तँ फेर नवका आबि जएत। मुदा ई सड़ि जएत तखन कतए सँ अएत। (जुत्ता छाती लगबैत) दिल्लीक निशानी अछि।

किछु दिन बाद संकर्षण जुत्ता सिअबा रहल छथि।

गोनर भाइ: ई की कऽ रहल छी मीत। एतेक नीक रंग रूपक जुत्ताकेँ सिअबा रहल छी।

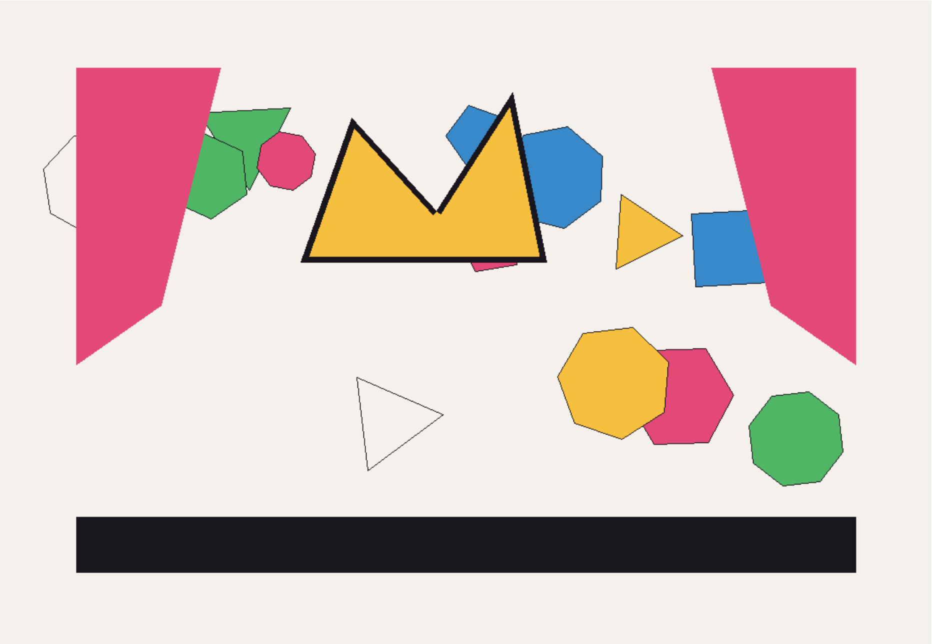

चित्र 34

संकर्षण: हौ गोनर। बड्ड ठकान ठकेलहुँ। कतओ पानि देखी तँ पैरके सड़ा दैत रही आ एहि जुत्ताकेँ हाथमे उठा लैत छलहुँ। चारिये दिनतँ पहिरने होएब। आइ जुत्ताक पूरा सोल, करेज जेकाँ, अपन एहि आँखिक सोझाँ जुत्तासँ बाहर आबि गेल।

गोनर भाइ: अहाँकेँ के ठकि लेलक। अहाँक नाम तँ बुझनुक लोकमे अबैत अछि।

संकर्षण: मित्र की कहू? क्यो बुझनुक कहैत अछि आकि एहि जुत्ताक बड़ाइ करैत अछि, तँ कोढ़ फाटय लगैत अछि। कोनहुना सिया-फड़ा कय पाइ ऊप्पर करब। बड्ड दाबी छल, जे मैथिल छी आ बुधियारीमे कोनो सानी नहि अछि। मुदा ई ठकान जे दिल्लीमे ठकेलहुँ तँ आब तँ ओतुक्का लोककेँ दण्डवते करैत रहबाक मोन करैत अछि। एहि लालकिलाक चोर-बजारक लोक सभ तँ कतेको महामहोपाध्यायक बुद्धिकेँ गरदामे मिला देतन्हि। अउ जी, भारत-रत्न बँटैत छी, आ तखन एहि पर कंट्रोवर्सी करैत छी। असल भारत-

रत्न सभ तँ लालकिलाक पाँछाँमे अछि, से एक दू टा नहि वरन् मात्रामे। मुदा साँच कहू गोनर, ठकान जुत्तामे नहि, हमर घमण्डमे लगल।

गोनर भाइ: भारत रत्न सभ!

संकर्षण: आन सभ तँ एहि घटनाकेँ लऽ कय किचकिचबैते रहैत अछि, कम सँ कम यौ भजार, अहाँ तँ एहि घटनाक मोन नहि पारू। (रुकि) मुदा जँ मोन पारबो, तँ कहब जे संकर्षण पहिल बेर अपन ठकानकेँ सत्कार नहि कहलनि।

दूरसँ कुकुरक भों-भों, ट्रेनक धड़धड़ाहटि, आ चोर-बजारक हाँक एक संग मिलैत अछि — नाटकक आरम्भिक तीनू ध्वनि एतय एकसाथ घुरि अबैत अछि, जेना संकर्षणक सम्पूर्ण यात्रा एक्कहि क्षणमे प्रतिध्वनित भऽ रहल हो। संकर्षण जुत्ता हाथमे लेने बैसल रहैत छथि; गोनर ओकरा देखैत छथि, हँसैत नहि — कारण ई आब हँसबाक क्षण नहि, बुझबाक क्षण अछि।

अंक ३ (उपसंहार) : सूत्रधारक अन्तिम शब्द

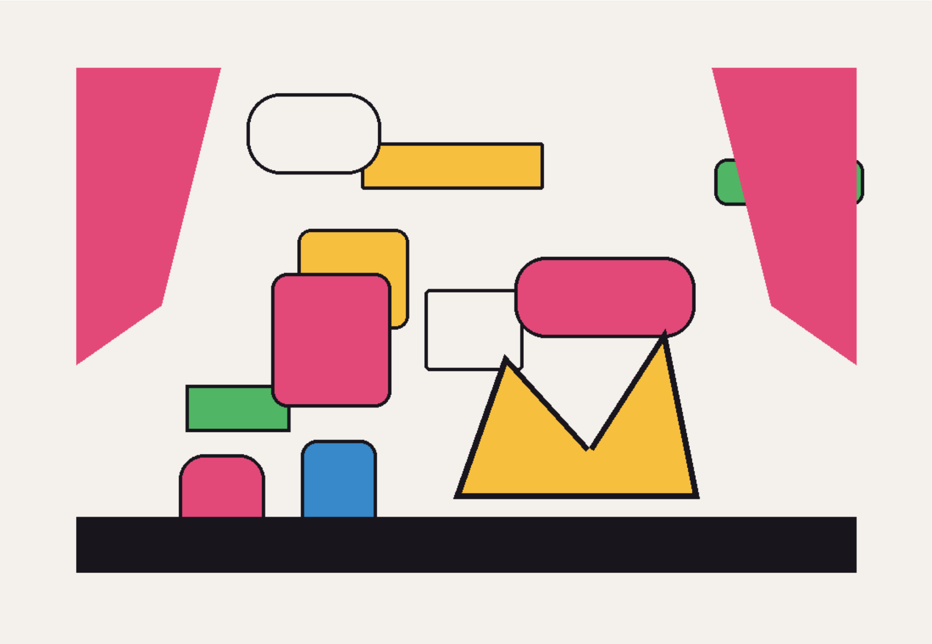

चित्र 35

(मंचपर धीरे-धीरे प्रकाश केन्द्रित होइत अछि सूत्रधारपर, जे अखन धरि छायामे ठाढ़ छला।)

सूत्रधार: संकर्षण केओ दूरक पात्र नहि — ओ हरेक गामक, हरेक शहरक, हरेक घरक कोनो ने कोनो कोनमे बैसल अछि। कलक्टरक चैम्बरमे, पसीझक काँटमे, कंठीक दण्डमे, गोबरक प्रश्नमे, दिल्लीक चोर-बजारमे — सभ ठाम ओ एक्के काज करैत रहला: चोटकेँ सत्कार कहब, ठकानकेँ बुधियारी कहब।

मुदा एहि नाटकक असली मोड़ ओतय अछि, जतय संकर्षण पहिल बेर अपन ठकानकेँ ठकान कहैत छथि — 'ठकान जुत्तामे नहि, हमर घमण्डमे लगल।' ई स्वीकृति छोट बुझाइत अछि, मुदा एहि एक्के वाक्यमे ओतेक साहस अछि, जतेक साहस भरि नाटकमे कतहु नहि देखल गेल।

चित्र 36

जे मनुक्ख अपन दंभकेँ चीन्हि लैत अछि, ओ पूर्ण रूपेँ हारल नहि होइत — ओ बदलएबाक पहिल डेग उठा चुकल होइत अछि। संकर्षणक कथा एतय अन्त होइत अछि, मुदा ओकर प्रश्न बाँकी रहि जाइत अछि दर्शकसभक लेल: हमरा सभक भीतरो कतौ कोनो संकर्षण नुकाएल त' नहि अछि, जे चोटकेँ सत्कार कहैत रहैत अछि?

(गीत जेकाँ फुसफुसाहटि) चोट भेटल आ सत्कार कहलहुँ, सोलकेँ प्रतिष्ठा कहलहुँ — आब पूछू अपने-आप, आइ हमहूँ कतए ठकाएल छी?

(पटाक्षेप।)

पटाक्षेप

VIDEHA

विदेह: प्रथम मैथिली पाक्षिक ई-पत्रिका | ISSN 2229-547X | www.videha.co.in

SANKARSHAN

A Five-Wave Maithili Play of Vanity, False Honour, and Self-Realisation

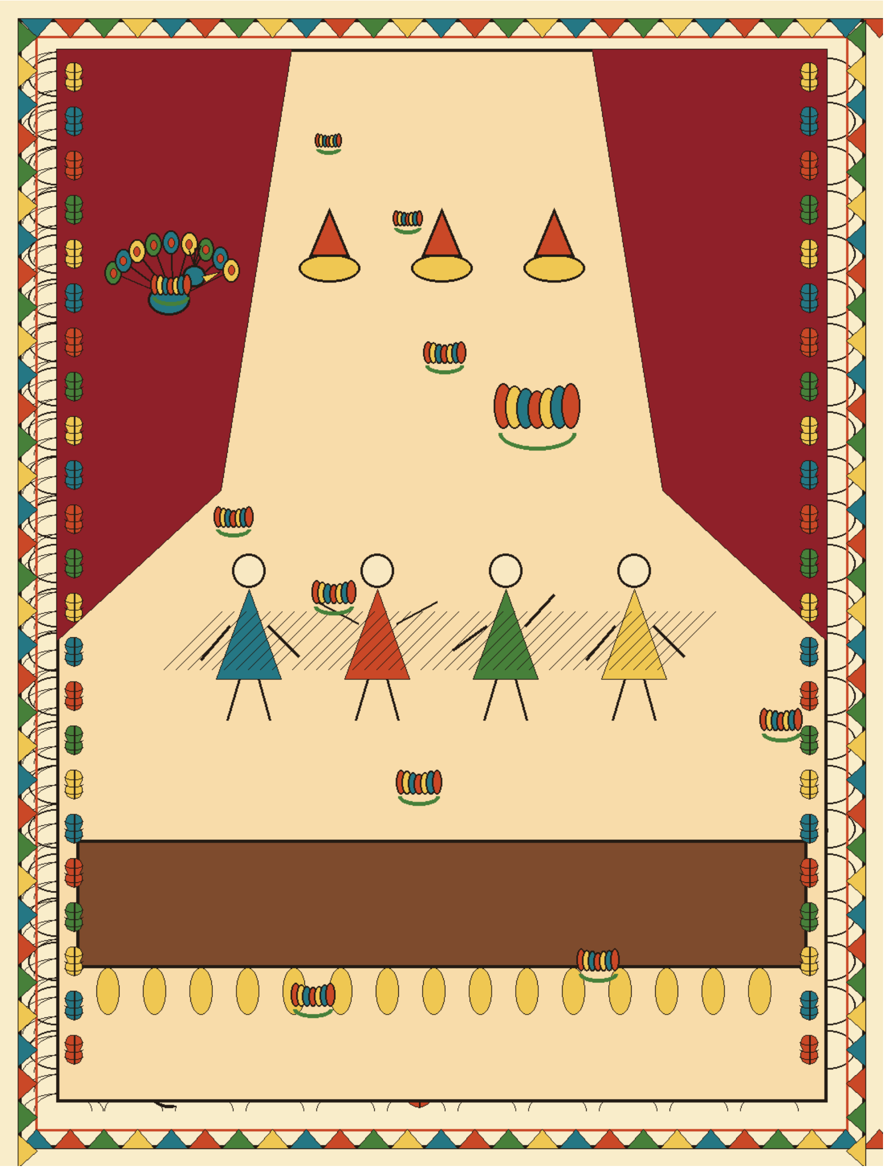

Gajendra Thakur

Editor, Videha: The First Maithili Fortnightly E-Journal (since 2000)

ISSN 2229-547X

PROLOGUE

Sankarshan is both performer and villain. His body bears a contrived, pitch-black, spectral appearance; yet the true darkness lies in the glitter of his vanity, fear, and lies. This play follows his journey from his village to Delhi. At every step, he calls his lies honour, his wounds prestige, and his fear cleverness. At the end of the journey, however, a shoe—a shoe with which he is cheated in Delhi's thieves' market—holds up to him the very mirror he has spent his life holding before others.

FIRST WAVE: THE SEED OF PRESTIGE

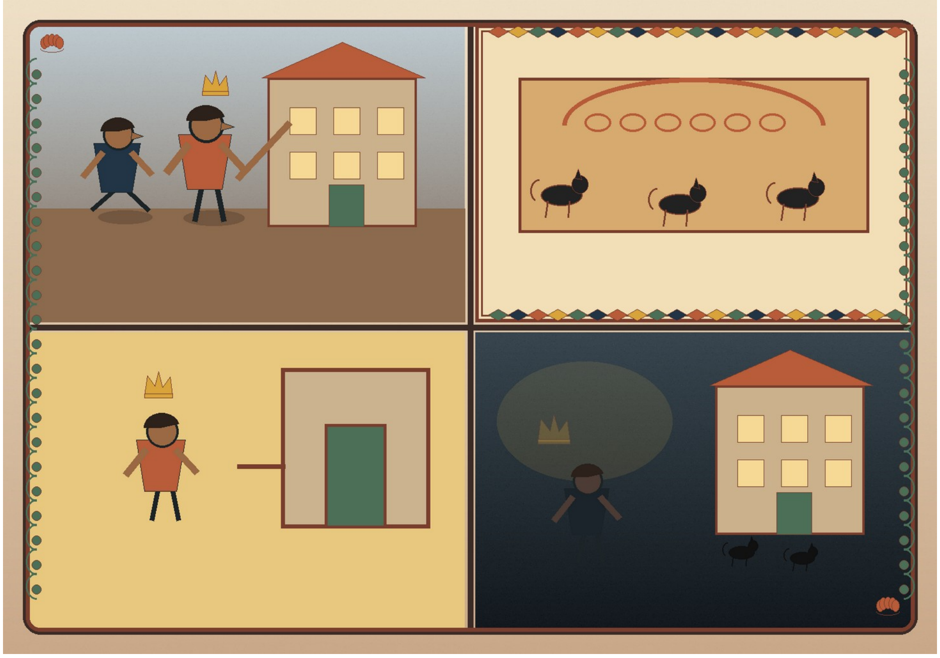

ACT 1: THE COLLECTOR EXCUSE

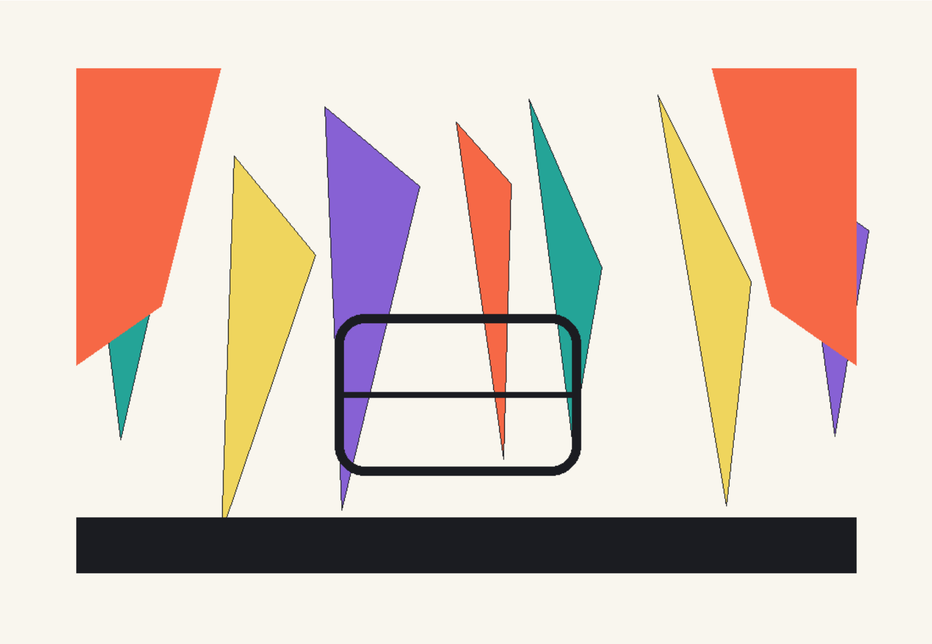

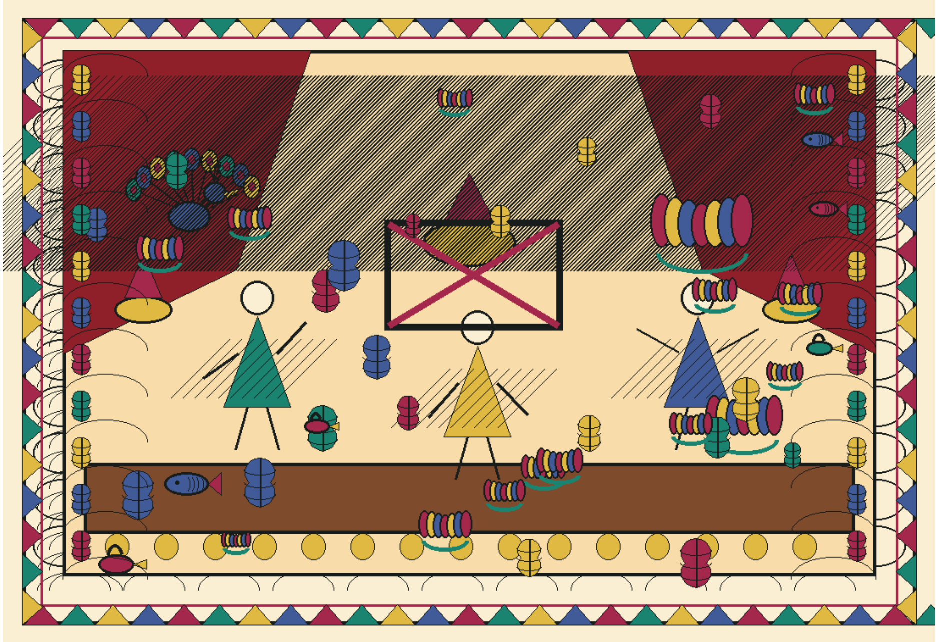

Illustration 1

The village and the nearby district office, where, in the villagers' eyes, the Collector sits as the greatest authority in the world. The distance between these two places—not geographical, but imagined—is the first character in this play.

Bhaskar is seated on the veranda of his house. Sankarshan approaches from the other side.

SANKARSHAN: Brother Bhaskar, I heard that some work of yours is held up.

BHASKAR: Yes, brother. A matter is stuck in the Collector's office.

SANKARSHAN: Whenever you need anything done, tell me. I sit with the Collector morning and evening. I remain there for hours. Whenever I get up to leave, he stops me, seats me again, and starts another conversation. (A short pause.) Only then will the people of this village understand who has influence—and how far it reaches.

BHASKAR: Very well, brother. I shall tell you if the need arises. I do not even know the Collector's name.

SANKARSHAN: He has a very long name—IAS Prashant. Now, who would dare ask him what IAS stands for? So everyone simply calls him Prashant.

BHASKAR: IAS is the abbreviation for the Indian Administrative Service. It cannot be part of his name.

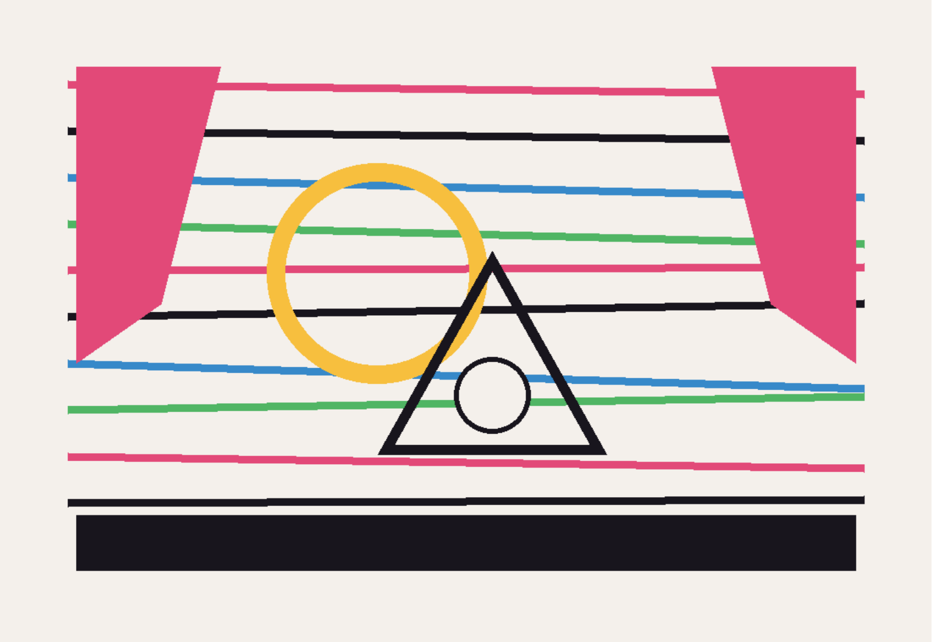

Illustration 2

SANKARSHAN: Ah, then that must be it. That is why it is written beneath his name on the nameplate—IAS.

BHASKAR: Very well, brother. I shall tell you if I need anything. (Softly.) First I must weigh whether I shall receive help or merely hear another story.

Sankarshan leaves. Bhaskar begins to recall what Sankarshan had said the previous year, when Bhaskar needed his help with another matter. As Bhaskar thinks, the scene shifts backwards to enact that earlier conversation.

BHASKAR (to himself): What a remarkable man. Last year, when I needed something, he kept saying...

SANKARSHAN: Why did you not tell me last year? Whose work have I not managed to get done? But this time there is no possible arrangement. You had never asked me for anything before, and now, when you finally have, I cannot manage it. That truly torments me.

Sankarshan leaves again. Bhaskar also starts to go, but Sankarshan immediately returns.

SANKARSHAN: Satyarthi's children are very difficult. They never once came back to visit me. And today, when they need something, they have come.

Sankarshan leaves once more. This repeated coming and going, this habit of returning with a newly invented excuse, is the first defining feature of his character. Every entrance brings a fresh imaginary prestige, and every exit leaves him a little greater—in his own eyes.

ACT 2: THE BENGALI GENTLEMAN'S LESSON AND THE COLLECTOR'S CHAMBER

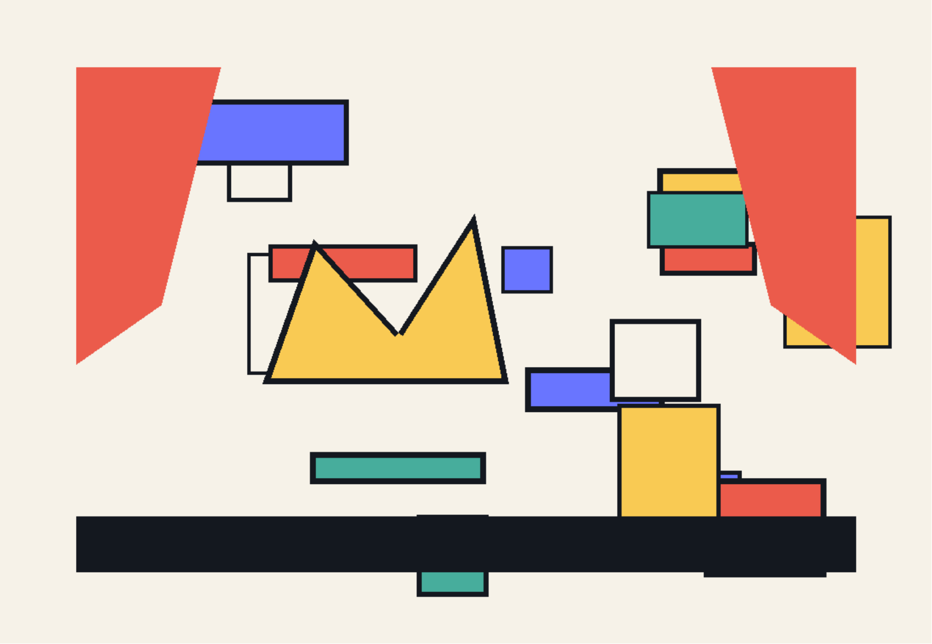

Illustration 3

An old memory rises in Bhaskar's mind. One day, with great affection, a friend of Bhaskar's father had said something wise to a Bengali gentleman in Bhaskar's presence.

FRIEND OF BHASKAR'S FATHER: (Showing Bhaskar to a Bengali gentleman.) Look, Dada. This is Bhaskar, the son of my dearest friend, Satyarthi.

BENGALI GENTLEMAN: But his son was very small.

FRIEND OF BHASKAR'S FATHER: This is the same boy. You saw him many years ago, when he was little; now he has grown up. I was saying that his father left nothing for him. My own father died in 1960, but in those days he left me twelve kathas of land in town, a house, and a scooter. Now, if this boy goes to someone for help, he will be asked, 'Why did you not come last year?' Behind his back they will say, 'He came only because he needed something.' People offer less help and demand more accounting.

BENGALI GENTLEMAN: That is wrong.

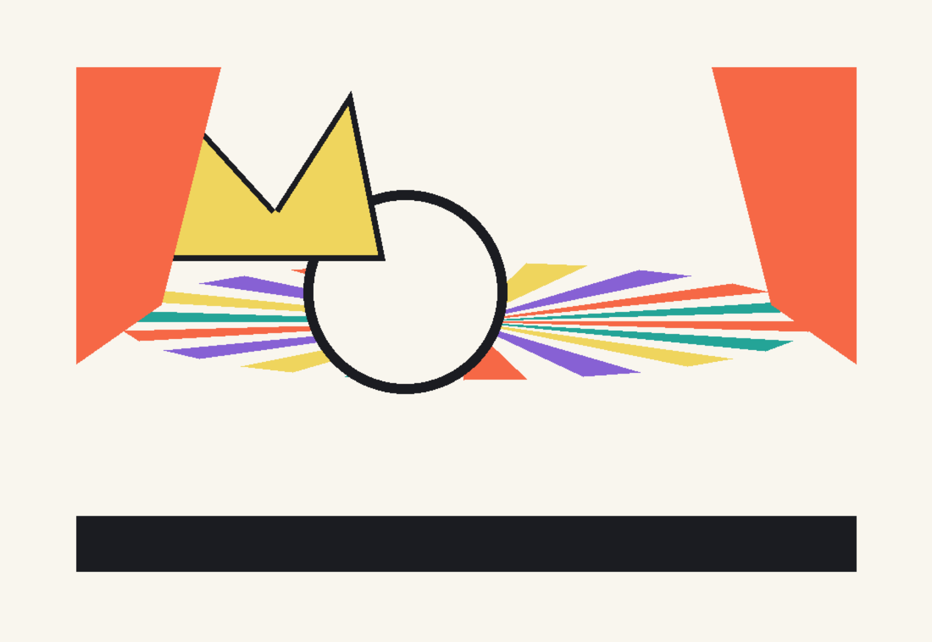

Illustration 4

FRIEND OF BHASKAR'S FATHER: But when the boy was in difficulty, you should have asked after him. You did not. Now that he has come to you, you speak in reverse. And if he does not come for help, manages the work himself, and that gentleman later hears of it, he will arrive as though bestowing a favour and ask, 'Was the work completed? Why did you not tell me?' The boy will answer, 'It was completed, by God's grace.' So, Dada, whenever someone comes to you with some work, understand that he has not come gladly. A problem has driven him to your door. Help him.

This lesson—that help is most necessary where a person cannot ask for it directly—settles in Bhaskar's mind. In time, unlike Sankarshan, he will put it into practice.

The scene changes to the Collector's office, inside the Collector's chamber. A stenographer sits outside. Papers rustle, a bell rings, and a typewriter clatters. Bhaskar is speaking with the Collector about a genuine matter, without display. Bhaskar's back is towards the audience; the Collector's face is visible. While they are still speaking, Sankarshan barges into the chamber—unannounced, without permission, relying on an intimacy that exists only in his imagination.

COLLECTOR: (Angrily ringing the bell on his desk.) Get out. Can you not see that a discussion is in progress?

Sankarshan withdraws and sits in the stenographer's room, silent and shrunken with humiliation. Some time later, when Bhaskar comes out, Sankarshan also emerges from the stenographer's room. Sankarshan's back is now towards Bhaskar, so they do not come face to face. Yet anyone in the village who hears of this scene will assume that Sankarshan is close to the Collector.

ACT 3: THE TALE OF THE THREE BLACK DOGS

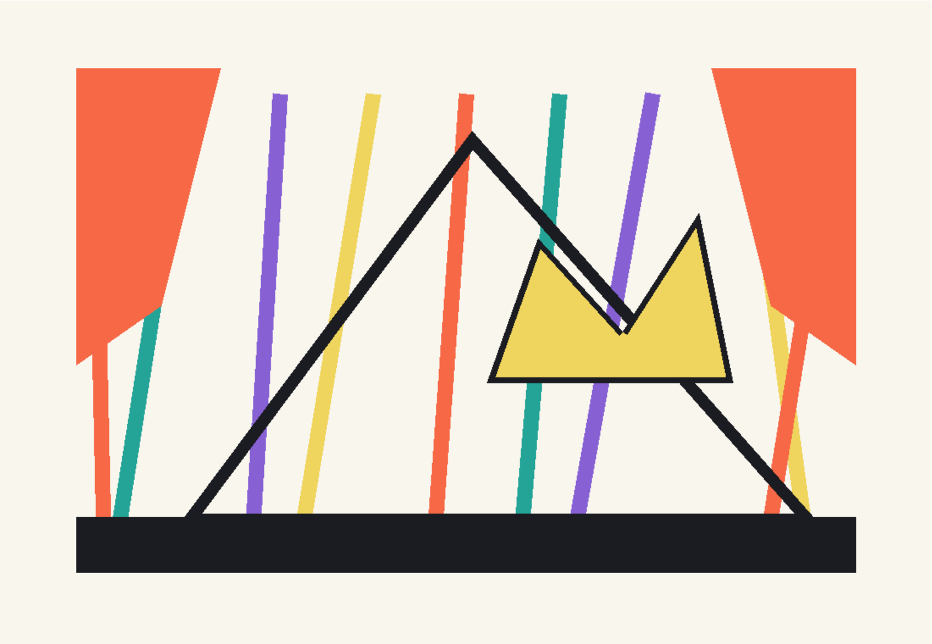

Illustration 5

The two men are seen arriving back in the village.

BHASKAR: Tell me, Sankarshan. Where are you coming from?

SANKARSHAN: Oh, what can I say? The Collector Sahib would not let me leave. That is why I was delayed. (Saving face.) Sometimes one must also endure the insistence of important people.

BHASKAR: Did you happen to meet his stenographer as well?

SANKARSHAN: No. Though the way out does pass through the stenographer's room. But those people freeze with fear in my presence.

Bhaskar can contain himself no longer. He begins telling Sankarshan the story of three black dogs, all identical in colour and appearance.

BHASKAR: Sankarshan, listen. I shall tell you a story. There were three black dogs, identical in colour and appearance. They decided to go, one after another, to Madhur's sweet shop and eat piping-hot jalebis. This is not a story about honour. It is about the sickness of calling an injury an honour.

The first dog reached Madhur's shop. The owner and his assistant were lifting jalebis from the hot oil with a skimmer. Seeing the dog enter, the owner hurled a scale weight at him. The poor first dog was badly hurt. But when he returned to his two companions and they questioned him, listen to what he said.

SECOND DOG: Well, brother? How was it?

THIRD DOG: You are coming back with such a swagger.

FIRST DOG: (Touching the wound on his back where the weight struck him.) Ah, what can I say? I received tremendous honour. They weighed out jalebis for me with their weights—large weights, small weights, every weight they had. They kept weighing and serving, weighing and serving.

SECOND DOG: Then why should I lag behind in receiving such honour?

The second dog cannot restrain himself and goes to Madhur's shop to receive his own honour. As all three dogs look identical, the shopkeeper thinks the same dog has returned. He is heating water.

MADHUR, THE SHOPKEEPER: (Throwing an entire vessel of boiling water over the dog.) Look, he has come back again! Last time I hit him with a scale weight. Since even that did not stop him, this was the only remedy left.

The poor dog runs for his life. When he returns, the third dog asks him:

THIRD DOG: What sort of honour did you receive?

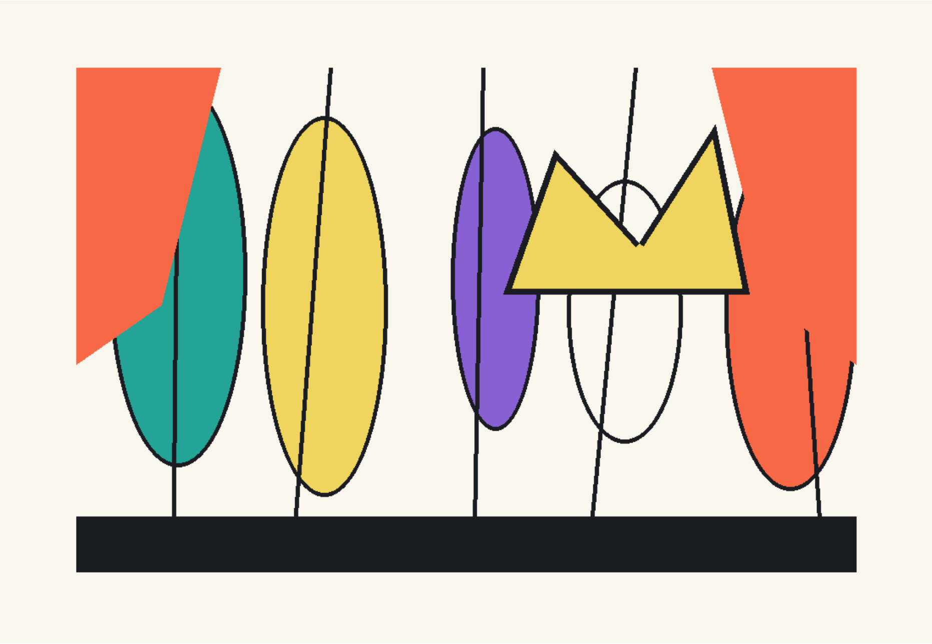

Illustration 6

SECOND DOG: What can I say? (Touching the scalded place on his back.) They fried piping-hot jalebis and fed them to me. The owner of Madhur's shop is a wonderful man. He kept frying them and feeding them to me, hot from the oil.

The third dog's mouth waters. He sets off to receive his own honour. At that very moment, a commotion breaks out at the shop: people are shouting that the Shiva lingam is drinking milk.

LUTTI JHA, THE SHOPKEEPER'S ASSISTANT: Lord Mahadev is drinking milk! Come, let us go and offer him some ourselves.

The owner and Lutti Jha leave for the temple. At that exact moment, the third dog enters the shop, and the two men pull down the shutter behind him. The poor creature is trapped inside. At the temple, the owner offers milk and watches it all flow away through the drain.

MADHUR, THE SHOPKEEPER: (Thinking.) God drank milk from everyone else's hand. But if I tell people he did not drink from mine, they will say I am a sinner and that is why God refused me.

MADHUR, THE SHOPKEEPER: Yes, Lutti Jha. I have lived such a respected life. If Mahadev drank from everyone else's hand, he certainly drank from mine too.

The two return and open the shop. Once again they see the black dog. Rage surges through the owner's entire body.

MADHUR, THE SHOPKEEPER: Lutti Jha, do not let him escape. Two visits were not enough for him. Bring a rope. Bring a stick.

They tie the dog with the rope and beat him thoroughly with sticks. At last, the poor animal somehow slips free and limps back towards the village, where the first and second dogs are waiting.

FIRST DOG: You took so long. What honours did they shower upon you?

THIRD DOG: Enormous honour! They would not let me come away. They kept saying, 'Eat more, eat more.' I barely escaped with my life, saying that I could eat no more or my stomach would burst. (Limping.) Can you not see that I can scarcely walk?

The three dogs leave, carrying their wounds. Bhaskar and Sankarshan face each other once again.

BHASKAR: You heard the story, Sankarshan. When the Collector was driving you out, I was the man sitting before him. My back was towards you, so you did not see me. Then you sat for a while in the stenographer's room. When you came out, people might well have assumed that you were close to the Collector. But calling a wound an honour does not heal it.

SANKARSHAN: (Hiding his shame.) Bhaskar, do not tell the village what you saw. People listen to tales of honour, not humiliation.

Sankarshan remains seated with his head bowed.

BHASKAR: Come. Let us make a puffed-rice snack.

The two begin eating together. This quiet moment of friendship, free of all display, gently closes the play's first wave.

SECOND WAVE: THE LIE TAKES ROOT

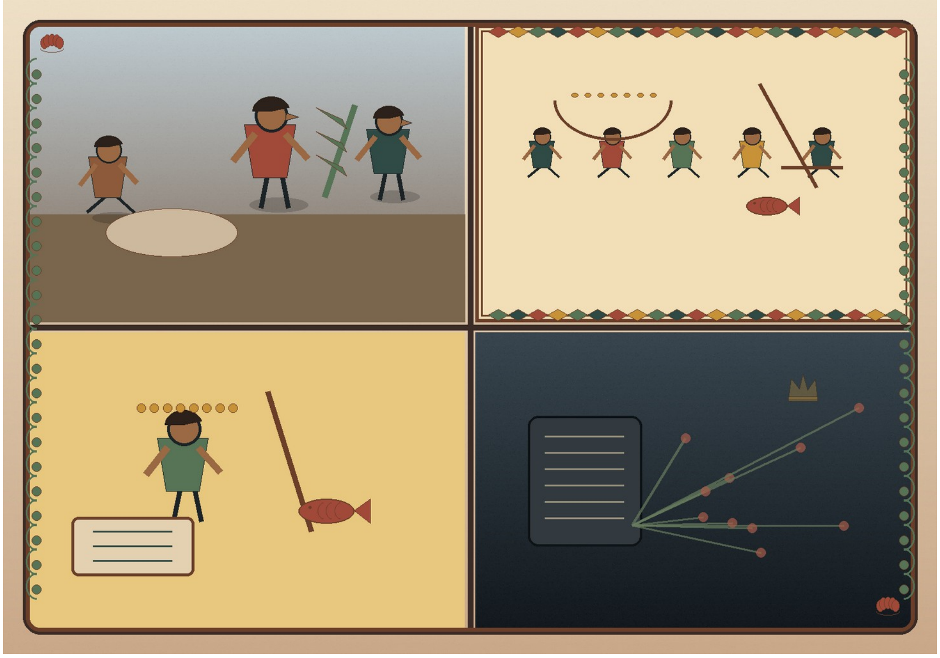

ACT 1: THE VANITY OF THE PASIJ THORN

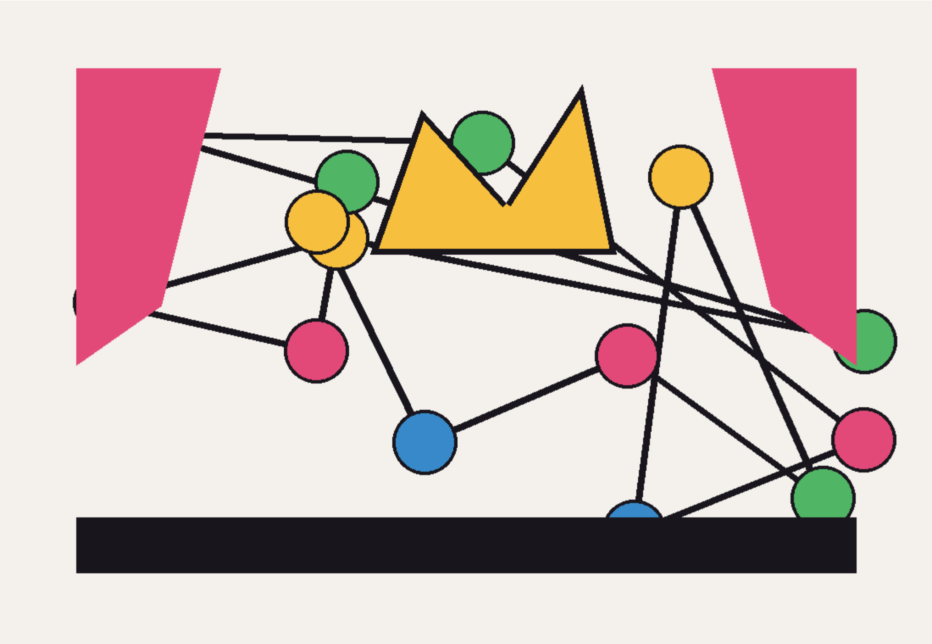

Illustration 7

An old village setting. Jairam runs in. A child's moans, the alarmed voices of women, and a dog barking in the distance are heard behind him. Sankarshan stands before him.

JAIRAM: Sankarshan! Thank goodness I found you. I was going to Nitya Kaka, but it would take too long to reach him. The little one is terribly ill. Fever, vomiting, and diarrhoea have all begun at once.

SANKARSHAN: Nonsense, you fool. Give the child the juice of the pasij thorn. I am going towards the grazing ground to tend the buffaloes. Do not worry. It is a powerful medicine—one dose and every illness is finished. (Boastfully.) Physicians look in books. I understand merely by looking at the symptoms.

Sankarshan exits one way and Jairam the other. Then Nitya Kaka enters from one side as Jairam enters from the other.

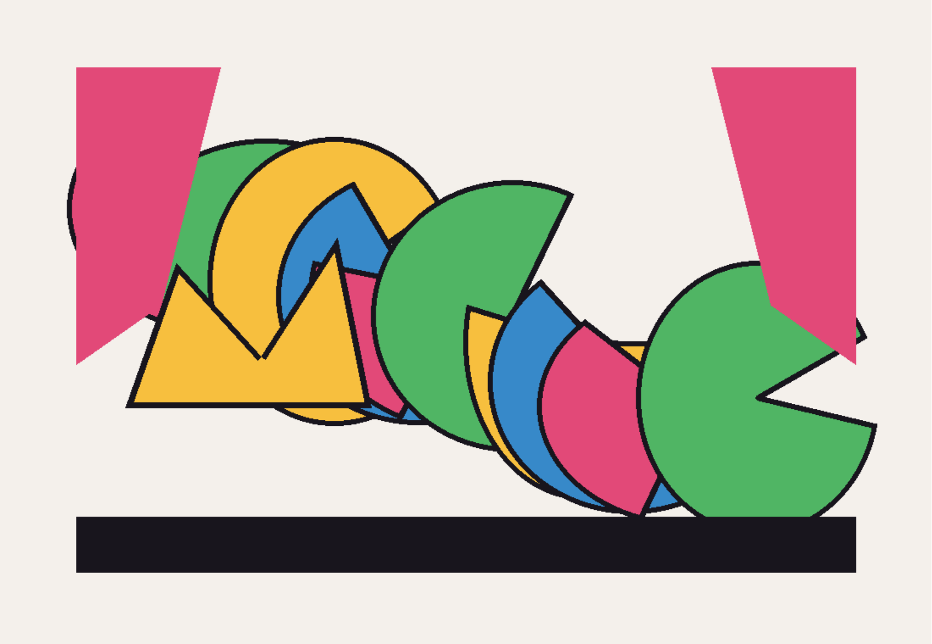

Illustration 8

NITYA KAKA: Jairam, what are you bringing from the field boundary?

JAIRAM: What can I say, Kaka? The little one has fever, vomiting, and diarrhoea all at once. Sankarshan said that if I gave the child the juice of the pasij thorn, every illness would end. I went to fetch it.

NITYA KAKA: Sankarshan is a dangerous fool. Last year he poured the juice of the pasij thorn into the pond and killed every fish in it. If you give that poison to the child, the illness will not improve—the child will die outright. For one who knows nothing, even silence can be medicine. Come, let us go to the pharmacy. I shall get medicine for the child.

The two leave with understanding and patience—the opposite of Sankarshan's blind vanity.

ACT 2: THE VILLAGE COUNCIL'S PUNISHMENT

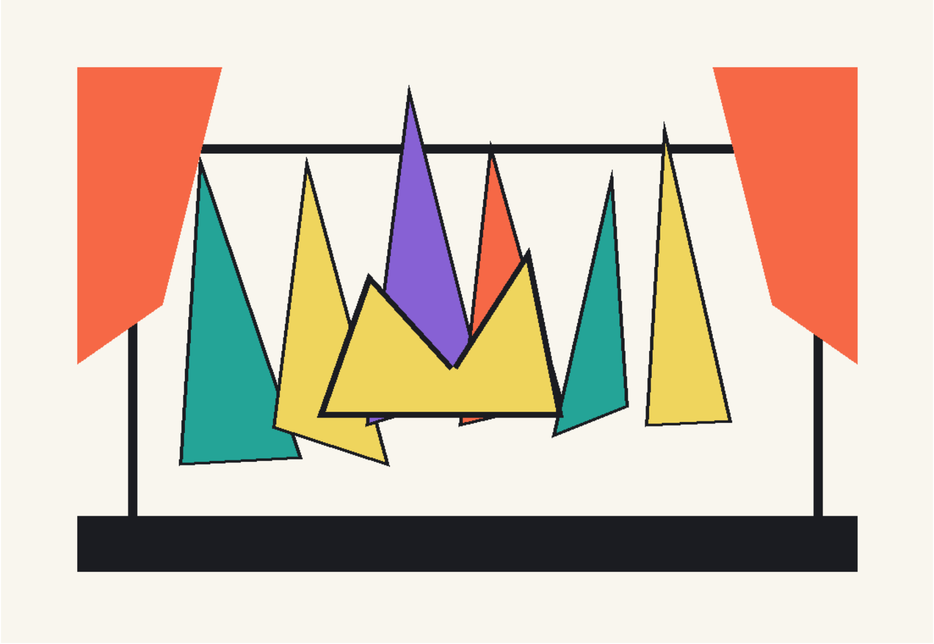

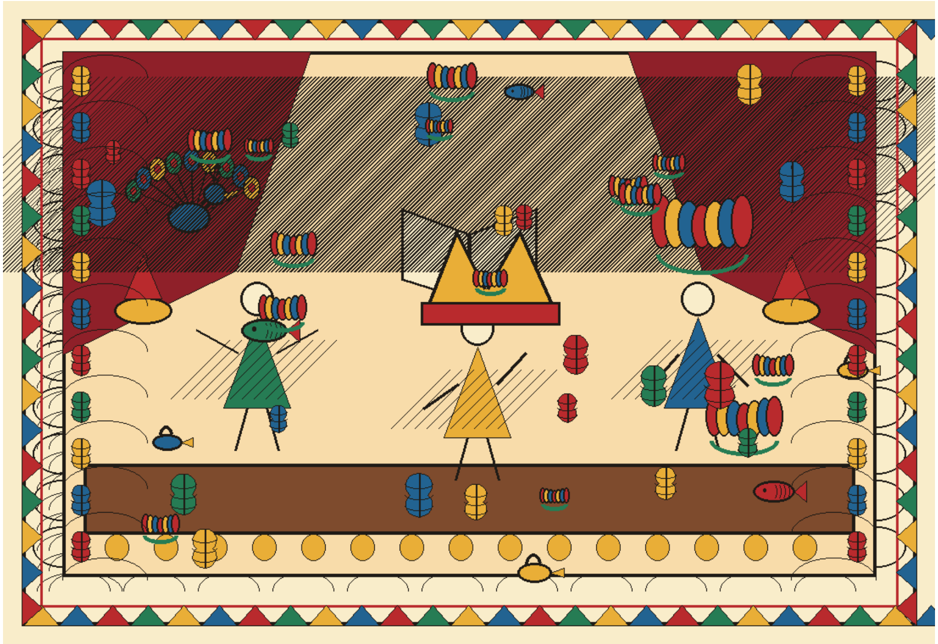

Illustration 9

Sankarshan is seen sitting on a buffalo's back at the grazing ground. Another buffalo herder approaches from the village.

SANKARSHAN: Brother, are you coming from the village?

BUFFALO HERDER: Yes, brother.

SANKARSHAN: I thought I heard wailing from Jairam's neighbourhood.

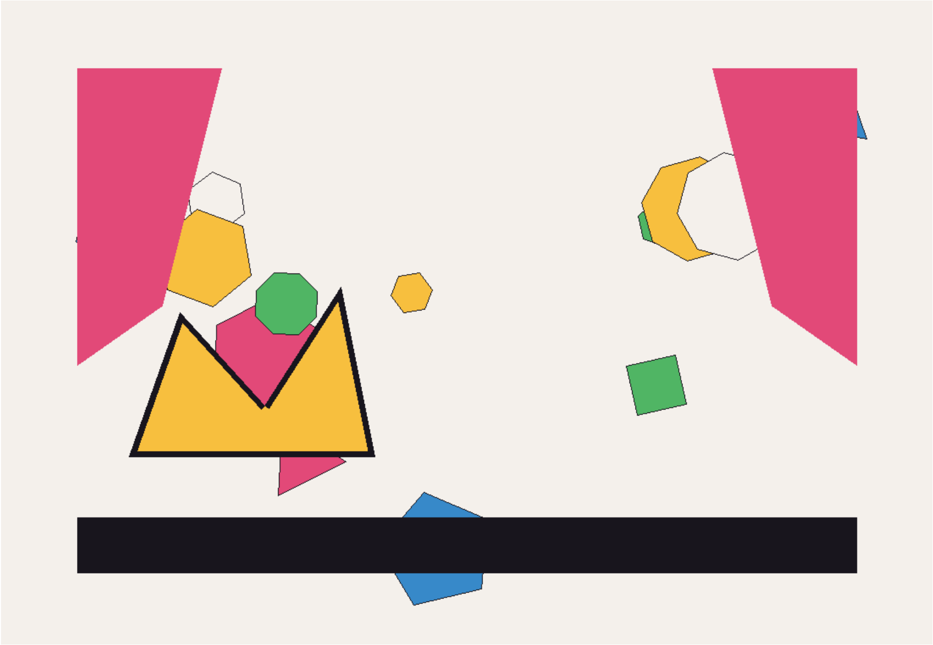

Illustration 10

BUFFALO HERDER: Not wailing. The village council is sitting at the shrine of the guardian spirit. I have come to summon you.

The buffalo herder takes Sankarshan before the council. Everyone condemns and jeers at him. A noisy uproar follows, and the council imposes a fine.

SANKARSHAN: I admit my fault. From today I shall wear the kanthi. I shall pay the fine by tomorrow evening as well. (Softly.) Words released by the tongue can sometimes strike harder than a blow from a hoe.

For the first time, Sankarshan's vanity produces a concrete consequence: he must take the kanthi and pay a fine. Whether the lesson reaches his heart or remains only on his lips will soon become clear.

ACT 3: SACRED BEADS AT THE NECK, A HOE IN THE HAND

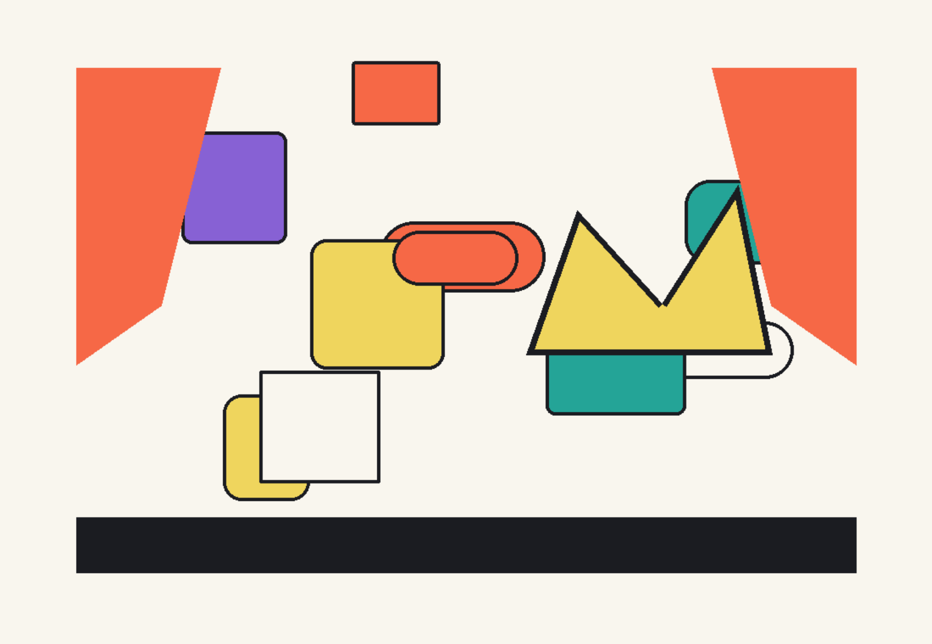

Illustration 11

At daybreak, Sankarshan sets out for the fields carrying a hoe and a basket. A light drizzle is falling. He sees a large rohu fish thrashing at the edge of the water and strikes it with the hoe. The fish is cut into two pieces. The kanthi hangs around his neck, while the hoe remains in his hand; the contradiction is unmistakable.

SANKARSHAN: Well, look at that! Leave the other work—we are going straight home now.

Sankarshan places both pieces in the basket, lifts it onto his head, and starts towards the village. His contemporary, Gonar, sees him and stops near the place known as Baba Dogahi at the village entrance.

GONAR: (Thinking.) How can I get that rohu from our Vaishnav gentleman? (Aloud.) Brother Sankarshan, what have you done? You have become a Vaishnav, yet you are carrying fish.

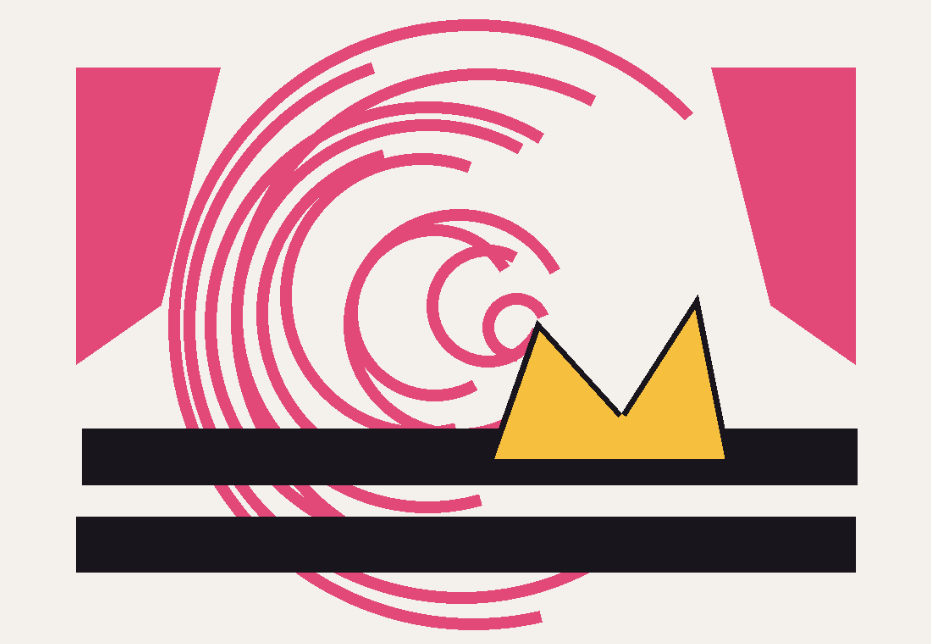

Illustration 12

SANKARSHAN: O Gonar! You may be my equal in age, but how did I become your brother? Do you not know that the place where you are standing is called Baba Dogahi? Even a child born here is a 'Baba' in relation to the people of the village. First understand the rules of kinship; then ask your question.

GONAR: You are quite right, Sankarshan. But what I was saying was...

SANKARSHAN: (Cutting him off.) I gave up eating fish, not killing it.

Gonar leaves with a baffled face. Sankarshan's kanthi has not bound his tongue. Making a vow and keeping it are two different things, as this brief scene makes plain.

ACT 4: FEAR OF THE TELEPHONE DIARY

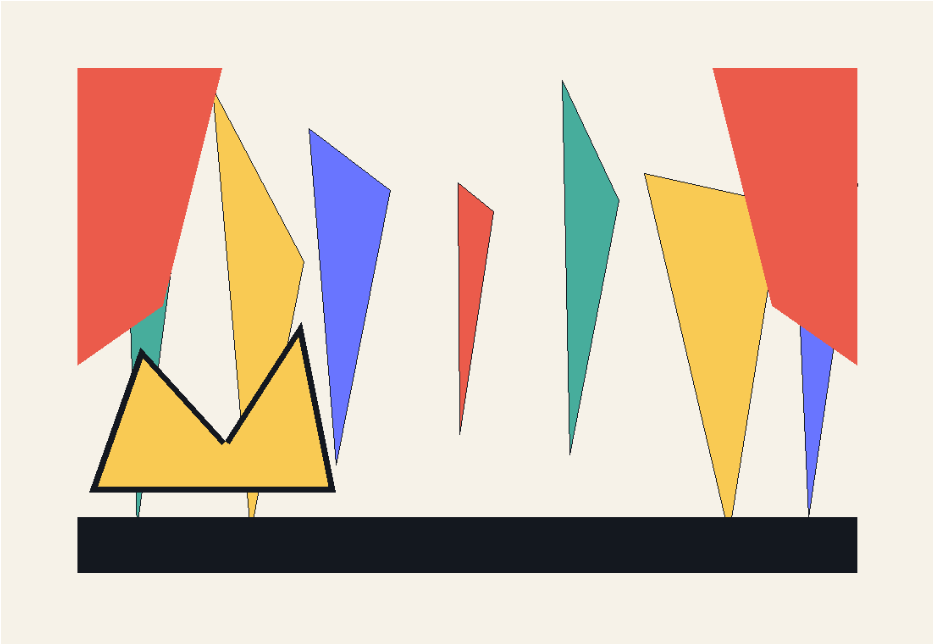

Illustration 13

Gonar Jha is looking through a telephone diary.

SANKARSHAN: What are you looking at?

GONAR JHA: I have written down telephone numbers in this diary. I am searching for one of them.

SANKARSHAN: And what if the police stop you somewhere on the road and ask what you are carrying?

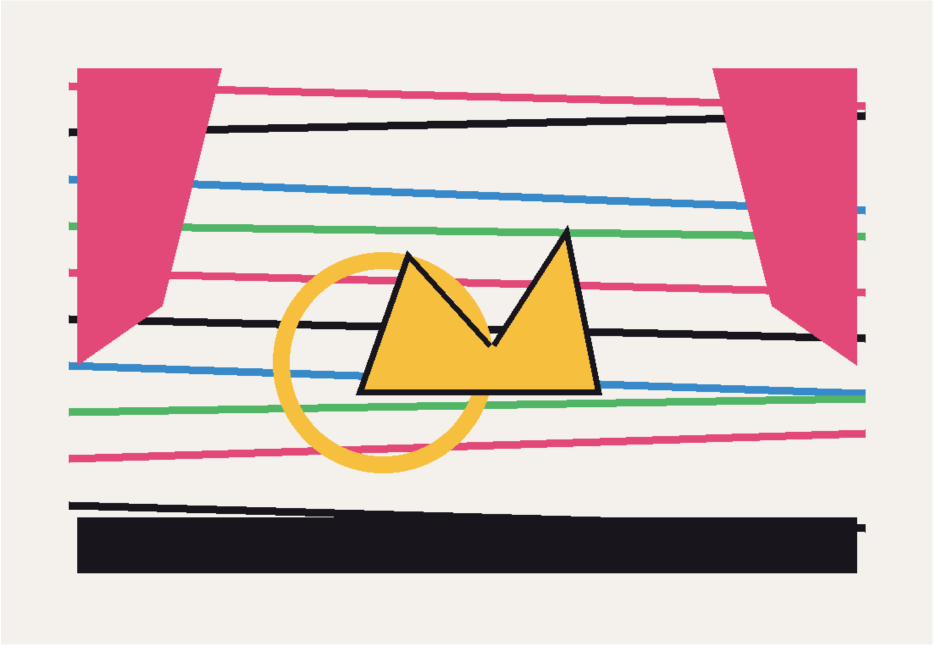

Illustration 14

GONAR JHA: What are you saying? Is a person not even allowed to keep telephone numbers?

SANKARSHAN: That is true. But if they ask why you have so many numbers, and you cannot answer, will the police not take you for a terrorist and put you in prison? Your name will appear in the newspapers. Then you will understand.

GONAR JHA: How could they arrest me for that? (Frightened.) I shall tear this diary into pieces and throw it away at once.

Gonar tears the diary to pieces and throws it away. Sankarshan's baseless but confident words turn even an innocent man's ordinary habit into a source of fear. His speech—though he himself cares nothing for its consequences—can deeply affect another person's life. This is the final lesson of the second wave.

THIRD WAVE: THE MARKET OF MARRIAGE AND BOASTING

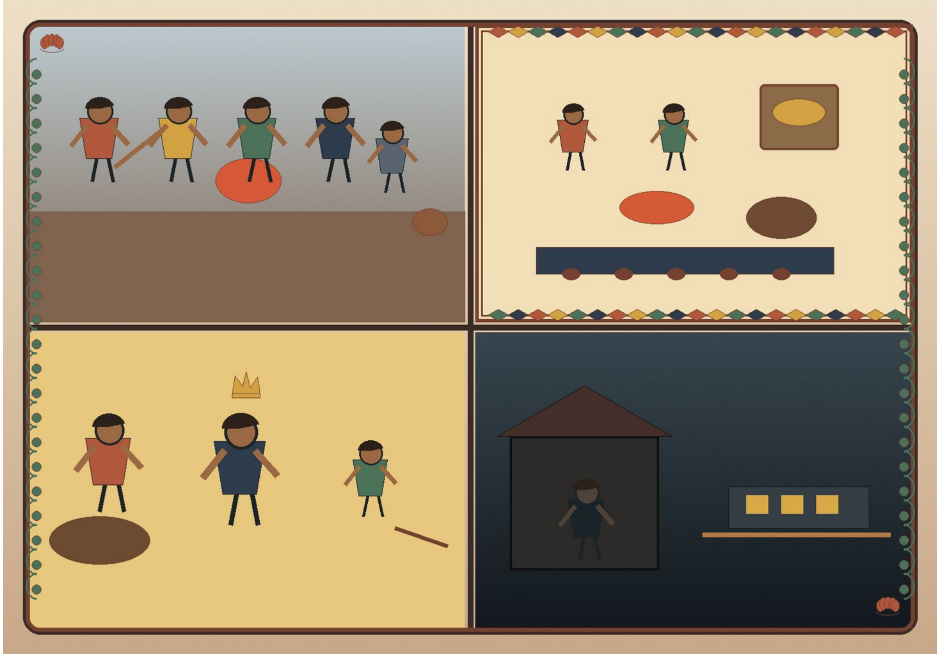

ACT 1: THE MATCHMAKER'S SILKEN PRAISE

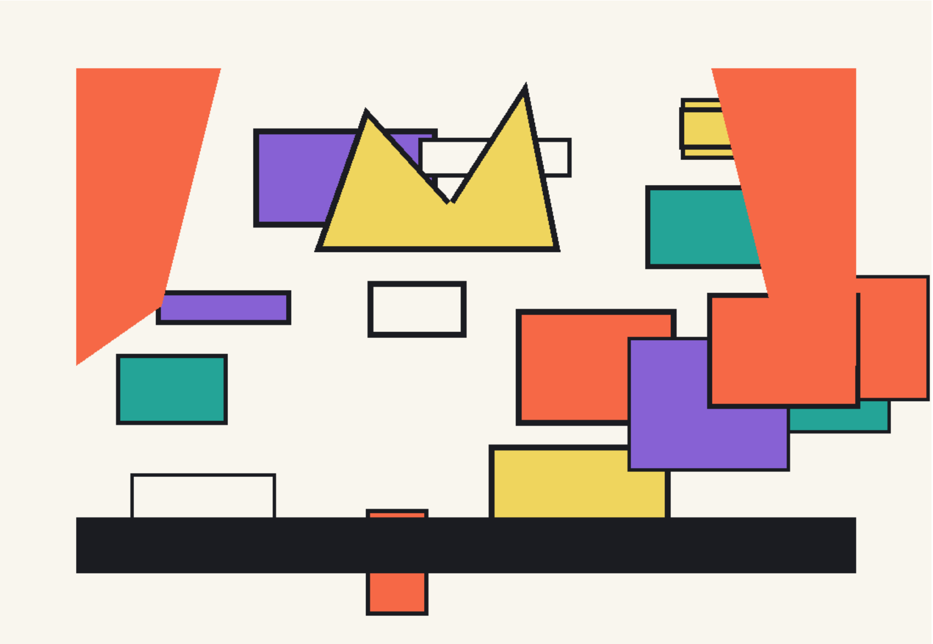

Illustration 15

Sankarshan's father sits on the veranda. A matchmaker is finishing a generous serving of flattened rice, curd, and sweets.

MATCHMAKER: People fail to notice the glow on the young man's face. Sankarshan is lustrous black, not dull black. He is radiant.

SANKARSHAN'S FATHER: Bring him another sweet.

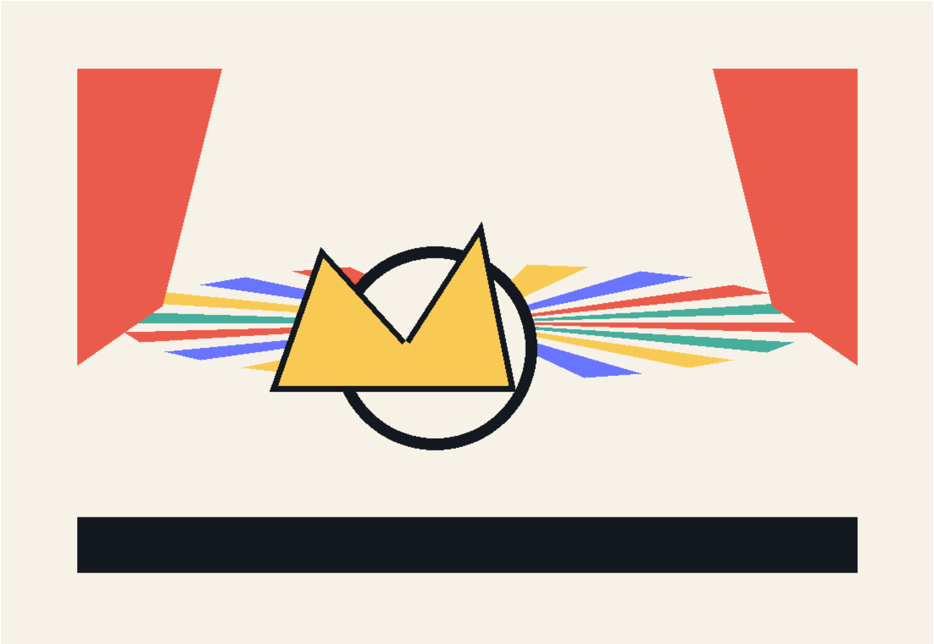

Illustration 16

MATCHMAKER: Yes, give me one. Families with daughters will form a queue. Do not become impatient.

The matchmaker leaves. Another arrives, makes similarly flattering suggestions, and goes. Such smooth praise—which can turn even dark skin into gold—spreads through Sankarshan's family the same hunger for prestige that Sankarshan spreads outside it.

SANKARSHAN'S MOTHER: A prospective bride's family is coming today. Lal Kaki telephoned from Delhi.

SANKARSHAN'S FATHER: Then keep sherbet ready. It seems all the kagzi lemons have been used up serving sherbet to matchmakers. See whether any jambiri lemons remain on the tree. Even the lemons have grown tired of hearing Sankarshan praised.

ACT 2: RETURN FROM THE IN-LAWS AND THE VANITY OF COMPLEXION

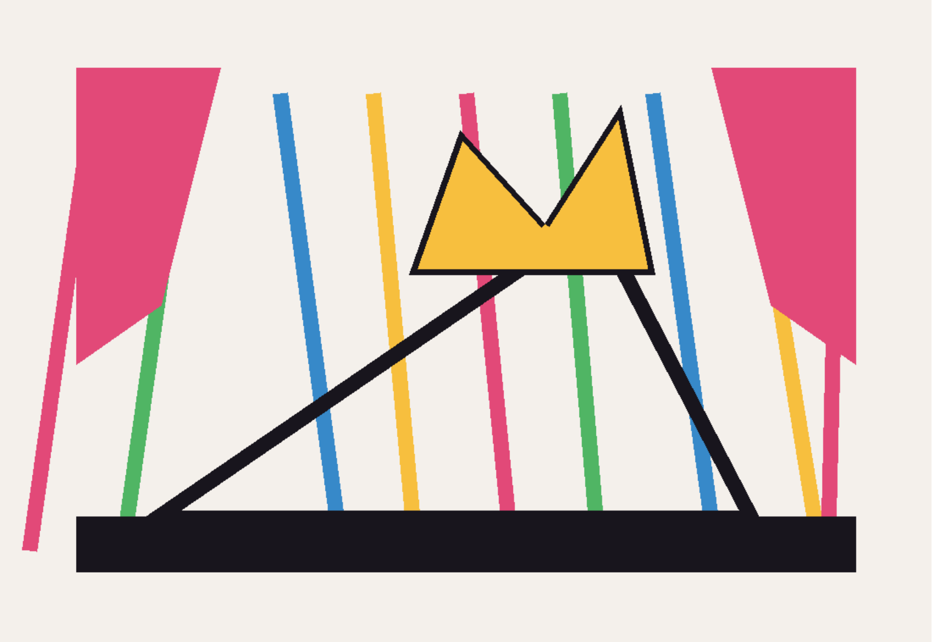

Illustration 17

Sankarshan appears to have just returned from his in-laws' home. He has put on some weight. He meets Gonar on the road.

GONAR: My friend, what is your bride like? You liked her, did you not?

SANKARSHAN: Yes, yes, Brother Jagannath. She is very beautiful. Have you seen Hema Malini? Exactly like her. (A short pause, protecting his prestige.) Though her complexion is a little darker than mine.

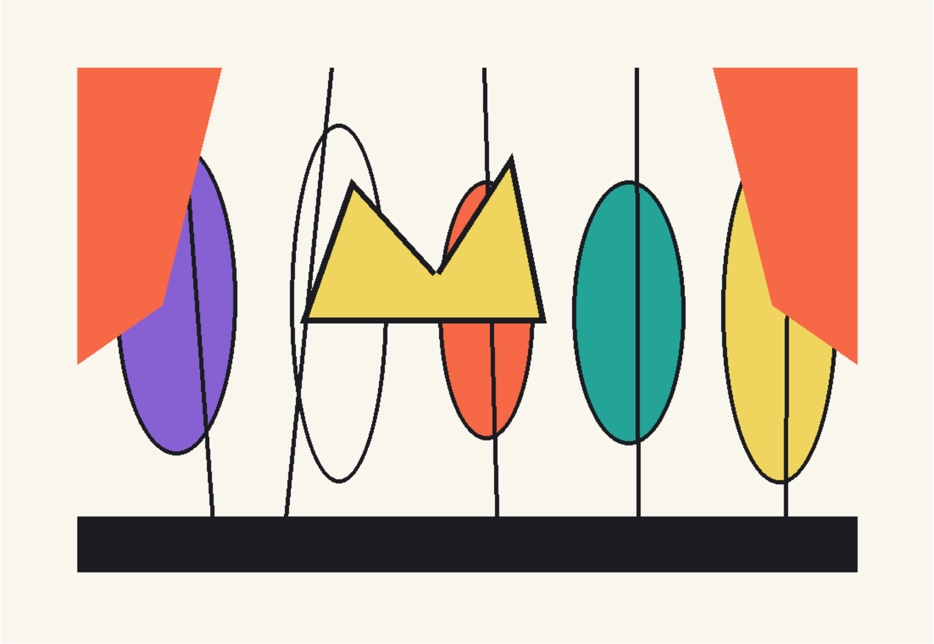

Illustration 18

GONAR: I see.

SANKARSHAN: But her complexion is a little darker than mine.

Gonar's mouth falls open. Sankarshan's habit of placing himself above everyone else in every sentence—even when speaking of his wife's beauty—reveals the depth of his vanity.

ACT 3: THE QUESTION OF DUNG AND INDULGENCE

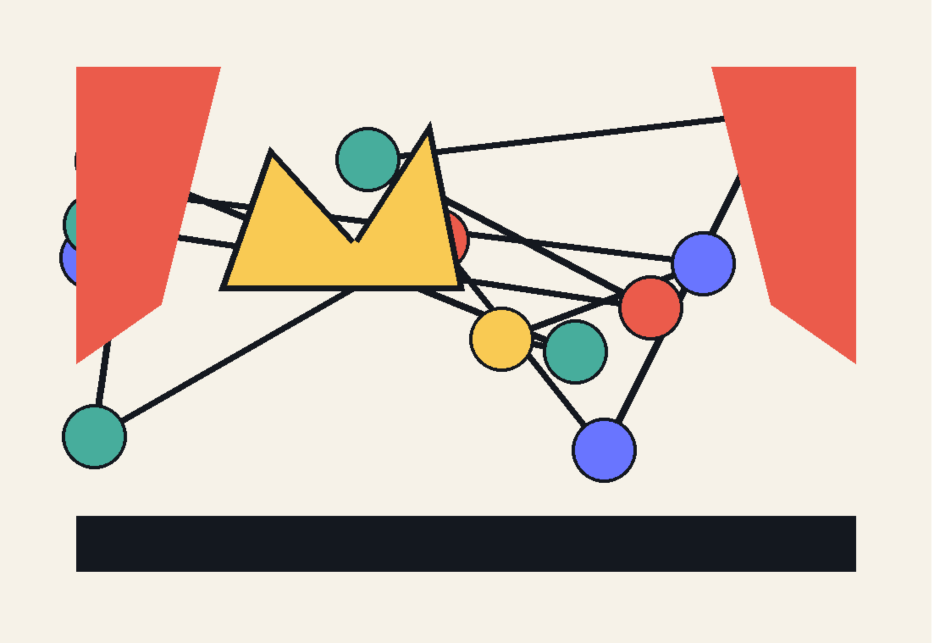

Illustration 19

Sankarshan is walking towards the pond with a water pot in his hand. Gonar is clearing cow dung. Gonar's wife stands nearby.

GONAR: My friend, do you people also have to clear dung early in the morning, as I do?

Sankarshan notices Gonar's wife standing beside him. If he answers now, he may embarrass her, so he walks on without speaking. When he returns, he meets Gonar alone, and the conversation resumes.

SANKARSHAN: Brother, in those days one had to pay money for a marriage. You must have had to pay as well. That must be why you married at an older age.

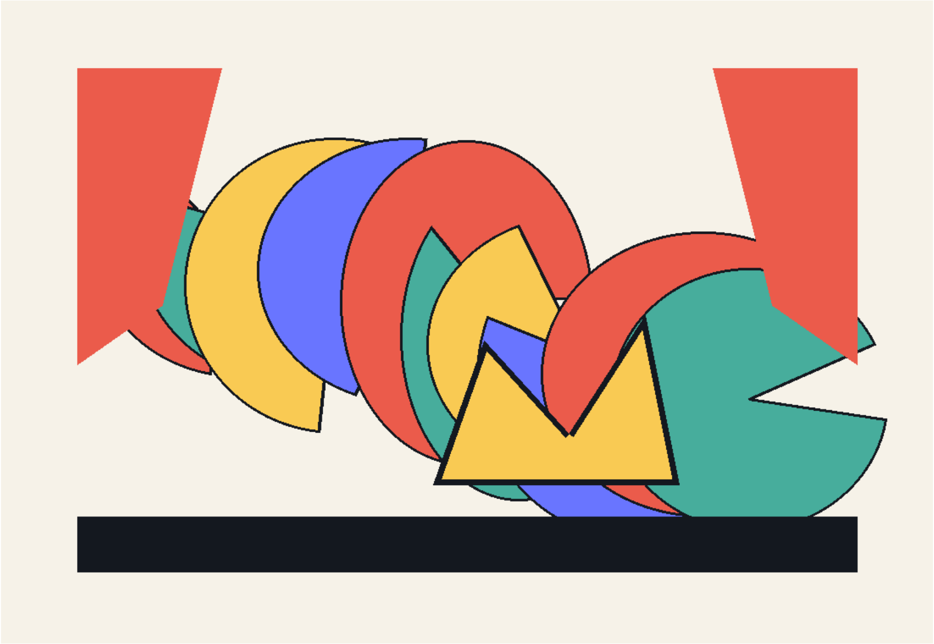

Illustration 20

GONAR: Yes, money certainly had to be paid.

SANKARSHAN: But we did not have to pay anything. That is why I do not have to clear dung either—my wife is not so pampered, you see.

SANKARSHAN'S WIFE: (Offstage.) The household runs because I am not pampered. The day I become pampered, who will clear away the dung of your vanity?

That single sentence—the wife's voice from offstage—holds a mirror to Sankarshan's entire vanity. Yet he hears it and pretends not to, as though his ears were made only for praise.

ACT 4: JAGGERY TEA AND JAGANNATH'S SUGARCANE

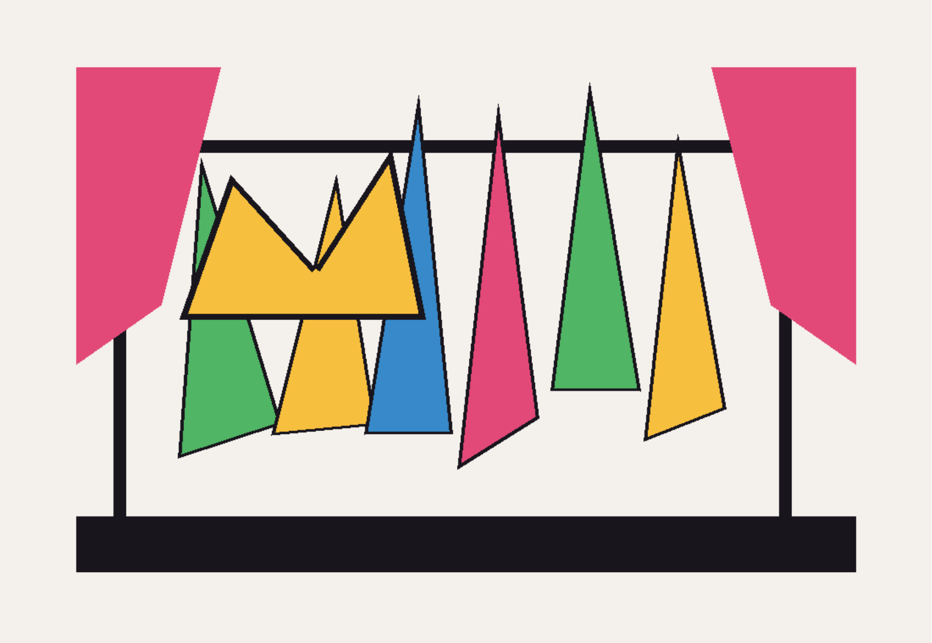

Illustration 21

GONAR: Jaggery is very good for a cold; it clears the congestion. Drink tea with jaggery, my friend.

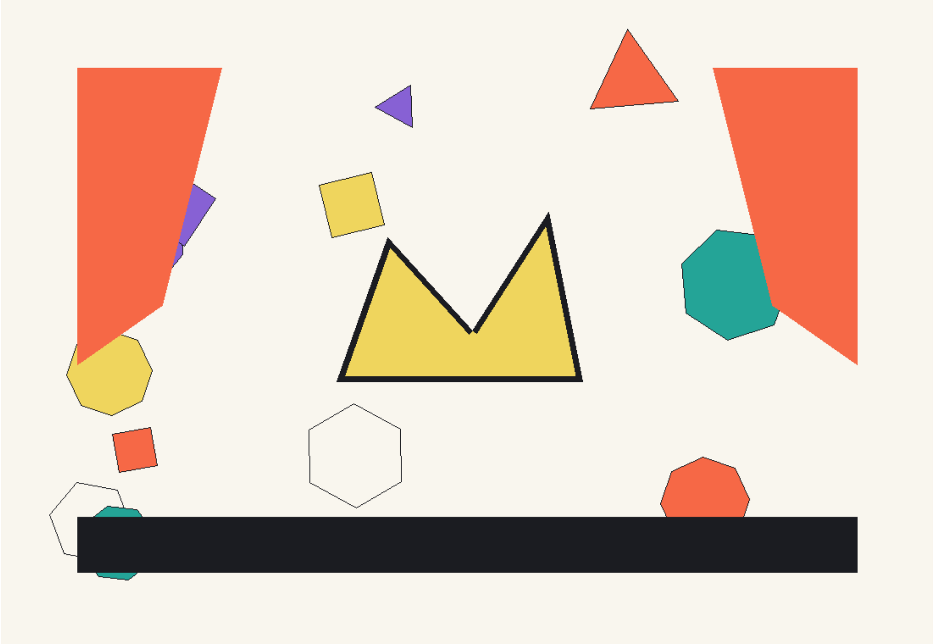

Illustration 22

SANKARSHAN (aside): A few days ago, Gonar said that at a pilgrimage he had renounced 'jomni', and therefore he continued to eat 'jom'. What harm was there in that? Push an argument too far and the whole meaning drowns. (Aloud.) When I went to Lord Jagannath at Puri last year, I had to give up one fruit, so I gave up sugarcane. Jaggery is made from sugarcane. Give me tea made with that thin Russian beet sugar instead.

Gonar's mouth falls open. Every argument Sankarshan makes—however absurd—stands before him as truth, because Sankarshan himself believes it. Fifteen years pass. Both men are now older.

ACT 5: THE SON RUNS AWAY

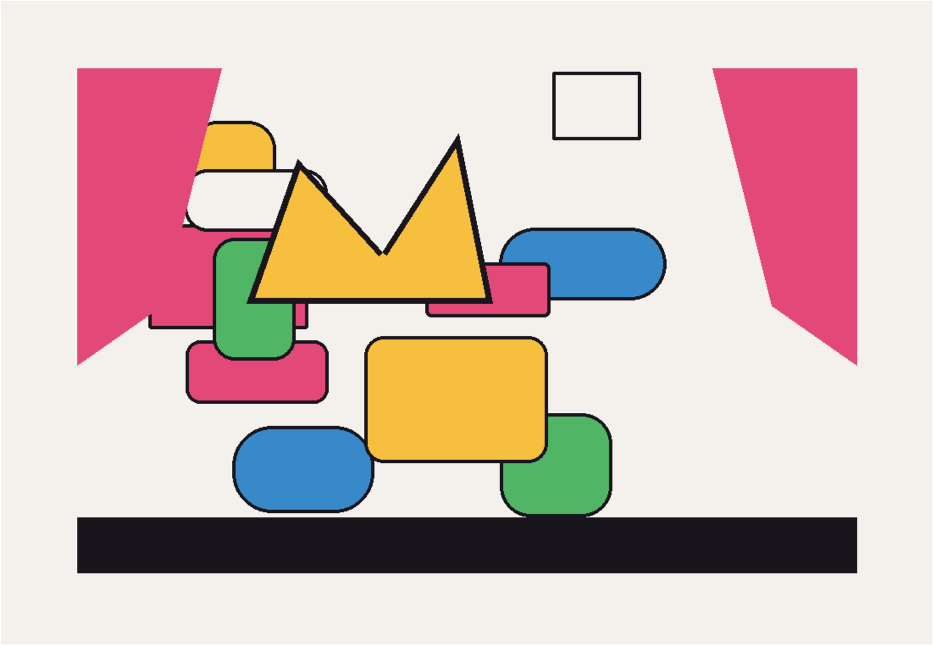

Illustration 23

SANKARSHAN: People! Listen, everyone! Lal Kaka arranged my marriage, but he never told me that marriage also produces a son. My grown son has run away from home. What shall I do now? (For the first time, in a weary voice.) I spent my life teaching everyone else, yet I could not teach my own son the road home.

GONAR: Most likely he has gone to Delhi. Everyone who runs away goes there.

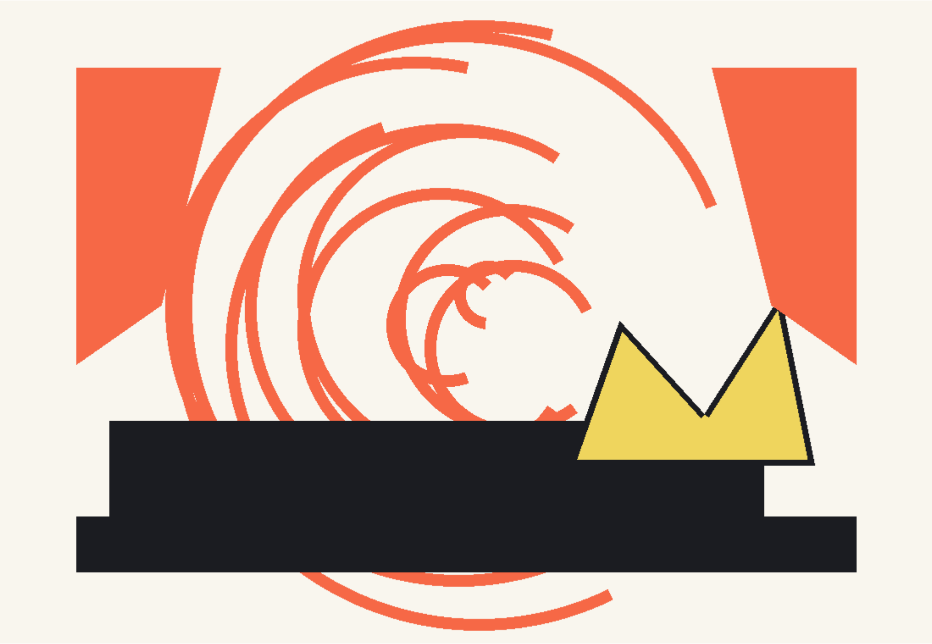

Illustration 24

SANKARSHAN: Now I too must take the road to Delhi—to search for my son, and, if I do not find him, to look for a job for myself.

For the first time, Sankarshan's voice carries exhaustion rather than vanity. The man who spent his life instructing others now stands before the emptiness within his own home. Amid a train whistle, the press of a crowd, and the noise of an unknown city, he leaves for Delhi—alone, and for the first time without the support of any imagined prestige.

FOURTH WAVE: THE CITY'S MIRROR

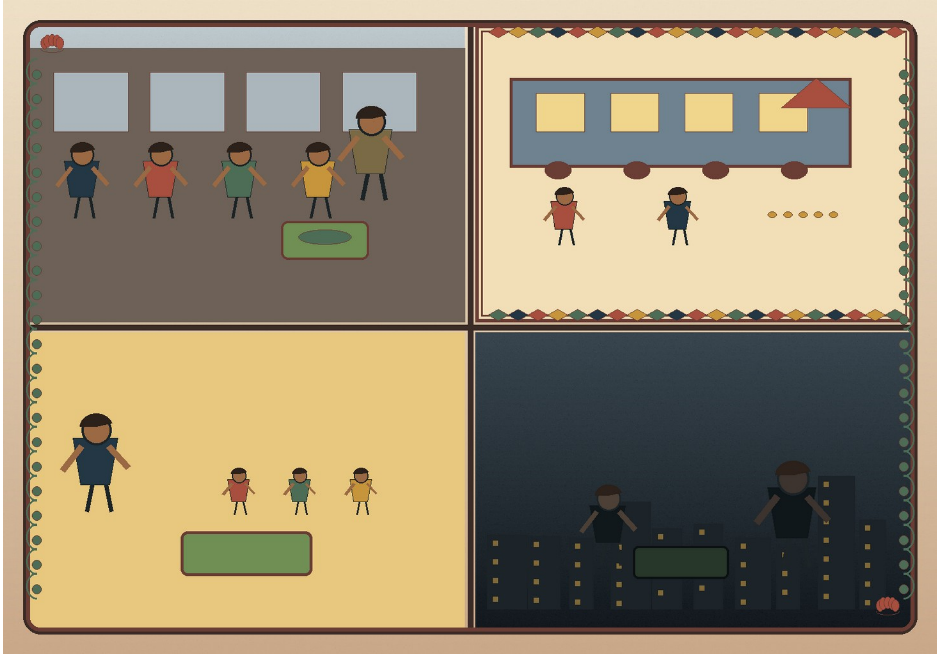

ACT 1: THREE BOYS ON THE TRAIN

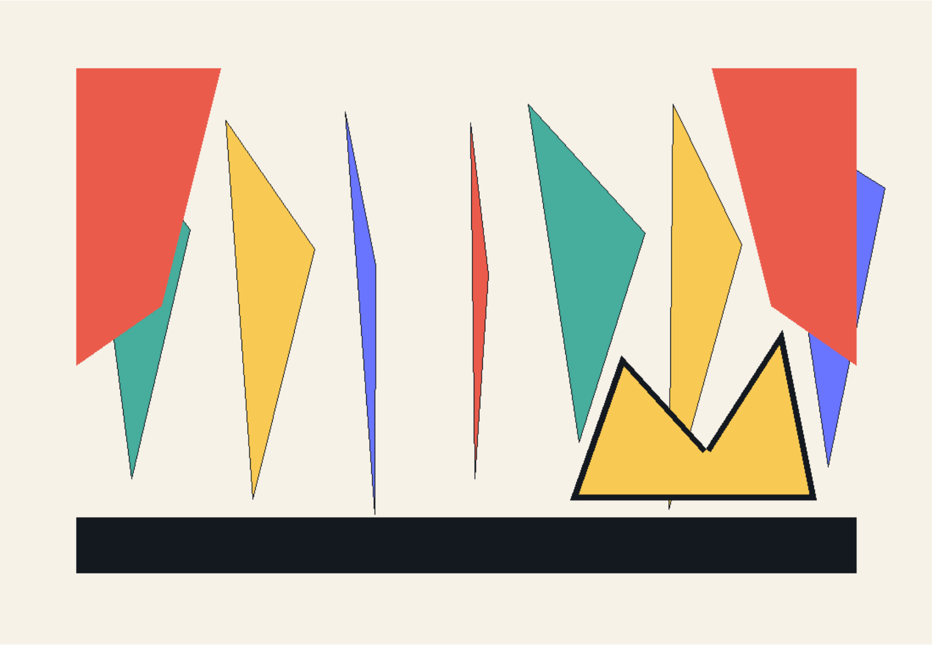

Illustration 25

A train compartment. Sankarshan boards a train from Janakpur, travelling through Jaynagar towards Delhi. The crowd, bundles, crying children, tea vendors, ticket checks, and the thunder of the train gradually diminish his confidence.

OLD WOMAN: (To Sankarshan.) Son, would you please give me a little space on the seat?

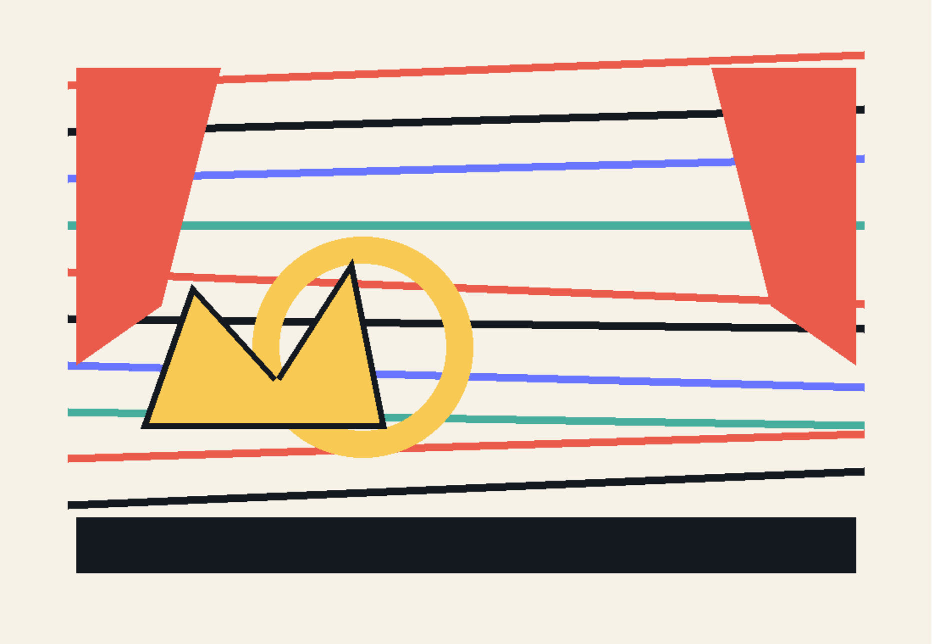

Illustration 26

SANKARSHAN: Mother, I am no boy. This 'boy' has three boys of his own.

The old woman stares open-mouthed. Sankarshan's village vanity has travelled with him into the city-bound train, but no one here is impressed. Everyone is occupied with a journey of their own.

ACT 2: POLICE CHECK AT ALIGARH

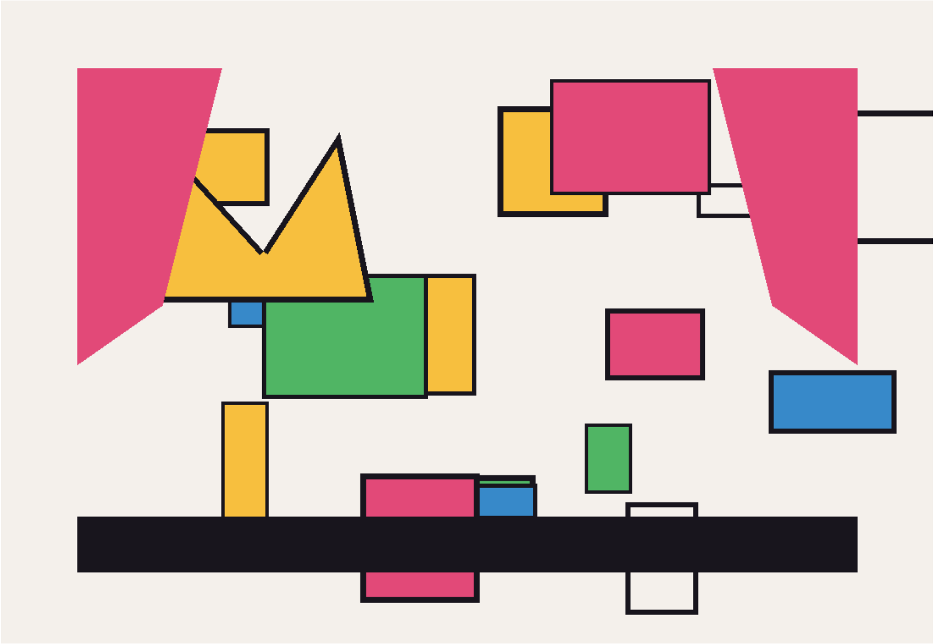

Illustration 27

The train reaches Aligarh, and police officers enter the compartment. They begin searching Sankarshan's bags and bundles. They find nothing—except small bundles of khesari greens, which Sankarshan's wife has packed as a gift for Lal Kaki. The policemen seize upon them.

CONSTABLE ONE: What is this?

SANKARSHAN: Sir, these are only bundles of khesari greens.

POLICE OFFICER: Oh? Do you take me for a fool? Mohan Singh, tell me what this is.

CONSTABLE TWO: It is ganja, sir. He looks like a ganja smoker.

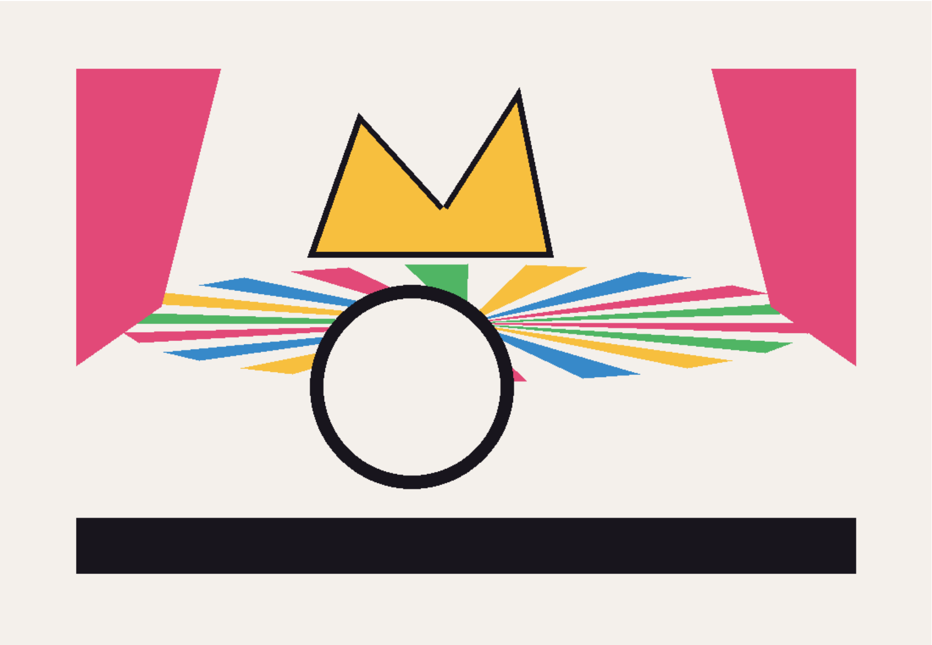

Illustration 28

POLICE OFFICER: Now tell me, passenger. I never told Mohan Singh that this was ganja. But because it is ganja, Mohan Singh said so. Do you understand the language of the law or not?

SANKARSHAN: Sir, they are bundles of greens. My wife packed them as a gift for Lal Kaki...

CONSTABLE ONE: Take him to jail. He can explain everything there.

Tears stream from Sankarshan's eyes. For a moment he remembers the humiliation in the Collector's chamber, the tale of the dogs, and the pasij thorn. But the constable is shrewd.

CONSTABLE TWO: How much money are you carrying?

From Delhi station, Sankarshan will have to change two buses to reach Lal Kaka's house. After calculating the fare, the policemen leave him twenty rupees and take all the rest. They do, however, leave the bundles of khesari greens. In the village, Sankarshan's words frightened everyone; in the city, Sankarshan himself has become the victim of fear. This is the sharpest irony of his journey.

ACT 3: AT LAL KAKA'S HOUSE

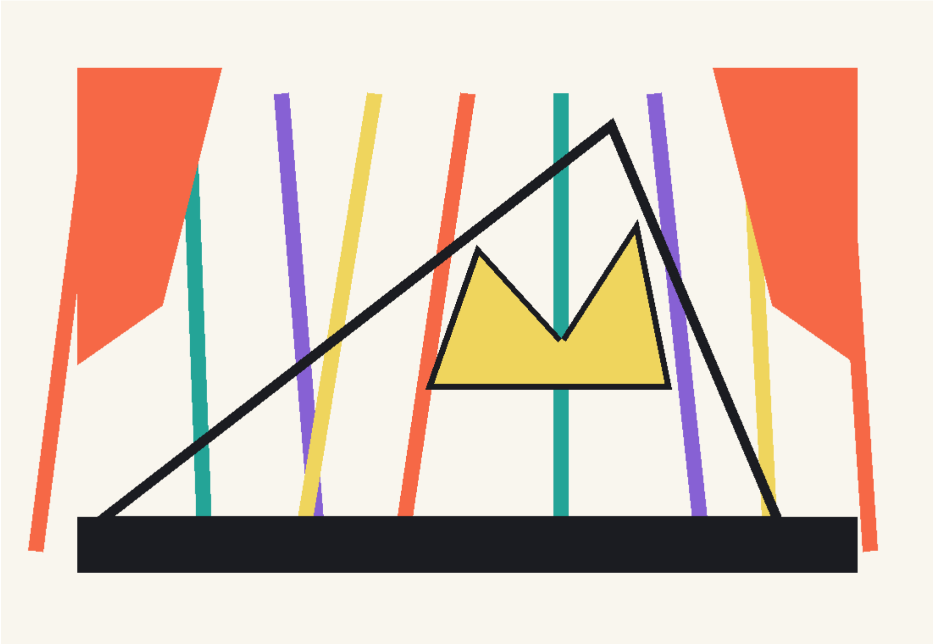

Illustration 29

After the money changes hands, the policemen get off the train. Some time later, Sankarshan arrives at Delhi station. The scene shifts to the drawing room, where Lal Kaka, Lal Kaki, and Sankarshan are seated.

LAL KAKA: (On the telephone.) Ah, that is good news. Our friend worries over everything until he nearly bursts. (He puts down the telephone.) Did you hear? Your son has reached the village.

LAL KAKI: Wonderful. Thank God. But, son, swear that you will never again play a cruel joke like the one with the pasij thorn. (Turning to Lal Kaka.) What happened about his job?

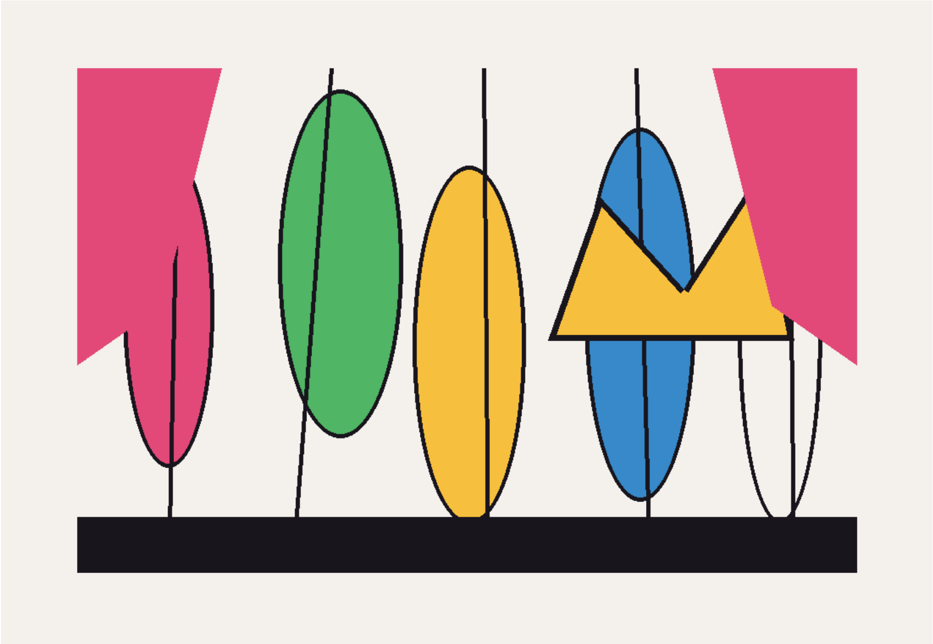

Illustration 30

SANKARSHAN: I am not made for jobs, Kaki. I swear I shall never again make a joke like the pasij-thorn affair. What happened on the train was not a matter of human intelligence; it was fate. Now let me prepare to return to the village.

LAL KAKI: At least see Delhi before you go. Visit the Red Fort.

For the first time, Sankarshan accepts a truth about himself—although he dismisses it as 'fate'. He has yet to acknowledge his vanity fully.

FIFTH WAVE: THE SHOE OF SELF-REALISATION

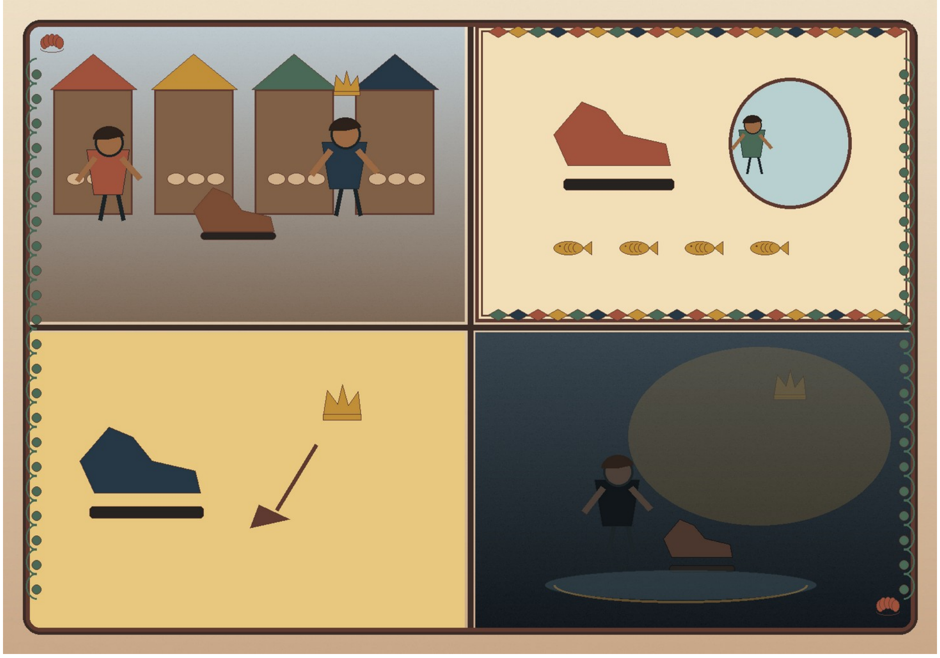

ACT 1: CHEATED IN THE THIEVES' MARKET

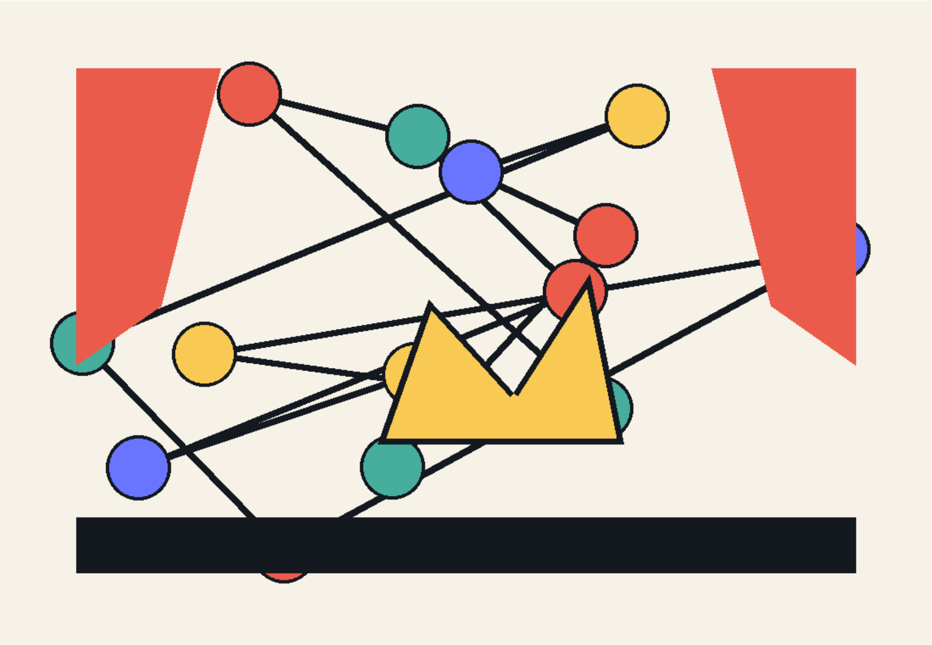

Illustration 31

On Sunday morning, Sankarshan goes to the thieves' market behind Delhi's Red Fort to test his fortune. Hawkers call out, coins clink, old objects rattle, and the crowd jostles around him.

SANKARSHAN: What are you hiding?

THIEVES' MARKET SELLER: It is beyond your means.

SANKARSHAN: Tell me. What rare treasure are you holding so close?

THIEVES' MARKET SELLER: (Dusting and polishing a pair of shoes before producing them.) I am waiting for the owner of some great motorcar—someone who will step out, recognise the true quality of these shoes, and pay their proper price.

SANKARSHAN: Name the price.

THIEVES' MARKET SELLER: Since you insist, listen. They cost four hundred rupees.

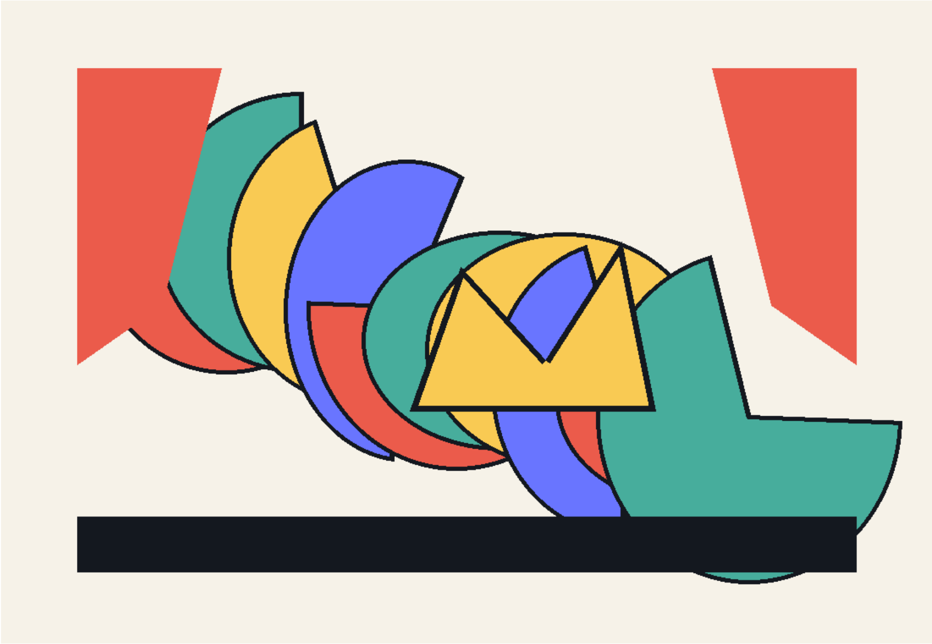

Illustration 32

SANKARSHAN: I have only three hundred and sixty rupees.

THIEVES' MARKET SELLER: I warned you from the beginning. Where is your home?

SANKARSHAN: Janakpur.

THIEVES' MARKET SELLER: Then we are neighbours! Why would I profit from you? You will also need ten rupees for the DTC bus fare. Very well—give me three hundred and fifty.

SANKARSHAN: Even in this age, there are still people like you who value their neighbours.

THIEVES' MARKET SELLER: Everyone in Delhi is one of our own. Even if you spit here, it lands on one of your own people. I recognise my own people before I name a price.

The man who taught lessons in cleverness to everyone in the village is being cheated to his face in Delhi's thieves' market, without realising it. The net woven in the name of neighbourly affection tastes as sweet to him as his own nets once tasted to others in the village.

ACT 2: THE TRUTH HIDDEN INSIDE THE SOLE

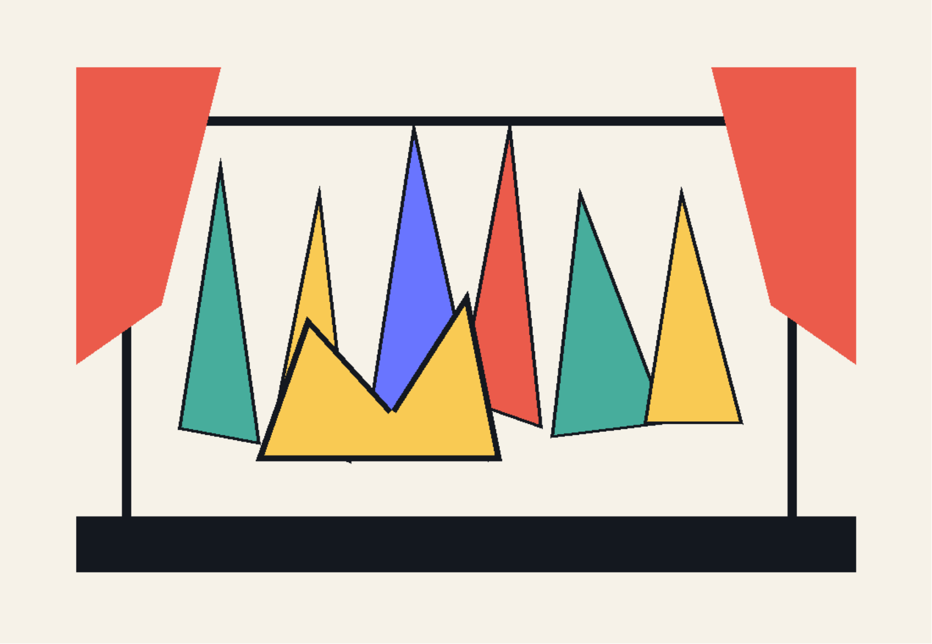

Illustration 33

Sankarshan returns to the village. From the day he bought the shoes, he has not allowed a drop of water to touch them. Gonar and Sankarshan meet again.

GONAR: My friend, why are you carrying your shoes in your hands?

SANKARSHAN: Gonar, how can I let water touch them? If the skin of my feet rots, new skin will grow. But if these shoes rot, where will another pair come from? (Pressing the shoes to his chest.) They are a remembrance of Delhi.

A few days later, Sankarshan is having the shoes stitched.

GONAR: What are you doing, my friend? Why are you having such handsome shoes stitched?

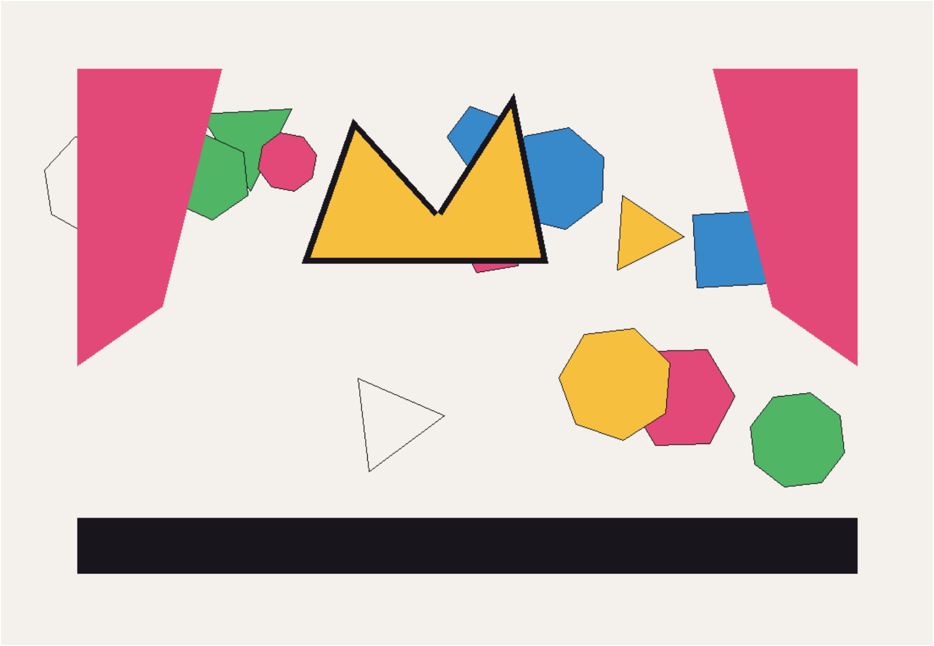

Illustration 34

SANKARSHAN: Gonar, I was thoroughly cheated. Whenever I saw water, I let my feet suffer and lifted the shoes into my hands. I cannot have worn them for more than four days. Today the entire sole came out of the shoe before my own eyes—like a heart torn out of a body.

GONAR: Who managed to cheat you? Your name is counted among the cleverest of men.

SANKARSHAN: Friend, what can I say? Whenever anyone calls me clever or praises these shoes, I feel as though I shall burst. Somehow I shall have them stitched and salvage what I paid. I boasted so much that, being a Maithil, I had no equal in cleverness. But after the way I was cheated in Delhi, I feel like bowing continually before the people there. The traders in the thieves' market behind the Red Fort could grind the wisdom of many a Mahamahopadhyaya into dust. And here we are, distributing Bharat Ratnas and then arguing over them! The true Bharat Ratnas are behind the Red Fort—not one or two, but in abundance. Yet, to tell you the truth, Gonar, the swindle did not strike the shoe; it struck my pride.

GONAR: Bharat Ratnas—all of them!

SANKARSHAN: Everyone else keeps teasing me about this affair. At least you, my friend, do not remind me of it. (A pause.) But if you do remember it, say that for the first time Sankarshan did not call being cheated an honour.

From a distance, dogs bark, a train thunders, and the cries of the thieves' market rise together. The three sounds from the beginning of the play return at once, as though Sankarshan's entire journey were echoing through a single moment. Sankarshan sits holding the shoe. Gonar watches him without laughing, because this is no longer a moment for laughter. It is a moment for understanding.

ACT 3 (EPILOGUE): THE NARRATOR'S FINAL WORD

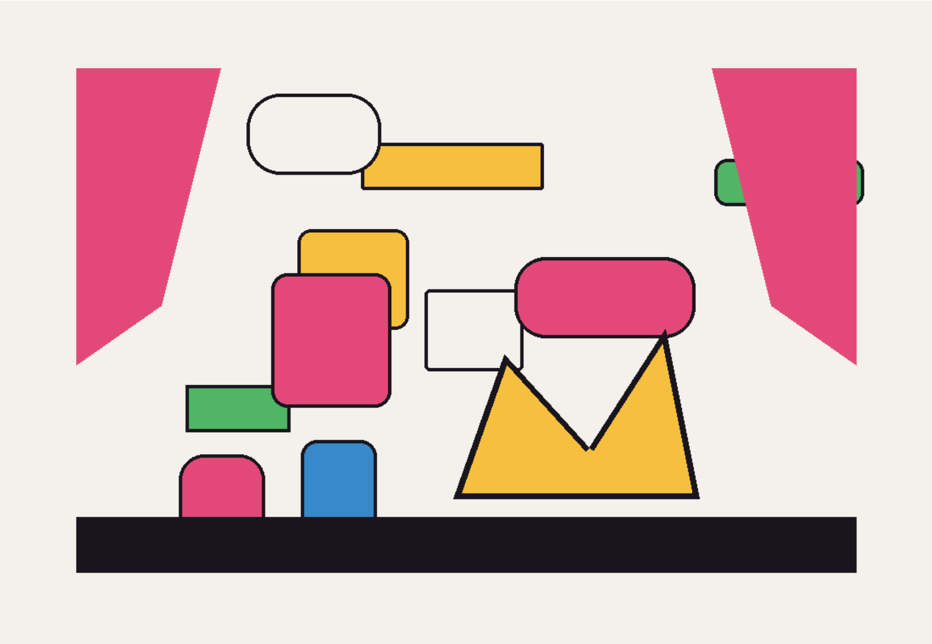

Illustration 35

(The stage light slowly narrows upon the NARRATOR, who until now has stood in shadow.)

NARRATOR: Sankarshan is not a distant character. He sits in some corner of every village, every city, and every home. In the Collector's chamber, in the pasij thorn, in the punishment of the kanthi, in the question of dung, and in Delhi's thieves' market, he did the same thing again and again: he called injury honour and being cheated cleverness.

But the true turning point of this play comes when Sankarshan calls his deception by its name for the first time: 'The swindle did not strike the shoe; it struck my pride.' The admission may seem small, but that single sentence contains more courage than he has shown anywhere else in the play.

Illustration 36

A person who recognises his own vanity is not wholly defeated; he has already taken the first step towards change. Sankarshan's story ends here, but his question remains for the audience: is there also a Sankarshan hidden somewhere within us, forever calling injury honour?

(A song-like whisper.) I was wounded and called it honour; I called the sole prestige. Now ask yourself: where have I too been cheated today?

(Curtain.)

CURTAIN

VIDEHA

Videha: The First Maithili Fortnightly E-Journal | ISSN 2229-547X | www.videha.co.in

उल्कामुख

गंगेश आ वल्लभाक प्रेम, स्मृति आ विस्मृतिक संघर्ष — छह कल्लोलक नाट्य-गाथा

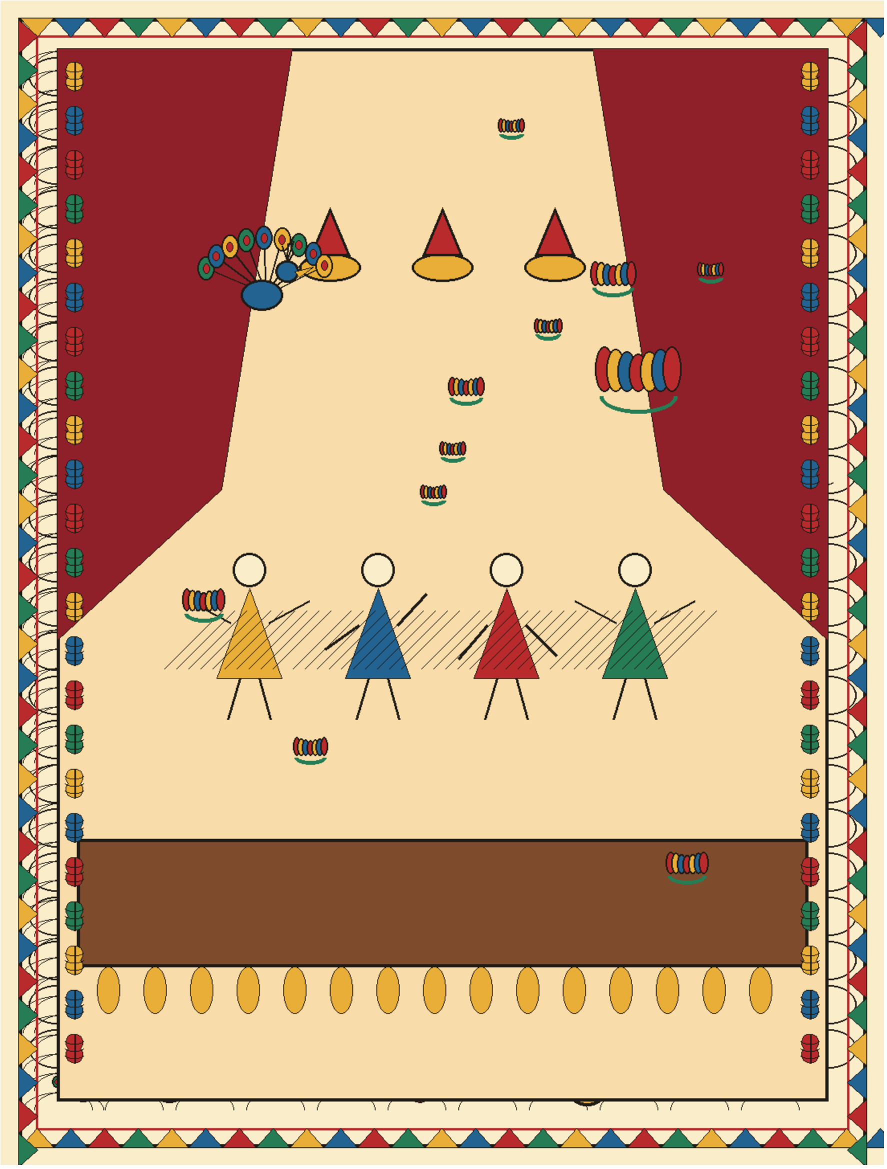

गजेन्द्र ठाकुर

सम्पादक, विदेह: प्रथम मैथिली पाक्षिक ई-पत्रिका (since 2000)

विदेह नाट्य उत्सव २०१२ मे मंचित। निर्देशक: बेचन ठाकुर। ISSN 2229-547X

सूत्रधार आ पात्र-परिचय

सूत्रधार:

-गंगेश आ वल्लभाक प्रेम ऐ नाटकक विषय अछि। मुदा ई प्रेम केवल दू मनुक्खक प्रेम नहि, स्मरण

आ विस्मरणक बीचक संघर्ष सेहो अछि। पहिल दू कल्लोलमे प्रेम, गीत आ कवित्वक बीआ रोपल

जाइए; तेसर आ चारिम कल्लोलमे इतिहासक षडयंत्र ओकरा दबेबाक कोशिश करैए; पाँचम कल्लोलसँ

दबाएल स्मृति फेर देह, समाज आ संघर्षमे आबि ठाढ़ होइए।

-ध्वनि संकेत: घन घुमबाक खरखराहटि, गीदरक धधरा, बँसबिट्टीक सिहरन, लोकगीत, आ

अन्तिम कल्लोलमे गोला/पृथ्वीक मद्धिम घरघराहटि पूरे नाटकमे स्मृतिक आवागमनक ध्वनि बनि

रहत।

- पाँचम कल्लोलसँ संकेतक बदला वास्तविकता, कल्पनाक बदला सत्य...

-पहिलसँ चारिम कल्लोल धरि मंचपर शतरंजक डिजाइन बनाएल घन राखल रहत, पाँचम कल्लोलसँ

भूत आ कल्पनाक प्रतीक ओइ संकेतक बदला वास्तविकताक प्रतीक गोला राखल रहत।

- गंगेशक तत्त्वचिन्तामणिपर ढेर रास टीका उपलब्ध अछि, गंगेशकेँ कहल जाइ छन्हि

तत्वचितामणिकारक गंगेश; मुदा हुनकर कविता भऽ गेल छन्हि "उल्कामुख"!!!

मैथिली नाटककेँ....................

नाटकक नव युगमे प्रवेश प्रवेश करबैत अछि.......

उल्कामुख...

विदेह नाट्य उत्सव २०१२ मे मंचित............................

निर्देशक रहथि बेचन

ठाकुर...

मंच परिकल्पना रहए भरत नाट्यशास्त्रक अनुरूप ..

पात्र परिचय

पहिलसँ चारिम कल्लोल धरि मंचपर शतरंजक डिजाइन बनाएल घन राखल रहत, पाँचम कल्लोलसँ

भूत आ कल्पनाक प्रतीक ओइ संकेतक बदला वास्तविकताक प्रतीक गोला राखल रहत।

[पात्र: पहिलसँ चारिम कल्लोल धरि : गंगेश , वल्लभा, देवदत्त, वर्द्धमान, उदयन, दीना,

भदरी, आचार्य व्याघ्र, आचार्य सिंह, आचार्य सरभ, शिष्य साही, शिष्य खिखिर, शिष्य

नढ़िया, शिष्य बिज्जी, भगता, भगताक शिष्य।

पात्र: पाँचम कल्लोलसँ : शिष्य साही बनि गेल हरपति (गंगाधरक पिता), गंगेश बनि जाइ छथि गंगाधर, वल्लभा बनि जाइ छथि कुमरसुता (गंगाधरक पत्नी), भगता बनि गेल जटा, भगताक शिष्य बनि गेल दलित गायक हीरू, आचार्य व्याघ्र बनि जाइ छथि मनसुख (जीवेक पिता), आचार्य सिंह बनि जाइ छथि हरिकर-सेनापति (मेधाक पिता), आचार्य सरभ बनि जाइ छथि कीर्ति सिंह (राजा), वर्द्धमान बनि जाइ छथि मितू (गंगाधरक बहिनोइ), देवदत्त बनि जाइ छथि जीवे (मनसुखक बेटा), शिष्य खिखिर बनि गेल राजाक अर्थमंत्री नारायण, शिष्य नढ़िया बनि गेल दरबारी-१, शिष्य बिज्जी बनि गेल दरबारी-२, उदयन बनि गेल माधव *(अनुभव मण्डलक सदस्य आ दरबारी), दीना बनि गेलाह माधवक सहयोगी-१, भदरी बनि गेलाह* माधवक सहयोगी-२। ४ टा स्त्री पात्र ऐ अन्तिम दुनू अंकमे बढ़ि जाइ छथि: रुद्रमति (माधवक माए) सोहागो (गंगाधरक माता), आनन्दा (गंगाधरक बहिन), मेधा (हरिकर- सेनापतिक बेटी)]

[पहिलसँ चारिम कल्लोल धरिक पात्र बदलि जाइ छथि, दोसर रूपमे पाँचम कल्लोलसँ ४ टा स्त्री पात्र बढ़ि जाइ छथि: रुद्रमति (माधवक माए) सोहागो (गंगाधरक माता), आनन्दा *(गंगाधरक बहिन), मेधा (हरिकर- सेनापतिक बेटी)]*

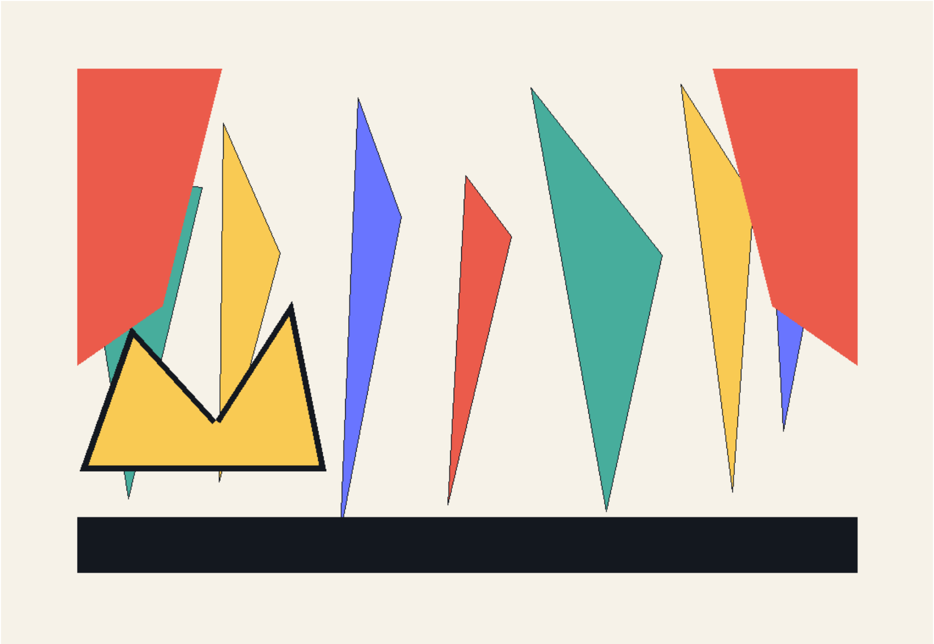

चित्र 1

(मंचपर वाम मत्तवर्णीपर कूटक एकटा पैघ घन आ दहिन मत्तवर्णीपर कूटक एकटा आर पैघ घन राखल रहैत अछि, घनक सभ पृष्ठपर शतरंजक आकृति बनाएल रहैत छै। धधरा फेकैत एकटा गीदर मंचपर चारू कात घूमि जाइत अछि। दू तीनटा टॉर्चसँ ई प्रभाव उत्पन्न कएल जा सकैए। पाछूसँ हूआ-हूआक ध्वनि, दूर बँसबिट्टीक सरसराहटि, आ कागज पलटबाक सूक्ष्म ध्वनि सुनाइ दैत अछि। फेर मंच प्रकाशित होइत अछि आ गंगेश आ वल्लभा रंगपीठपर वार्तालापक मुद्रामे बैसल छथि। बीचमे कूटक पैघ घन मत्तवर्णीसँ रंगपीठपर राखल जाइत अछि, जइपर मुँह खसा कऽ दुनू गोटे गप कऽ रहल छथि।)

वल्लभा: उषाक स्वर्णिम आभा सुसज्जित ऋषिक स्मरण करबैत अछि।

गंगेश: की भेल? कोन ऋषिक चर्चा अहाँ कऽ रहल छी? ककर स्मरण अबैए?

वल्लभा: अहाँक, आर ककर? मुदा ऋषि कहै छी तँ डरियो लागैए; लोक जकरा ऋषि बना दै छै, ओकरा मनुक्खक दुख-सुखसँ दूर करऽ चाहै छै।

गंगेश: हम कहियासँ ऋषि भऽ गेलौं। हम तँ एकटा साधारण विद्यार्थी छी।

वल्लभा: अहाँक चातुरीक सभ ठाम चर्चा होइए।

गंगेश: चातुरीक चर्चा! हम तँ वाक चातुरीक विरोध करै छी। वाक चातुरी तथ्यपर आ सत्यसँ भारी नै भऽ जाए, तकर मात्र प्रयास करै छी।

वल्लभा: मुदा तइसँ की हएत। लोक तँ घुमा फिरा कऽ बात बजिते अछि। अहाँ वाक चातुरीक चलाकीकेँ देखार केने छिऐ। कतेको श्लोकमे ऐ गपपर अहाँ चरचा केने छिऐ। तैयो लोक गप घुमा कऽ बाजिये दै छथि।

गंगेश: अहाँ कहियासँ हमर एतेक चिन्ता करऽ लगलौं।

वल्लभा: देखू। अहाँ चर्मकार टोलमे बच्चेसँ आबि रहल छी। लोक अहाँक विद्या देखैए, मुदा अहाँक पएर कोन माटिमे पड़ल से गनैए।

गंगेश: आ बच्चेसँ लोकक बोल सुनि रहल छी..

वल्लभा: मुदा लोकक बोल आर बिखाह भऽ गेल अछि..

गंगेश: कतेक बिखाह। सत्यकामक भाग्य हमरा भेटल अछि...

वल्लभा: कोन सत्यकाम..

गंगेश: वएह सत्यकाम जकरा पिताक विषयमे बुझल नै छलै, ओकर मायोकेँ नै बुझल रहै जे के ओकर पिता छै। मुदा ओकर गुरु गौतम ओकरा शिक्षा देलखिन्ह।

वल्लभा: अहूँसँ पूछल गेल ओ प्रश्न गंगेश? प्रश्न जे..जे..के छथि अहाँक पिता..पिताक मृत्युक पाँच बर्खक बाद कोना भेल अहाँक जन्म...

गंगेश: (मुँह घुमा कऽ पाछू दिस ताकऽ लगै छथि) पूछल गेल वल्लभा, पूछल गेल। बिनु पिताक अहाँक जन्म..पितृ परोक्षे पञ्च वर्ष व्यतीते गंगेशोत्पत्ति...

वल्लभा: (गंगेशकेँ घुमा कऽ सोझाँ लऽ अनै छथि) छोड़ू..हमरा तँ बुझले अछि।

गंगेश: गुरुजी हमरोसँ पुछने रहथि पिताक विषयमे। चर्मकार टोलक जे ओ रहथि जे हमर माताकेँ आपत्कालमे सहायता देने रहथि, आब गामे छोड़ि देलन्हि।

वल्लभा: हमहूँ सएह सुनने छिऐ, नै जानि कतऽ चलि गेलाह ओ।

गंगेश: मुदा आइयो अहाँक टोलमे हमरा वएह आपकता भेटैए। जे चर्मकार टोलक दुआरि हमरा लेल खुजल छल, वएह दुआरि हुनका सभ लेल बन्द अछि। ई न्याय कोना भेल?

वल्लभा: आहा। ककरा-ककरासँ।

गंगेश: एकटा तँ सोझेँ छथि हमर।

वल्लभा: सएह आपकता तँ लोकक आँखिकेँ नै सोहाइ छै..लोकक आँखिमे हींग सुइया.. प्रेम जँ जातिक देवालपर चढ़ि जाए तँ देवालक रखवार सभकेँ आगि लागि जाइ छै।

गंगेश: वल्लभा, अहाँ तँ सभसँ गप करै छी, हमरासँ, गाछ-पातसँ, चिड़ै चुनमुनीसँ, सम्पूर्ण प्रकृतिसँ...

वल्लभा: अहाँ तँ लगैए पहिने कताक जन्म स्त्री छलौं..

गंगेश: अहाँ मिथिलाक राजकुमारी छी वल्लभा। अहाँ आँखि उठा कऽ देखै छी तँ लगैए जे प्रकृति अपन हृदय खोलि कऽ प्रेम कऽ रहल अछि, अहाँ छी पतालसन गहींर आ गम्भीर मुदा उधियाइत मेघ सन साकांक्ष, वरक गाछ सन स्थिर मुदा हरदम प्रसन्न ऐ धानक शीस सन..(खेत दिस इशारा करै छथि)।

वल्लभा: अहाँ कोन कम छी गंगेश, अहाँ विद्वतासँ भरल छी, कोनो सम्वाद विवाद स्थिरचित्त

भऽ सुनै छी काटै छी, विक्रमादित्य सन न्याय करै छी, व्यवहारी छी आ अहाँ स्थिर छी हिमालय सन।

गंगेश: वल्लभा, अहाँक सौन्दर्य अप्रतिम अछि, अहाँसँ बेशी पूर्ण ने स्वर्ण अछि ने आन किछु। अहाँ लग आबि कऽ लगैए जेना भुथियायल जहाज किनारपर लागि गेल। हमर विद्या आब पूर्ण होइए बला अछि। किछु नव चीज बहार केलौं अछि मन्थनसँ। मिथिला विद्या शून्य नै भेल अछि। मुदा जँ अहाँक गीत नहि रहत, हमर ग्रन्थ आधा रहि जाएत। उदयनक बाद कएक शताब्दी धरि मिथिलामे भगवान जगन्नाथकेँ ललकारा दै बला कियो नै भेल।

वल्लभा: हे से नै कहियौ। दीना आ भदरी से ललकारा दऽ आएल रहथि जगन्नाथकेँ।

गंगेश: हँ वल्लभा, माए सुनेने छथि ई खिस्सा हमरा। आ दीना-भदरी दुनू गोटे विजय सेहो प्राप्त केने रहथि। मन्दिरक कपाट खुजि गेल रहए। हे सुनाउ ने एकबेर ई खिस्सा।

वल्लभा: एक्के खिस्सा बेर-बेर सुनैत मोन नै भरैए।

गंगेश: नै भरैए..तत्त्वचिन्तामणि लिखबामे ई हमर उत्प्रेरक बनैए..

वल्लभा: ठीक छै। तखन दीना हम बनै छी आ भदरी अहाँ बनू। मुदा ध्यान राखू, ई केवल खिस्सा नहि, ई लोकक स्मरण अछि।

(दुनू गोटे शतरंजक घनक सोझाँ आबि जाइ छथि।)

वल्लभा: जोगिया गामक दीना एलै भदरी भाइ जुमि हे...

गंगेश: कालू सदाय निरसो मैयाक बेटा मजगूत हे...

वल्लभा: (हँसैत आ गंगेश दिस तकैत)

दीन रहथि हीन रहथि मुदा नै मजबूर हे

शिकार खेलथि रणे-बने कोरथि खेत मिलि हे

पाँच-पाँच मोनक कोदारि लेने बीघा कते दूर हे

गंगेश: कटैया बोनक राजा छलै फोटरा गीदर हे

ओकर संगी धामन रहै, बिख मशहूर हे

बिख सन बोल बाजल धामन दुनू भाइकेँ

जो रे दीना जो रे भदरी पानिमे बसैले रे

वल्लभा: रेऽऽऽऽऽऽऽऽऽ.....

की बजलेँ धामन तूँ तूँ, की बजलेँ धामिन गे

रेऽऽऽऽऽऽऽऽऽऽ.....

हम्मर जीवन कटैय्या बोनक तूँ नै भागी हे

हम्मर जीवन हम्मर बलकेँ बुझलेँ हिनताइ रे

मारि-मारि छूटल ओकरापर दुनू भाइ रे

धामन मारल, धामन फेकल धामिनक आगू रे

धामिन थरथर करै लागल लेबौ बदला भाइ रे

गंगेश: फोटर राजा कटैय्या बोनक छल दोसतियारी रे

हम्मर दोस धामन मारल, दुनू मिलि भाइ रे

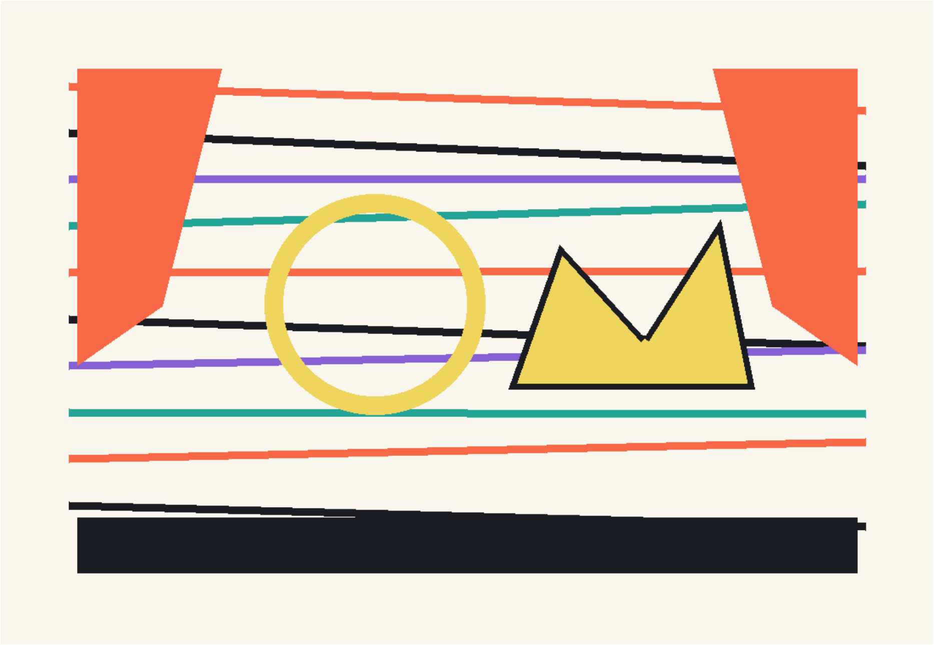

चित्र 2

धामिन भौजी निश्चिन्त रहू, नै करू अगुताइ हे

आबै दियौ आबै दियौ शिकार खेलऽ दुनू भाइकेँ

वल्लभा: दिन बीतल, गेल भदरी दीना बोन शिकार हे

संग गेल बहुरन मामा फोटर तैयार हे

बिखहा दाँत गरा देलक मारल दुनू भाइ कैँ

आत्मा बनि घूमए लागल दुनू भाइ मरि हे

गंगेश: दौरी गामक हिरिया तमोलिन देखल दुनू भाइकेँ

दौरी गामक जिरिया लोहारिन देखल दुनू भाइकेँ

एहेन वर चाही हमरा करए लागलि तपस्या हे

वल्लभा (तपस्विनी सन ध्यान लगेने बैसि जाइत छथि):

दीना चाही भदरी चाही, वर दुनू सखी कऽ

मरल छैँ तँ भेल की स्वीकारू गंगा पैसि कऽ

(गंगेश घनक पाछाँ चल जाइ छथि आ हाथ उठबै छथि जेना गंगामे होथि। वल्लभा दोसर कातसँ हाथ पसारै छथि।)

वल्लभा: मातैर-मातैर सुनै छलौं मातैर बड़ी दूर हे

अन देलौं धन देलौं, लक्ष्मी बहुत हे

एकेटा जे स्वामी बिनु लागै यऽ सुन हे

मातैर-मातैर सुनै छलौं.....।

(तखने देवदत्तक प्रवेश होइत अछि।)

देवदत्त: (मुस्काइत एक बेर वल्लभाकेँ आ एक बेर गंगेशकेँ देखैत छथि)

कमला-कमला सुनै छलौं कमला बड़ दूर हेऽऽ

गहबर पहसैत कमला भए गेल कसहूर हे,

अन देलौं धन देलौं लक्ष्मी बहुत हे

एकेटा जे......

वाह गंगेश। नै नै, वाकचातुरी नै गंगेश। कोनो चातुरी नै। ई तँ अछि स्थूल प्रेम।

प्रेम प्रेम देखी सगरे प्रेमे पूर्ण हे

प्रेम बिनु लागै यऽ सभ सून हे...

(गंगेश दिश ताकि) गंगेश। की बात छै। ऐ टोलमे तोहर माएकेँ सेहो मोन लागै छलौ आ तोरा सेहो। मुदा के बाजत। न्याय, तर्कक सोझाँ के ठठत।

(वल्लभा दिश घुमि) वल्लभा। अहाँक भाग.... आकि कोनो मनता....मनता जे गंगेशक माए अहींकेँ पुतोहु बनेबा लेल मनने हेती।.... आकि गंगेशसँ सत करेने हेती जे हमर अपमानक बदलामे तोँ अही टोलमे बियाह कऽ कऽ लोककेँ देखा दहीं।...(मंचक सोझाँ घुरि जाइ छथि) न्याय आ तर्कमे के जीतत गंगेशसँ ? न्याय करत गंगेश....तर्क करत कियो नै।

गंगेश: (देवदत्त दिश जोरसँ बजैत) देवदत्त..

देवदत्त: (देवदत्त दिश ताकि) नै गंगेश कोनो वचन चतुराइ नै अछि हमरामे। मुदा की कोनो तर्क नै अछि हमर वचनमे?

गंगेश: (देवदत्त दिश जोरसँ बजैत) देवदत्त, ने हमर माए कोनो मनता मानने रहथि आ नहिये हमरासँ कोनो सत करबेने रहथि। आ नहिये ऐ टोलक हमर माएपर कएल उपकारक बदला हमर आ वल्लभाक प्रेम अछि। आ जैँ ऐ प्रेममे ने कोनो मनता छै, ने कोनो सत आ ने कोनो उपकार, तैँ ई प्रेम स्थूल प्रेम अछि।

देवदत्त: (मंचक सोझाँ तकैत) तर्क! नै कोनो वाक चातुरी नै।

(गंगेश दिस ताकि) मुदा गंगेश, ई एकटा गप अहाँ ठीक कहलौं। अहाँ क आ वल्लभा क प्रेमक तँ लोक चर्चो नै कऽ रहल अछि। दूर देशक प्रेमक मुदा चर्चा होइए। ठीके कहलौं अहाँ। सुनल अछि कोनो बड़का न्यायक ग्रन्थक अहाँ लिखि रहल छी। सुनै छिऐ जे ओ तेहेन ग्रन्थ बनि रहल अछि जकर चर्चामे सभ नैय्यायिक ओझरा जेता। भाष्यपर भाष्य, टीकापर टीका लिखाएत ओइपर। मुदा गंगेश, सावधान। अहाँक प्रेमकैँ मारबाक ई षडयंत्र तँ नै अछि गंगेश। ऐ प्रेमक चर्च सेहो पाँच-सए बर्खक बाद मुदा हजार बर्खक भीतरे फेरसँ मिथिलामे हेतै। ओहो हो..ई की कहा गेल गंगेश। (अपन जीह थकुचऽ लगैए)

लोक कहैए जे हमर जीह कारी अछि। जँ धानक खेतक आरिपर ठाढ़ भऽ हम कहि दै छिऐ जे देखू ई धान केहेन सनगर अछि तँ ओ धान अगिले दिन जरि जाइ छै। लोके सभ कहैए। (फेरसँ अपन जीह थकुचऽ लगैए)

स्थूल प्रेमक चर्च हेबे किए करए गंगेश। किए हुअए स्थूल प्रेमक चर्च। ऐ चर्चसँ तँ समाजमे समरसता आबि जेतै। से नै हएतऽ चर्च ऐ प्रेमक गंगेश, नै हएतऽ चर्च ऐ प्रेमक। तोहर ग्रन्थक चर्च हएत गंगेश, तोहर ग्रन्थक मिथिलाक टोल आ चौपाड़िमे तोहर विद्वताक संग चर्चा हेतै गंगेश, ...(बिहुँसैत)....मुदा तोहर प्रेमक कोनो चर्च नै हएत। मिथिलाक शिक्षक तोहर पोथीक प्रतिलिपिक अनुमति नै देथिन्ह गंगेश आ ने ओकर सारांश लिखबाक देथिन्ह अनुमति। आ जँ बंगालक कोनो विद्यार्थी ओकर प्रतिलिपि कइयो लेत गंगेश तँ ओ लऽ जा सकत मात्र तोहर विद्वता। तोहर न्यायशास्त्र। तोहर तर्क। मरि जेतह तोहर प्रेम गंगेश। मरि जेतह तोहर स्थूल प्रेम।

वल्लभा: (देवदत्त दिस ताकि जोरसँ बजैत) देवदत्त, हजार बर्खक बाद तँ घुरत ने ई प्रेम। गंगेशक अमर पोथी लेल हमरा ओ प्रतीक्षा स्वीकार अछि। चर्च नै हएत प्रेमक...हाह...चर्च पेबा लेल प्रेम नै कएल जाइत अछि....प्रेम, प्रेम की चर्च हुअए की तैँ होइत अछि देवदत्त?

देवदत्त: (वल्लभा दिस ताकि) वल्लभा, गंगेशक हारि देख रहल छी हम। गंगेशक हारि देख रहल छी हम गंगेशक मुखपर। गंगेश, की तौँ वल्लभासँ सहमत छह। की वल्लभा आ तोहर स्थूल प्रेमक चर्च नै भेने सामाजिक समरसताक तोहर उद्देश्य पूर्ण हेतह? की ऐ स्थूल प्रेम आ ऐ टोलक नाराशंसी गाथाक कोनो कर्ज तोरा पोथीपर नै छै गंगेश? की तोहर प्रचण्ड तर्क सिद्धान्त बनि कऽ नै

रहि जेतऽ गंगेश? प्रायोगिक महत्व खतम नै भऽ जेतै की ओकर? हम भरोस दिआबै छियह गंगेश, भरोस दियाबै छियह, जे तोहर स्थूल प्रेमक कियो विरोध नै करतह। आ तौँ बुझैत रहबह जे ओ सभ तोहर प्रचण्ड तर्कसँ हारि कऽ विरोध नै केलन्हि। मुदा असल बात ई छै जे तोहर पोथीपर भाष्यपर भाष्य आ टीकापर टीका लिखाइत रहतह। तोहर विरोध तँ छोड़ह, तोहर सन्तानोक विरोध कियो नै करतह गंगेश। सिद्धान्त बनि कऽ रहि जेबह तौँ आ तोहर तर्क।

गंगेश: (देवदत्त दिस ताकि जोरसँ बजैत) देवदत्त। अहाँक कोनो गप हमरा कठानि नै लागि रहल अछि। मुदा एतेक तर्कपूर्ण गप..अहाँ एतेक तर्कपूर्ण गप कोना कऽ रहल छी?

देवदत्त: (मंचक सोझाँ तकैत) एतेक तर्कपूर्ण गप.. (गंगेश दिश ताकि) ठीके बुझलैँ गंगेश। ई सुनलाहा गप छी। ई गप हमर अपन मोनक नै अछि। चौपाड़िपर होइत शिक्षक लोकनिक गप अछि ई। हम तँ किछु बुझै नै छी, (बिहुँसैत) से जानि हमरा सोझाँ होइत रहैए ई सभ गप..जाइ छी...जाइ छी...

(एम्हर ओम्हर तकैत शतरंजक घनकेँ पलटाबऽ लगैए) तँ हमरा की इनाम देब ऐ तर्कपूर्ण गप लेल गंगेश। (शतरंजक एक-एकटा खानाकेँ छुबैत) ई ६४ टा खाना अछि शतरंजक, अछि ने गंगेश? पहिल खानामे एकटा धानक दाना राखू।(एकटा राखैए) दोसरपर ओकर दुगुना।(दूटा दाना राखैए.. एक...दू..तीन..चारि..बजैत) तेसरपर दोसरक दुगुना (चारिटा दाना राखैए ..एक... दू.... बजैत)। (फेर ६४म खानापर आंगुर रखैए) अन्तिम ६४म खानापर जतेक धानक दाना अबैए ततेक दाना दिअ हमरा गंगेश..

वल्लभा: (गंगेश दिश ताकि खिसियाएल स्वरमे बजैत) दऽ दियन्हु हिनका इनाम गंगेश। नै जानि ईहो गप ओ कतौसँ सुनिये कऽ आएल हेतथि।

गंगेश: (वल्लभा दिश तकैत) नै वल्लभा। ई इनाम ऐ शतरंजक खेलोसँ बेशी विषम छै। सगर पृथ्वीक अन्नक उपजा जँ पाँच सए सँ हजार बर्ख धरि उपजत तखन जा कऽ ई इनाम देल जा सकत।

(देवदत्तक बांहि झमारैत) देवदत्त...देवदत्त*,* के बाजै छल ई गप देवदत्त*?* कोन चौपाड़िपर होइ छल ई गप देवदत्त?

देवदत्त: (डेराइत) एतेक पैघ अछि ई इनाम!! ..पाँच सए बर्खक बाद आ हजार बर्खसँ पहिने...गंगेश..जँ ई इनाम अहाँ नै देब हमरा, तँ तावत धरि मुनाएल रहत अहाँक स्थूल प्रेम...हा हा हा...(अपने सँ बाजैए) डराओन सन गप..डराओन सन गप..(प्रस्थान कऽ जाइत अछि।)

(वल्लभा आ गंगेश एक-दोसराकेँ ताकऽ लगैत छथि)

(हूआ-हूआक ध्वनिक संग अन्हार पसरि जाइत अछि।)

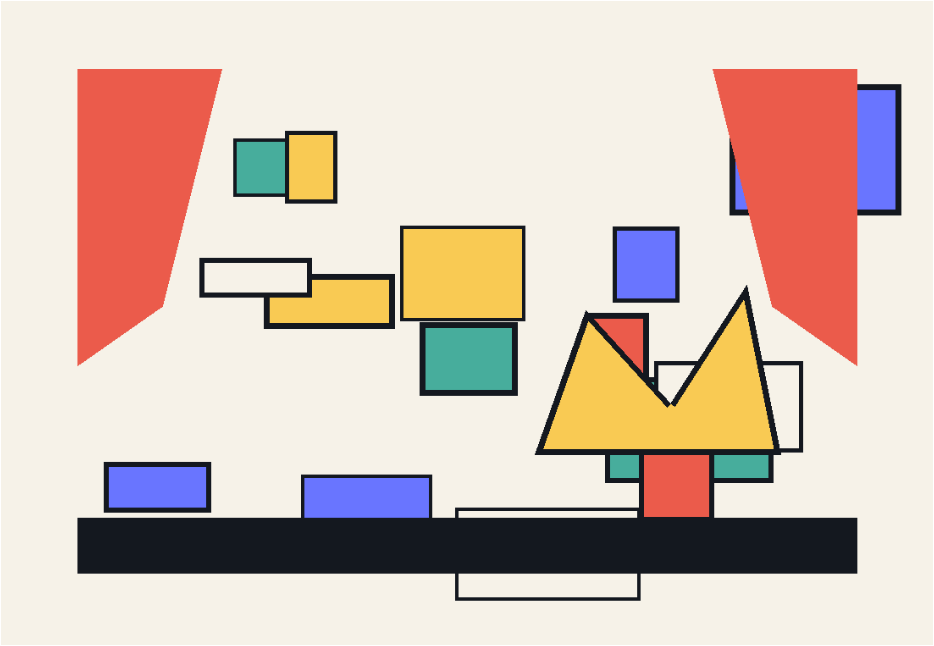

चित्र 3

(दू टा शतरंज-घन दुनू रंगशीर्षपर राखल अछि। गंगेश एकटा शतरंजक घनक चारू कात घूमि रहल छथि। दोसर शतरंजक घनपर प्रकाश छै मुदा ओ फेर विलुप्त भऽ जाइ छै। आ फेर वेदिकासँ एकटा गीत उठै छै।)

बभनीकैँ पुत्र तोहें बाल गौरैय्या,

पोथी नेने पढ़न जाइ हे

पोथिया नेरौलनि गोरिल जाइ बिरिछ तर

हलुआइ घर पैसल धपाइ हे

किछु मधुर खेलनि गोरिल किछो छिरियौला

किछु देल लंका पठाइ हे

बभनीक पुत्र तोहेँ बाल गौरैय्या

ग्वालिन घर पैसल धपाइ हे

किछु दूध पीलनि गोरिल किछु ढ़रकओला

किछु देल लंका पठाइ हे

गंगेश: हम तँ बभनीक पुत्र मुदा हमर पुत्र तँ नै। ओ अछि बभनीक पुतोहुक पुत्र। हम बारह हजार ग्रन्थक बरोबरि एकटा तत्वचिन्तामणि लिखनिहार लेखक, मात्र एकटा साधारण शिक्षक छी। हमर तत्वचिन्तामणिक प्रतिलिपि करबापर प्रतिबन्ध के लगाएत? नवद्वीपक विद्यार्थी अवश्य लऽ जाएत हमर शिक्षा अपना संग।

(वेदिकासँ फेर गीत उठैए।)

बभनीक पुत्र तोहेँ बाल गौरैय्या

बड़इ घर पैसल धपाइ हे

किछु पान खेलनि गोरिल किछु छिड़िऔला

किछु देल लंका पठाइ हे

बभनीक पुत्र तोहेँ बाल गोरैय्या

डोमिन घर पैसल धपाइ हे

नीक नीक पाहुर गोरिल अपने चढ़ाओलऽ

काना पातर देल हड़काइ हे

बभनीक पुत्र तोहेँ बाल गोरैय्या

ब्राह्मण घर पैसल धपाइ हे

नीक-नीक जनौ गोरिल अपने पहिरलनि

औरो देलनि ओझराइ हे

हकन कनै छै गोरिल ब्राह्मणीक बेटिया

ब्राह्मण बाबू बड़ दुख देल हे

भनहि गंगेश सुनू बाबू गोरिल

गहवर पैसिये जस लेल हे

गंगेश: (अपनेमे गुनधुन करैत) ई देवदत्त की कहि गेल? मुदा टोल आ चौपाड़िपर हमरा सोझाँ तँ एहेन कियो किछु नै बाजल अछि। मुदा शतरंजक अन्नक दानाक गणना। ओ तँ देवदत्त क सकमे नै छै।

(वल्लभाक प्रवेश।)

वल्लभा: की भेल? कोन गुनधुनी लागल अछि?

गंगेश: (वल्लभा दिश ताकि) वएह देवदत्तबला गुनधुनी।

वल्लभा: (गंगेश दिश ताकि) धुर छोड़ू ने। ओकरा बुद्धिक लेशो नै छै..

गंगेश: तैँ तँ वल्लभा। बुद्धिसँ काज केलापर ने सत्य आ असत्य..मुदा ओकरा बुद्धि नै छै। तैँ ओकर गपपर हमरा सोचऽ पड़ि रहल अछि।

वल्लभा: अहाँ तँ तत्वचिन्तामणिक लेखकक अलाबे आब कवि सेहो भऽ गेल छी। एतेक सुन्दर गीत लिखऽ लागल छी। तत्वचिन्तामणिमे आचार्य सिंह आ आचार्य व्याघ्र आ गीतमे बाल-गोरैय्या!!

गंगेश: हँ वल्लभा। अनायासे अहाँ कतेक नीक गप बाजि देलौं (शतरंजक घन लग जाइ छथि आ ओकरा टेढ़ कऽ कंगुरिया आंगुरसँ कोनपर नियन्त्रित करै छथि।) हँ वल्लभा.....ई तत्वचिन्तामणि नै, ई आचार्य सिंह आ आचार्य व्याघ्रक परिभाषा नै,....... ई बालगोरैय्या हएत समर्थ ऐ चौपाड़ि आ टोलक षडयंत्रकेँ तोड़बामे। (गंगेश कंगुरिया आंगुर घनसँ हटा लै छथि। घन घुमि कऽ फेर स्थिर भऽ जाइए। (गंगेश वल्लभा दिश ताकि बाजै छथि) अनायासे अहाँ कतेक नीक गप बाजि दै छी वल्लभा।

(तखने देवदत्त प्रवेश करैए।)

देवदत्त: (गंगेश दिश ताकि) गंगेश कवि!!!(आश्चर्यसँ हाथ पसारैए) गंगेश तत्त्वचिन्तामणिकारक। गंगेश कविक कवित्वक चर्चा कियो नै करत!! लोककेँ दार्शनिक चाही, कवि नहि; कुलीनता

चित्र 4

चाही, प्रेम नहि।

वल्लभा: (देवदत्त दिश ताकि) की ईहो निर्णय टोल आ चौपाड़िपर भऽ गेल छै।

देवदत्त: (वल्लभा दिश ताकि) हँ वल्लभा। मुदा तोरा कोना बुझल छौ?

वल्लभा: (देवदत्त दिश ताकि) बुझल नै अछि मुदा आब बुझल भऽ गेल जे हमर आ गंगेशक प्रेमक चर्चा, हमर आ गंगेशक विवाहक चर्चापर पहरुआ ठाढ़ कऽ देल गेल छै।

गंगेश: (शतरंजक घनकेँ फेर टेढ़ करैए) तँ हमर कवितापर सेहो चर्चा नै हएत। तत्त्वचिन्तामणिक सभ पाँतीपर भाष्य, टीका आ कवितापर..

वल्लभा: (शतरंजक घन गंगेशसँ अपना हाथमे लऽ लैए) गंगेश आब अहाँ चिन्ता छोड़ि दिअ। ई सभ गीत हमर नैहरामे गाओल जाएत। देवदत्त कहि अबियौ टोल आ चौपाड़िपर, गीत बन्न नै हएत। आइ नै तँ सात सए बर्ख बादो ऐ प्रेमक चर्चा फेरसँ हएत। जँ पोथीमे नाम कटत, गीतमे साँस बचत। आ जे प्रेम सात सए बर्ख इन्तजार कऽ सकै छै, ओकरा बँसबिट्टी रोकि नै सकत।

देवदत्त: (वल्लभा दिश ताकि) हेतै नै भऽ गेल छै वल्लभा। देखू ओ बँसबिट्टी। ऐ गाम आ अही गामक अहाँक नहिराक टोलक बीचमे जे बाँसक कोपर सभ देखा पड़ि रहल अछि। अहाँक नहिराकेँ परदेस बना देत ई कोपड़। अहाँक गीत ओइ टोलसँ बहार तँ हएत मुदा ऐ बँसबिट्टीमे ओ भुतहा गीत बनि घुरत.. (गंगेश दिश ताकि) तत्वचिन्तामणिकारक गंगेश..

वल्लभा: सुकविकैरवकाननेन्दुः – गंगेश। अपन पुत्र वर्द्धमानकेँ कहबै हम। अपन पिताक कवि हेबाक प्रमाण छोड़त ओ..कहि दियौ देवदत्त ई गप टोल आ चौपाड़िपर। छै कियो ओतऽ सात सए साल लड़ैबला? बँसबिट्टीक गीत घुरियाइत रहतै। सुनै छिऐ कोनो ध्वनि खतम नै होइ छै दुनियाँमे। सुनै छिऐ एक्के तरहक सातटा लोक होइ छै दुनियाँमे एक्के समएमे। सात सए बर्खमे सातटा लोक नै हेतै की देवदत्त?

देवदत्त: (देवदत्त दिश ताकि) नै हेतै वल्लभा। सात सए बर्खमे एकटा भऽ जाए सेहो बहुत छै।

वल्लभा: एक टा तँ हेतै ने देवदत्त, तँ तइ लेल हमर सभक प्रेमक गीत विचरैत रहतै अहि बोन बँसबिट्टीमे। बँसबिट्टीक पारक जीवन, टोल, चौपाड़ि सभ खतम भऽ जेतै देवदत्त ऐ सात सए बर्खमे, मुदा ई भुतहा गीत नै खतम हेतै। ई बँसबिट्टी आत्मा सभकेँ घुरा कऽ आनत। नीक आत्मा सभकेँ। उदयनकेँ, दीनाकेँ, भदरीकेँ, आचार्य व्याघ्र आ आचार्य सिंहकेँ सेहो....

देवदत्त: नै खतम हेतै वल्लभा, नै खतम हेतै। नीक आत्मा एतै तँ दुरात्मा सेहो ने आबि जाए वल्लभा...सएह टा डर वल्लभा...दुरात्मा सेहो नै आबि जाए। स्मरण जखन घुरत, हिसाबो माँगत।

(देवदत्त चारू दिस ताकि झटकारि कऽ प्रस्थान करैए। वल्लभा आ गंगेश शतरंजक घन लग आबि ठाढ़ भऽ जाइ छथि।)

गंगेश: वल्लभा, छोड़ू ई सभ। कोन गुनधुनी लागि गेल अहाँकेँ। सुनाउ ने खिस्सा, कोनो दोसर खिस्सा, हमरा आब न्यायक कोनो ग्रन्थ नै लिखबाक अछि। आब हमरा भरि जनम कविते करबाक अछि। सुनाउ ने खिस्सा बालाराम आ वंशीधर ब्राह्मणक, व्याघ्र आ सूकरक, गहिल आ दुर्गाक।

वल्लभा: (वल्लभा घुरै छथि, दुखी मुँहपर मुस्की आबि जाइ छन्हि आ शतरंजक सभटा घनकेँ ओ एकत्र करै छथि आ हाथसँ सभटाकेँ नेपथ्य दिस सहटारि कऽ मंचसँ हटा दै छथि।)

हिर्र हिर्र सूगर जाइए अखराहा करीब सँ

पाछू बंशीधर भाभन खेहारैए भीर सँ

भोरे भोरे अखराहामे सूगर संग युद्ध रे

श्यामसिंह आबि माटि फेकल जूमि रे

बंशीधरकेँ तामस उठलै बाजल किछु बात रे

गहिल गहिल कहि श्याम सिंह छूटल जोर रे

बंशीधर बलगर छल मारल बड़ जोर रे

अरड़ा कऽ खसल श्यामसिंह, भेल अन्हेर हे

ओकर बेटा बालाराम केलक एकटा सत्त हे

एक सत्त दू सत्त ..तीन सत्त...हँ.....

गहिल दिअ शक्ति हमरा मारी बंशीधर केँ

गहील गेली दुर्गाजी लग करबेलन्हि सत्त हे

दुर्गा मुदा आबै छथि बंशीधरकेँ रक्ष हे

बंशीधरक सूगरकेँ मोहिनी काँटी भोकि मारल हे

बंशीधर तमसा कऽ ललकारा दैए बालारामकेँ

मुदा बालाराम भोंकैए काँटी ओकरो पेटमे

बंशीधरक पेट चिराएल दुर्गा एली बीचमे

गंगामे कऽ ठाढ़ कएल बालाराम बंशीधरकेँ

दोस्ती भेलै दुहू गोटे क बीचमे

गहिल मिलिल, मिलिल दुर्गा सभ मिलू संग हे

सभ मिलि बढ़ू अहि देसमे

((वल्लभा आ गंगेश एक-दोसराकेँ ताकऽ लगैत छथि)

(हूआ-हूआक ध्वनिक संग अन्हार पसरि जाइत अछि।)

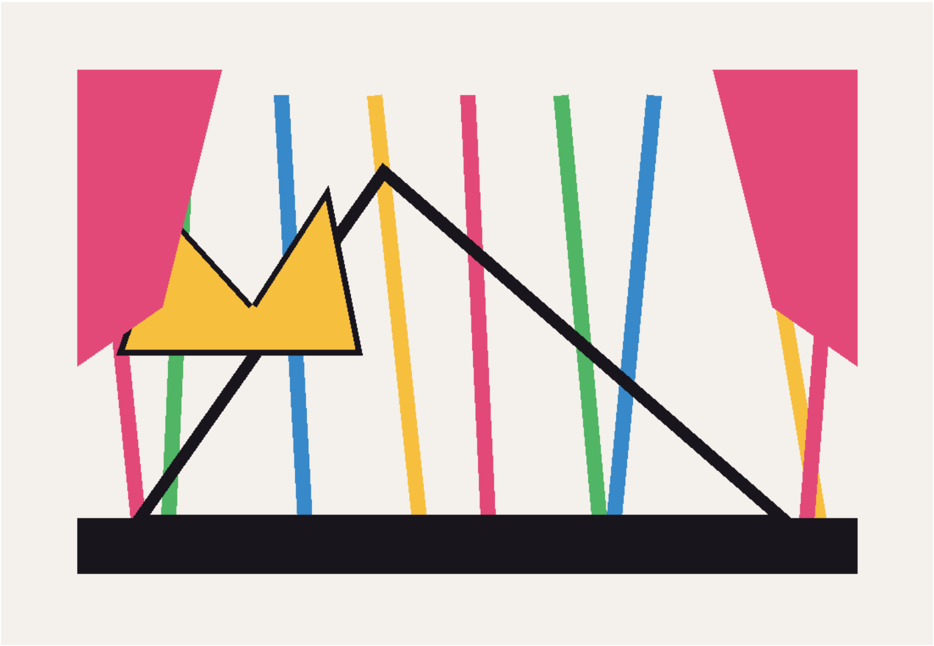

चित्र 5

(आचार्य व्याघ्र एकटा शतरंजक घनक चारू कात घूमि रहल छथि। आचार्य सिंह दोसर शतरंजक

घनक चारू कात घूमि रहल छथि। दुनूक गरदनिमे कारी कपड़ा गाँती जकाँ मुँह भिरा कऽ

बान्हल छन्हि। वातावरणक संगीत लगैए जेना बँसबिट्टीक हुअए आ भुतहा सन वातावरण चारू

दिश सृजित अछि। घन घूमिते-घूमिते जेना नामक अक्षर मेटा रहल हो; बीच-बीचमे सूखल

तालपत्रक खरखराहटि सुनाइ दैत अछि।)

आचार्य व्याघ्र: (आचार्य सिंह दिस ताकि) तत्वचिन्तामणिमे हमरा सभक चर्चा गंगेश केलन्हि

मुदा आब लोक हमर सभक असल नाम सेहो बिसरि गेल। हमर सभक पोथी सेहो सुड्डाह भऽ गेल।

आचार्य सिंह: (आचार्य व्याघ्र दिस ताकि) मुदा अपना सभक तँ ऐसँ कोनो सरोकार अछिये नै,

तखन?

आचार्य व्याघ्र: (मंचक सोझाँ अबैत) हँऽऽऽऽऽऽ, आ मुइलाक बाद भूत राकशसँ नीक व्याघ्र आ

सिंह कहेनाइ भेल ने, हँऽऽऽऽऽऽऽऽऽऽऽऽऽ।

आचार्य सिंह: (आचार्य व्याघ्रकेँ पाछाँ सँ टोकैत) मुदा अपना सभक तँ कोनो सरोकार छलैहे नै,

दर्शनक सिद्धान्तमे गंगेश द्वारा कएल आचार्य सिंह: आ आचार्य व्याघ्र: कहि कऽ मात्र कएल

गेल छल हमरा सभक चर्चा...

आचार्य व्याघ्र: (घुरि कऽ देखैत) आ तहीसँ हमरा सभ अछोप भऽ गेलौं किने।

आचार्य सिंह: मुदा ओ तँ आनो लोकक चर्च तत्वचिन्तामणिमे केने छथि। ओ सभ किए अछोप नै

भेला...

आचार्य व्याघ्र: कारण हुनकर सभक नाम गंगेश लिखने रहथि, स्पष्ट नाम, फलना आ चिलना,

मुदा अपना सभक लेल ओ आचार्य सिंह: आ आचार्य व्याघ्र: मात्र लिखने छथि। से गंगेशक कविता

बनि गेल उल्कामुख आ हम सभ बनि गेलौं व्याघ्र आ सिंह। नाम नुकेलासँ मनुक्ख धीरे-धीरे प्रतीक बनैए, प्रतीकसँ कथा, आ कथासँ दोष। गंगेशक बेटा वर्द्धमान गंगेशक विषयमे लिखलन्हि “

आचार्य सिंह: (आचार्य व्याघ्र दिश ताकि) कोन रहस्य छै ऐ मे?

आचार्य व्याघ्र: (मंचक अग्र भागमे आबि) असुरक्षा आचार्य सिंह, असुरक्षा। गंगेश केलक रक्षा हमर सभक तर्कक श्रीहर्षक आक्रमणसँ, आ बनेलक नव्य-न्याय। नवका शास्त्र, नवका न्यायशास्त्र। ओहो अजीबे भेल, पिताक मृत्युक पाँच साल बाद भेलै ओकर जन्म आ चर्मकारिणीसँ केलक विवाह। आ ओइ विवाहसँ जे पुत्र भेलै वर्धमान से फेर मिलेलक न्याय आ नव्य-न्यायकेँ। मुदा वर्द्धमान अपन पिताक कविताकेँ नै बिसरल। असुरक्षा आचार्य सिंह, चौपाड़ि मध्य बाहरक विद्यार्थीकेँ तत्वचिन्तामणिक प्रतिलिपि पक्षधर नै करऽ दै छलखिन्ह, ने सार-संक्षेप लिखऽ दै छलखिन्ह। चौपाड़िमे वर्द्धमानक बाद सभ कियो आचार्य व्याघ्र, आचार्य सिंह आ उल्कामुख, ऐ सभकेँ काल्पनिक बना देलक।

आचार्य सिंह: (पाछूसँ आचार्य व्याघ्रकेँ टोकैत) मुदा ऐसँ सर्जन कोना हएत आचार्य व्याघ्र? बिन सर्जनक चौपाड़िपर विद्यार्थी आत्म अभिव्यक्ति कोना करत? योग्यता कोना बढ़त। पुरान इतिहास, पुरान ज्ञान व्याघ्र, सिंह आ उल्कामुख बनि नै रहि जाएत? प्रतिबन्ध, प्रतिबन्ध..फेर ज्ञानक विस्तार कोना हएत? समाजक एक वर्ग दोसरसँ कटि जाएत... प्रतिबन्ध, प्रतिबन्ध..ऐ सँ स्नेह बढ़त वा निरपेक्षता बढ़त? जे अहाँकेँ करबाक हुअए करू, जे हमरा करबाक हएत हम करब..की समाजक यएह गति हएत?

आचार्य व्याघ्र: (घुरि कऽ आचार्य सिंह दिस तकैत) आचार्य सिंह। की ऐ विस्मरणकेँ रोकबाक प्रयास नै हेबाक चाही?

आचार्य सिंह: हेबाक चाही आचार्य व्याघ्र। कोनो चीजक विस्मरण तावत धरि सम्भव नै जाधरि ओकरा हम सभ बुझनाइए नै छोड़ि दइ।

आचार्य व्याघ्र: बुझि कऽ मोन राखनाइ, ठीक कहलौं आचार्य सिंह। तँ चौपाड़िपर ई व्यवस्था भऽ रहल हएत जे बिनु बुझने पाठ विद्यार्थीकेँ यादि कराएल जाए जइसँ सभ बिसरि जाथि गंगेश आ वल्लभाकेँ।

आचार्य सिंह: मुदा हम सभ संकेतक प्रयोग कऽ सकै छी। संकेतसँ स्मरण विस्मरण नै बनत। अपूर्ण रहत चौपाड़िक पाठ, आ अपूर्ण पाठक विस्मरण नै भऽ सकैए, विस्मरण होइए मात्र पूर्ण पाठ।

आचार्य व्याघ्र: मुदा कोन संकेतसँ रुकत ई विस्मरण आचार्य सिंह..

आचार्य सिंह: उल्कामुख...

(आकाशवाणी होइए...आ बिजलौका लौकैए. उल्कामुख..उल्कामुख...उल्कामुख...उल्कामुख...चारू दिस सोर होइए...आचार्य व्याघ्र आ आचार्य सिंह वाम रंगशीर्ष दिश जाइ छथि। तावत आचार्य

शरभ दूटा शिष्य- शिष्य खिखिर आ शिष्य शाही-क संग प्रवेश करै छथि आ रंगपीठ होइत

दहिना मत्तवर्णीपर आबि जाइ छथि। दुनू शिष्य एकटा शतरंजक घन उठा कऽ अबै छथि। प्रकाश दहिना मत्तवर्णीपर केन्द्रित भऽ जाइत अछि। तीनूक गरदनिमे उज्जर कपड़ा गाँती जकाँ मुँह भिरा कऽ बान्हल छन्हि। वातावरणक संगीत लगैए जेना बँसबिट्टीक हुअए आ भुतहा सन वातावरण चारू दिश सृजित होइत अछि।वातावरण पहिनेसँ बेशी डेराओन भऽ जाइए..बीच-बीचमे गीदरक हुआ..हुआ..क अबाज अबैए।)

आचार्य सरभ: (मंचक सोझाँ अबैत) ई गंगेश आ वल्लभाक विवाह... शतरंजक खाना सभ दैत्याकार

बनि जाएत, सात सए सालमे जाति खतम भऽ जाएत..किछु करू... रोकू.. विस्मरण... विस्मरण....

(दुनू शिष्य दिस तकैत) शिष्य खिखिर, शिष्य शाही।

शिष्य खिखिर: (आचार्यकैँ सम्बोधित करैत, शिष्य शाही सेहो पाछाँसँ लपकि कऽ देखैए) आचार्य सरभ, अपूर्ण पाठ क विस्मरण नै भऽ सकैए, विस्मरण होइए मात्र पूर्ण पाठ।

शिष्य शाही: (आचार्यकैँ सम्बोधित करैत, शिष्य खिखिर सेहो पाछाँसँ लपकि कऽ देखैए) आचार्य सिंह आ आचार्य व्याघ्रक शिक्षासँ निकलल अछि संकेत लिपि, संकेतसँ स्मरण विस्मरण नै बनत आचार्य सरभ। ओ संकेत पाठ अछि उल्कामुख..

आचार्य सरभ: (दुनू हाथ आकाशमे उठा कऽ गर्जन करै छथि) की अछि ई उल्कामुख? शिष्य खिखिर, शिष्य शाही..की अछि ई उल्कामुख? बड्ड नाम सुनै छिऐ एकर। मुदा चौपाड़िपर कियो बताएत जे की छिऐ ई उल्कामुख?

शिष्य शाही: आचार्य सरभ, कोना देखब ई उल्कामुख। ई आचार्य सिंह आ आचार्य व्याघ्रक शिक्षाक प्रयोग अछि जे गंगेश आ वल्लभा अपन कविता सभमे केने छथि। जे बना देलक अपना सभकैँ भूत, कल्पना....आ सेहो आचार्य व्याघ्र आ आचार्य सिंहक प्रतापे...सभटा अछि संकेत मात्र, संकेत जे अछि चारू कात, आ जे अछि कतौ नै।

आचार्य सरभ: मुदा आचार्य व्याघ्र आ आचार्य सिंह...ओहो तँ छथि कल्पना..तखन कोना कऽ रहल छथि ओ सभ ई?

शिष्य शाही: अपना सभक प्रतापे..

शिष्य खिखिर: (बीचमे टोकैत) अपना सभक प्रतापे?

आचार्य सरभ: हँ, जखन विस्मरणक शक्ति बढ़ि जाइए तँ स्मरण आबि जाइए ओ सभ बौस्तु जइसँ हम घृणा करै छी। आ तेँ आबि गेल आचार्य व्याघ्र आ आचार्य सिंह। आ जखन आबि गेला आचार्य व्याघ्र आ आचार्य सिंह तँ आनि लेलन्हि हमरा सभकैँ। मुदा ओ संकेत, ओ उल्कामुख ऐ बँसबिट्टीकैँ पार केलक कोना शिष्य शाही।

(शिष्य शाही शिष्य खिखिर दिस बकर-बकर तकैत अछि।)

शिष्य खिखिर: (आचार्य सरभ दिस ताकि) आचार्य सरभ... खतम तँ कैये देलिऐ हम सभ.. आचार्य

व्याघ्र आ आचार्य सिंहकेँ.... जँ गंगेश आदर देलन्हि हुनका सभकेँ तँ से पोथी सभ सेहो सुड्डाह भऽ गेल। गंगेशक कवित्वक चर्चा सुड्डाह भऽ गेल..तँ हुनकर कविता बनि गेल उल्कामुख.. वल्लभा बना देलन्हि ओकरा उल्कामुख.. आचार्य व्याघ्र, आचार्य सिंह आ गंगेश.. ऐ तीनू नामक भय.. पुरान इतिहास व्याघ्र, सिंह आ उल्कामुख बनि गेल तँ हमहू सभ तँ सरभ, खिखिर आ शाही बनि गेलौं। सरभ तँ कल्पित भऽ गेल, पूर्ण कल्पित, ओइ नामसँ तँ कोनो जानवर छैहे नै.. मुदा सरभ नामसँ पहिनहियो कोनो जन्तु नै रहै, मुदा सरभ रहै सदिखन.. काल्पनिक जन्तु.. शाही आ खिखिर सेहो खतम भेल जाइए.. कम भेल जाइए.. व्याघ्र आ सिंह सन... प्रतिबन्ध, प्रतिबन्ध.. फेर ज्ञानक विस्तार कोना हएत?

आचार्य सरभ: (अविश्वास भावसँ शिष्य खिखिर दिस ताकि) हम पूर्ण कल्पना छी शिष्य खिखिर?

शिष्य शाही: (बीचमे टोकैत, आचार्य सरभ दिस ताकि) आचार्य, अहाँ कल्पना छी आ हम सभ कल्पना बनैबला छी।चौपाड़िपर बाहरक विद्यार्थीकेँ तत्वचिन्तामणिक प्रतिलिपि पक्षधर नै करऽ दै छलखिन्ह, आब देखियौ चौपाड़िक दशा.. बाहरक विद्यार्था तँ छोड़ू एतुक्को विधार्थीक एतए अभाव भऽ गेल अछि।

आचार्य सरभ: (मंचक सोझाँ आबि गर्जन करैत) हम कल्पना? आचार्य सरभ भूतकालक अछि कल्पना

आकि आचार्य सरभ भविष्यकालक अछि कल्पना..विस्मरण..दोसराकेँ विस्मरण सिखबैत स्वयं विस्मरित भऽ गेल अछि आचार्य सरभ। विस्मरण मंत्र..ई उल्कामुख बनि गेल अछि भय.. दोसराकेँ विस्मरण सिखबैत स्वयं विस्मरित भऽ जाइए लोक।

(आकाशवाणी होइए.... उल्कामुख..उल्कामुख...उल्कामुख...उल्कामुख...आचार्य व्याघ्र आ आचार्य सिंह वाम रंगशीर्षपर प्रकाश एलापर साकांक्ष भऽ जाइ छथि। आचार्य शरभ, शिष्य खिखिर आ शिष्य शाही दहिना मत्तवर्णीपर अन्हार भेलासँ मात्र छाह बनि जाइ छथि। तीनू छाह शतरंजक घन उठा कऽ आगाँ बढ़ैत छथि।)

आचार्य व्याघ्र: हम कल्पना? भूतकालक कल्पना आकि भविष्यकालक?..

आचार्य सिंह: (बीचमे टोकैत) भूतकालक आचार्य व्याघ्र, भूतकालक। भविष्य तँ वल्लभक मृत्युक सात सए साल बाद आएत..अखन तँ अदहे बीतल अछि... भविष्यकालक तँ प्रतीक्षा अछि..मुदा तावत की की कल्पना बनि जाएत...की की बचल रहि जाएत।

(सौंसे अन्हार पसरि जाइत अछि, अन्हारेमेसँ आचार्य सिंह आ आचार्य व्याघ्रक अबाज बहराइए।)

आचार्य व्याघ्र: तखन कल्पने सही आचार्य सिंह। चलू वर्द्धमान, दीना, भदरी आ उदयन लग। वएह सभ कोनो गप बतेता।

आचार्य सिंह: ई कोनो बेजाए गप नै हएत आचार्य व्याघ्र। षडयंत्रकेँ तँ तोड़ैए पड़त.. मुदा

तावत की की बचल रहि जाएत सएह..।

आचार्य व्याघ्र: से तँ देखिये रहल छी आचार्य सिंह। आचार्य सरभ आ हुनकर शिष्य शाही आ शिष्य खिखिर, ओहो सभ चुप नै छथि, किछु ने किछु कइये रहल छथि। एकटा रटैबला मशीन बनि गेल अछि मिथिलाक विद्यार्थी। नव्य-न्याय बंगाल चलि गेल, तकर ककरो कोनो चिन्ता नै छन्हि.. जे किए चलि गेल.. वल्लभा आ गंगेशकेँ खतम करैत करैत ओ सभ सेहो खतम भऽ रहल छथि।

आचार्य सिंह: आचार्य व्याघ्र से तँ आरो खराप भेल.. हे आबि गेलाथि वर्द्धमान, दीन, भदरी आ उदयन।

(प्रकाश भऽ जाइत अछि आ मुख्य रंगमंच स्थलपर आचार्य सिंह, आचार्य व्याघ्र, उदयन,

दीना, भदरी आ वर्द्धमान देखना जाइ छथि।)

आचार्य सिंह: (सभकेँ सम्बोधित करैत) हम सभ एतए एकत्र भेल छी..

वर्द्धमान: (बीचेमे टोकैत) कोनो अकाल..

उदयन: कोनो बाढ़ि..

आचार्य व्याघ्र: (सभकेँ सम्बोधित करैत) नै उदयन, बाढ़ि नै, नै वर्द्धमान अकाल नै..

आचार्य सिंह: (वर्द्धमान आ उदयनकेँ सम्बोधित करैत) वर्द्धमान, सोचक अकाल छै। उदयन, क्षुद्रताक बाढ़ि आएल छै।...

दीना: (बीचमे टोकैत) कोनो बाहरी शत्रु..

भदरी: मनुक्ख आकि बनैया पशु..

आचार्य व्याघ्र: (दीना आ भदरीकेँ सम्बोधित करैत) नै दीना, कोनो बाहरी शत्रु नै। भदरी कोनो बाहरी नै, ने कोनो मनुक्ख आ नहिये कोनो बनैया पशु..

आचार्य सिंह: (दीना आ भदरीकेँ सम्बोधित करैत) सभ अपने लोक दीना-भदरी। कोनो बाहरी शत्रु नै..कोनो बनैया नै, सभ खुट्टे पड़हक.. आचार्य सरभ.. आ हुनकर शिष्य सभ..

उदयन:: (मंचक सोझाँ अबैत) जगन्नाथ मन्दिरमे उदयनक उद्घोष, जे जैँ हम तेँ तूँ पूजित होइ छह। बन्द केवार खुजि गेल। आ ई के छी आचार्य सरभ.. एकटा गीदर..

दीना-भदरी: (सम्वेत स्वरमे, मंचक सोझाँ अबैत) जड़िमे दुनू गोटे अड़ा देलिऐ शरीर आ दरकि गेलै देवार। आ बन्न केवार खुजि गेल। आ ई के छी आचार्य सरभ.. एकटा गीदर..

दीना: (मंचक सोझाँसँ पाछू घुमैत) मुइल गाइक हड्डीमे फोटरा गिदर बनि नुका कऽ सलहेस

दीना-भदरी आ बाघक कुश्ती देखथि। बाघक रान पकड़ि दू कात चीर कऽ फेकी हम दुनू भाँइ आ मुइल गाइक हड्डीसँ बहार भऽ फोटरा गीदर बनल सलहेस ओकरा जोड़ि देथि आ फेर । आ ई के छी आचार्य सरभ.. एकटा गीदर..

आचार्य सिंह: सभ सएह उपाय करू, कोना ओ गीदर फेकत आगि.. जे नै फेकि सकै ओ आगि

भदरी: मिथिलाक राजा मग्गहक हंशराज-वंशराजसँ नरुआरक पोखरि खुनबओलन्हि मुदा ओ जाइठ नै उठा सकल। हम दुनू भाँइ दछिनबरिया भीड़सँ जाइठ फेकलौं तँ ओ सोझे जाठिक लेल बनाएल खाधि-बॉली मे जा कऽ खसल। ई जाइठ अखनो दक्षिण दिस टेढ़ अछि। आ ई के छी आचार्य सरभ..

एकटा गीदर.. जे फेकैए आगि..

आचार्य सिंह: सभ सएह उपाय करू, कोना ओ गीदर फेकत आगिक गोला.. आ कोना बचत... कोना बचत विस्मरणसँ ई देश..

उदयन:: (कने चिन्तित होइत) विस्मरण!!!!!मन्त्रार्थमे महर्षि पतञ्जलिक वैज्ञानिक मन्तव्य “यच्छब्द आह तदस्माकं प्रमाणम्” माने जे शब्द आकि मंत्रक पद कहैत अछि सएह हमरा लेल प्रमाण अछि- एकर अर्थ बादमे वेदे प्रमाण अछि- सेहो हमरा नामसँ भविष्य पुराणमे नै जानि किए गलत रूपेँ दऽ देल गेल। अनकर देखल बौस्तुक स्मरण अनका कोना हेतै? विस्मरण.. आचार्य सरभक वस्मरण आगि अछि पसरि रहल.. आब बूझल..

आचार्य व्याघ्र: वएह स्मरण खतम कएल जा रहल छै.. स्मरण विस्मरण बनाएल जा रहल छै।

दीना-भदरी (सम्वेत रूपेँ): धामी कहलक हमरा सभकेँ काज करैले अपना खेतमे। मारि कऽ जुमा कऽ फेकलौं हम सभ ओकरा धामिन लग। धामिन गेल खिसिया आ बजेलक अपन दोस फोटरा गीदरकेँ। फोटरा गीदर मारलक हमरा सभकेँ। मुदा जिअत जिनगी पाबि कऽ ई उल्कामुख.. उदयन अहाँक विद्या पास नै अछि एतऽ.. मुदा जीबि गेल छी हम सभ मरियो कऽ...

उदयन:: बुझलौं, आब बुझलौं। लोकगाथा बनबए पड़त, नाराशंसी जगबए पड़त। हमर आ गंगेशक ग्रन्थकेँ बिनु बुझने रटबाक मतलब भेल विस्मरण।

वर्द्धमान: (गर्जन करैत) सुकविकैरवकाननेन्दु: गंगेश बनि जेताह उल्कामुख।

आचार्य व्याघ्र: जेना हम सभ बनि गेल छी, व्याघ्र आ सिंह आचार्य सिंह।

आचार्य सिंह: आ बना देने छी चौपाड़िक शिक्षककेँ आचार्य सरभ आ ओतुक्का विद्यार्थीकेँ खिखिर आ शाही। सभटा भऽ जाएत खतम? सर्वविनाश..

दीना: मुदा दौरीवाली हिरिया तमोलिन केलक तपस्या पतिक रूपमे प्राप्ति लेल..

भदरी: आ दौरीवाली जिरिया लोहारिन केलक तपस्या पतिक रूपमे प्राप्ति लेल..

दीना-भदरी (सम्वेत रूपेँ): मरलाक बादो। गंगामे पैसि बनेलौं पत्नी दुनूकेँ। मरलाक बादो।

आचार्य व्याघ्र.. आचार्य सिंह.. उदयन.. वर्द्धमान.. मरियो कऽ जिअत.. बिसरलो चीज घुरत..

उदयन: : गंगेश केलक रक्षा हमर तर्कक श्रीहर्षक आक्रमणसँ, नव्य-न्याय। नबका शास्त्र, नबका न्यायशास्त्र। ओहो अजीबे भेल, पिताक मृत्युक पाँच साल बाद भेलै ओकर जन्म आ चर्मकारिणीसँ केलक विवाह। आ ओइ विवाहसँ जे पुत्र भेलै वर्धमान से फेर मिलेलक न्याय आ नव्य-न्यायकेँ।

दीना-भदरी (सम्वेत रूपेँ): सत्यकामक सेहो तँ सएह हाल रहै। पिता के छलै ओकरा बुझले नै छलै,

जबालाक पुत्रसत्यकाम, मुदा गौतम, मिथिलाक गौतम, हुनका सन गुरु भेटलै, वेदक अध्ययन केलन्हि। मरलाक बादो उदयन, नव आ पुरानक मेल आ विरोध होइए। वंशीधर बाभन आ बालारामक मेल भेल, लोक देवी गहील आ पौराणिक दुर्गा देवीक मेल भेल।

उदयन: : (आश्चर्यसँ) मरलाक बादो दीना-भदरी।

दीना-भदरी (सम्वेत रूपेँ): हँ उदयन। फोटरा गीदर बनल दोस...संग भेलाह सलहेस। मरलाक बादे...

(अन्हार पसरि जाइत अछि, मुदा गपशप सुनबामे अबैत अछि, आचार्य सरभ आ शिष्य शाही आ खिखिरक गपशप।)

आचार्य सरभ: शिष्य नढ़िया, शिष्य बिज्जी, मारू , मारू खिखिर आ शाहीकेँ मारू। विद्यामे क्षति कऽ रहल अछि ई दुनू।

(मारि-पीटक शब्द आ खिखिर आ शाहीक आर्तनाद।)

आचार्य सरभ: लगैए खिखिर आ शाही मरि गेल। शिष्य नढ़िया, शिष्य बिज्जी। आब पढ़ाइ शुरू करू। कोनो दिक्कत नै हएत आब।

शिष्य नढ़िया: सभटा रटि लेलौं आचार्य सरभ, तूँ रटि लेलेँ बिज्जी।

शिष्य बिज्जी: हमहूँ सभटा रटि लेलौं नढ़िया। हँ आचार्य हमहूँ सभटा रटि लेलौं।

आचार्य सरभ: ठीक छै, अहाँ सभ जाइ जाउ।

(मंचपर प्रकाश आबि जाइत अछि, आ मात्र आचार्य सरभ मंचपर देखा पड़ै छथि।)

आचार्य सरभ: ठीक छै, आब सभ ठीक छै, धधरा हम फेकैत छी, हम आचार्य सरभ। बनबऽ दियौ ओकरा सभकेँ उल्कामुख, धधरा तँ हमहूँ फेकैत छी। आब हमरा बाद बनत आचार्य हमर दुनू शिष्य। हमर दुनू शिष्य बनत आचार्य, आचार्य नढ़िया आ आचार्य बिज्जी। आइ धरि तँ आचार्यमे कियो ने कियो एकटा बचिये जाइ छल; आब रटन्त विद्या बचत, प्रश्न मरत।

(तखने माइकसँ गीत आबऽ लगैए, आचार्च सरभ चारू कात ताकऽ लगै छथि...)

एक मूड़ी तुलसी जल साजि के रखिहेँ गै मलहीनियाँ
हमरा पानि सेब देवता अरैध के लबिहेँ गै
एक मूड़ी तुलसी जल साजि के रखिहेँ गै मलहीनियाँऽ?
हमरा गौरध्या सन अरैध के लबिहेँ गै
एक मूड़ी तुलसी जल साजि के रखिहेँ गै मलहीनियाँ
हमरा गहील सन देवता अरैध के लबिहेँ गै.....।

.....

आचार्य सरभ: (चारू दिस तकैत) के छी? के छी? (उद्विग्नतासँ मंचपर विचरण करैत) के छी।

अपन प्रिय शिष्य खिखिर आ बिज्जीकेँ मारलौं.. मुदा ई के सभ छी जे विस्मरण रोकऽ चाहैए। संकेतसँ पसारऽ चाहैए ओ जकर हएत पूर्ण विस्मरण (पागल सन एम्हर-ओम्हर घुरियाइए, अबाज फेर

अबैए)।

दुर-दुर छीया ए छीया,

सरभक मुँहसँ धधरा निकलै

जरै किछु नै किए?

दुर-दुर छीया ए छीया,

.....

(रुदन स्वरमे यएह गीत फेर अबैए, सरभ चौंकै छथि। स्वर कानऽ लगैए, आ आचार्य सरभ हँसऽ लगै छथि, हँसिते रहै छथि। सगरे अन्हार पसरि जाइए।आ जखन इजोत होइए तँ उदयन, दीना, भदरी आ वर्द्धमान मुख्य रंगमंचपर देखा पड़ै छथि।)

उदयन:: (मंचक सोझाँ सम्बोधित करैत) आब पुरान नाम फेरसँ रखबाक परम्परा आएल छै। से हम उदयन। ई छथि दीना, ओ भदरी, ओ वर्द्धमान.....सुनै छिऐ नामक सेहो प्रभाव पड़ै छै। नाम स्मरणक पहिल दीप अछि; दीप बुतल तँ घर रहितो अन्हार। जे से...

वर्द्धमान: (पाछूसँ उदयनकेँ सम्बोधित करैत) धारक कातमे आ साँपबला घरमे निवास केनिहारकेँ चैन कतऽ उदयन? ई मिथिला सएह बनि गेल अछि।

उदयन:: (मंचक सोझाँ घुरि सभकेँ सम्बोधित करैत) भातढाला पोखरि आ सागढाला पोखरि जाए पड़त, तत्काल।

दीना: (उदयनकेँ सम्बोधित करैत) जतए भीम भात आ साग रखैत रहथि?

उदयन: हँ, आ सिमलवन सेहो।

भदरी: (उदयनकेँ सम्बोधित करैत) सेमापुर जतए अर्जुन अपन अस्त्र-शस्त्र अज्ञातवास कालमे नुकेने रहथि?

उदयन: हँ, एकटा आर युद्ध शुरू भऽ गेल अछि। दिमागी युद्ध.. नाराशंसी.. शुरू हएत दिमागमे..

वर्द्धमान: (हाथ पसारि)

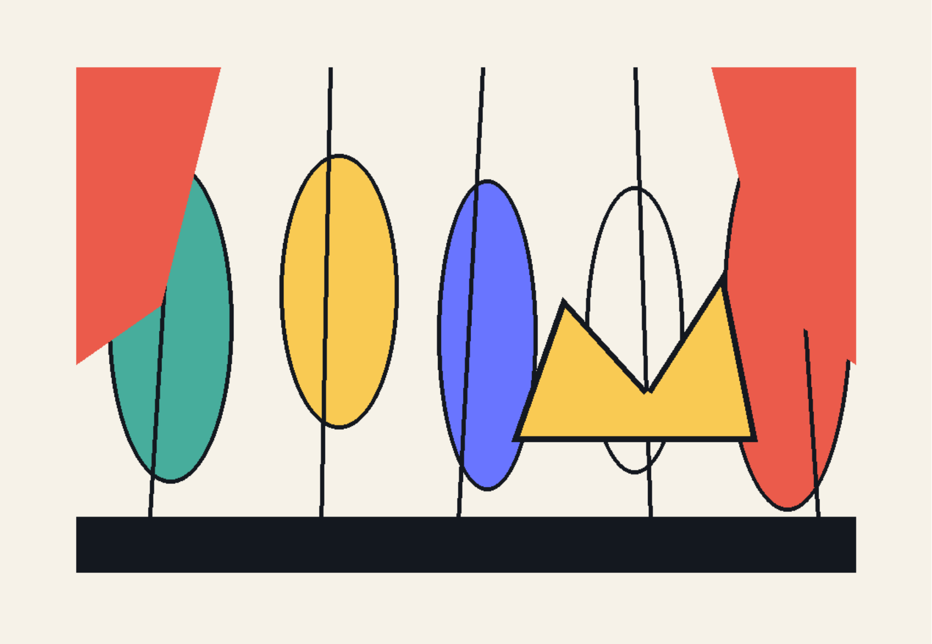

चित्र 6

घृणाक तरहरिमे

प्रेम, मुस्कीसँ जीतब घृणा आ ईर्ष्याकेँ

घृणाक तरहरि खूनऽ दियौ

ओइ तरहरिमे घृणाकेँ गारि देबै

अपन प्रेमक शक्तिसँ

उदयन:: हँसैत- मुस्कियाइत करबै आग्रह

जे परिश्रम घृणाक तरहरि बनबऽमे लगौलक

कहबै प्रेमक पोखरि काटऽ

जइमे प्रेमक पानि बरखा मासमे भरि जाएत

आ भरले रहत, ततेक गहींर कऽ काटल रहत माटि

ओइमे हेलत प्रेम

हेलैत रहत

आ बहि जाएत, डूमि जाएत घृणा आ ईर्ष्या

डूमि जाएत आ बझा कऽ लऽ जएतै पनिडुब्बी ओकरा

दीना:

जावत हम रहब

नै छूबि सकत क्यो प्रेमक सत्यक पुत्रकेँ

कारण शक्तिसँ, ऊर्जासँ भरल अछि सत्यक पुत्र

ओकर चारूकात स्थूल-प्रेमक गिलेबासँ ठाढ़ कएल घेराबा रहत

नै करू चिन्ता।

भदरी:

आ जहिया हम नै रहब

सीखि जाएब अहाँ सभ किछु

हमर वियोग बना देत सक्कत, तीव्र आ कठोर

सत्यक विरोधीक लेल

ओइ घेराबाकेँ तोड़बाक प्रयास

अहाँक स्थूल-प्रेमी मित्र सभ नै हेमऽ देथिन्ह सफल

उदयन:

से हम रही वा नै रही

प्रयाण थम्हत नै

बतहपना बढ़त नै

मारि देब तँ मारि दिअ

मुदा मोन राखू

हमरा संगे मरत आर बहुत रास वस्तु

मुदा रहबे करत स्थूल-प्रेमी साधक सभ

दीना:

आ करत पहिल नृत्य हस्त संचालनसँ

चतुरहस्त

आनन्दसँ भरल मोन

सत्य, झूठ आ तकर निर्णयक लेल

भदरी:

सनगोहिक चामसँ छारल डफ-खजुरी लए

डोरीक कम्पनसँ ध्वनि निकालत

गुमकी, ओइ खजुरीक ध्वनि

आ गुमकी, गुम..गुम..गुमकी...

आ तखन दोसर नृत्य होएत प्रारम्भ

दीना:

शिखरहस्त

पर्वतशिखरसन

युद्धक आवाहन-प्रदर्शनक लेल

घृणाक तरहरि खूनऽ दियौ

मारि देत तँ मारऽ दिऔ

मोन राखू मुदा

हमरा संगे मरत आर बहुत रास वस्तु

उदयन:

मुदा हमर वियोग बना देत सक्कत, तीव्र आ कठोर

रक्तबीजी सत्यपुत्र सभकेँ

दीना-भदरी: (सम्वेत स्वरमे)

बुढ़िया डाही संग अछि

कमलक मृणाल, पुरैनि, कमलगट्टा, बिसाँढ़सँ भरल खेत

ओ नै छथि बुढ़िया डाही

खेत जे छलै सनगर यौ

से बनल प्रेमक कमलदह

घृणाक विरुद्ध अछि हमर ई बुढ़िया डाही

(वल्लभाक अबाज अबैए, सभ चौंकि कऽ देखऽ लगै छथि।)

दीना-भदरी:

बुढ़िया डाही, वल्लभा.. वल्लभा.. देखू प्रभाव उदयन.. देखू..

वल्लभाक अबाज:

वल्लभाक अबाज: नाम काटू, गीत काटू, देह काटू, मुदा प्रेमक ध्वनि कतऽ काटब?

फेर वएह गप

आत्मरक्षार्थ

सत्यक विरोधमे

चोरबा बाजल फेर

सर्जनक सुख भेटत चोरिमे?

दोसराक कृति अपना नाम केलासँ

आकि दोसराक मेहनतिकेँ अपन नाम देलासँ

दोसराक प्रतिभाकेँ दबा कऽ

कुटीचालि कऽ आर

भाँग पीबि घूर तर कऽ गोलैसी

कोनाकेँ आँगुर काटब जे लिखब बन्न करत

तोड़ि दियौ डाँर, काटि दियौ पएर

आँखि निकालि लिअ धऽ दियौ रॉलरक नीचाँमे

पिसीमाल उठा दियौ

बड़का एलाहेँ सर्जनक सुख पएबाले

(गंगेशक अबाज अबैए, सभ चौंकि कऽ देखऽ लगै छथि।)

गंगेशक अबाज:

गंगेशक अबाज: ग्रन्थ जँ प्रश्नसँ डरि जाए, से ग्रन्थ नहि, कारागार अछि।

तँ की हारि जाइ

तँ की छोड़ि दिऐ

इच्छा जीतत आकि जीतत ईर्ष्या

संकल्प हमर जे ऐ धारकेँ मोड़ि देब

संकल्प जीतत आकि जीति जाएत घृणा

मुदा किछु ईर्ष्या आ घृणा अछि सोझाँ अबैत

ईर्ष्या जे हम धारकेँ नै मोड़ि पाबी

घृणा जे बहैत रहए ओ ओहिना

ओहिना किए ओहूसँ भयंकर बनि

दीना-भदरी:

गंगेश.... देखू प्रभाव उदयन.. देखू..

वल्लभाक अबाज:

संकल्प जे हम केने छी

इच्छा जे अछि हमर/ से हारि जाए

आ जीति जाए ईर्ष्या-द्वेष/ जीति जाए घृणा

हा हारबो करी तेना भऽ कऽ जे लोक देखए!/ जमाना देखए!!

तेना कऽ हारए संकल्प हमर/ इच्छा हमर

गंगेशक अबाज:

धारकेँ रोकि देबाक/ ठाढ़ भऽ जएबाक सोझाँ ओकर

आ मोड़ि देबाक संकल्प ओइ भयंकर उदण्ड धारकेँ

मुदा किछु आर ईर्ष्या अछि सोझाँ अबैत

ओ द्वेष चाहैए जे हमर प्रयास/ धारकेँ मोड़बाक प्रयास

वल्लभाक अबाज:

मोड़लाक प्रयासक बाद भऽ जाए धार आर भयंकर

पुरान लीखपर चलैत रहए भऽ आर अत्याचारी

आ हम जाइ हारि

आ हारी तेना भऽ कऽ जे लोक राखए मोन

मोन राखए जे कियो दुस्साहसी ठाढ़ भऽ गेल छलि धारक सोझाँ

तकर भेल ई भयंकर परिणाम

जे लोक डरा कऽ नै करए फेर दुस्साहस

दुस्साहस ठाढ़ हेबाक उदण्ड-अत्याचारी धारक सोझाँमे

लऽ ली हम पतनुकान/ आ से सुनि थरथरी पैसि जाइ लोकक हृदयमे

घृणाक विरुद्ध ठाढ़ हम बुढ़िया डाही।

(अबाज शान्त भऽ जाइत अछि, फेरसँ सभ साकाक्ष भऽ जाइ छथि।)

उदयन:

मुदा हम हँसै छी

हारि तँ जाएब हम मुदा हमर साधनासँ जे रक्तबीज खसत

से एक-एकटा ठोपक बीआ बनि जाएत सहस्रबाढ़निक झोँटाबला

घृणाक विरुद्ध ठाढ़ अछि हमर ई बुढ़िया डाही।

दीना:

कमलक मृणाल, पुरैनि, कमलगट्टा, बिसाँढ़सँ भरल खेत बनत

खेत जे छलै सनगर यौ, जाहिमे घृणाक तरहरि खुनेलौं यौ

घृणाक तरहरि खूनल ओइ खेतमे

कमलक मृणाल, पुरैनि, कमलगट्टा, बिसाँढ़ अछि भरि गेल

भदरी:

मुदा प्रेमक कमल अछि फुला गेल।

सहस्रबाढ़नि झोँटाबला बुढ़िया डाही केलक ई।

वर्द्धमान:

आ तखन

फैसला हेतै आब

जखन

उनटि जाइए लोक

उनटि जाइ छै बोल

छने-छन बदलि जाइए

बिचकाबैए ठोर

बोलक मधुर वाणी

बोली-वाणी

बदलि जाइ छै

बनि जाइए बिखाह

गोबरझार दऽ चमकाबै छी स्मृतिकेँ

घृणाक विरुद्ध ठाढ़ छलि तहियो हमर ई बुढ़िया डाही।

उदयन:

धारकेँ रोकबाक हिस्सक जकरा लागि गेल छै

आ ओ सभ तकर विरुद्ध ठोकि कऽ ताल

भऽ जाएत ठाढ़

आ डरा जाएत द्वेष स्मरण कऽ

जे फेर रक्तबीजसँ निकलल ऐ सहस्रबाढ़नि सभक रक्तबीज

एकर सभक बीआक सन्तान फेर आर बढ़ि जाएत आक्रमणसँ

कारण संकल्प अछि, इच्छा अछि ई सभ

धारकेँ रोकबाक हिस्सक जकरा लागि गेल छै

सभ सम्वेत स्वरमे:

घृणाक विरुद्ध अछि जे जकरा बुढ़िया डाही अहाँ कहै छिऐ।

घृणाक विरुद्ध अछि जे जकरा बुढ़िया डाही अहाँ कहै छिऐ।

घृणाक विरुद्ध अछि जे जकरा बुढ़िया डाही अहाँ कहै छिऐ।

घृणाक विरुद्ध अछि जे जकरा बुढ़िया डाही अहाँ कहै छिऐ।

(लगैए जे सभ उड़िया रहल छथि..हबा तेज बहैए.. सभ हाथक अभिनयसँ आ देहक हवाक विरुद्ध

ठाढ़ करबाक अभिनयसँ बिहाड़िमे उड़ियेबाक अभिनय करै छथि। आस्ते आस्ते अन्हार पसरि जाइए।)

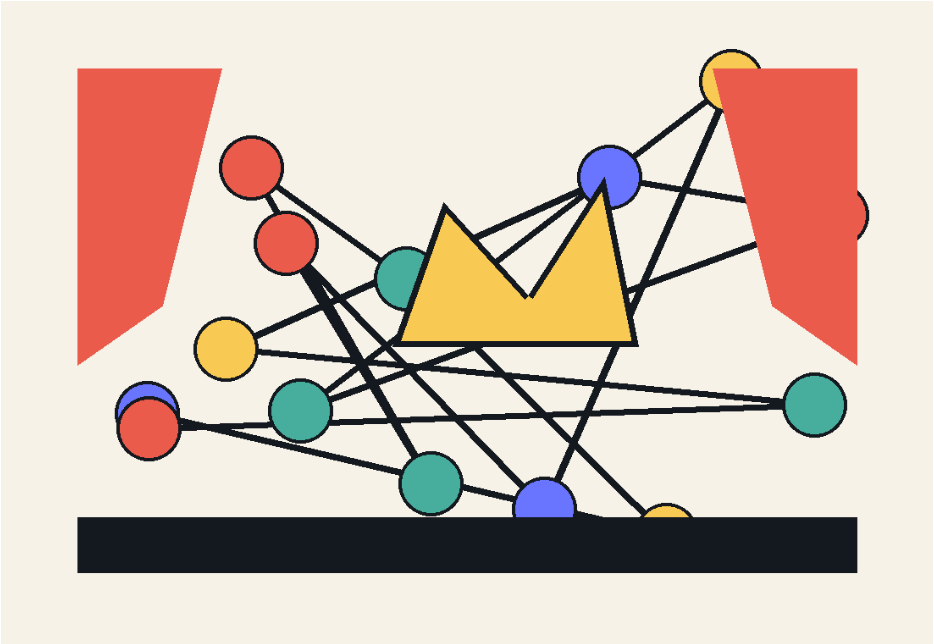

चित्र 7

(मंचपर अन्हार अछि। नेपथ्यसँ गीत अबैत अछि)

कमला मैया बसत बड़ी दूर

गमक लागे गेंदा फूल

कथी डालि लोरहब बेली-चमेली

कथी डालि लोरहब अरहूल हे

गमक लागे गेंदा फूल कमला मैया.....

किनका चढ़ाएब बेली-चमेली

किनका चढ़ाएब अरहूल

गमक लागे गेंदा फूल

गमक लागे गेंदा फूल

कमला चढ़ाएब बेली-चमेली

कोयला चढ़ाएब अरहूल,

गमक लागे गेंदा फूल हे

कमला...किनका सँ मांगब अन-धन सोनमा

किनकासँ मांगब सोहाग गे सोहाग गे

मलहिनयाँ देखै मे फूल वर लाल हे

ससिया सँ मांगब अन-धन सोनमा

मातैर सँ मांगब सोहाग गे

मलहिनयाँ देखै मे फूल वर लाल....।

(मंचपर प्रकाश अबैए। एक दिस मत्तवर्णीपर दीना आ दोसर दिस मत्तवर्णीपर भदरी छथि, दीना भातढाला पोखरि आ भदरी सागढाला पोखरिक कातमे छथि। एक दिस रंगशीर्षपर उदयन आ दोसर दिस रंगशीर्षपर वर्द्धमान छथि । रंगपीठ खाली अछि।)

वर्द्धमान: (उदयनकेँ सम्बोधित कऽ) धारक कातमे घर बनेने छी हम आ साँपबला घरमे रहै छी अहाँ आचार्य उदयन?

उदयन:: धारक कातमे निवास केनिहार आ आ साँपबला घरमे निवास केनिहारकेँ चैन कतऽ? वर्द्धमान, भातढाला पोखरि आ सागढाला पोखरिपर दीना भदरी छथि ने?

दीना: (चिकड़ि कऽ) भातढाला पोखरिपर, जतए भीम भात रखैत रहथि? हम छी दीना, एतऽ भातढाला पोखरिपर।

भदरी: (चिकड़ि कऽ) सागढाला पोखरि, जतए भीम साग रखैत रहथि। हम छी भदरी, एतऽ सागढाला पोखरिक कातमे।

उदयन: हँ, आ सिमलवन सेहो जाए पड़त ककरो, ओतऽ कब्जा छन्हि आचार्य सरभक।

भदरी: हँ वएह सेमापुर छी सिमलवन जतए अर्जुन अपन अस्त्र-शस्त्र अज्ञातवास कालमे नुकेने रहथि?

उदयन: हँ, एकटा आर युद्ध शुरू भऽ गेल अछि।

वर्द्धमान: मुदा ई युद्ध शास्त्रार्थसँ नै जीतल जा सकैए आचार्य उदयन। (रंगपीठ दिस इशारा करैत।) देखू ओतऽ सभ किछु लागि रहल अछि खाली खाली, मुदा अछि नुकाएल शस्त्र, घृणा, ईर्ष्या-द्वेष आ..

उदयन: (बीचमे टोकैत).. आ आचार्य सरभ। (रंगपीठक दूर भाग दिस इशारा करैत।) ओऽऽऽऽऽ छी ठाकुरगंज, भीम ठाकुर माने भनसिया बनि समै कटने रहथि, ओतै ओ कीचक वध केने रहथि।

भदरी: (हाथ उठा कऽ) घृणाक वध हएत आब..

दीना: (हाथ उठा कऽ) अवश्य भदरी...

भदरी: अगड़म बगड़म काठ कठम्बर

दीना: दिनमे कौआ देखि कऽ डेराइ, रातिमे नदी हेलि जाइ।

भदरी: (रंगपीठ दिस आंगुर देखबैत) ओतए मनिहारीमे श्रीकृष्णक औंठीक मणि हेरा गेल छलन्हि।

उदयन: (हाथ आ मुँह ऊपर उठा कऽ चिकरि कऽ) आचार्य व्याघ्र आ आचार्य सिंह। अहाँ सभकेँ कागचक व्याघ्र आ सिंह बनाबैबला आचार्य सरभक काट आब जा कऽ भेटल अछि.. हेराएल मणि, ई संकेत उल्कामुख पसारि दियौ सभ ठाम, ठाम-ठाम.. जे भेटतै ककरो.. आ बिसराइयो कऽ स्मरण भऽ जाएत ओ।

(नेपथ्यसँ गीत अबैत अछि। सभ स्थिर भऽ जाइ छथि।)

कटबै मे सोना सुतरिया बिनबै झुमरि जाल हे

जाल फरि-फरि कमला एलखिन

सन-झुन लागै गोहबरिया

कहाँ गेली परलोभिया सेवक

सुन लगै गोहबरिया हेऽऽ

कटबै......

जाल फरि-फरि गांगो एलखिन

रून-झुन लगै गोहबरिया हे

कहाँ गेली परलोभिया सेवक,

सुन लगै गोहबरिया हे

सुन लगै गोहबरिया हे

कटबै.........

जाल फरि-फरि मातैर एलखिन

रून-झुन लगै गोहबरिया हे

कहाँ गेली परलोभिया सेवक

सुन लगै गोहबरिया हे

कटबै.....

बिनबै झुमरि जाल हे।

(अन्हार पसरि जाइत अछि।फेर इजोत होइत अछि आ आचार्य सरभ विक्षिप्त अवस्थामे मुख्य मंचपर अबै छथि।)

आचार्य सरभ: (मंचसँ बाहर पाछू कात बोन दिस इशारा करैत।) ई बँसबिट्टी एतेक पातर किए भऽ गेल अछि। ऐमे सँ कोनो अबाज नै अबै छलै, मुदा आब ई गीत पहिल बेर एकरा चीड़ि कऽ आबि रहल अछि। ई कोना रोकि सकत उल्कामुखकेँ..कोना रोकि सकत?..(ठमकि कऽ पाछू दिस ताकि कऽ) शिष्य..(फेर ठमकि कऽ) मुदा ई शिष्य सभ तँ कोनो जोकरक अछिये नै। ई सभ कोना कऽ रोकि सकत उल्कामुखकेँ? ई सभ तँ रटन्त विद्याक पालक सभ अछि..आ स्त्रीक प्रतिबन्ध चौपाड़ि आ टोलमे कऽ देने छिऐ पहिनहियेसँ.. वएह सभ गीत गाबि रहल अछि... ई सभ तँ उल्कामुख बुझबे गुनबे नै करत तँ कोना कऽ रोकि सकत?

(आचार्य व्याघ्र आ आचार्य सिंहक प्रवेश।)

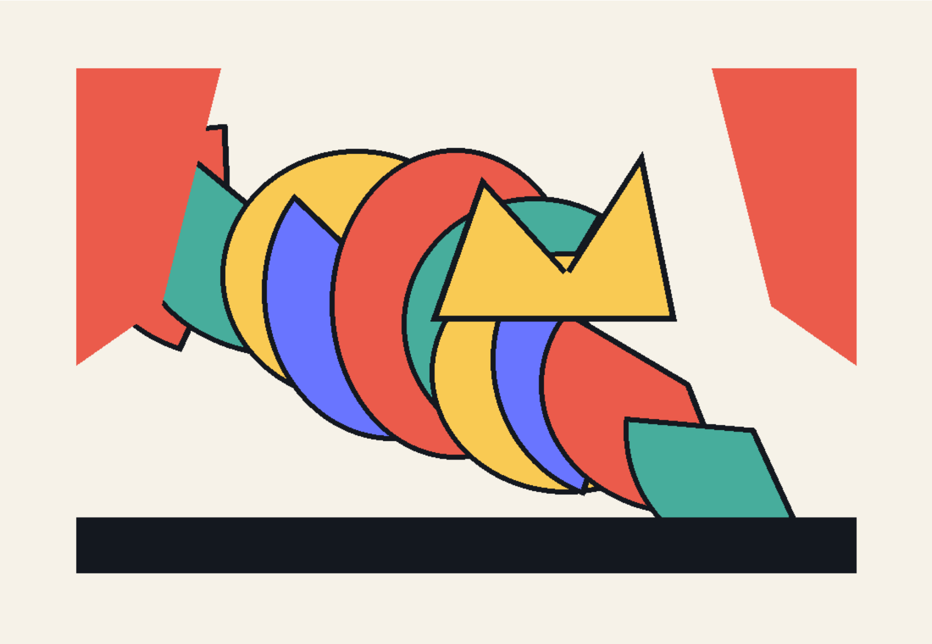

चित्र 8

आचार्य व्याघ्र: (आचार्य सरभकेँ सम्बोधित करैत) आचार्य सरभ, बहुत भेल कल्पना, थाकि गेल छी हम।

आचार्य सिंह: (आचार्य सरभकेँ सम्बोधित करैत) आचार्य सरभ, कल्पना खतम। ई जादू खतम, ई बँसबिट्टीक बेढ़ खतम भेने आब नहिये हमर, नहिये आचार्य व्याघ्रक, नहिये अहाँक, नहिये गंगेशक, नहिये वल्लभाक, नहिये वर्द्धमानक, नहिये उदयनक, नहिये दीनाक आ नहिये भदरीक अस्तित्व बाँचल।

आचार्य व्याघ्र: वृन्दावन बोन बनि गेल ई बँसबिट्टी। (बाट दिस इशारा करैत) एतऽ आबैबला

रस्ता ई बाटो बहिन मदति केनाइ शुरू कऽ देने अछि वल्लभाक। काछुक खोपड़ीमे सरिसवक तेलमे बाती राखि बियाहक दीप बनाओल गेल छलै वल्लभा लेल। कपोत रूपमे बिध-बिधाता आबि गेल छथि। (नेपथ्यसँ साँइ-साँइ करैत अबाज अबैए। आचार्य व्याघ्र कान पाथि सुनै छथि।) सुनू ई स्वर। स्वप्नलोकमे विचरणक दिन खतम भेल।

आचार्य सिंह: (अकास दिस इशारा करैत) हरियर पाँखि आ लाल ठोरबला ई सुग्गाक जोड़ी, लटपटिया सुग्गाकेँ देखू, (अकासमे दोसर दिस इशारा करैत) ऐ प्रेम सखा मोरक जोड़ी देखू, बिदा भऽ गेल अछि ऐ वृन्दावन लेल।

आचार्य सरभ: (आचार्य सिंहकेँ सम्बोधित करैत) छिन्नमस्ताक कटल मूड़ीबला धड़, ओ मूड़ी धड़सँ खसैबला बिचका मोटका धारकेँ पीबैए.. शोनितक मोटका धारकेँ.. ओ नीचाँ खसल मूड़ी, ओ खसल मूड़ी हम बनि गेल छी आचार्य सिंह..... नै हारब हम.. हएत विस्मरण.. भैये गेल अछि विस्मरण..

आचार्य व्याघ्र: (आचार्य सरभकेँ सम्बोधित करैत) आ दूटा आर धार दूटा दुनू कातमे ठाढ़ जोगिन पीबै छै आचार्य सरभ। दीना, भदरी, ओइ दुनू जोगिनकेँ मोहि लेलन्हि, जेना मोहि लेने रहथि ओ जिरिया लोहारिन आ हिरिया तमोलिनकेँ ।

आचार्य सिंह: (आचार्य सरभकेँ सम्बोधित करैत) इच्छा एकटा मशीन छी। सत्यक आ इतिहासक सत्यता मात्र आभासी..

आचार्य व्याघ्र: (आचार्य सरभकेँ सम्बोधित करैत) सत्य आ आभासीक बीच भेद मेटा देने रहए ई बँसबिट्टी।

आचार्य सिंह: (आचार्य सरभकेँ सम्बोधित करैत) अचेतनता चेतना बनि गेल। ओकर भाषा अछि उल्कामुख।

आचार्य व्याघ्र: (आचार्य सरभकेँ सम्बोधित करैत) आचार्य सरभ, अहाँक शिक्षा पद्धतिमे किछु भाव आ सोच वंचित रहए।

आचार्य सिंह: (आचार्य सरभकेँ सम्बोधित करैत) निरन्तरताक विरोध करैए उल्कामुख।

आचार्य सरभ: (आचार्य व्याघ्र आ सिंक बीचमे जा सोझाँ बजैत) समताक लगक शब्द असमता, न्यायक लगक शब्द अछि अन्याय आ वंचितक लगक शब्द अछि प्राप्ति।

आचार्य व्याघ्र: (आगाँ बढ़ि आचार्य सरभकेँ सम्बोधित करैत) नै आचार्य, ई अहाँक दमित करैबला शिक्षा पद्धति अछि, एकर विरोध करैत अछि उल्कामुख।

आचार्य सरभ: (आचार्य व्याघ्र आ सिंक बीचमे जा सोझाँ बजैत) ऊँच स्थानक लोककेँ अहाँ सभ नीचाँ आनऽ चाहै छी आ निचुलकाकेँ ऊपर।

आचार्य सिंह: (आगाँ बढ़ि आचार्य सरभकेँ सम्बोधित करैत) अहाँक शिक्षा पद्धतिक भाग अछि ई ऊँच आ नीँच, एकर विरोध करैत अछि उल्कामुख।

आचार्य सरभ: (आचार्य सिंह दिस तकैत।) एकल वाद्यकेँ मेटा कऽ अहाँ जन कोलाहल आनऽ चाहै छी।

आचार्य सिंह: (आगाँ बढ़ि आचार्य सरभकेँ सम्बोधित करैत) जन गाथापर लिखल नाराशंसीपर नाचत लोक आ ओकरे संगे नाच गन्धर्व। स्म्वेत स्वरक नाद अछि उल्कामुख।

आचार्य सरभ: (हाथसँ वीभत्स इशारा करैत।) मुदा रचनाकार तँ मरि गेल। के मानत जे के अछि लिखने ई उल्कामुख?

आचार्य व्याघ्र: (आगाँ बढ़ि आचार्य सरभकेँ सम्बोधित करैत) रचनाकारसँ बेशी महत्वपूर्ण अछि ई रचना, एकर सन्देश, आ ओ रचना आ संदेश अछि उल्कामुख।

आचार्य सिंह: (आगाँ बढ़ि आचार्य सरभकेँ सम्बोधित करैत) रातिक राजा छल चोर, दिनमे मालिक मालिक करै छल। चोरक रूप थोड़े होइ छै आब... आब तँ चोरियो सभ करऽ लागल अछि। पहिने ओकर प्रशिक्षण होइत रहए, खेतक आरिपर। सिंह कोना काटल जाय से आरिकेँ काटि कऽ देखाओल जाइत रहए। भोर भेने जे लोक सभ खेत जाइत छल तँ देखैत छल। देखैत छल आरिमे काटल सिंघ... भरि गाम हल्ला..। रौ, सतर्क रहै जाइ जो। कोनो पैघ चोरिक योजनामे अछि ई सभ। मुदा फेर वएह सभ दिनमे सामान्य मनुक्ख।.....

आचार्य व्याघ्र: (आगाँ बढ़ि आचार्य सरभकेँ सम्बोधित करैत) दू दिनसँ फुटहा खा कऽ गुजर कऽ रहल छी। आइ चोरि लेल जाए पड़त। बच्चा सभक लेल। देहमे तेल लगा कऽ, मुँहमे भसम लगा कऽ। क्यो पकड़ए चाहत तँ छछलि कऽ भागि जएब। हे क्यो चोरकेँ रातिमे चीन्हि लेलहुँ तँ बरनी रहऽ देबैक। नाम नै बकि देबैक। नै तँ मारि देत... कारण दिनमे तँ अहाँ मालिक भऽ जएबैक। से डर छैक रातुक राजाकेँ।

आचार्य सरभ: (आचार्य व्याघ्र आ सिंक बीचमे जा सोझाँ बजैत) की कथा सुना रहल छी..ओइ.. ओइ.. की कहलिऐ..उल्कामुखक..

आचार्य सिंह: (आगाँ बढ़ि आचार्य सरभकेँ सम्बोधित करैत) मुँह बिचकेलहुँ तँ लोक सभ बुझलक जे प्रसन्न छी, भौंहपर जोर देने बुझलक जे चिन्तनशील छी। मुदा ह्रदय रहैए सदिखन कनैत। से हम जनैत छी आचार्य सरभ..

आचार्य सिंह: (बाहर अकासमे एकटा किरण चमकैते रहैत अछि।) आ देखू, वनदेवी सेहो आबि गेलीह ऐ वृन्दावन, आ वनदेवीक सखी वनसप्तो, पाँखियुक्त ममातामयी गाय। आबि गेलीह वनसप्तो बोनमे हेराएल उल्कामुखकेँ रस्ता देखबै लेल।

(तीनू गोटे तेना अभिनय करै छथि जेना हबामे उड़िया रहल होथि। नेपथ्यसँ साँइ-साँइ करैत अबाज बढ़िते जा रहल अछि।)

तीनी गोटे सम्वेत: कल्पनाक पएर उखड़ि रहल अछि...आबि रहल अछि उल्कामुख।

अगड़म बगड़म काठ कठम्बर

अगड़म बगड़म काठ कठम्बर

अगड़म बगड़म काठ कठम्बर

आबि गेल ई उल्कामुख

(उड़ियाइत तीनू गोटे खसबाक अभिनय करैत छथि आ सगरे अन्हार पसरि जाइत अछि।)

(फेर प्रकाश होइत अछि आ मंचपर घनक स्थान गोलाकार पिण्ड लऽ लैत अछि। घनक कोना

मेटि गेल; आब वृत्त अछि, जे स्मरणकेँ घुमा कऽ फेर सोझाँ आनत।)

भगता: घूमि रहल अछि ई पृथ्वी। (गोलाकेँ परिश्रमसँ हाथमे उठबैत छथि।) लटकल अछि ई अकासमे। एकर नीचाँमे कोनो आधार नै छै। एतेक भारी अछि तैयो कोनो भार नै छै एकरामे।

अगरम बगड़म काठ कठम्बर

(गोलाकेँ नीचाँमे राखि दै छथि आ घसकि कऽ पाछाँ आबि जाइ छथि- दक्षिण दिशामे। हुनकर शिष्य अबैत छथि आ गोलाकेँ घुमबऽ लगै छथि।)

भगता: देखू। ई घड़ी विपरीत दिशामे घूमि रहल अछि ई पृथ्वी, मुदा जँ उत्तर दिश देखबै तखन। दक्षिण दिस तकबै तँ घड़ीक दिशामे घुमैत देखाएत ई। आ हम अहाँ जे ऐ पृथ्वीपर छी ओकरामे भार छै। आ ई पृथ्वी अछि बिन भारक, अकासमे लटकि रहल।(हुनकर शिष्य पृथ्वीकेँ उठा कऽ इशारा करै छथि।)

अगरम बगड़म काठ कठम्बर

(भगता उकासी करऽ लगै छथि। तखने भगताकेँ नीचाँमे उल्कामुखी ताबीज भेटै छै, ओइमे सरभक चित्र छै...ओ चिकड़ि उठैए.. "ई की.. ई की.. उल्कामुखी ताबीज... हम कहै छलिऐ सएह हएत.." ई कहि ताबीज खोलैए आ ओइमेसँ तालपत्रपर किछु अक्षर खचित रेशा सन बहराइत अछि.. आ ओ खुशीसँ बेहोश सन भऽ जाइए..... शिष्य गोलाकेँ नीचाँ राखि कऽ भगताक छाती ससारऽ लगै छथि।)

भगताक शिष्य: (गुरुजीकेँ ससारब छोड़ि ठाढ़ भऽ) दक्षिण दिशासँ आएल छथि गुरुजी खिस्सा सुनि कऽ.. (मोन पाड़ैत) बासवेश्वरक। कहै छथि जे मिथिलामे सेहो हेतै ई सभ। हजार सालक बाद पुरनका गप घटित हेतै। (मुस्की दैत) मुदा गुरु छै हमर सिद्ध, केहेन केहेन गप बाजै छै नै सुनै छिऐ। मुदा आइ ई ताबीज बजल; जे गुरु बिसरि गेलाह, वस्तु मोन रखलक।

(भगता होशमे आबि जाइए, बेसी जोरसँ उकासी करऽ लगैए। शिष्य भगताक छाती ससारऽ लगै छथि। सगरे अन्हार पसरि जाइत अछि।)

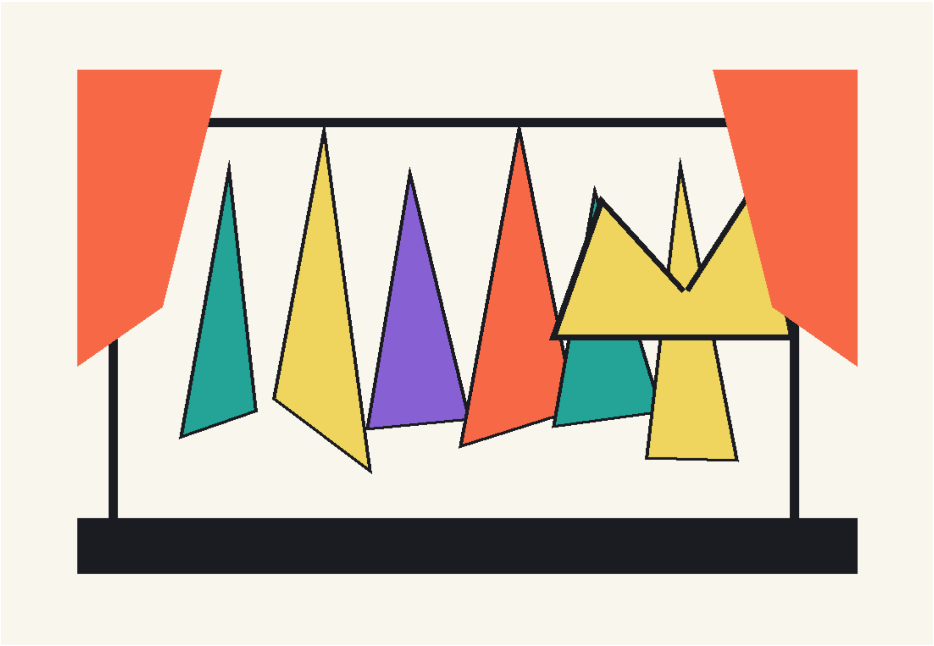

चित्र 9

पहिलसँ चारिम कल्लोल धरि मंचपर शतरंजक डिजाइन बनाएल घन राखल छल, आब पाँचम अंकसँ भूत आ कल्पनाक प्रतीक ओइ संकेतक बदला वास्तविकताक प्रतीक गोला राखल रहत।

[सोहागो (गंगाधरक माता), शिष्य साही बनि गेल हरपति (गंगाधरक पिता), गंगेश बनि जाइ छथि गंगाधर, वल्लभा बनि जाइ छथि कुमरसुता (गंगाधरक पत्नी), भगता बनि गेल जटा, भगताक शिष्य बनि गेल दलित गायक हीरू, आचार्य व्याघ्र बनि जाइ छथि मनसुख (जीवेक पिता), आचार्य सिंह बनि जाइ छथि हरिकर-सेनापति (मेधाक पिता), आचार्य सरभ बनि जाइ छथि कीर्ति सिंह (राजा), वर्द्धमान बनि जाइ छथि मितू (गंगाधरक बहिनोइ), देवदत्त बनि जाइ छथि जीवे (मनसुखक बेटा), शिष्य खिखिर बनि गेल राजाक अर्थमंत्री नारायण, शिष्य नढ़िया बनि गेल दरबारी-१, शिष्य बिज्जी बनि गेल दरबारी-२, उदयन बनि गेल माधव *(अनुभव मण्डलक सदस्य आ दरबारी), दीना बनि गेलाह माधवक सहयोगी-१, भदरी बनि गेलाह* माधवक सहयोगी-२। आब कल्पना देहमे उतरि गेल अछि; जे पहिने कथा छल, आब राजदरबारक खतरा अछि।]

(नेपथ्यसँ गीत आबि रहल अछि।)

पहिल मास चढ़ु अगहन, देवकी गरम संओ रे

ललना रे....

मूंगक दाल नहि सोहाय, केहन गरम संओ रे

ललना रे....

दोसर मास चढ़ु पूस, देवकी गरम संओ रे

ललना रे.....

पूसक माछी ने सोहाय, कि देवकी गरम संओ रे

ललना रे.....

तेसर मास चढ़ु माघ, देवकी गरम संओ रे

ललना रे.....

पौरल खीर ने सोहाय, कि केहन गरम संओ रे

ललना रे....

चारिम मास चढ़ु फागुन, देवकी गरम संओ रे

ललना रे....

फगुआक पूआ ने सोहाय, कि देवकी गरम संओ रे

ललना रे.....

पाँचम मास चढ़ु चैत, देवकी गरम संओ रे

चैत के माछ ने सोहाय, कि केहन गरम संओ रे

छठम मास चढ़ु वैशाक, देवकी गरम संओ रे

ललना रे.....

आम के टिकोला ने सोहाय, कि केहन गरम सेओ रे

सातम मास चढ़ु जेठ, देवकी गरम संओ रे

ललना रे.....

खुजल केश ने सोहाय, कि केहन गरम संओ रे

आठम मास चढ़ु अखाढ़, देवकी गरम संओ रे

ललना रे.....

पाकल आम ने सोहाय, कि केहन गरम संओ रे

नवम मास चढ़ु साओन, देवकी गरम संओ रे

ललना रे....

पिया के सेज ने सोहाय, कि केहन गरम संओ रे

दसम मास चढ़ु भादव, कि देवकी गरम संओ रे

ललना रे....

देवकी दरदे बेयाकुल दगरिन बजायब रे

जब जनमल जदुनन्दन, खुजि गेल बंधन रे

ललना रे.....

खुजि गेल बज्र केबार पहरू सभ सूतल रे।

(गीत खतम होइते एकटा बच्चाकेँ कोरामे लेने हरपति आ सोहागो प्रवेश करै छथि।)

हरपति: (सोहागोकेँ सम्बोधित करैत) सोहागो, गंगा माएक प्रतापेँ ई दिन हमरा सभकेँ देखबामे आएल अछि तेँ एकर नाम गंगाधर राखि दैत छिऐ।

सोहागो: अबस्से किने। (बेटाकेँ कोरामे दुलार-मलार करऽ लगै छथि।)

(तखने अगरम बगड़म काठ कठम्बर बजैत ऋषि जटा आ हुनकर संग दलित गबैय्या हुनकर शिष्य हीरू प्रवेश करैत छथि।)

ऋषि जटा: अगरम बगड़म काठ कठम्बर। अद्भुत, अद्भुत, अद्भुत..ई बच्चा अद्भुत..

शिष्य हीरू: (विभोर भऽ बच्चाकेँ कोरामे उठा लै छथि आ गाबऽ लगै छथि।)

कौने मास मेघबा गरजि गेल
कोने मास बेंगवा बाजू रे
ललना रे कोने मासे होरिला जनम लेल
कि गोतिनक हिया सालू रे।
सावन मेघवा गरजि गेल,
भादव बेंग बाजू रे।
आसिन होरिला जनम लेल
कि गोतिनक हिया सालू रे।
कोने तेल देव सासु के
कोने ननदि जी के रे।
ललना रे, करू तेल देबैन सासु जी के
गरी ननदि जी के रे।
ललना रे अमला देबैन गोतिन के
हुनकर पैंच हेतनि रे।

ऋषि जटा: (गरामे सरभ खचित एकटा ताबीज गंगाधरकेँ पहिराबैत छथि।) ई बच्चा अद्भुत..अद्भुत..अद्भुत..अछि.. सामान्य बच्चा नै अछि ई..तेँ ई असामान्य भेंट.. मुदा याद राखू, ताबीज शक्ति नहि दैए; ई केवल स्मरण करबैए जे शक्ति भीतर अछि।

शिष्य हीरू: धधरा फेकैत ई गीदर.. ऋषि जटा..

ऋषि जटा: उल्कामुख....

(चारू गोटे एक दोसराक मुँह ताकऽ लागै छथि।)

शिष्य हीरू: (आश्चर्य करैत) उल्कामुख? नाम मोन पड़ि गेल ऋषि जटा।

ऋषि जटा: (आश्चर्य करैत) उल्कामुख?

शिष्य हीरू: (आश्चर्य करैत) हँ, अहीं तँ कहलौं, उल्कामुख।

ऋषि जटा: (आश्चर्य करैत) हमहीं कहलौं?

हरपति: हँ, अहीं तँ कहलौं, उल्कामुख, ऋषि जटा।

ऋषि जटा: (आश्चर्य करैत) सत्ते, हमहीं कहलौं?

सोहागो: हँ, ऋषि जटा, अहीं तँ कहलौं, की कोनो अनिष्ट अछि?

ऋषि जटा: (ऊपर तकैत) नै, कोनो अनिष्ट नै.. हम बिसरि गेल रही ई, ई हमर गुरुक गुरूक गुरुक गुरुकेँ कएकटा उपरका गुरु देने रहथिन्ह। हम ऐ ताबीजक नाम बिसरि गेल रही.. आइ अनचोक्के मोन पड़ि गेल... की नाम रखने छी ऐ दिव्य बालकक..

हरपति: गंगाधर रखने छी ऋषि जटा ..

ऋषि जटा: (सोहागो आ हरपति दिस तकैत) ई ताबीज एकर गरामे चलि गेल, हमर गुरूकेँ हुनकर गुरू देने रहथि, आ हुनका हुनकर गुरू आ ...हम नाम बिसरि गेल रही ऐ ताबीजक..उल्कामुख..हँ यएह हमर गुरू कहने रहथि हमरा आ हुनका कहने रहन्हि हुनकर गुरु आ..दिव्य..दिव्य..ई बच्चा दिव्य..

हरपति: (ऋषि जटाकेँ सम्बोधित करैत) ऋषि जटा कोन दिव्य गुण देख रहल छिऐ अहाँ ऐ बालकमे?

सोहागो: (बच्चाकेँ सम्हारैत ऋषि जटा दिस ताकि।) ऋषि जटा, ई सन्यासी-तन्यासी तँ नै बनि जाएत?

ऋषि जटा: से हमरा किछु नै बुझल अछि। मुदा लगैए जे हएत किछु। ऐ मरुभूमिमे रेतक बीच जन्मत किछु। मुदा नहियो उगि सकैए..

हरपति: से किए ऋषि जटा?

शिष्य हीरू: से ऐ लेल जे ई ताबीज जतऽ ततऽ राखल रहै, पुरना पोखरि आ बोन सभमे ... कतेक गोटेकेँ ऋषि जटा पहिरेने छथि ई ताबीज, आ कतेक गोटेकेँ पहिरेने छथि ऋषि जटाक गुरु आ हुनकर गुरुक गुरु आ हुनकरो गुरु.. मुदा नै भेल किछु।

सोहागो: (हीरूसँ) की नै भेल हीरू?

शिष्य हीरू: मरुभूमिमे रेतक बीच नै जन्मल किछुओ।

(ऋषि जटा जोरसँ उकासी करऽ लगै छथि। शिष्य हीरू हुनकर छाती ससारऽ लगै छथि। सगरे अन्हार पसरि जाइत अछि।)

(मंचपर प्रकाश होइत अछि। बालक गंगाधर पैघ भऽ गेल छथि। ओ हीरू लग हुनकर टोल गेल छथि। हीरू नीचाँमे बैसल छथि, नीचाँमे चामक किछु राखल छै जइमे हीरू किछु सी- सा रहल छथि, बगलमे साइंग राखल छै आ गंगाधर ओतऽ ठाढ़ भऽ जाइ छथि।)

शिष्य हीरू: आउ गंगाधर आउ।

गंगाधर: हीरू की कऽ रहल छी।

शिष्य हीरू: मुरदारी सभ ढेर रास एकट्ठा भऽ गेल अछि। (ऊपर मुँहे साँस लैत) ई गैनाक चाम छिऐ, छोटेमे मड़ि गेलै।

गंगाधर : (साइंगपर बैसैत) की करब एकर।

शिष्य हीरू: देखियौ, मानरि बनबै छी, जँ बनि सकत तखन। कम्मे चाम छै। (गंगाधर दिस तकैत) हे ठीकसँ बैसू नै तँ गुड़कि जाएब।

(तखने साइंगपर सँ गंगाधर गुड़कि जाइ छथि। आ शिष्य हीरू आ गंगाधर दुनू गोटे भभा कऽ हँसऽ लगै छथि।)

:अहाँकेँ कहै छलौं। ई सांगि मुइल पैघ-पैघ मालक भार सहि लैए, मुदा अहाँ सन छोट बौआक भारकेँ ई नै सहि सकल।

गंगाधर : से किए हीरू?

शिष्य हीरू: ऐ दुआरे, किएकि कोनो बौस्तु कोना राखल जाए, ईहो जरूरी छै बुझब। सोझे कहि देबै जे ऐ साइंगपर एतेक भार सहबाक शक्ति छै, तँ से नै हएत। वएह ऋषि जटा ई सभ बकैत रहैए.. जे बुझि कऽ बाजू तेँ ...

गंगाधर: आर की सभ कहै छथि ऋषि जटा?

शिष्य हीरू: बड्ड रास गप। यएह जे आमक भार हम अनुभव करै छी, मुदा आमक गाछ अपनामे लागल आमक भारक अनुभव नै करैए।

गंगाधर: आर की कहै छिथि?

शिष्य हीरू: कहै छथि ई अकास दू भाग करैए ऐ विश्वकेँ..

गंगाधर: दू भाग? ई अकास दू भाग करैए? मुदा ई अकास तँ देखाइते जाइए.. तखन दोसर भाग कतऽ ऐत?

शिष्य हीरू: शीसा छै ई अकास, ऐपारसँ ओइपार देखै छी हम।

गंगाधर: (आश्चर्यसँ) ठीके? आर की कहै छथि ओ?

शिष्य हीरू: ओ कहै छथि जे ई शब्द अछि मोती, ई शब्द अछि माणिकक इजोत, मुदा जँ शब्द शब्दे रहि जाए आ कहला आ कएलामे अन्तर भऽ जाए तँ ऐ मोती लऽ कऽ की करब आ की करब माणिकक ओइ इजोतकेँ लऽ कऽ? जे शब्द गरीबक मुँह धरि नै पहुँचै, से राजदरबारक गहना बनि जाइ छै।

गंगाधर: ठीके हीरू ओ भऽ जाएत चोरि..

शिष्य हीरू: हँ

गंगाधर: ठीके हीरू ओ भऽ जाएत शब्दक हत्या..

शिष्य हीरू: हँ

गंगाधर: ठीके हीरू ओ भऽ जाएत झूठ..

शिष्य हीरू: हँ

गंगाधर: ठीके हीरू ओ भऽ जाएत सत्यसँ घृणा..

शिष्य हीरू: हँ

गंगाधर: ठीके हीरू ओ भऽ जाएत घमण्डी शब्द..

शिष्य हीरू: हँ

गंगाधर: ठीके हीरू ओ भऽ जाएत अशब्द.. ओ भऽ जाएत दोष लगाएब दोसरापर.. अपन शब्दक अर्थ नै बुझबाक दोष लगाएब दोसरापर..

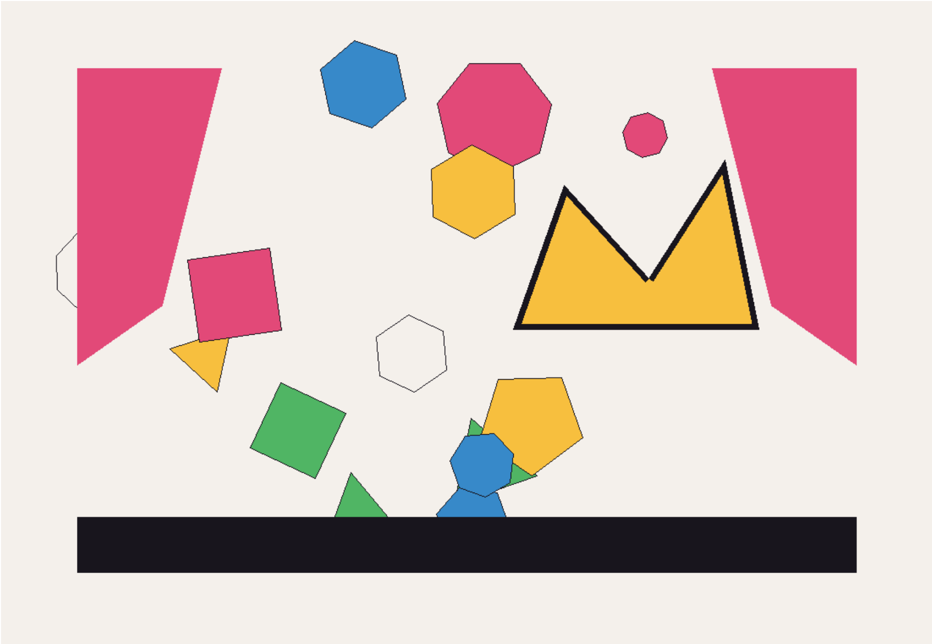

चित्र 10

शिष्य हीरू: हँ (दुनू गोटे ठाढ़ भऽ जाइ छथि आ हीरू ताण्डव नृत्यक आकृति बना लै छथि आ

विभोर भऽ गाब लगै छथि)

मैया दुआर अड़हुल फुल गछिया

माँ हे फड़-फुल लुबधल डिार

दछिन पछिम सँ सूगा एक आएल

माँ हे बैस गेल अड़हुल फूल गाछ

गंगाधर: (ताण्डव नृत्यक आकृति बना लै छथि आ विभोर भऽ गाब लगै छथि)

कियो नीपय अगुआर, कियो पछुआर

हमहुँ अभागल दुआर धेने ठाढ़

िकयो लोढ़ै बेली फूल कियो अढ़ूल

हमहुँ अभागल खोदी नामी दुबि

कियो मांगय अन-धन, कियो पूत

हमहुँ अभागल कर जोड़ि ठाढ़।

(स्वर परिवर्तित कऽ हीरूक सोझाँ ठाढ़ भऽ)

साओन विषहरि लेल प्रवेश

भादव विषहरि खेलल झिलहोरि।

आसिन विषहरि भगता लेल पान

कातिक विषहरि नयना झरू नोर।

अगहन विषहरि हेती अनमोल।

शिष्य हीरू आ गंगाधर: (सम्वेत स्वरमे, सोझाँ-सोझीं आबि कऽ गबैत छथि।)

फड़ो ने खाय सुगा फूलो ने खाय

माँ हे पाते पाते खेलय पतझार

कहाँ गेल, किए भेल डीहवार ठाकुर

माँ हे अपन सूगा लीअ सुमझाय

....

(स्वर परिवर्तित कऽ हीरूक दूरस्त भऽ कऽ दुनू ठाढ़ भऽ कऽ)

ऊँच रे अटरिया पर विषहरि माय

राम, नीची रे अटरिया पर सोनरा के माय

देबौ रे सोनरा भाइ डाला भरि सोन

राम, गढ़ि विषहरि के कलस पचास

बाट रे बटोहिया कि तोहें मोर भाइ

राम, कहबनि विषहरि के कलसा लय जाइ

तोहरो विषहरि के चिन्हियो ने जानि

राम, कहबनि कोना के कलस लए जाय

(अन्हार पसरि जाइत अछि।)

छअम कल्लोल

(मंचपर प्रकाश होइत अछि। बालक गंगाधर आठ बर्खक भऽ गेल छथि। माए-बापसँ हुनकर बहस

चलि रहल छन्हि। लगैए कोनो गम्भीर विवाद छन्हि।)

हरपति: एहनो भेल छै कहियो, यज्ञोपवीत नै कराएब? कोनो रोक-टोक हम केलौं, ब्राह्मणक बच्चा भऽ कऽ हीरूक टोल अहाँ गीत सुनैले, सिखैले जाइत रही, कहियो रोक-टोक केलौं?

गंगाधर: (अपन उल्कामुख ताबीज देखबैत) हम एकरा धारण कऽ लेने छी पिताश्री। ऋषि जटाक देल ई उल्कामुखी ताबीज, देखू। (हाथसँ पकड़ि कऽ देखबैत छथि।) उल्कामुख धारण केनिहारकेँ कोनो संस्कार करेबाक कोन आवश्यकता छै?

(हरिपति क्रोधित भऽ जाइ छथि। एम्हर-ओम्हार जाए लगै छथि।)

सोहागो: (गंगाधर दिस ताकैत) एना नै बाजू गंगाधर, एहेन आइ धरि नै भेल अछि, लोक की कहत, पण्डित सभ की बाजत? जिदपना छोड़ू, आब अहाँ बच्चा नै छी। आठ बरखक भेलौं।

हरपति: (सोहागो दिस तकैत) देखू। अहाँ अहीं ने कहै छलौं जे जेना-जेना उमेर बढ़तै एकर जिदपना घटतै। मुदा हम तँ देखि रहल छी जे दिनपर दिन एकर जिदपना घटबाक बदला बढ़िते जा रहल छै। मास्टर साहेब सेहो कहि रहल छला जे कोनो सबक हिनका यादि करैले दै छथिन्ह तँ सभ बच्चा यादि कऽ लैत अछि मुदा ई ओइमे मारते रास कमी निकालि दै छथि।

गंगाधर: पिताजी, पाठशालामे जे रटन्त विद्या पढ़ाएल जाइत अछि से हमरा पसिन्न नै अछि।

जे किछु हम पूछै छियन्हि से ओ बुझाबै नै छथि, कहै छथि जे अहिना रटि लिअ कारण हुनकर गुरूजी

हुनका ओहिना रटबेने छथिन्ह। हमरा तँ लगैए जे हुनका सभकेँ अपने विषय क पूर्ण ज्ञान नै छन्हि।

बेङ जँ पानिमे कूदैए से किएक, ई पूछब अपराध कोना भेल?

हरपति: (मंचक आगाँ जाइत) लिअ, ई आब नवका गप की उठि गेल। (सोहागो दिस तकैत) आब

गंगाधरकेँ पुछियौ जे हिनका लेल नव पाठशाला कतऽ सँ बनत।

सोहागो: (गंगाधर दिस ताकैत) बेटा गुरुजीक विषयमे कियो एना बजैए।

गंगाधर: (सोहागो दिस तकैत) माँ, हम तँ मात्र ऋषि जटाकेँ (ताबीज पकड़ि इशारा करैत), जे

हमरा ई ताबीज पहिरेलन्हि आ हुनकर शिष्य चर्मकार हीरूकेँ अपन गुरू मानै छी।

हरपति: (मंचक आगाँ छड़पटाइत जाइत) चर्मकार हीरूमे की विशेषता छै।

गंगाधर: (हरपति दिस तकैत) हुनकामे कला छन्हि। मुइल मालक चामकेँ कोना पकाएल जाइत अछि

ओइसँ तरह तरहक पनही, मानरि, मृदंग बनबै छथि ओ। जँ कोनो समस्या एलै तँ किछु परिवर्तन

करै छथि अपन ज्ञानक प्रयोगमे। गाबै छथि तेहेन तेहेन गीत जे सुनि कऽ कतेक धर्मशास्त्रक ज्ञान

एक्के गीतमे प्राप्त भऽ जाइए।

हरपति: (मंचक आगाँसँ छड़पटाइत घुरैत गंगाधर दिस तकैत) आ ऋषि जटामे?

गंगाधर: (हरपति दिस तकैत) ओ रटै लेल नै कहै छथि किछु। पुछलापर बतबै छथि। धर्मशास्त्रक

व्याक्या केलापर तमसाइ नै छथि, वरन ओकर गलत व्याक्याकेँ सुधारै छथि।

हरपति: (मंचक आगाँ छड़पटाइत जाइत) हँ हँ तेँ ने पाठशालासँ निकालि देल गेलन्हि आ सप्तरीक

बोनक रस्ता धेने छथि।

गंगाधर: (मंचक आगाँ जाइत) माँ-पिताजी। ई हमर अन्तिम निर्णय अछि.. हम यज्ञोपवीत नै

करब। हीरू कहै छथि जे पण्डित लोकनि शास्त्रक गलत व्याख्या करै छथि... धर्मकेँ छागरक बलि

धरि सीमित कऽ देल गेल अछि..

हरपति: (बीचमे क्रोधित भऽ गंगाधरकेँ काटै छथि) हीरू कहै छथि.. सभ गपमे हीरू कहै छथि..

आ हीरूकेँ के ई सभ कहलकन्हि..

गंगाधर: हुनका ऋषि जटा ई गप कहलखिन्ह।

हरपति: (आर क्रोधित भऽ) आ ऋषि जटाकेँ के कहलकन्हि?

गंगाधर: ऋषि जटाकेँ हुनकर गुरु कहलखिन्ह..आ हुनकर गुरूकेँ हुनकर गुरू...आ ..आ...कोनो रहस्य छै जे

ऐ उल्कामुखमे छै..आ जे नै छै बुझल ककरो..

हरपति: माने ककरो बुझले नै छै.. आ ओइ गपपर अहाँ अपन ई अन्तिम निर्णय लेलौं..

गंगाधर: (गप काटैत) मुदा जटिल कर्मकाण्ड अहाँकेँ नीक लगैए? हमरा तँ हीरूक गीतमे बेशी

तत्त्व बुझाइए..आ हँ हमर अन्तिम निर्णय तँ अहाँ बुझिए गेलिऐ..

हरपति: आ अहाँ अन्तिम निर्णय कऽ लेब, आ तकर बादो ऐ घरमे रहब, आ अहाँ ऐ घरमे रहब आ

गौँआ सभ हमरा ऐ गाममे रहऽ देत.. की ई सभ सम्भव छै?

(तखने मितू- गंगाधरक बहिनोइ आ आनन्दा- गंगाधरक बहिन प्रवेश करै छथि।)

आनन्दा: माँ- पिताजी। हमरा नै लगैए जे गंगाधर अपन बातसँ डिगत।

हरपति: (मंचक आगाँसँ छड़पटाइत घुरैत गंगाधर दिस तकैत) हँ। सभ गप बुझि गेलौं। हिनका जगह

जे भेटि गेल छन्हि। ऋषि जटा आ चर्मकार हीरू, आ पाठशाला सप्तरीक बोन। ने ऋषि जटा आ

चर्मकार हीरूकेँ शिष्य भेटै छै आ ने हमर गंगाधरकेँ ओहेन गुरु।

आनन्दा: माँ- पिताजी। गंगाधरकेँ अप्रत्यक्ष रूपमे घर छोड़बाक लेल विवश नै करू।

सोहागो: (आनन्दा दिस सम्मुख होइत) मुदा एतुक्का हाल नै देखै छहक। यज्ञोपवीत नै करब?

एहनो जिद्द भेलैए?

हरपति: (सोहागो दिस सम्मुख होइत) एतुक्का हाल छोड़ू, ई हमरो स्वीकार्य नै अछि..

गंगाधर.. हमर अन्तिम निर्णय अछि जे हम सभ ई गाम नै छोड़ब।

सोहागो: (हरिपतिकेँ सम्बोधित कऽ) अहाँकेँ के कहैए गाम छोड़ैले।

गंगाधर: (सोहागोकेँ सम्बोधित कऽ) माँ। हिनकर कहबाक अर्थ छन्हि जे जँ हम घर नै छोड़ब तँ

हिनका गाम छोड़ए पड़तन्हि। पिताश्री.. हम आइये सप्तरीक बोन दिस बिदा भऽ रहल छी..

हमर अन्तिम निर्णय आ अहाँक अन्तिम निर्णयमे कोनो साम्य नै अछि।

सोहागो: (गंगाधरकेँ सम्बोधित कऽ) गंगाधर, अहाँ आठ बर्खक छी.. आ अहाँ असगरे...

गंगाधर: (सोहागोकेँ सम्बोधित कऽ) असगरे कहाँ, सप्तरीक बोनमे आश्रय पक्का छन्हि, गुरुजी

संग। ऋषि जटा आ चर्मकार हीरू...

गंगाधर: (सोहागोकेँ सम्बोधित कऽ) तँ हमरा आज्ञा दिअ..

मितू: नै.. गंगाधरकेँ हम सभ ओहिना नै छोड़ि सकै छियन्हि। हमहू सभ संगे जाएब..(आनन्दाकेँ

सम्बोधित करैत) की आनन्दा?

आनन्दा: हँ, हम सभ नै छोड़ि सकै छियन्हि हुनका। माँ, अहाँ पिताजी लग रहू.. हम वचन दै

छी जे गंगाधर अपन अध्ययन पूर्ण करत.. आ

गंगाधर: आ ई उल्कामुख हमरा संग अछिये...

(सोहागो विचलित भऽ जाइ छथि, हरपति पाथर बनि जाइ छथि। आ सगरे अन्हार पसरि

जाइत अछि। फेर जखन इजोत होइत अछि तँ गंगाधर, आनन्दा, मितू, ऋषि जटा आ हीरू देखा पड़ै छथि। सभक मुँहपर लक्ष्य पाबि जेबाक प्रसन्नता स्पष्ट देखा पड़ि रहल छन्हि।)

आनन्दा: ऋषि जटा, हीरू। गंगाधरक तीव्र बुद्धि पाठशालामे हुनका लेल समस्या बनि गेल छलन्हि। गुरुजी प्रश्न सभक उत्तर नै दऽ पाबि रहल छला आ तेँ उन्टे गंगाधरक शिकाइत करैत रहै छला।

शिष्य हीरू: एहेन शिष्य भाग्यवानकेँ भेटै छै आनन्दा। मुदा हीरा जौहरी लग नै जाए तँ हीरा

पाथरे रहि जाइ छै।

मितू: हँ, आ एतऽ हमहूँ सभ कतेक तरहक ईलम सीखि गेलौं। ऐ बोनक कतेक वनस्पति, जन्तु हमर सभक शिक्ष बनि गेल।

गंगाधर: ऋषि जटा आ शिष्य हीरू सन शिक्षक जँ मिथिलाक सभ पाठशालामे भऽ जाए तँ

भाग्योदय भऽ जेतै। मुदा ओतऽ तँ तेहेन लोक सभक भर्ती भेल छै जे..ऐ पाँच सालमे जतेक ज्ञान हम

प्राप्त केलौं तकर वर्णन करू ने हीरू..

हीरू: (ठठा कऽ हँसै छथि) कथीक वर्णन करू हम..

आनन्दा: ऐ बोनक, ऐ बोनक प्राणीक, जे क्षणे-क्षण सिखबैत रहैए बड्ड किछु..

हीरू: (गेबाक मुद्रामे हाथ आगाँ करैत)

साँपहि-साँप बाम दहिन छल
चित्र-विचित्र वसनमा
नित दिन भीख कतए सँ लायब
घुरि फिरि जाहु अंगनमा
भीखो ने लिअए जोगी,
घुरियो ने जाइ, निकलू अंगनमा

गंगाधर: ओहो..

हीरू:

ना जाएब, ना जाएब ना जाएब हे
अहाँ क अंगनमा
बहिरा साँपक माड़ब बनाओल
तेलिया देल बन्हनमा
धामन साँपक कोरो बनाओल,
अजगर के देल धरनमा
हरहरा के काड़ा-छाड़ा,
कड़ैत क लाओल कंगनमा

पनियादरार क पहुँची लाओल

ढरबा क लौल ढोलनमा

सुगवा साँप क लौल जशनमा

चान्द तारा क शीशा लाओल

मछगिद्धि क अभरनमा

गंगाधर:

ना जाएब, ना जाएब ना जाएब हे

अहाँ क अंगनमा

ऋषि जटा: (उठि कऽ टहलऽ लगैत छथि) जाए पड़त गंगाधर। बहुत रास काज करबाक अछि

अहाँकेँ। हमर मोनमे आब संतुष्टि अछि गंगाधर, अहाँ सन शिष्य हमरा भेटल। ई सौभाग्य हमर

गुरु, हुनकर गुरु आकि हुनकर गुरुकेँ नै भेटल छलन्हि। अहाँकेँ पढ़बैकालमे जे आत्म संतुष्टि हमरा भेटल से अद्भुत। रटन्त विद्याक अखुनका वातावरणमे अहाँक विषयकेँ बुझबाक प्रवृत्ति अजगुत लागल। सन्तुष्ट छी हम.. ई उल्कामुखक प्रभाव छी आकि अहाँक प्रभाव ऐ उल्कामुखकेँ सिद्ध बना देने अछि, नै जानि की गप अछि। जाउ.. जाउ अहाँ कीर्ति सिंहक राजदरबार। देखू की करबैत अछि ई उल्कामुख.....

(अन्हार पसरि जाइत अछि।)

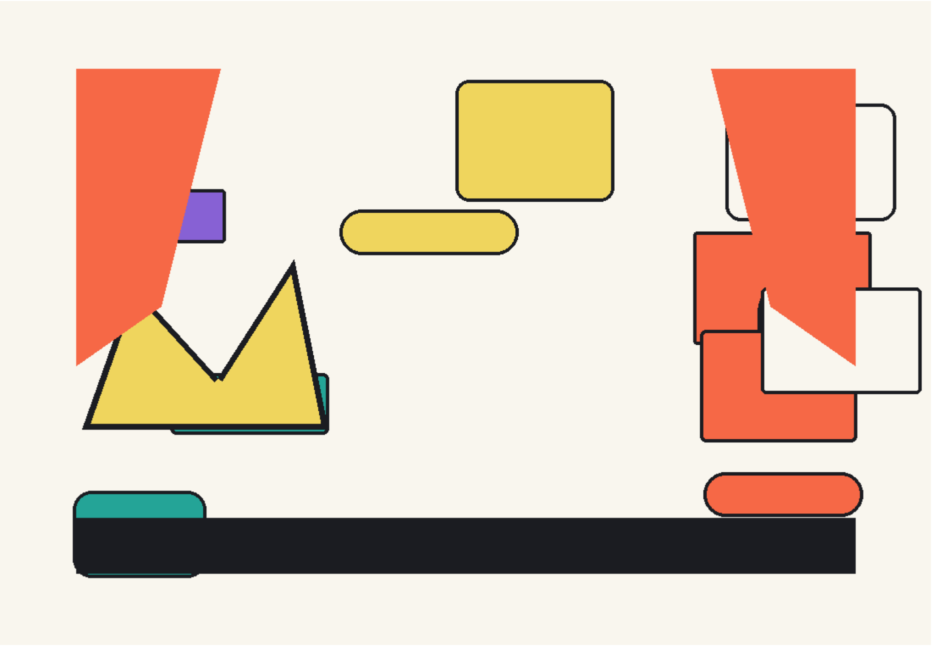

चित्र 11

(कीर्ति सिंहक राजदरबार। कीर्ति सिंह बैसल छथि, दरबारी-१ संगे गंगाधर आ दरबारी-२ संगे राजाक अर्थमंत्री नारायणक प्रवेश दू दिशासँ होइत अछि।)

कीर्ति सिंह: (नारायण दिस तकैत) आउ अर्थमंत्री नारायण, की भेल हिसाब-किताब अखनो मिलल आकि नै।

दरबारी-१: (राजा दिस सम्मुख भऽ) कोना मिलतन्हि, सभ रटन्त विद्याबला विद्यार्थी सभ पाठशालासँ बहार होइत अछि जे नव गणितक प्रश्नक ओझराहटिमे ओझरा जाइत अछि। ओइ विद्यार्थी सभकेँ किछु पुछियौ तँ बिन पोथी देखने सुरड़ि देत, मुदा ओ सभ ने कोनो हिसाब-बारी कऽ पबैए आ ने खाता-खेसरा मिला पबैए।

कीर्ति सिंह: (कने ऊँच अबाजमे) अर्थमंत्री नारायण। हम ई की सुनि रहल छी?

अर्थमंत्री नारायण: (हरबड़ाइत) हँ, हँ सएह तँ जोड़बा रहल छलहुँ अपन एकटा शिष्यसँ एक जोड़ दू जोड़ तीन...एक सए धरि.. माने माने एकसँ एक सए धरि जोड़.. कहने छल जे एक घण्टामे जोड़ि देब..तावत ई (दरबारी-२ दिस इशारा करैत) घीचि कऽ लऽ अनलन्हि।

दरबारी-२: (दमसाइत) अर्थमंत्री, काल्हियो अहाँ बुते जोड़ मिलाओल नै भेल, जोड़पर जोड़.. औ जी... कतेक घाटा आकि नफामे अहाँक खाता-खेसरा अछि ई तँ साल भरिसँ पता चलिये नै रहल अछि।

दरबारी-१: (महराज दिस साकांक्ष होइत) महराज ई बालक ओतै भेटला। कहैत रहथि जे ओ सभ हिसाब मिला देता, समय कम रहै तेँ संगे लेने एलियन्हि।

गंगाधर: (महराज दिस साकांक्ष होइत) महराज जँ आदेश हुअए तँ हम किछु कही।

(बीचेमे अर्थमंत्री बाजै छथि।)

अर्थमंत्री नारायण: (हरबड़ाइत) एकसँ एक सए धरि जोड़मे तँ समय लगबे ने करतै महराज।

(राजा इशारासँ गंगाधरकेँ बजबाक आदेश दै छथि।)

गंगाधर: (महराज दिस सम्मुख होइत) धन्यवाद महराज। (अर्थमंत्री नारायण दिस सम्मुख होइत) एकसँ सए जोड़बा लेल पहिने ई बुझू जे संख्या कएक टा अछि।

अर्थमंत्री नारायण: (बिहुँसैत) सए टा आर कतेक।

गंगाधर: एक सँ सए आ सइया निनानबे ऐमे आब काज आएत। एक आ सए, दू आ निनानबे, तीन आ अनठानबे.. ऐ सभटा जोड़ाक कतेक परिणाम आएत?

अर्थमंत्री नारायण: (बिहुँसैत) एक सए एक आर कतेक?

गंगाधर: दू दू टा जोड़ा अछि, तँ सए टामे कतेक जोड़ा भेल।

अर्थमंत्री नारायण: (बिहुँसैत) पचासटा आर कतेक?

गंगाधर: एक सए एक केर पचास टा जोड़ा अछि। तँ एक सए एक केँ पचाससँ गुणा करू। वा पचासकेँ सएसँ गुणा करू आ ओइमे पचास जोड़ू..कतेक भेल?

अर्थमंत्री नारायण: (आश्चर्यसँ आँखि फाड़ि बजैत) पचासकेँ सएसँ गुणा...ई भेल पाँच हजार...आ आर पचास भेल पाँच हजार पचास। पाँच हजार पचास भेल महाराज। हँ ठीके तँ..

कीर्ति सिंह: अहाँक शिष्य तँ बड काबिल अछि। (गंगाधर दिस तकैत) की नाम अछि अहाँक वत्स..

अर्थमंत्री नारायण: (महराज दिस ताकि लज्जित होइत) नै महराज, ई हमर शिष्य नै छथि। ई तँ हमरासँ नोकरी माँगऽ आएल रहथि। मुदा जखन पुछलियन्हि जे कोन पाठशालासँ छी तँ कहलन्हि जे सप्तरीसँ ऋषि जटा आ हुनकर शिष्य चर्मकार हीरूसँ ई पढ़ने छथि, कोनो पाठशालामे नै पढ़ने छथि। तेँ हम नोकरीपर नै रखलियन्हि। हम लज्जित छी महराज। हिनकर नाम छियन्हि गंगाधर..

कीर्ति सिंह: आश्चर्य। कोनो पाठशालामे नै पढ़ने छथि! ऋषि जटा आ हुनकर शिष्य चर्मकार हीरूसँ पढ़ल छथि!

अर्थमंत्री नारायण: (लज्जित होइत) महराज। जँ आदेश हुअए तँ गंगाधरकेँ हम नोकरीपर राखि लिअन्हि?

दरबारी-१: (अर्थमंत्री नरायणसँ) राखि लियन्हि? हिनका नै रखबन्हि तँ अहाँक नोकरी खतरामे पड़ि जाएत। साल भरिसँ राज्यक खाता-खेसरा नफामे छै आकि नोकसानमे से नै बुझि रहल अछि कियो।

कीर्ति सिंह: कोनो बात नै.. (दरबारी १-२ दिस इशारा करैत) जाउ आ हरिकर- सेनापतिकेँ बजाउ।

(दरबारी १ एक दिशासँ आ दरबारी-२ दोसर दिशासँ बहराइ छथि।)

कीर्ति सिंह: गंगाधर अहाँ राजदरबारमे नोकरी करबाले तैयार इच्छुक छी?

गंगाधर: महराज हम तँ कतौ नोकरी करबाले तैयार छी। राजदरबारमे नोकरी भेटलासँ तँ हमर शिक्षाक लाभ आन लोकोकेँ भेटतै, संगे ऐ तरहक शिक्षा दोसरो ठाम हुअए सेहो हम सिद्ध कऽ सकब।

(दरबारी १ आ दरबारी-२ हरिकर सेनापतिक संग अबै छथि।)

कीर्ति सिंह: अर्थमंत्री आ गंगाधर। दुनू गोटे स्वागत कक्षमे बैसू गऽ। हमरा किछु अत्यावश्यक गप करबाक अछि। मुदा बैसब, कतौ जाएब नै।

अर्थमंत्री नारायण आ गंगाधर: (सम्वेत स्वरमे) जी महराज।

(अर्थमंत्री नारायण आ गंगाधर बहरा जाइ छथि।)

सेनापति हरिकर: (कीर्ति सिंहसँ) बजेने छलौं महराज।

कीर्ति सिंह: हँ सेनापति। आइ एकटा बालक गंगाधर देखाइ पड़ल अछि। बड्ड चतुर.. बड्ड दिव्य। अर्थमंत्री तँ कोनो काजक नै अछि। ने कोनो हिसाब कहि पबैए नहिये कोनो लेखा समयपर दऽ पबैए। तखन ई छै जे आज्ञाक अवहेलना नै करैए।

सेनापति हरिकर: (कीर्ति सिंहसँ) जी महराज।

कीर्ति सिंह: (सेनापति हरिकरसँ) हमर मोनमे एकटा गप आएल अछि। अपन धर्म बहिन कुमरसुताक विवाह..

सेनापति हरिकर: (कीर्ति सिंहसँ) अहाँ गंगाधरक विषयमे तँ नै सोचि रहल छी महराज?

कीर्ति सिंह: (सेनापति हरिकरसँ) सोचि रहल छी सेनापति।

सेनापति हरिकर: (कीर्ति सिंहसँ) मुदा अहाँ तँ कुलीनताक पक्षर छी महराज आ गंगाधर तँ..

कीर्ति सिंह: हँ सएह तँ आ ऐ लेल हुनका कुलीन बनाएब आवश्यक। हम गंगाधरकेँ अपन धर्म बहिन कुमरसुतासँ विवाह करबा कऽ ऐ राज्यक प्रधानमंत्री बनबैत छियन्हि। सेनापति हरिकर.. ई बालक जे अहाँक सोझाँसँ अखने गेल अछि.. बड्ड दिव्य अछि..

सेनापति हरिकर: हँ महराज (दरबारी १ आ २ दिस इशारा करैत), अखने ई दुनू गोटे हुनकर प्रतिभाक विषयमे चर्चा करैत रहथि। एहेन वर कुमरसुता लेल सर्वथा उपयुक्त छथि। अर्थमंत्री नारायण प्रधानमंत्रीक अतिरिक्त भार नै सम्हारि पाबि रहल छला।

कीर्ति सिंह: तँ विवाहक सभ प्रबन्ध कएल जाए सेनापति।

सेनापति हरिकर: अवश्य महराज.. अवश्य.. शीघ्र सभ इन्तजाम भऽ जाएत।

(सगरे अन्हार पसरि जाइत अछि। फेर जखन इजोत होइत अछि तँ लगैत अछि जे राजदरबारसँ बेशी महत्वपूर्ण गंगाधरक कार्यालय भऽ गेल अछि। ओ एकटा अनुभव मण्डलक स्थापना केने छथि जइमे ने कोनो जातिक भेद छै आ ने स्त्री-पुरुषक भेद छै। गंगाधर, मनसुख, हरिकर, मितू, कुमरसुता, आनन्दा, मेधा, जीवे, ऋषि जटा, हीरू, माधव, माधवक सहयोगी-१ आ माधवक

लटकल छन्हि।)

गंगाधर: नव पाठशाला सभमे विद्यार्थी सभ सोचि रहल छथि, कऽ रहल छथि अपना हाथसँ काज। स्त्री-शिक्षा फेरसँ शुरू भऽ गेल अछि। जाति-पाति खतम कऽ देल गेल अछि, शिक्षा सभक लेल। अनुभव-मण्डलक ऐ बैसकीमे सभक स्वागत अछि..अहाँक विचार सभ सुनबा लेल आतुर छथि ऋषि जटा..

ऋषि जटा: रटन्त नै बुझन्त विद्या शुरू भऽ गेल अछि.. जे हमर गुरू वा हुनकर गुरू वा हुनकर गुरुक कालमे नै छलै... रटल विद्या तँ बुझू गदहाक ऊपर राखल बोझ थिक। की मनसुख?

मनसुख: ठीके किने। (अपन बेटा जीवेसँ) सभ अभ्यागत लेल जलखैक व्यवस्था करू जीवे। (हरिकरसँ) की हरिकर अहाँ सेहो किछु बाजऽ चाहै छी?

हरिकर: (मेधासँ) पुत्री मेधा, अहाँ जीवेक सहयोग करू गऽ।

(जीवे आ मेधा बहरा जाइ छथि।)

:बाजऽ चाहै छी मनसुख मुदा कने कालमे। पहिने किछु आर गंगाधरसँ सुनऽ चाहै छी।

गंगाधर: अनुभव मण्डल परिश्रमक सत्कार करैत अछि धनिकक नै। धनिकक धन कुकुड़क दूध सन अछि, जइसँ कुकुड़क बच्चा मात्रक पोषण होइ छै, मिष्टान्न नै बनै छै।

कुमरसुता: हँ, सएह तँ हम अपन धर्म-भाए कीर्ति सिंहकेँ कहै छिऐ। अर्थमंत्री नारायणकेँ लगैत रहैत छै जे अनुभवमण्डलक सभटा कल्याणकारी कार्य राजकोषसँ भऽ रहल छै।

आनन्दा: नारायणकेँ अर्थ नीति नै बुझल छन्हि। हुनका मात्र धन-वसूल कोना कएल जाइ छै, से बूझल छन्हि। हुनका ई नै बूझल छन्हि जे धन कोना उपार्जित कएल जाइ छै।

माधव: गंगाधर कएक बेर कीर्ति सिंहकेँ हिसाब बुझा देने छथिन्ह। अनुभव मण्डलक सभ कल्याणकारी कार्य ओकर अपन उपार्जित धनसँ होइ छै।

कुमरसुता: मुदा से नारायण दरबारमे गंगाधरक सोझाँमे तँ मानि लै छथि मुदा गंगाधरक परोक्षमे गंगाधरक घुमौआ हिसाब- उल्कामुखी घुमौआ हिसाब कहि नै मानबाक भ्रम उत्पन्न करै छथि।

गंगाधर: साँपक काटल आ भूत-प्रेतक शिकारसँ अहाँ किछु पूछि सकै छिऐ मुदा धन रूपी भूतसँ जे ग्रस्त अछि ओकरासँ की पुछबै? अनुभवमण्डलक पाठशाला धन स्व-अर्जित करब सिखबैत अछि, आत्मनिर्भर भेनाइ सिखबैत अछि।

मनसुख: सही कहलौं गंगाधर हमर बेटाकेँ कहियो अनुभव मण्डलक पाठशालामे अनुभव नै भेलै जे ओ सभ कहियो अछूत छल।(मितू दिस ताकि) की मितू?

मितू: अछूत नै कहियौ मनसुख, अनुभव मण्डल ओकरा उल्कामुखी नाम देने अछि। (माधव दिस ताकि) माधव ततेक नीक व्यवस्था केने छथि उल्कामुखी पाठशाला सभक जे नै पुछू।

माधव: हँ उल्कामुखीसभ निकलैए ओइ पाठशालासँ। (माधव अपन सहयोगी-१ आ सहयोगी-२ दिस

तकैत बजैत छथि।) अहाँ दुनू उल्कामुखी पाठशाला सभक आर्थिक जरूरतिक पूर्तिक वर्णन दियौ।

माधवक सहयोगी-१: सभ ठाम उल्कामुखी सदस्य अपन श्रमसँ शिक्षकक आ विद्यार्थीक खर्च उठा रहल छथि।

माधवक सहयोगी-२: सभ ठाम उल्कामुखी सदस्य उल्कामुखी पाठशाला लेल जमीन आ भवनक खर्च उठा रहल छथि।

माधवक सहयोगी-१: लोक सभक कहब अछि जे उल्कामुखी पाठशाला सभ हुनका सभ लेल बड हितकारी अछि, ओइ पाठशाला सभक विद्यार्थी आ शिक्षक सभ द्वारा कएल जा रहल प्रयोग हुनका सभक जिनगीमे क्रान्ति आनि देने अछि।

माधवक सहयोगी-२: लोक सभक ईहो कहब अछि जे उल्कामुखी पाठशालाक नव-पुरान छात्र आ शिक्षक हुनका सभ कऽ बेर-बखत काज आबै छथिन्ह आ तँ ओ सभ ऐ पाठशालाकेँ जतेक दै छथि तइसँ बेसी ई पाठशाला सभ हुनका सभकेँ आपिस करै छन्हि। (आनन्दा दिस ताकि) आनन्दा तँ रहबे करथि, जखन एकठाम ई गप चलि रहल रहए।

आनन्दा: हँ, से तँ ठीके। मुदा काज अखन आर बहुत रास करबाक अछि। तखन आइ ई सभा खतम कएल जाए?

हरिकर: नै हमरा एकटा गप कहबाक अछि।

माधव: कोन गप सेनापति हरिकर।

हरिकर: माधव, गंगाधर अखन बाहर जा रहल छथि, सप्तरी। से अहींकेँ ई काज करऽ पड़त। हमर इच्छा अछि जे हमर पुत्री मेधाक बियाह जीवेसँ भऽ जाए। हम बियाहक इन्तजाममे लागब, आ किएक तँ अहाँ आ हम दुनू गोटे राजाक दरबारमे छी से एकटा औपचारिक अनुमति हम सभ राजासँ ऐ लेल लै छी। तँ ई भार अहींपर।

गंगाधर: ई तँ हर्षक विषय अछि। (उठि कऽ ठाढ़ भऽ जाइ छथि। सभ उठि जाइ छथि आ मनसुख आ हरिकरकेँ बधाइ देबऽ लगै छथि। जीवे आ मेधा हाथमे बिगची आदि लेने प्रवेश करै छथि। अन्हार पसरि जाइत अछि।)

(राजा कीर्ति सिंहक दरबार। राजा, अर्थमंत्री नारायण, दरबारी-१, दरबारी-२ आ माधव आ हुनकर दुनू सहयोगी दरबारमे छथि। राजा तमसाएल सन छथि।)

दरबारी-१: अतत्तह भऽ गेल महराज। ब्राह्मण सेनापति हरिकरक पुत्री आ चर्मकार मनसुखक पुत्रक विवाहक समाचार आएल अछि।

दरबारी-२: कोनो तरहेँ ऐ प्रतिलोम विवाहकेँ उचित नै कहल जा सकैए आ ओइ स्थितिमे जखन ओइ विवाहकेँ राजाज्ञा प्राप्त नै छलै।

दरबारी-१: सेहो तइ स्थितिमे जखन सेनापति ऐ दरबारक सदस्य छथि आ माधव ओइ अनुभव मण्डलक सदस्य छथि जे ई विवाह करेलक!

राजा कीर्ति सिंह: (माधव दिस ताकि) जखन हम जीवे आ मेधाक विवाहक अनुमति नै देने रही तखन ई विवाह भेल कोना माधव?

माधव: महराज, ओ तँ औपचारिक अनुमति छल, अनुभव मण्डलमे ओइ विवाहक कोनो विरोध नै भेल रहए।

राजा कीर्ति सिंह: अनुभव मण्डल, अनुभव मण्डल। ऐ राजदरबारसँ पैघ भऽ गेल अनुभव मण्डल?

अर्थमंत्री नारायण: हम सेहो आंगुर उठेने रही महराज। ई अनुभव मण्डल की की सदावर्त बँटने फिरैए, राजकोषक क्षति करैए।

माधव: अनुभव मण्डलमे सभ परिश्रमक खेनाइ खाइए अर्थमंत्री नारायण। अहाँ बीच-बीचमे गंगाधरपर ई आरोप लगबैत रहै छियन्हि मुदा ओ एकर नीक जकाँ उत्तर दऽ देने छथि, आ अहाँ संतुष्ट सेहो भऽ गेल रही।

दरबारी-१: संतुष्ट की हेता, गंगाधरक घुमौआ हिसाब हिनका बुझैमे अबिते नै छन्हि।

दरबारी-२: मुदा ओ सभ तँ छोट मोट गप छल, ऐबेर तँ राजाक आदेशक निरादर भेल अछि। अनुभव मण्डलक कोनो काजपर राजा प्रतिबन्ध नै लगेने रहथि। रटन्त विद्या खतम करू, खतम भेल..

दरबारी-१: मुदा रटन्त विद्यासँ हिसाब जे नै मिलै छलन्हि अर्थमंत्रीक।

अर्थमंत्री नारायण: मुदा रटन्त विद्या खतम भेने लोक दिमागसँ सोचऽ लागल। ई तँ प्रारम्भ अछि महराज। मनसुख चर्मकारक बेटा आ ब्राह्मण सेनापति हरिकरक पुत्रीक विवाह क्रान्ति आनि देत..की कहै छै ओकरा..(सोचैत)

माधवक शिष्य-१ आ २: उल्कामुखी...

कीर्ति सिंह: माधव, अहाँ सभ जाउ आ हरिकरकेँ कहि दियन्हु जे आब ओ ऐ राजक सेनापति नै रहलाह। आ गंगाधर ऐ राज्यक प्रधानमंत्री नै रहलाह सेहो अनुभवमण्डल -हुँह- अनुभवमण्डलकेँ जानकारी दऽ दियौ। जखन विचार राजाज्ञासँ पैघ होमए लागै, तखन राजदरबारक दीवाल काँपैए। आब ई दुनू भार सम्हारताह नारायण। माधव, अहाँ सभ जाउ।

(माधव आ हुनकर दुनू शिष्यक प्रस्थान।)

राजा कीर्ति सिंह: सेनापति नारायण, हमरा चारिटा आँखि चाही, दूटा मेधाक आ दूटा जीवेक। ऐ दुनू गोटेक आँखि निकाललाक बाद दुनूकेँ पागल ऐरावतक समक्ष धऽ दियौ। पिचरा कऽ दियौ दुनूकेँ, मुदा पहिने हमरा चाही चारिटा आँखि। जे प्रेम जातिक पार देखलक, ओकर आँखि राजसिंहासन सहि नै सकैए। दिगन्तमे ई समाचार पसरि जाए जे प्रति

(अन्हार पसरि जाइत अछि आ नेपथ्यसँ जीवे आ मेधाक कनबाक अबाज अबैत अछि। फेर हाथीक चिघारसँ अकासमे बिजली कड़कऽ लगै छै। पुरुष, महिला आ हाथीक अबाज परस्पर मिज्झर भऽ जाइत अछि। करुण संगीतक मध्य आस्ते आस्ते इजोत अबैत अछि आ अनुभवमण्डलक बैसकी देखा पड़ैत अछि जइमे गंगाधर, मनसुख, हरिकर, मितू, कुमरसुता, आनन्दा, ऋषि जटा, हीरू, माधव,

माधवक सहयोगी-१ आ माधवक सहयोगी-२ सभ छथि मुदा जीवे आ मेधा नै। सभक मुखपर दुख आ आक्रोश अछि।)

गंगाधर: की ई अहाँ सभक अन्तिम निर्णय अछि?

सभ सम्वेत स्वरमे: हँ, हँ, अन्तिम निर्णय, गंगाधर, अहाँ मानी नै मानी।

कुमरसुता: हम सेहो मानै छी ऐ निर्णयकेँ।

गंगाधर: अनुभव मण्डलमे सर्वदा बहुमतक सम्मान कएल गेल छै। मुदा एक बेर आर सभ गोटे विचारि

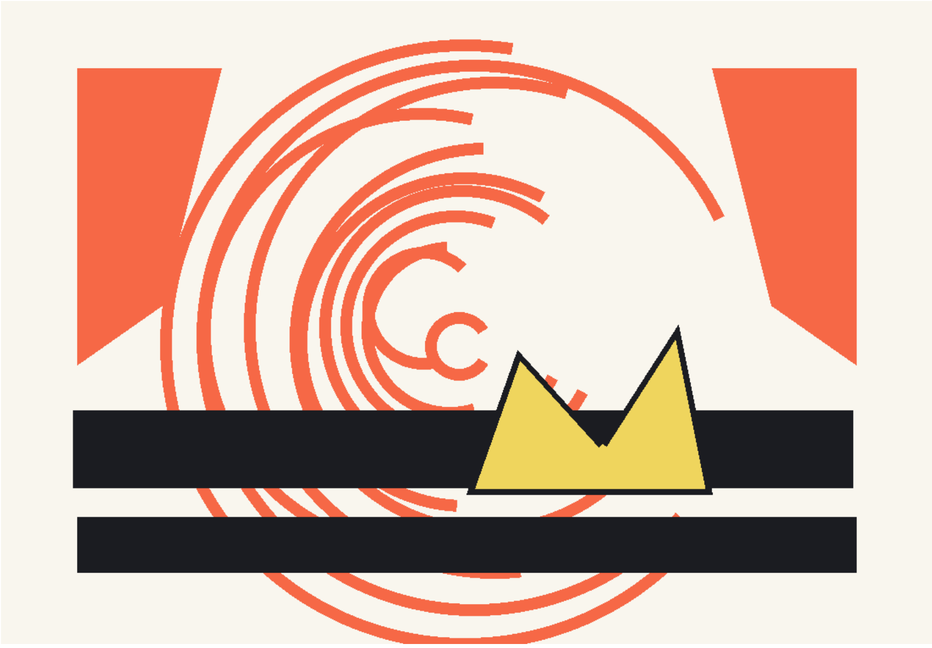

चित्र 12

लिअ।

आनन्दा: (माधवसँ) माधव! अहाँसँ मेधा आ जीवेक क्रूर तरीकासँ कएल जाएबला हत्याक राजाज्ञा गुप्त राखल गेल, से कोना भेल?

हरिकर: (माधवसँ) क्रूर..क्रूरतम... ओह.. एहेन हत्या, राजदरबारेक सेनापतिक पुत्रीक आ जमाएक..... ऐ तरहेँ हत्याक आदेश.. आ अहाँ एकर कनेको आभास नै प्राप्त कऽ सकलौं माधव?

मनसुख: (गंगाधरसँ) गंगाधर आ अनुभव मण्डलक सदस्यगण। न्याय चाही हमरा.. राजदरबारक अन्यायक विरुद्ध न्याय। राजदरबारक अन्यायोसँ कठोर न्याय चाही हमरा..

गंगाधर: ठीक छै तँ सएह हुअए। ठीक छै, तँ एकर भार ककरापर देल जाए?

माधव: हम ई भार लै छी गंगाधर, सहर्ष...सहर्ष... जे राजदरबार ई जघन्य पाप केने अछि तकरा विरुद्ध हमहीं हएब ठाढ़। जे राजदरबार ओइ षडयंत्रकेँ हमरासँ नुकेलक ओकरा विरुद्ध हमर गुप्त अभियान चलत.. आ सएह हएत हमर पश्चाताप। मुदा ई बदला नहि, स्मरणक रक्षा हएत; जँ बदला मात्र रहि गेल तँ हमहूँ ओही आगिमे जलि जाएब। (अपन दुनू शिष्यक संग माधव मंचपर सोझाँ

मितू: माधव। सतर्क रहऽ पड़त अहाँकेँ। राजदरबारमे सभकेँ बुझल छै जे अहाँ अनुभवमण्डलक सदस्य छी।

ऋषि जटा: माधव, हम आ हीरू वातावरण तैयार करब। एहेन वातावरण जे राजदरबारकेँ बुझि पड़तै जेना अहाँकेँ अनुभवमण्डलसँ निकालि देल गेल अछि।

हीरू: आ हम ई गप गीत गाबि कऽ पसारब जइसँ राजदरबारकेँ बुझि पड़तै जेना माधवकेँ अनुभवमण्डलसँ निकालि देलाक बाद अनुभवमण्डल टूटि गेल।

गंगाधर: तँ सएह हुअए। अनुभव मण्डलक सभ सदस्य सप्तरी प्रस्थान करथि। माधव, अहाँ अपन दुनू सहयोगी संगे राजदरबार लेल प्रस्थान करू। ऋषि जटा आ हीरू अहाँ सभ बेसी समए नै लगाएब, शीघ्र काज सम्पन्न कऽ कए सप्तरीक बोन पहुँचू।

(अन्हार पसरि जाइत अछि आ जखन इजोत होइत अछि तँ रुद्रमति- माधवक माए, माधव आ माधवक दुनू सहयोगी मंचपर छथि। खेनाइक बासन बगलमे राखल छै। रुद्रमति तमसाएल छथि।)

माधवक सहयोगी-१: माता रुद्रमति, अपन पुत्र माधव आ हमरा दुनू गोटेकेँ आशीर्वाद दिअ जे अनुभव मण्डल द्वारा देल काज हम सभ पूर्ण कऽ सकी।

माधवक सहयोगी-१: माता रुद्रमति, मेधा आ जीवेक जघन्य हत्याक बाद चुप बैसब कायरता होइतए। अनुभवमन्डलक निर्णय भेल अछि जे राजाकेँ ओकर कृत्यक सजा हम सभ दी।

रुद्रमति: (माधवसँ) की अनुभव मण्डलक निर्णयक अनुपालन भऽ गेल माधव?

माधव: नै माते..ओतै बहरेबाक अछि, तेँ सोचलौं जे बहरेबासँ पहिने घर जाइ आ मातासँ आशीर्वाद ली।

रुद्रमति: अनुभव-मण्डलक निर्णयक बिनु पालन केने अहाँ घरमे कोना प्रवेश कऽ गेलौं माधव? मेधा आ जीवेक हत्या, सेहो आँखि निकालि कऽ आ हाथी द्वारा पिचड़ा कऽ कए!! अहाँ सौभाग्यशाली छी माधव जे ओइ अपराधीकेँ दण्ड देबाक भार अहाँ सभकेँ देल गेल अछि। मुदा तकर महत्व अहाँ सभ बुझै छी?

माधव: बुझै छी माते।

रुद्रमति: (बर्तनसँ भात नीचाँ जमीनपर फेकैत आ तमसाइत) की बुझै छी माधव? अनुभवमण्डलक निर्णयक बिनु पालन केने अहाँ घरमे कोना प्रवेश कऽ गेलौं पुत्र माधव? जाबे अहाँ अनुभवमण्डलक निर्णयक पालन नै करब ताबे अहाँ कुकुड़क योनिमे रहब, आ कुकुड़केँ थारीमे खेनाइ खेबाक अधिकार नै छै। खाउ, ई नीचाँमे फेकल भात खाउ।

(माधव भुकैत छथि आ छिड़िआएल भात खाए लगैत छथि। अन्हार पसरि जाइत अछि।)

(फेर मंचपर प्रकाश होइत अछि। मंच खाली अछि। हीरू आ ऋषि जटा मंचपर अबै छथि।)

हीरू:

हाथक कंगना, फूल क घड़ी,
सेहो कहाँ पाएब हो लाल।
डाँड़ क डरकस, सोनाक कड़ी
से नै मन भावय हो लाल
मेधा-जीवे मारल गेला, माधव चुप्पे अछि
से नै मन भावय हो लाल
आँखि निकालल राजा हाथी पिचबाएल
मेधा-जीवे कहाँ पाएब हो लाल।

ऋषि जटा:

सोठौरा नइ खाएब राजा तीत लगैए
माधवक गप गंगाधरकेँ तीत लगैए
छठियारी पुजाबऽ लए माय अबैए
माधवक गप गंगाधरकेँ तीत लगैए
कजरा सेदै लए बहिन अबैए।
माधवक गप गंगाधरकेँ तीत लगैए

(दरबारी-१ आ दरबारी-२ क प्रवेश)

दरबारी-१: ई की कहै छी अहाँ सभ? राजदरबारमे तँ सभकेँ बुझल छै जे माधव आ गंगाधर एक दोसरापर असीम विश्वास करै छथि।

हीरू: करै छथि नै, करै रहथि।

दरबारी-२: से की?

ऋषि जटा: जीवे आ मेधाक हत्या।

दरबारी-१: मुदा ओइ विषयमे तँ माधवकेँ किछु बुझले नै छलन्हि।

हीरू: से तँ अहाँकेँ ने बुझल अछि। मुदा अनुभव-मण्डलमे सभ बुझैत रहए जे माधवकेँ ऐ षडयंत्रक विषयमे कोना बुझल नै भेलन्हि आ ओ कोना एकरा रोकबाक लेल प्रयासो नै कऽ सकला।

ऋषि जटा: आ तेँ अनुभव-मण्डल टूटि गेलै।

दरबारी-१: अनुभव-मण्डल टूटि गेलै?

हीरू: माधव अनुभव-मण्डलमे सँ निकलि गेला आकि निकालि देल गेला, तँ दुनू स्थितिमे ई अनुभव-मण्डलक टुटनाइए भेलै ने।

(दरबारी-१ आ २ मंचक कोनमे जाइत अछि आ कनफुसकी करैत अछि।)

दरबारी-१: ई तँ नीक सूचना भेटल, राजा अनेरे माधवपर शंकित रहै छला।

दरबारी-२: हँ, ऐ भगता सभकेँ पतो नै हेतै जे ओ सभ हमरा सभपर कतेक उपकार कऽ गेल अछि।

दरबारी-१: (ऋषि जटा आ हीरूकेँ दूरेसँ जोरसँ सम्बोधित करैत) ठीक छै भगता भाइ सभ, आब हम सभ जाइ छी। फेर कहियो बुलैत-भांगैत भेँट भइये जाएत।

हीरू: ठीके छै भाइ, भेँट हेबे करत।

(दरबारी-१ आ २ प्रस्थान करैत अछि।)

ऋषि जटा: चलू हीरू, काज भऽ गेल। आब अपनहियो सभ सप्तरी बोन दिस चली।

हीरू: (झोरासँ निकालि कऽ झालि बजबऽ लगैत अछि।)

भूत प्रेत सब झालि बजाबै

योगिन क नचबै छी हे।

राक्षस क संहार करै छी

दुनियाँ क जुड़बै छी हे।

(अन्हार पसरि जाइत अछि। फेर जखन इजोत होइत अछि तँ राजदरबारमे राजा आ नारायण

छथि आ तखने दरबारी-१ राजदरबारमे प्रवेश करै छथि।)

दरबारी-१: जय महराज। एकटा शुभ सूचना अछि। माधवकेँ अनुभव-मण्डलसँ निकालि देल गेलै। अनुभव-मण्डलकेँ आशंका रहै जे माधव जीवे आ मेधाक हत्याक राजाज्ञाक निर्णयक जनतब अनुभव-मण्डलसँ नुकेलक।

नारायण: मुदा माधवकेँ तँ ई गप्प बुझल रहबे नै करै, आ जखन ओकरा ई गप बुझले नै रहै तँ ओ कोना से गप ककरोसँ नुकेतै।

दरबारी-१: मुदा से गप अनुभव-मण्डलमे के मानतै, कारण ई राजाज्ञा जखन देल गेल, तइ लगाति माधव राजदरबारेमे छल।

नारायण: हँ, से तँ ठीके। मुदा अहाँकेँ ई गप कोना पता भेल?

दरबारी-१: (मुस्काइत) हम खुफिया सभकेँ सभठाम लगेने छी, अनुभव-मण्डल ओकरा सभसँ बाँचल थोड़बे छै।

(तखने दरबारी-२ प्रवेश करैत अछि।)

दरबारी-२: (राजाकेँ सम्बोधित करैत) जय महराज, माधव आ हुनकर दुनू सहयोगी राजदरबारमे

प्रवेशक अनुमति चाहै छथि।

कीर्ति सिंह: अनुमति अछि। तीनू गोटेकेँ ससम्मान दरबारमे आनल जाए।

(दरबारी-२ प्रस्थान करैत अछि आ फेर माधव आ माधवक दुनू सहयोगीक संग प्रवेश करैत

अछि।)

कीर्ति सिंह: आउ माधव। हमरा तँ भेल जे गंगाधर आ हरिकर जकाँ अहूँ राजदरबार छोड़ि देलौं।

माधव: हम राजदरबार कोना छोड़ि सकै छी महराज, गंगाधर आ हरिकर लेल तँ अनुभव-मण्डल छै, नै राजदरबार तँ अनुभव-मण्डल, मुदा हमरा लेल तँ मात्र राज दरबारेटा बचल अछि। (धीमे) कखनो-कखनो भीतर घुसबाक लेल बाहरसँ विश्वासघाती देखाबऽ पड़ै छै।

नारायण: जीवे-मेधाक मृत्युदण्डक निर्णय अनचोक्के लेल गेल। आ तेँ अहाँकेँ ऐ विषयमे नै बताओल जा सकल।

माधव: बता देलो जइतए तँ राजाज्ञाकेँ हम बदलि तँ नहिये सकितौं अर्थमंत्री नारायण।

कीर्ति सिंह: माधव। जँ हमरा गंगाधरक प्रति कोनो द्वेष रहितए तँ हम अपन धर्म बहिन

कुमरसुताक विवाह हुनकासँ करबितौं? हुनका कुलीन बनबैले हम हुनका प्रधानमंत्री बना देलियन्हि। मुदा हमरा की बुझल छल जे ओ अकुलीनताक पोषक छथि, कुमरसुतोकेँ ओ अपना रंगमे रङि लेलन्हि।

माधव: (आस्ते-आस्ते राजा लग जाइत) हँ, से तँ ओ सभकेँ अपना रङमे रङि लेलनि कीर्ति सिंह

(अन्तिम दू शब्द ओ जोर लगा कऽ बजै छथि आ तरुआरिक आघात कीर्ति सिंहपर करै

छथि।नारायण आ दुनू दरबारीक संग माधवक दुनू शिष्यमे युद्ध होइत अछि। माधवक दुनू शिष्य दुनू दरबारी आ नारायणकेँ गछाड़ने छथि। तावत राजाक सैनिक सभ आबि जाइत अछि मुदा माधव अपन पेटमे छूरा भोंकि आत्महत्या कऽ लै छथि। माधवक दुनू शिष्यकेँ राजाक सैनिक मारि दै छथि। तीनू गोटेक गरासँ उल्कामुख ताबीज नारायण निकालैत छथि, आ सभकेँ देखबैत छथि। अन्हार फेरसँ पसरि जाइत अछि।)

(फेर मंचपर प्रकाश होइत अछि। मंच खाली अछि। अनुभवमण्डलक सदस्य मंचपर अबैत छथि जइमे गंगाधर, मनसुख, हरिकर, मितू, कुमरसुता, आनन्दा, ऋषि जटा आ हीरू छथि मुदा जीवे, मेधा, माधव आ माधवक दुनू सहयोगी नै छथि। गंगाधर छड़ी धेने छथि, आ शान्त छथि। सभ बैसि जाइ छथि।)

गंगाधर: विदा लेबाक समए आबि गेल। अनुभवमण्डल सभ जातिकेँ निकट आनलक, जाति खतम केलक, मुदा..

मनसुख: नै गंगाधर, अहाँकेँ किछु नै हएत गंगाधर।

हरिकर: सभ ठीक भऽ रहल अछि गंगाधर, कीर्ति सिंह मारल गेल गंगाधर। आब सभ किछु ठीक भऽ जाएत।

मितू: मुदा संगमे माधव आ माधवक दुनू शिष्य सेहो मरि गेला।

कुमरसुता: कीर्ति सिंहक मृत्यु आवश्यक भऽ गेल छल। मेधा आ जीवेक जघन्य हत्याक आदेश कोनो मनुक्ख नै दऽ सकैए। कीर्ति सिंह किछु एहेन गोटेसँ घेरा गेला जे हुनका मनुक्खसँ जानवर बना देलकन्हि। गंगाधर, किछु नै हएत अहाँकेँ।

गंगाधर: नै कुमरसुता समय तँ सबहक अबिते छैक। हमरा किछु आशंका अछि, अनुभव-मण्डलक विषयमे।

आनन्दा: गंगाधर, ई अनुभव-मण्डल ओहिना चलैत रहत जेना अहाँ चाहै छी।

गंगाधर: हमरा किछु डर अछि।

ऋषि जटा: कोन डर गंगाधर?

हीरू: कोन डर गंगाधर? अनुभव-मण्डलमे तँ सभ जातिक प्रवेश अछि, स्त्रीक प्रति कोनो भेदभाव नै कएल जाइ छै।

गंगाधर: (हाँफैत बजै छथि) आइ छै हीरू। ई काल्हियो रहए ऋषि जटा, से हम चाहै छी। मुदा यएह टा डर अछि जे बदलाक भावक ई आगि अनुभवमण्डलकेँ एकटा उल्कामुखी जाति नै बना दै ऋषि जटा। यएह एकटा डर...(खोंखी करऽ लागै छथि) यएह एकटा डर जे ओइल सधेबा लेल जे आक्रमण अनुभव-मण्डलपर हेतै तइसँ अनुभव-मण्डल अपनाकेँ एकटा घेरामे ने घेरि लिअए, आ ऐमे सभ जातिक प्रवेशपर रोक नै लागि जाए। जे दरबज्जा हम खोललौं, ओ हमरा गेलाक बाद फेर बन्द नै होउ।

हमरा गेलाक बाद से नै हुअए कुमरसुता... मुदा बदलाग आगिमे से भऽ जे जाए सएहटा डर.. ...

(खोंखी करऽ लागै छथि, कुमरसुता हुनकर माथकेँ कोरामे लऽ लै छथि। आस्ते-आस्ते गंगाधर प्राणत्याग करैत छथि। हीरू ताबीजकेँ हाथमे लऽ निहारैत अछि; जटा धरतीपर हाथ राखि कऽ सुनैत छथि जेना दूरसँ घन फेर घूमि रहल हो। अन्हार पसरऽ लगैए आ नेपथ्यसँ अबाज अबैए..

डर लगैए हे डेराओन लगैए

तोर अंगना, भयाओन लगैए

हे अजगर के खम्हा पर धामिन के बरेड़िया

गहुमन क कोरो फुफकार मारैए,

डर लगैए हे डेराओन लगैए

तोर अंगना, भयाओन लगैए

कड़ेत के बत्ती पर सांखड़ के बन्हनमा

बिढ़नी के खोता घनघन करैए।

डर लगैए हे डेराओन लगैए

तोर अंगना, भयाओन लगैए

सुगबा के पाढ़ि पर ढोरबा के ढोलनमा

पनिया के जीभ हनहन करैए

डर लगैए हे डेराओन लगैए

तोर अंगना, भयाओन लगैए

बिछुआ के कुण्डल सनसन करैए।)

-समाप्त-

(अन्तिम ध्वनि**:** घनक खरखराहटि आ गोलाक घरघराहटि एक संग सुनाइ दैत अछि**;** फेर लोकगीतक

एक सूक्ष्म पंक्ति दूरसँ लौटैत अछि, जेना विस्मरण फेर हारि रहल हो।)

पटाक्षेप

VIDEHA

विदेह: प्रथम मैथिली पाक्षिक ई-पत्रिका | **ISSN 2229-547X | www.videha.co.in**

ULKAMUKH

The Love of Gangesha and Vallabha: A Struggle Between Memory and Oblivion — A Dramatic Saga in Six Acts

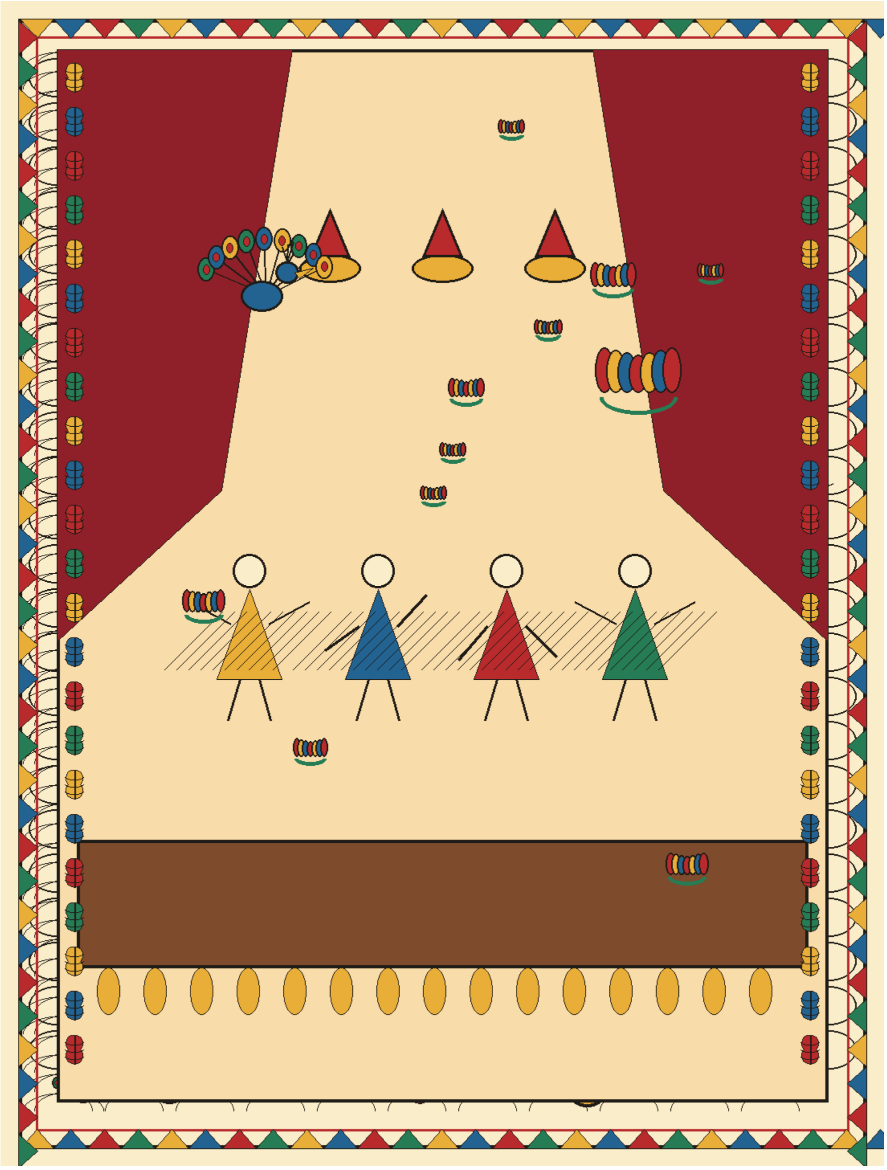

Gajendra Thakur

Editor, Videha: The First Maithili Fortnightly E-Journal (since 2000)

Staged at the Videha Theatre Festival, 2012. Director: Bechan Thakur. ISSN 2229-547X

NARRATOR AND CAST

NARRATOR:

- The love of Gangesha and Vallabha is the subject of this play. Yet this is not merely the love of two human beings; it is also a struggle between memory and oblivion. In the first two Acts, the seeds of love, song, and poetry are sown; in the third and fourth Acts, the conspiracies of history try to bury them; from the fifth Act onward, the suppressed memory rises again in the body, in society, and in struggle.
- Sound motif: the rasp of a turning cube, a jackal's flaming tail, the shiver of a bamboo grove, folk songs, and, in the final Act, the low rumble of a sphere/the Earth. Throughout the play these sounds will mark the coming and going of memory.
- From the fifth Act onward, signs give way to reality, imagination to truth...
- From the first through the fourth Act, cubes painted like chessboards remain onstage. From the fifth Act onward, the cubes — symbols of ghosts and imagination — are replaced by spheres, symbols of reality.
- Many commentaries exist on Gangesha's Tattvachintamani, and he is remembered as Gangesha, author of the Tattvachintamani; but his poetry has become "Ulkamukh"!!!

Maithili theatre.....................
enters a new dramatic age through this play.......
Ulkamukh...
Staged at the Videha Theatre Festival, 2012............................
Directed by Bechan
Thakur..
The stage design followed the principles of Bharata's Natyashastra.

CAST

From the first through the fourth Act, chessboard-patterned cubes remain onstage. From the fifth Act onward, those emblems of ghosts and imagination are replaced by spheres, emblems of reality.

[*Characters in Acts I-IV: Gangesha, Vallabha, Devadatta, Vardhamana, Udayana, Dina,* Bhadari, Acharya Vyaghra, Acharya Simha, Acharya Sharabha, Disciple Sahi, Disciple Khikhir, Disciple Nadhia, Disciple Bijji, Bhagat, and Bhagat's Disciple.

Characters from Act V onward: Disciple Sahi becomes Harpati (Gangadhar's father); Gangesha becomes

Gangadhar; Vallabha becomes Kumarsuta (Gangadhar's wife); Bhagat becomes Jata; Bhagat's Disciple becomes Hiru, a Dalit singer; Acharya Vyaghra becomes Mansukh (Jive's father); Acharya Simha becomes Harikar, the Commander (Medha's father); Acharya Sharabha becomes Kirti Singh (the King); Vardhamana becomes Mitu (Gangadhar's brother-in-law); Devadatta becomes Jive (Mansukh's son); Disciple Khikhir becomes Narayan, the King's Finance Minister; Disciple Nadhia becomes Courtier 1; Disciple Bijji becomes Courtier 2; Udayana becomes Madhav

(a member of the Experience Council and a courtier); Dina becomes Madhav's Associate 1; Bhadari becomes Madhav's Associate 2. Four female characters are added in the final two Acts: Rudramati (Madhav's mother), Sohago (Gangadhar's mother), Ananda (Gangadhar's sister), and Medha (the daughter of Commander Harikar).]

[*The characters of Acts I-IV return in altered forms from Act V onward, and four additional female characters appear: Rudramati (Madhav's mother), Sohago (Gangadhar's mother), Ananda (Gangadhar's sister), and Medha (Commander Harikar's daughter).*]

ACT I

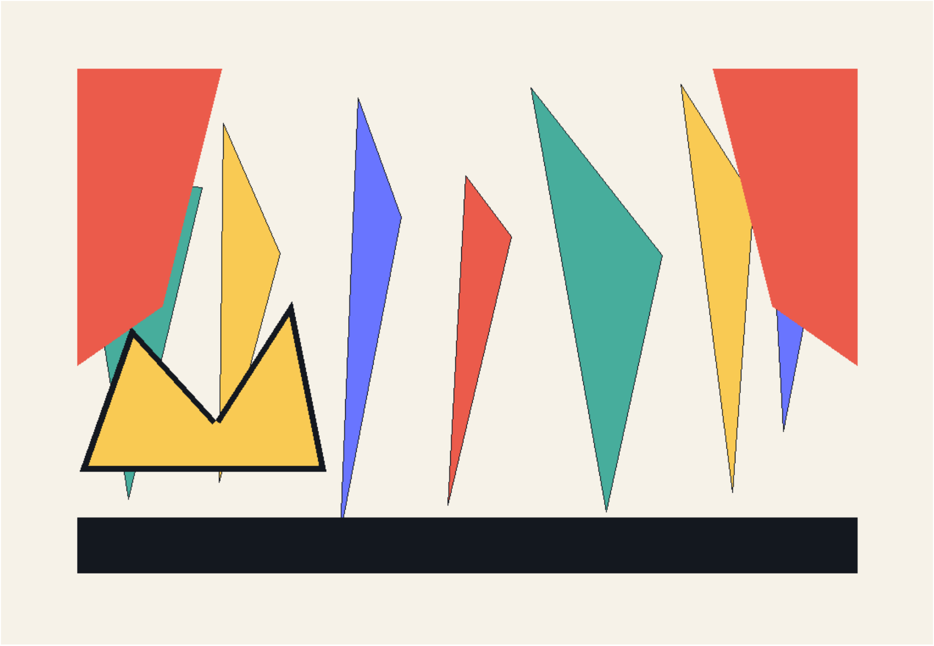

FIGURE 1

(On the left mattavarani, a large wooden cube stands; on the right mattavarani, an even larger cube. Every face of each cube carries a chessboard pattern. A jackal with a flaming tail circles the stage. The effect may be created with two or three torches.
From offstage come the jackal's howls, the distant rustle of a bamboo grove, and the faint sound of pages turning. The stage lights rise. GANGESHA and VALLABHA sit in conversation in the central acting area.
A large wooden cube is moved from the mattavarani into the centre. Leaning forward upon it, they speak.)

VALLABHA: The golden radiance of dawn makes me think of a sage clothed in splendour.

GANGESHA: What is it? Which sage are you speaking of? Whom does it bring to mind?

VALLABHA: You. Who else? Yet I am afraid even to call you a sage. Once people turn a man into a sage, they try to remove him from ordinary human grief and joy.

GANGESHA: Since when have I become a sage? I am only an ordinary student.

VALLABHA: Your brilliance is discussed everywhere.

GANGESHA: My brilliance! I oppose verbal cleverness. All I try to do is prevent clever speech from outweighing fact and truth.

VALLABHA: What difference will that make? People will still twist their words. You have exposed the tricks of verbal sophistry. You have discussed it in so many verses. Even then, people go on turning words around to say what they wish.

GANGESHA: Since when have you begun to worry so much about me?

VALLABHA: Look at yourself. You have grown up in the leatherworkers' quarter. People see your learning, but they also count the soil on which your feet first stood.

GANGESHA: And since childhood I have listened to what people say.

VALLABHA: But their words have grown more poisonous.

GANGESHA: How poisonous can they be? I have been granted Satyakama's fortune...

VALLABHA: Which Satyakama?

GANGESHA: The Satyakama who did not know who his father was, whose mother herself could not say who his father was. Yet his teacher Gautama still gave him an education.

VALLABHA: Were you asked that question too, Gangesha? The question... who... who is your father? How were you born

five years after your father's death...?

GANGESHA: (Turning his face away and looking behind him.) I was asked, Vallabha. I was asked. A birth without a father...

"Five years after the father had passed from sight, Gangesha was born..."

VALLABHA: (Turning GANGESHA back to face her.) Let it go. I know the truth.

GANGESHA: My teacher also questioned me about my father. The man from the leatherworkers' quarter who helped my mother in her hour of crisis has now left the village altogether.

VALLABHA: I have heard the same. No one knows where he went.

GANGESHA: Yet even today, in your quarter, I find that same warmth of belonging. The door of the leatherworkers' quarter that opened for me remains closed to them. What kind of justice is that?

VALLABHA: Ah! With whom will you take up every injustice?

GANGESHA: One such person is standing directly before me.

VALLABHA: And that very closeness offends people's eyes — it is a thorn lodged there. When love climbs over the wall of caste, the guardians of the wall burst into flame.

GANGESHA: Vallabha, you speak with everyone — with me, with trees and leaves, with little birds, with all of nature...

VALLABHA: You make me think you must have been a woman in some former birth.

GANGESHA: You are a princess of Mithila, Vallabha. When you raise your eyes, it seems that nature opens its heart and begins to love. You are deep and grave as the underworld, yet yearning as a wind-borne cloud; steady as a banyan, yet always joyful as this ripening head of rice... (He gestures toward the fields.)

VALLABHA: And you are no less, Gangesha. You are steeped in learning. You hear every argument calmly and answer it; you judge like Vikramaditya; you understand the world, and you stand firm as the Himalayas.

GANGESHA: Vallabha, your beauty has no equal. Neither gold nor anything else possesses a greater perfection. When I come near you, I feel like a storm-tossed ship that has at last reached shore. My learning is nearing completion. From my churning of thought, I have brought forth something new. Mithila has not become barren of knowledge. Yet without your songs, my book will remain half-finished. For centuries after Udayana, no one in Mithila arose to challenge Lord Jagannath.

VALLABHA: Do not say that. Dina and Bhadari went and issued that challenge to Jagannath.

GANGESHA: Yes, Vallabha. My mother told me that tale. And Dina and Bhadari both won their victory. The temple doors opened. Tell me the story once more.

VALLABHA: Does your heart never tire of hearing the same story again and again?

GANGESHA: Never. It gives me the impulse to write the Tattvachintamani.

VALLABHA: Very well. Then I shall be Dina and you shall be Bhadari. But remember: this is not merely a tale; it is the people's memory.

(They move before the chessboard cube.)

VALLABHA: From Jogiya village came Dina, joining brother Bhadari — hey...

GANGESHA: Kalu Sadai, son of Niraso Maiya, sturdy and strong — hey...

VALLABHA: (Laughing, looking toward GANGESHA.)
Poor they were, humble they were, but never helpless — hey.
They hunted through forest and battlefield, and together they tilled the fields — hey.
Five-maund hoes upon their shoulders, however far the bighas spread — hey.

GANGESHA: Photara was the jackal-king of the Kataiya forest — hey.
His companion was Dhaman, renowned for his venom — hey.
With words like poison, Dhaman called to the brothers:

Go, Dina! Go, Bhadari! Go and make your home in the water!
VALLABHA: Re-e-e-e-e-e...!
What did you say, Dhaman — you, you? What did you say, Dhamin?
Re-e-e-e-e-e...!
You are no partner in my life in the Kataiya forest — hey.
You have scorned my life; you have belittled my strength — hey.
The brothers sprang upon him, striking blow after blow — hey.
They killed Dhaman and cast him down before Dhamin — hey.
Dhamin began to tremble: "Brother, I shall avenge you!" — hey.
GANGESHA: King Photar of the Kataiya forest was his faithful friend — hey.
"You two brothers together have killed my friend Dhaman!" — hey.

FIGURE 2

Sister Dhamin, be at peace; do not be afraid — hey.

Let them come, let the two brothers come to hunt!

VALLABHA: The days passed. Bhadari and Dina went hunting in the forest — hey.

Uncle Bahuran went with them; Photar lay ready — hey.

He sank his venomous teeth into them and killed both brothers — hey.

Dead, the two brothers wandered as spirits — hey.

GANGESHA: Hiria the betel-seller of Dauri village saw the two brothers — hey.

Jiria the blacksmith-woman of Dauri village saw the two brothers — hey.

"We want husbands such as these!" And they began their penance — hey.

VALLABHA (Sitting in meditation like an ascetic woman):

Dina we desire, Bhadari we desire — one husband for each friend.

Dead though you are, what of it? Enter the Ganga and accept us.

(GANGESHA moves behind the cube and raises his hands as though standing in the Ganga. From the opposite side, VALLABHA reaches out her hands.)

VALLABHA: Matair, Matair — I had heard that Matair lay far away — hey.

Grain I gave, wealth I gave, Lakshmi in abundance — hey.

Yet without that one husband, everything feels empty — hey.

Matair, Matair — so I had heard...

(DEVADATTA enters.)

DEVADATTA: (Smiling, looking first at VALLABHA and then at GANGESHA.)

Kamala, Kamala — I had heard that Kamala lay far away — hey!

Entering the sacred chamber, Kamala became Kasahur — hey.

Grain I gave, wealth I gave, Lakshmi in abundance — hey.

Yet the one thing...

Bravo, Gangesha! No, no — this is not verbal cleverness. No cleverness at all. This is embodied love.

Love, love — wherever I look, everything is filled with love — hey.

Without love, the whole world feels empty — hey...

(To GANGESHA.) Gangesha, what a wonder! Your mother was drawn to this quarter, and now you are drawn here too. But who will speak? Who can stand before your justice and logic?

(Turning to VALLABHA.) Vallabha, perhaps it is your fate... or some vow... perhaps Gangesha's mother vowed to make you her daughter-in-law. Or perhaps she made Gangesha swear: "To avenge my humiliation, marry in this very quarter and show them all." (He turns to face the audience.) Who can defeat Gangesha in justice and logic? Gangesha will dispense justice — no one else will dare argue.

GANGESHA: (Sharply, toward DEVADATTA.) Devadatta!

DEVADATTA: (To GANGESHA.) No, Gangesha, I possess no verbal cleverness. But is there truly no logic in what I have said?

GANGESHA: (Forcefully.) Devadatta, my mother made no vow, nor did she bind me by any oath. Nor is the love between Vallabha and me a repayment for the help this quarter once gave my mother. Because this love contains neither vow, nor oath, nor debt of favour, it is embodied love.

DEVADATTA: (Facing front.) Logic! No verbal trickery at all.

(To GANGESHA.) Yet, Gangesha, you have said one thing truly. People are not discussing your love for Vallabha at all. They discuss romances from distant lands, but not yours. You are right. I have heard that you are writing a great work on Nyaya — a work so formidable that every logician will become entangled in debating it. Commentary upon commentary, gloss upon gloss, will be written upon it. But take care, Gangesha. Might this not be a conspiracy to kill your love? Five hundred years from now — yet before a thousand years have passed — this love will be spoken of again in Mithila. Oh!

What have I just said, Gangesha? (He begins slapping his tongue.)

People say my tongue is cursed. If I stand on the embankment of a rice field and say,
"Look how lush this crop is," the rice burns the very next day. That is what people say. (Again he slaps his tongue.)

Why should embodied love ever be discussed, Gangesha? Why should anyone speak of it? Such talk would bring harmony into society. So there will be no discussion of this love, Gangesha — none. Your book will be discussed, Gangesha. In every tol and chaupadi of Mithila, your scholarship and your book will be discussed, but — (with a bitter smile) — no one will speak of your love. The teachers of Mithila will not permit copies of your book, Gangesha, nor will they allow anyone to write a summary of it. And even if a student from Bengal manages to make a copy and carry it away, Gangesha, he will carry only your learning: your Nyaya, your logic. Your love will die, Gangesha. Your embodied love will die.

VALLABHA: (Loudly, to DEVADATTA.) Devadatta, after a thousand years this love will return, will it not? For the sake of Gangesha's immortal book, I accept that wait. Let love go undiscussed — ha! Love is not made in order to be talked about. Does love exist merely so that people may discuss it, Devadatta?

DEVADATTA: (To VALLABHA.) Vallabha, I can see Gangesha's defeat. I can see defeat on Gangesha's face. Gangesha, do you agree with Vallabha? If no one speaks of your embodied love, will your purpose of social harmony ever be fulfilled? Does your book owe nothing to this embodied love, or to the narashamsi ballad of this quarter? Will your fierce logic not harden into mere doctrine, Gangesha? Will it not lose all practical force? I promise you, Gangesha, I promise: no one will openly oppose your embodied love. You will keep believing that they remained silent because your fierce logic defeated them. But the truth is that commentary upon commentary and gloss upon gloss will continue to be written on your book. Forget opposing you — no one will even oppose your descendants, Gangesha. You and your logic will be reduced to doctrine.

GANGESHA: (Loudly, to DEVADATTA.) Devadatta, none of your words seems difficult to me. But such a tightly reasoned speech... how are you speaking with so much logic?

DEVADATTA: (Facing the audience.) So much logic... (Turning to GANGESHA.) You have understood correctly, Gangesha. I heard these words from others. They are not thoughts of my own. This is what the teachers say in the chaupadi. I understand none of it; (grinning) perhaps that is why they say it all in front of me. I am going... I am going...

(Looking about, he begins turning over the chessboard cube.) What reward will you give me for this logical speech, Gangesha? (Touching the squares one by one.) There are sixty-four squares on this chessboard, are there not? Place one grain of rice on the first square. (He places one.) On the second, twice as many. (He places two grains... counting aloud: one... two... three... four...) On the third, twice the second. (He places four grains... one... two... counting.) (Then he touches the sixty-fourth square.) On the last — the sixty-fourth — give me as many grains of rice as the doubling brings there, Gangesha.

VALLABHA: (Irritably, to GANGESHA.) Give him his reward, Gangesha. Who knows where he may have picked up this story too.

GANGESHA: (To VALLABHA.) No, Vallabha. This reward is more impossible than the chess problem itself. Even if all the grain grown across the whole Earth were gathered for five hundred to a thousand years, only then could this reward be paid.

(Seizing DEVADATTA by the arm.) Devadatta... Devadatta, who was saying this? In which chaupadi was this being discussed, Devadatta?

DEVADATTA: (Frightened.) The reward is that vast! Five hundred years from now, but before a thousand years have passed... Gangesha, if you do not pay me, your embodied love will remain hidden until then... Ha! Ha! Ha! (To himself.) What a frightening thought... what a frightening thought... (He exits.)

(VALLABHA and GANGESHA look at one another.)

(The stage darkens to the sound of distant jackal howls.)

ACT II

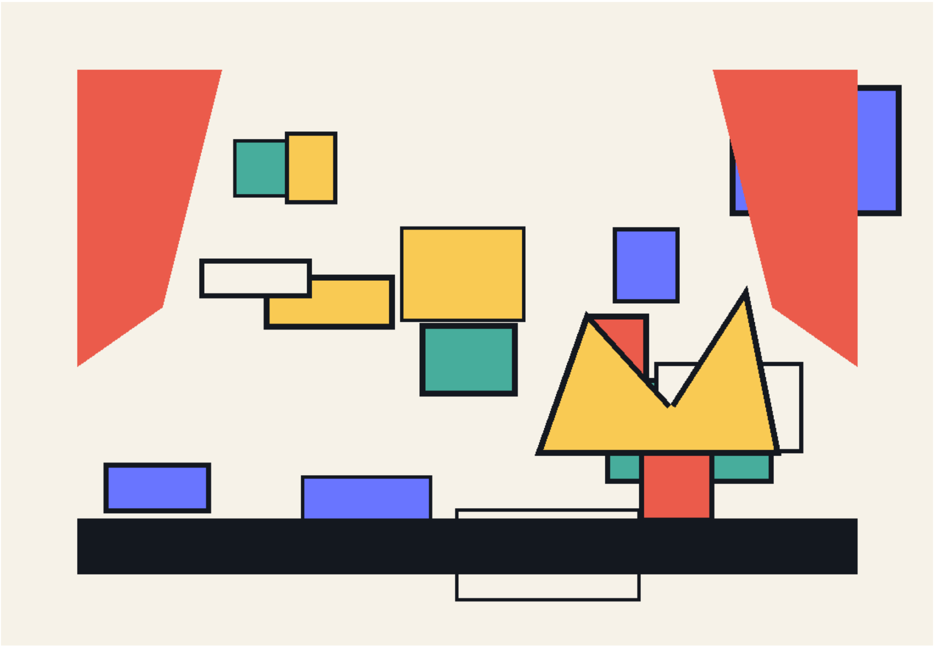

FIGURE 3

(Two chessboard cubes stand on the two upper stage areas. GANGESHA circles one of them. The other is briefly lit, then vanishes into darkness. A song rises from the musicians' platform.)

O child Goraiyya, son of a Brahmin woman,
With your books you go to study — hey.
Goril sets the books beneath a tree,
Then dashes into the sweet-maker's house — hey.
Some sweets Goril eats, and some he scatters,
And some are sent away to Lanka — hey.
O child Goraiyya, son of a Brahmin woman,
He rushes into the milkmaid's house — hey.
Some milk Goril drinks, and some he spills,
And some is sent away to Lanka — hey.

GANGESHA: I am indeed the son of a Brahmin woman, but my son is not. He is the son of a Brahmin's daughter-in-law. I am the author of a single Tattvachintamani equal to twelve thousand books — and merely an ordinary teacher. Who will forbid anyone to copy my Tattvachintamani? The students of Navadvipa will surely carry my teaching away with them.

(The song rises again from the musicians' platform.)

O child Goraiyya, son of a Brahmin woman,
He rushes into the carpenter's house — hey.
Some betel Goril chews, and some he scatters,
And some is sent away to Lanka — hey.
O child Goraiyya, son of a Brahmin woman,
He rushes into the Dom woman's house — hey.
The finest offerings Goril places there himself,
But they give him a cracked leaf-plate and drive him out — hey.
O child Goraiyya, son of a Brahmin woman,

He rushes into the Brahmin's house — hey.
The finest sacred threads Goril puts on himself,
And they give him more, tangling him in them — hey.
Goril weeps bitterly; the Brahmin's daughter weeps,
For the Brahmin master has caused great sorrow — hey.
Thus speaks Gangesha: listen, Lord Goril,
Enter the sacred chamber and win renown — hey.

GANGESHA: (Brooding to himself.) What did Devadatta mean? No one in the tol or chaupadi
has said any such thing in front of me. Yet the calculation of grains on the chessboard — that is beyond Devadatta's mind.

(VALLABHA enters.)

VALLABHA: What is it? What has set you brooding?

GANGESHA: (To VALLABHA.) The same riddle Devadatta left behind.

VALLABHA: (To GANGESHA.) Oh, let it go. He has not a trace of intelligence.

GANGESHA: That is precisely why, Vallabha. Truth and falsehood belong to the workings of intelligence — but he has none. That is why
I must think about what he said.

VALLABHA: Besides being the author of the Tattvachintamani, you have now become a poet as well. You have begun to write such beautiful
songs. In the Tattvachintamani: Acharya Simha and Acharya Vyaghra; in the songs: little Goraiyya!

GANGESHA: Yes, Vallabha. Without meaning to, you have said something wonderful. (He goes to the chessboard cube,
tilts it, and balances one corner beneath his little finger.) Yes, Vallabha... not the Tattvachintamani, not
the definitions of Acharya Simha and Acharya Vyaghra... it is Bal Goraiyya that will have the power to break
the conspiracy of the tol and chaupadi. (GANGESHA removes his little finger. The cube spins, then settles
again. Looking toward VALLABHA.) Without meaning to, you say such wonderful things,
Vallabha.

(DEVADATTA enters.)

DEVADATTA: (To GANGESHA.) Gangesha the poet! (He spreads his arms in astonishment.) Gangesha, author of the Tattvachintamani!
No one will ever discuss the poetry of Gangesha the poet! People want a philosopher, not a poet; they want high birth,

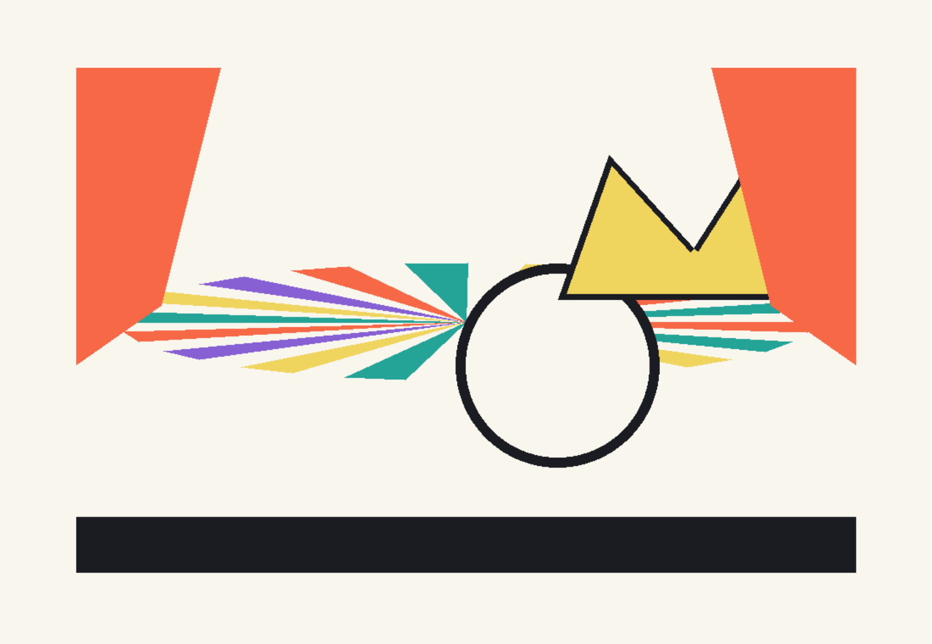

FIGURE 4

not love.

VALLABHA: (To DEVADATTA.) Was that decision also taken in the tol and chaupadi?

DEVADATTA: (To VALLABHA.) Yes, Vallabha. But how did you know?

VALLABHA: (To DEVADATTA.) I did not know — but now I understand. A guard has been posted over every discussion of the love between Gangesha and me, over every mention of our marriage.

GANGESHA: (Tilting the chessboard cube again.) Then no one will discuss my poems either. Every line of the Tattvachintamani

will receive commentary and gloss — but the poems...

VALLABHA: (Taking the chessboard cube from GANGESHA.) Gangesha, stop worrying now. All these

songs will be sung in my mother's village. Devadatta, go and tell the tol and chaupadi: the songs will not be silenced.

If not today, then seven hundred years from now, this love will be spoken of again. If a name is cut from the book, its breath

will survive in song. And a love that can wait seven hundred years cannot be stopped by a bamboo grove.

DEVADATTA: (To VALLABHA.) It cannot happen, Vallabha — it has already been prevented. Look at that bamboo grove. Between this village

and the quarter of your mother's village, see the sharp bamboo shoots rising. They will turn your own birthplace

into a foreign land. Your song may leave that quarter, but in this bamboo grove it will wander

as a ghost-song. (To GANGESHA.) Gangesha, author of the Tattvachintamani...

VALLABHA: Sukavi-kairava-kananenduh — "the moon above the water-lily grove of fine poets" — Gangesha. I shall tell our son Vardhamana. He will leave behind

proof that his father was a poet. Go, Devadatta, and tell this to the tol and chaupadi. Is there anyone there who can fight

for seven hundred years? The song of the bamboo grove will keep circling back. I have heard that no sound ever dies in this world. I have

heard that seven people of the same kind live in the world at the same time. In seven hundred years, will there not be seven such people,

Devadatta?

DEVADATTA: (To VALLABHA.) No, Vallabha. In seven hundred years, even one would be a great deal.

VALLABHA: There will be one, Devadatta. For that one person, the song of our love will go on roaming through this wild

bamboo grove. In seven hundred years, the life beyond the grove — the tol, the chaupadi — will all have vanished,

but this ghost-song will not end. The bamboo grove will call the spirits back: the good spirits —

Udayana, Dina, Bhadari, Acharya Vyaghra, Acharya Simha...

DEVADATTA: It will not end, Vallabha, it will not. But if the good spirits return, might the evil ones not return as well? That is my fear, Vallabha — that the evil spirits will come too. When memory returns, it will also demand an accounting.

(DEVADATTA looks around, gives a violent shudder, and exits. VALLABHA and GANGESHA come to stand beside the chessboard cube.)

GANGESHA: Vallabha, let all this go. Why have you begun brooding too? Tell me a story — some other story. I shall write no more books of Nyaya. For the rest of my life, I shall write only poetry.
Tell me the tale of Balaram and the Brahmin Banshidhar, of the tiger and the boar, of Gahil and Durga.

VALLABHA: (She turns. A smile comes to her sorrowful face. She gathers all the chessboard cubes and, with both hands, pushes them toward the wings and off the stage.)
Hirr, hirr — the boar runs past the wrestling ground;
Behind him Brahmin Banshidhar gives chase through the crowd.
At dawn in the arena, man and boar meet in battle;
Shyam Singh comes and hurls earth into the fray.
Anger rises in Banshidhar; he shouts fierce words;
Crying "Gahil! Gahil!" Shyam Singh charges hard.
Banshidhar is strong; he strikes with terrible force;
With a cry Shyam Singh falls, and darkness descends.
His son Balaram takes a solemn vow:
One vow, two vows... three vows... yes...
"Gahil, give me strength to kill Banshidhar!"
Gahil goes to Goddess Durga to have the vow fulfilled,
But Durga comes to protect Banshidhar.
Banshidhar's boar is killed, pierced by the enchanted thorn;
In fury Banshidhar challenges Balaram,
But Balaram drives the thorn into his belly too.
Banshidhar's belly is torn; Durga comes between them.
In the Ganga, Balaram raises Banshidhar to his feet;
Friendship is born between the two.
Gahil joins them, Durga joins them — let everyone unite;
Let all move forward together in this land.

(VALLABHA and GANGESHA look at one another.)

(The stage darkens to the sound of distant jackal howls.)

ACT III

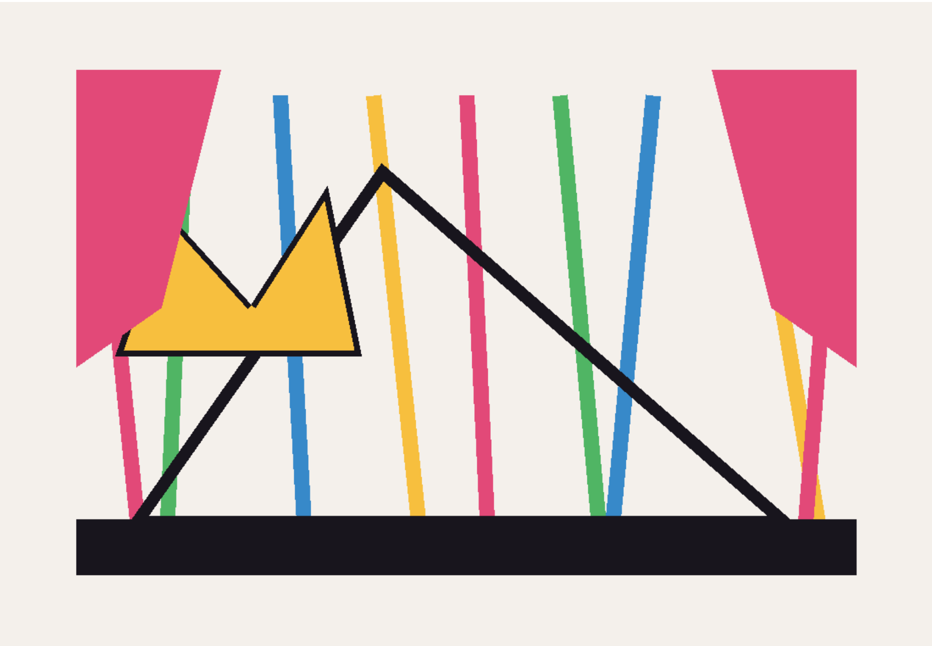

FIGURE 5

(ACHARYA VYAGHRA circles one chessboard cube. ACHARYA SIMHA circles another.
A black cloth is tied around each neck, drawn close to the mouth like a gag.
The music suggests a bamboo grove, creating an uncanny, haunted atmosphere on every side.
As the cubes turn, they seem to erase the letters of names. From time to time comes the dry
rustle of palm-leaf manuscripts.)

ACHARYA VYAGHRA: (To ACHARYA SIMHA.) Gangesha discussed us in the Tattvachintamani,
but now people have forgotten even our true names. Our books, too, have vanished without trace.

ACHARYA SIMHA: (To ACHARYA VYAGHRA.) But none of that concerns us,
does it?

ACHARYA VYAGHRA: (Coming downstage.) Hah! After death, being called a tiger and a lion is still better than being called ghosts
and demons, is it not? Hah!

ACHARYA SIMHA: (Calling after him.) But we were never personally involved.
Gangesha mentioned us only in philosophical propositions — merely as "Acharya Simha" and "Acharya Vyaghra" —
and nothing more.

ACHARYA VYAGHRA: (Turning.) And that is precisely how we were erased, is it not?

ACHARYA SIMHA: But he mentioned many other people in the Tattvachintamani. Why were they not
erased?

ACHARYA VYAGHRA: Because Gangesha wrote their names — clear, human names, this man and that man.
For us he wrote only "Acharya Simha" and "Acharya Vyaghra." Thus Gangesha's poetry
became Ulkamukh, while we became a tiger and a lion. Conceal a person's name and the person slowly becomes a symbol;
the symbol becomes a story, and the story becomes an accusation. Gangesha's son Vardhamana wrote of his father: "

ACHARYA SIMHA: (To ACHARYA VYAGHRA.) What secret lies in this?

ACHARYA VYAGHRA: (Coming to the front of the stage.) Insecurity, Acharya Simha — insecurity. Gangesha defended
our arguments against Shriharsha's assault and created Navya-Nyaya: a new discipline, a new
logic. He himself was strange enough — born five years after his father's death, and married to a leatherworker woman.
From that marriage came Vardhamana, who reunited Nyaya and Navya-Nyaya. Yet
Vardhamana did not forget his father's poetry. Insecurity, Acharya Simha: the chaupadi would not allow students
from outside to make copies of the Tattvachintamani, nor would it let them write summaries.

After Vardhamana, everyone in the chaupadi turned Acharya Vyaghra, Acharya Simha, and Ulkamukh into inventions.

ACHARYA SIMHA: (Calling from behind.) But how can creation take place under such conditions, Acharya Vyaghra? How can students express themselves in a chaupadi without creation? How will their abilities grow? Will ancient history and ancient knowledge not be reduced to tigers, lions, and Ulkamukh? Prohibition, prohibition... then how will knowledge expand? One section of society will be cut off from another... prohibition, prohibition... will that increase affection, or indifference? "You do what you must; I shall do what I must" — is that to be society's course?

ACHARYA VYAGHRA: (Turning to ACHARYA SIMHA.) Acharya Simha, should there not be an attempt to stop this forgetting?

ACHARYA SIMHA: There should, Acharya Vyaghra. Nothing can truly be forgotten until we first cease to understand it.

ACHARYA VYAGHRA: Understand it and remember it — well said, Acharya Simha. So perhaps the chaupadi is arranging for students to memorise lessons without understanding them, so that everyone will forget Gangesha and Vallabha.

ACHARYA SIMHA: But we can use signs. Through signs, memory will not become oblivion. The lesson of the chaupadi will remain incomplete, and an incomplete lesson cannot be forgotten. Only a complete lesson can be forgotten.

ACHARYA VYAGHRA: But what sign can halt this forgetting, Acharya Simha?

ACHARYA SIMHA: Ulkamukh...

(A voice resounds from the sky. Lightning flashes. "Ulkamukh... Ulkamukh... Ulkamukh... Ulkamukh..." The cry rises from every side. ACHARYA VYAGHRA and ACHARYA SIMHA move toward the upper-left stage area. Meanwhile ACHARYA SHARABHA enters with two disciples — DISCIPLE KHIKHIR and DISCIPLE SAHI — crossing the central acting area to the right mattavarani. The disciples carry in a chessboard cube. Light focuses on the right mattavarani. Each of the three wears a white cloth tied around the neck and drawn close to the mouth like a gag. The music again evokes a bamboo grove; an uncanny, haunted atmosphere fills the stage. It grows more frightening than before. At intervals, the howl of a jackal is heard.)

ACHARYA SHARABHA: (Coming downstage.) This marriage of Gangesha and Vallabha... the chessboard squares will grow gigantic; in seven hundred years caste will disappear... do something... stop it... oblivion... oblivion...

(To the two disciples.) Disciple Khikhir. Disciple Sahi.

DISCIPLE KHIKHIR: (Addressing the teacher; DISCIPLE SAHI leans forward from behind to listen.) Acharya Sharabha, an incomplete lesson cannot be forgotten; only a complete lesson can be forgotten.

DISCIPLE SAHI: (Addressing the teacher; DISCIPLE KHIKHIR leans forward from behind to listen.) From the teaching of Acharya Simha and Acharya Vyaghra has come a script of signs. Through signs, memory cannot become oblivion, Acharya Sharabha. That coded lesson is Ulkamukh.

ACHARYA SHARABHA: (Raising both arms and roaring toward the sky.) What is this Ulkamukh? Disciple Khikhir, Disciple Sahi — what is Ulkamukh? I hear its name everywhere. But will anyone in the chaupadi tell me what Ulkamukh is?

DISCIPLE SAHI: Acharya Sharabha, how are we to see Ulkamukh? It is an application of the teaching of Acharya Simha and Acharya Vyaghra, used by Gangesha and Vallabha in their poems. It is what has made all of us ghosts and inventions — and that too through the power of Acharya Vyaghra and Acharya Simha. Everything is only a sign: a sign that is everywhere, and nowhere.

ACHARYA SHARABHA: But Acharya Vyaghra and Acharya Simha are themselves inventions. How, then, are

they doing any of this?

DISCIPLE SAHI: Through our own power...

DISCIPLE KHIKHIR: (Interrupting.) Through our own power?

ACHARYA SHARABHA: Yes. When the power of oblivion grows, memory brings back the very things we hate. That is why Acharya Vyaghra and Acharya Simha returned. And once Acharya Vyaghra and Acharya Simha returned, they brought us with them. But how did that sign — that Ulkamukh — cross this bamboo grove, Disciple Sahi?

(DISCIPLE SAHI stares helplessly at DISCIPLE KHIKHIR.)

DISCIPLE KHIKHIR: (To ACHARYA SHARABHA.) Acharya Sharabha... we did finish them off — Acharya Vyaghra and Acharya Simha. If Gangesha honoured them, their books too were reduced to... dust. Gangesha's poetry was erased as well — and so his poem became Ulkamukh. Vallabha made it Ulkamukh. Acharya Vyaghra, Acharya Simha, and Gangesha — the fear of these three names! When ancient history was turned into a tiger, a lion, and Ulkamukh, we too became Sharabha, Khikhir, and Sahi. Sharabha became an invention — a complete invention. There is no animal by that name at all. Yet though no such creature ever existed, Sharabha has always existed as an imaginary beast. Sahi and Khikhir, too, are disappearing — growing fewer, like tigers and lions. Prohibition, prohibition... then how can knowledge expand?

ACHARYA SHARABHA: (Looking at DISCIPLE KHIKHIR in disbelief.) Am I entirely imaginary, Disciple Khikhir?

DISCIPLE SAHI: (Interrupting, to ACHARYA SHARABHA.) Acharya, you are an invention, and we are the makers of inventions. The chaupadi would not allow outside students to make copies of the Tattvachintamani; now look at the state of the chaupadi. Forget students from outside — even local students have become scarce here.

ACHARYA SHARABHA: (Coming downstage and roaring.) Am I an invention? Is Acharya Sharabha an invention of the past, or an invention of the future? Oblivion! Teaching others to forget, Acharya Sharabha himself has been forgotten. The mantra of oblivion... this Ulkamukh has become a terror. In teaching others to forget, people forget themselves.

(A voice sounds from the sky: "Ulkamukh... Ulkamukh... Ulkamukh... Ulkamukh..." When light falls on ACHARYA VYAGHRA and ACHARYA SIMHA in the upper-left stage area, they become restless with yearning. On the darkened right mattavarani, ACHARYA SHARABHA, DISCIPLE KHIKHIR, and DISCIPLE SAHI become mere shadows. The three shadows lift the chessboard cube and advance.)

ACHARYA VYAGHRA: Am I an invention? An invention of the past, or of the future?

ACHARYA SIMHA: (Interrupting.) Of the past, Acharya Vyaghra, of the past. The future will come seven hundred years after Vallabha's death. Only half that time has passed. The future is still waiting... but by then, what else will have turned into invention? What, if anything, will survive?

(Complete darkness. From within it come the voices of ACHARYA SIMHA and ACHARYA VYAGHRA.)

ACHARYA VYAGHRA: Then let us be inventions, Acharya Simha. Come — let us go to Vardhamana, Dina, Bhadari, and Udayana. They may be able to tell us something.

ACHARYA SIMHA: That is not a bad idea, Acharya Vyaghra. The conspiracy must be broken. The question is what will remain by then.

ACHARYA VYAGHRA: We can already see what remains, Acharya Simha. Acharya Sharabha and his disciples Sahi and Khikhir are not silent; they are doing something or other. The student of Mithila has become

a machine for rote recitation. Navya-Nyaya has gone to Bengal, and no one here is troubled to ask why it left. In destroying Vallabha and Gangesha, they themselves are being destroyed.

ACHARYA SIMHA: That is worse still, Acharya Vyaghra. Look — Vardhamana, Dina, Bhadari, and Udayana have arrived.

(The lights rise. ACHARYA SIMHA, ACHARYA VYAGHRA, UDAYANA, DINA, BHADARI, and VARDHAMANA are revealed on the main stage.)

ACHARYA SIMHA: (Addressing them all.) We have gathered here because...

VARDHAMANA: (Interrupting.) A famine?

UDAYANA: A flood?

ACHARYA VYAGHRA: (To all.) No, Udayana, not a flood. No, Vardhamana, not a famine.

ACHARYA SIMHA: (To VARDHAMANA and UDAYANA.) Vardhamana, there is a famine of thought. Udayana, a flood of pettiness has risen.

DINA: (Interrupting.) An enemy from outside?

BHADARI: A human being — or a wild beast?

ACHARYA VYAGHRA: (To DINA and BHADARI.) No, Dina, no outside enemy. Bhadari, nothing from outside — neither human nor wild beast.

ACHARYA SIMHA: (To DINA and BHADARI.) They are all our own people, Dina and Bhadari. There is no foreign enemy, no creature from the wild. They are home-grown: Acharya Sharabha and his disciples.

UDAYANA: (Coming downstage.) At the Jagannath Temple, Udayana proclaimed: "Because I exist, you are worshipped." The locked doors opened. And who is this Acharya Sharabha? A jackal.

DINA AND BHADARI: (Together, coming downstage.) We braced our bodies against the foundation; the wall cracked, and the locked doors opened. And who is Acharya Sharabha? A jackal.

DINA: (Turning back from downstage.) Hidden in the bones of a dead cow, Photara the jackal watched Salhes, Dina, and Bhadari wrestle the tiger. We brothers seized the tiger by its thighs, tore it apart, and flung the halves aside. Then Salhes emerged from the dead cow's bones in the form of Photara the jackal, joined the body, and rose again. And who is Acharya Sharabha? A jackal.

ACHARYA SIMHA: Find a way — all of you — to stop that jackal from hurling fire, to stop the fire it should not be able to throw. The King of Mithila had the Narwar pond dug by Hansraj and Vanshraj of Magadha, but they could not raise the great jait. We two brothers hurled it from the southern gathering, and it fell straight into the trench prepared for it. Even now that jait leans toward the south. And who is Acharya Sharabha? A jackal — a jackal that hurls fire.

ACHARYA SIMHA: Find the means, all of you: how will that jackal hurl its ball of fire, and how will this land survive? How will this country be saved from oblivion?

UDAYANA: (Growing thoughtful.) Oblivion! In interpreting a mantra, Maharshi Patanjali's scientific statement, "Yacchabda aha tadasmakam pramanam" — "What the word or the words of the mantra state is our evidence" — was later distorted in the Bhavishya Purana, under my name, into "The Veda alone is authority." Why, I do not know. How can one person remember what another person saw? Oblivion... Acharya Sharabha's fire of forgetting is spreading. Now I understand.

ACHARYA VYAGHRA: Memory itself is being destroyed. Memory is being turned into oblivion.

DINA AND BHADARI: (Together.) Dhaman ordered us to work in his field. We beat him, seized him, and threw him before Dhamin. Enraged, Dhamin summoned her friend Photara the jackal. Photara killed us. Yet after death we received living life through this Ulkamukh. Udayana, your learning has no authority here — and yet we live, even after dying.

UDAYANA: I understand. Now I understand. We must create folk ballads; we must awaken the narashamsi tradition. To recite my books and Gangesha's without understanding them is another form of forgetting.

VARDHAMANA: (Roaring.) Gangesha — sukavi-kairava-kananenduh, the moon above the water-lily grove of fine poets — will become Ulkamukh.

ACHARYA VYAGHRA: Just as we have become a tiger and a lion, Acharya Simha.

ACHARYA SIMHA: And we have turned the teachers of the chaupadi into Acharya Sharabha, and its students into Khikhir

and Sahi. Will everything be destroyed? Total annihilation?

DINA: But Hiria, the betel-seller of Dauri, performed penance to win a husband.

BHADARI: And Jiria, the blacksmith-woman of Dauri, performed penance to win a husband.

DINA AND BHADARI: (Together.) Even after we died, we entered the Ganga and made the two women our wives. Even after death.

Acharya Vyaghra... Acharya Simha... Udayana... Vardhamana... alive even in death. What is forgotten

will return.

UDAYANA: Gangesha defended my arguments from Shriharsha's assault and created Navya-Nyaya: a new discipline,

a new logic. He himself was strange enough — born five years after his father's death, and married to a leatherworker woman.

From that marriage came Vardhamana, who reunited Nyaya and Navya-Nyaya.

DINA AND BHADARI: (Together.) Satyakama's condition was the same. He did not know who his father was:

Satyakama, son of Jabala. But he found a teacher like Gautama — Gautama of Mithila — and studied

the Veda. Even after death, Udayana, the old and the new meet and contend. Brahmin Banshidhar

and Balaram were reconciled; the folk goddess Gahil and the Puranic goddess Durga were reconciled.

UDAYANA: (Astonished.) Even after death, Dina and Bhadari?

DINA AND BHADARI: (Together.) Yes, Udayana. Our friend became Photara the jackal; Salhes joined us — after death.

(Darkness spreads, but voices are heard: ACHARYA SHARABHA speaking with DISCIPLE SAHI and

DISCIPLE KHIKHIR.)

ACHARYA SHARABHA: Disciple Nadhia! Disciple Bijji! Strike them — strike Khikhir and Sahi! They are damaging learning, both of them.

(Sounds of beating; cries of pain from KHIKHIR and SAHI.)

ACHARYA SHARABHA: Khikhir and Sahi seem to be dead. Disciple Nadhia, Disciple Bijji — now begin

the lesson. There will be no further difficulty.

DISCIPLE NADHIA: I have memorised it all, Acharya Sharabha. You have memorised it too, Bijji?

DISCIPLE BIJJI: I too have memorised everything, Nadhia. Yes, Acharya, I have memorised it all.

ACHARYA SHARABHA: Good. You may both go.

(The stage lights rise. Only ACHARYA SHARABHA is visible.)

ACHARYA SHARABHA: Good. Everything is in order now. I am the one who hurls the flaming tail — I, Acharya Sharabha. Let

them turn him into Ulkamukh; I too can hurl fire. After me, my two disciples will become acharyas.

My two disciples will become Acharya Nadhia and Acharya Bijji. Until now, at least one true acharya

always survived. From now on, rote learning will survive and questions will die.

(A song begins over the microphone. ACHARYA SHARABHA looks around.)

Set aside a vessel with tulsi leaves and water, O fisherwoman;

Bring me the water-god as a ritual offering.

Set aside a vessel with tulsi leaves and water, O fisherwoman;

Bring me an offering like Gauradhya.

Set aside a vessel with tulsi leaves and water, O fisherwoman;

Bring me a god like Gahil as an offering...

...

ACHARYA SHARABHA: (Looking everywhere.) Who is there? Who is there? (Pacing in agitation.) Who is there?

I killed my beloved disciples Khikhir and Bijji... but who are these people trying to stop oblivion?

Through signs they seek to spread what ought to be completely forgotten. (He wanders wildly about. The voice returns.)

Shoo! Shoo! Shame, shame!
Flames pour from Sharabha's mouth —
Why does nothing burn?
Shoo! Shoo! Shame, shame!
...

(The same song returns as a lament. SHARABHA starts. The voice begins to weep; ACHARYA SHARABHA begins to laugh

and goes on laughing. Darkness fills the stage. When the lights rise, UDAYANA, DINA, BHADARI, and VARDHAMANA are visible on the main stage.)

UDAYANA: (Addressing the audience.) The custom of restoring old names has returned. I am Udayana. This is Dina, that is Bhadari, and there is Vardhamana. I have heard that names exert power. A name is the first lamp of memory; when the lamp goes out, the house remains, but darkness fills it. And so...

VARDHAMANA: (Addressing UDAYANA from behind.) Who can live in peace beside a current and in a house full of snakes, Udayana? Mithila has become such a place.

UDAYANA: (Turning toward the others.) We must go at once to Bhatdhala Pond and Sagdhala Pond. At once.

DINA: (To UDAYANA.) Where Bhima used to set down his rice and greens?

UDAYANA: Yes — and to Simalvan as well.

BHADARI: (To UDAYANA.) Semapur, where Arjuna hid his weapons during the year of concealment?

UDAYANA: Yes. Another war has begun — a war of the mind. Narashamsi will begin within the mind.

VARDHAMANA: (Extending his hands.)

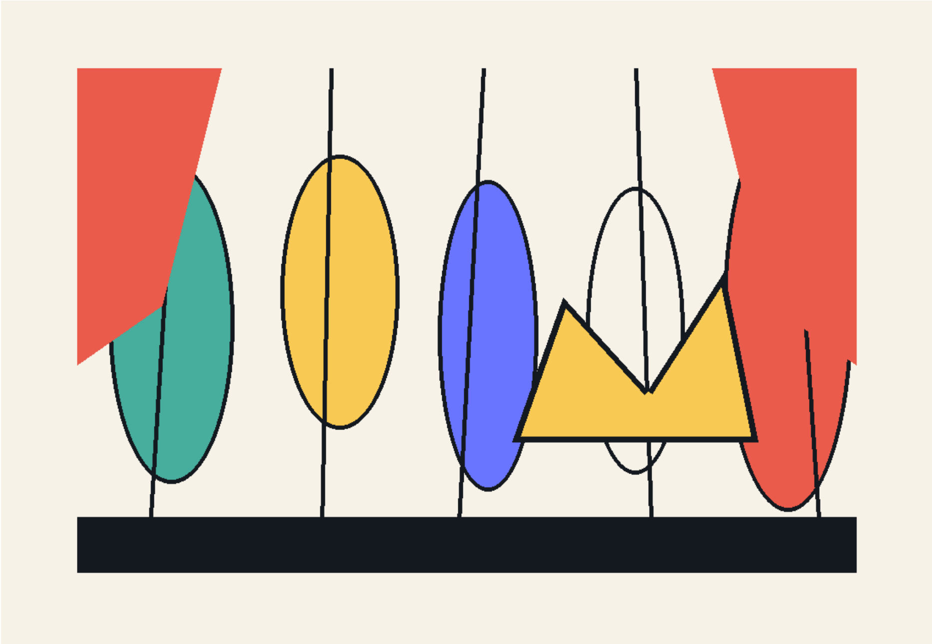

FIGURE 6

In the trench of hatred,
love and a smile will conquer hatred and envy.
Let them dig the trench of hatred;
in that very trench we shall bury hatred
with the power of our love.
UDAYANA: Smiling, laughing, we shall make our appeal:
"You spent such labour digging the trench of hatred —
now dig a pond of love,
one that the monsoon will fill with the water of love
and that will remain full, because you have dug it deep.
Love will swim there,
and go on swimming,
while hatred and envy are swept away and drowned.
The water-diver will seize them and carry them off."

DINA:

As long as I remain,
no one will touch the child of love and truth,
for the child of truth is filled with strength and energy.
Around him will stand a rampart raised with the mortar of embodied love.
Do not be afraid.

BHADARI:

And when I am no longer here,
you will have learned everything.
Separation from me will make you strong, swift, and unyielding
against the enemies of truth.
Any attempt to break that rampart

will be thwarted by your friends, the lovers of embodied truth.

UDAYANA:

Whether I remain or do not remain,
the journey will not stop;
madness will not grow.
If you would kill me, then kill me,
but remember:
many other things will die with me,
and yet the seekers of embodied love will endure.

DINA:

And they will perform the first dance through the movement of the hands:
the Chatura hand gesture,
the heart filled with joy,
for truth, falsehood, and the judgement between them.

BHADARI:

Taking the daf-khajuri drum covered with monitor-lizard hide,
they will draw sound from the trembling cord:
gumki — the voice of that khajuri,
and gumki, gum... gum... gumki...
Then the second dance will begin.

DINA:

The Shikhara hand gesture,
like the summit of a mountain,
to summon and display the call to battle.
Let them dig the trench of hatred;
if they would kill us, let them kill us.
But remember:
many other things will die with us.

UDAYANA:

Yet separation from me will make them strong, swift, and unyielding —
the Raktabija-like children of truth.
DINA AND BHADARI: (Together.)
Burhiya Dahi is with us —
fields filled with lotus stalks, leaves, seeds, and roots.
She is not an old woman;
the field that was once so lush
has become the lotus lake of love.
This Burhiya Dahi of ours stands against hatred.

(VALLABHA'S voice is heard. Everyone starts and looks about.)

DINA AND BHADARI:

Burhiya Dahi... Vallabha! Vallabha! See its power, Udayana — look!

VALLABHA'S VOICE:

Cut out the name, cut out the song, cut the body — but where will you cut the sound of love?
Again, the same argument:
in self-defence,
in opposition to truth...
the thief speaks again.
Can the joy of creation be found in theft —
in putting your own name upon another's work,
or claiming another person's labour as your own;
in crushing another person's talent,
in plotting and scheming,
then drinking bhang and rolling beneath the rubbish heap?
Whose fingers will you cut off to stop the act of writing?
Break the spine, cut off the legs,
gouge out the eyes, lay the body beneath the roller,
and carry away the pulp.
So the great ones have come to taste the joy of creation!

(GANGESHA'S voice is heard. Everyone starts and looks about.)

GANGESHA'S VOICE:

A book that fears questions is not a book; it is a prison.
Should we then accept defeat?
Should we abandon the struggle?
Will desire triumph, or envy?
My resolve is to turn the course of this current.
Will resolve prevail, or hatred?
Yet envy and hatred are coming straight toward me:
envy, determined that I shall fail to turn the current;
hatred, determined that it shall continue to flow as before —
or grow more terrible than before.

DINA AND BHADARI:

Gangesha! See its power, Udayana — look!

VALLABHA'S VOICE:

The resolve I have made,
the desire within me — let it be defeated;
let envy and malice triumph, let hatred triumph.
Ah, but let me lose in such a way that the people see — that the age itself sees!
Let my resolve, my desire, be defeated in such a way

GANGESHA'S VOICE:

that I stand before the current to halt it,

resolved to turn that savage, unruly flood;
yet still more envy comes straight toward me,
and malice wishes my effort — my effort to turn the current —

VALLABHA'S VOICE:

to make the current even more violent after I have tried to turn it,
to make it follow its old channel with still greater tyranny,
and to make me lose.
Let me lose in such a way that people remember;
let them remember that someone once dared to stand before the current,
and that this terrible fate was the result,
so that fear keeps them from ever daring again —
from daring to stand before a lawless, tyrannical flood.
Let my fall become a cautionary tale, and let the hearing of it send a tremor through every heart.
I am Burhiya Dahi, standing against hatred.
(The voices fall silent. Once again, everyone is filled with yearning.)

UDAYANA:

Yet I laugh.
I may be defeated, but the blood-seeds shed by my discipline
will become seeds in every drop, sprouting a thousandfold.
This Burhiya Dahi of ours stands against hatred.

DINA:

A field will arise, filled with lotus stalks, leaves, seeds, and roots —
the field that was once so lush, where we had dug the trench of hatred.
In that field, where the trench of hatred was dug,
lotus stalks, leaves, seeds, and roots will fill the earth.

BHADARI:

And the lotus of love has blossomed.
The thousand-braided Burhiya Dahi has done this.

VARDHAMANA:

And then,
the judgement will be made,
when
people turn,
and words turn with them;
from moment to moment they change,
lips twist,
the sweet voice of speech,
the spoken word,
changes
and becomes poisonous.
With a cow-dung wash we shall cleanse memory until it shines.
Even then, this Burhiya Dahi of ours stood against hatred.

UDAYANA:

Those who have caught the fever of stopping the current
will beat out the rhythm against it
and rise to their feet.
Malice will grow afraid, remembering
that each of these thousandfold lives, born from blood-seeds, bears blood-seeds of its own;
under attack, the descendants of their seeds will multiply again,
for they are resolve, they are desire —
those who have caught the fever of stopping the current.
ALL: (Together.)
What you call Burhiya Dahi stands against hatred.
What you call Burhiya Dahi stands against hatred.
What you call Burhiya Dahi stands against hatred.
What you call Burhiya Dahi stands against hatred.

(It seems as though they are being blown away. A fierce wind rises. With their hands and bodies, they mime bracing themselves against the gale, yet being swept through the storm. Slowly, darkness spreads.)

ACT IV

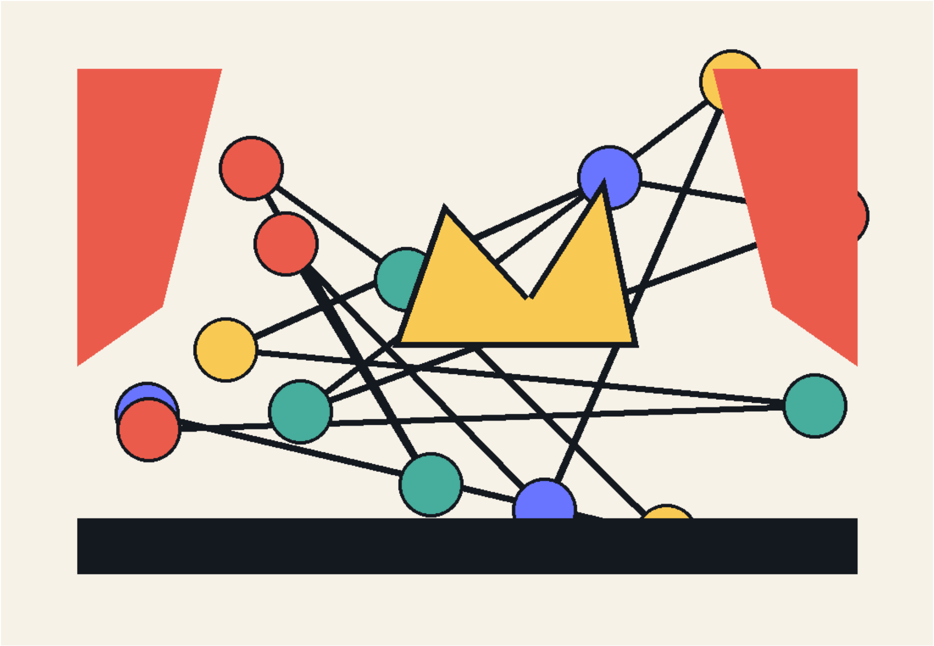

FIGURE 7

(The stage is dark. A song comes from offstage.)

Mother Kamala dwells very far away;
the marigolds begin to release their scent.
From which branch shall I gather bela and jasmine?
From which branch shall I gather hibiscus?
The marigolds begin to release their scent, Mother Kamala...
To whom shall I offer bela and jasmine?
To whom shall I offer hibiscus?
The marigolds begin to release their scent,
the marigolds begin to release their scent.
To Kamala I shall offer bela and jasmine,
to Koyala I shall offer hibiscus;
the marigolds begin to release their scent — hey.
Kamala... from whom shall I ask for grain, wealth, and gold?
From whom shall I ask for the blessing of marriage — marriage, O marriage?
O fisherwoman, the flowers look richly red.
From Sasiya I shall ask for grain, wealth, and gold;
from Matair I shall ask for the blessing of marriage.
O fisherwoman, the flowers look richly red...

(The stage lights rise. DINA stands on one mattavarani and BHADARI on the other. DINA is beside Bhatdhala Pond; BHADARI is beside Sagdhala Pond. UDAYANA stands on one upper stage area and VARDHAMANA on the other. The central acting area is empty.)

VARDHAMANA: (To UDAYANA.) I have built my house beside the current, while you live in a house full of snakes, Acharya Udayana?

UDAYANA: Where is peace for one who lives beside a current, or in a house full of snakes? Vardhamana, Dina and Bhadari are at Bhatdhala Pond and Sagdhala Pond, are they not?

DINA: (Calling out.) Bhatdhala Pond, where Bhima used to set down his rice! I am Dina — here, at Bhatdhala Pond.

BHADARI: (Calling out.) Sagdhala Pond, where Bhima used to set down his greens! I am Bhadari — here,

beside Sagdhala Pond.

UDAYANA: Yes. Someone must also go to Simalvan. Acharya Sharabha has occupied it.

BHADARI: Yes — that Simalvan at Semapur where Arjuna hid his weapons
during the year of concealment?

UDAYANA: Yes. Another war has begun.

VARDHAMANA: But this war cannot be won by philosophical disputation, Acharya Udayana. (Pointing toward the central acting area.)
Look there. Everything appears empty, yet hidden there are weapons: hatred,
envy, malice, and...

UDAYANA: (Interrupting.) And Acharya Sharabha. (Pointing to the far end of the acting area.) There —
that is Thakurganj, where Bhima passed his time disguised as the cook Vallabha, and where he killed Kichaka.

BHADARI: (Raising a hand.) Now hatred will be killed.

DINA: (Raising a hand.) Certainly, Bhadari.

BHADARI: Agadam bagadam — timber and thorn!

DINA: Afraid of a crow by day, yet at night he swims the river.

BHADARI: (Pointing toward the acting area.) There at Manihari, the jewel from Shri Krishna's ring was lost.

UDAYANA: (Raising his face and hands, calling aloud.) Acharya Vyaghra! Acharya Simha! The answer to Acharya Sharabha,
who turned you into paper tigers and lions, has now been found. The lost jewel — spread this sign, Ulkamukh,
everywhere, from place to place. Whoever finds it, even after forgetting,
will remember again.

(A song comes from offstage. Everyone becomes still.)

I shall draw out a golden thread and weave a swinging net;
through the net, again and again, Kamala arrives.
The bridal chamber rings and shimmers;
where has the bewitching servant gone?
The bridal chamber feels empty — hey!
I shall draw out...
Through the net, again and again, Gango arrives;
the bridal chamber rings and shimmers.
Where has the bewitching servant gone?
The bridal chamber feels empty;
the bridal chamber feels empty.
I shall draw out...
Through the net, again and again, Matair arrives;
the bridal chamber rings and shimmers.
Where has the bewitching servant gone?
The bridal chamber feels empty.
I shall draw out...
and weave a swinging net.

(Darkness spreads. When the light returns, ACHARYA SHARABHA enters the main stage in a deranged state.)

ACHARYA SHARABHA: (Pointing offstage, toward the forest behind.) Why has this bamboo grove grown so thin?
No voice ever came through it, but now, for the first time, this song has pierced it
and is coming through. How can it stop Ulkamukh? How can it? (He pauses and looks behind him.)
Disciples... (Another pause.) But these disciples are good for nothing. How can they
stop Ulkamukh? They are merely custodians of rote learning. I banned women from the chaupadi

and the tol long ago — yet it is the women who are singing. These disciples will neither understand nor think about Ulkamukh; how can they stop it?

(ACHARYA VYAGHRA and ACHARYA SIMHA enter.)

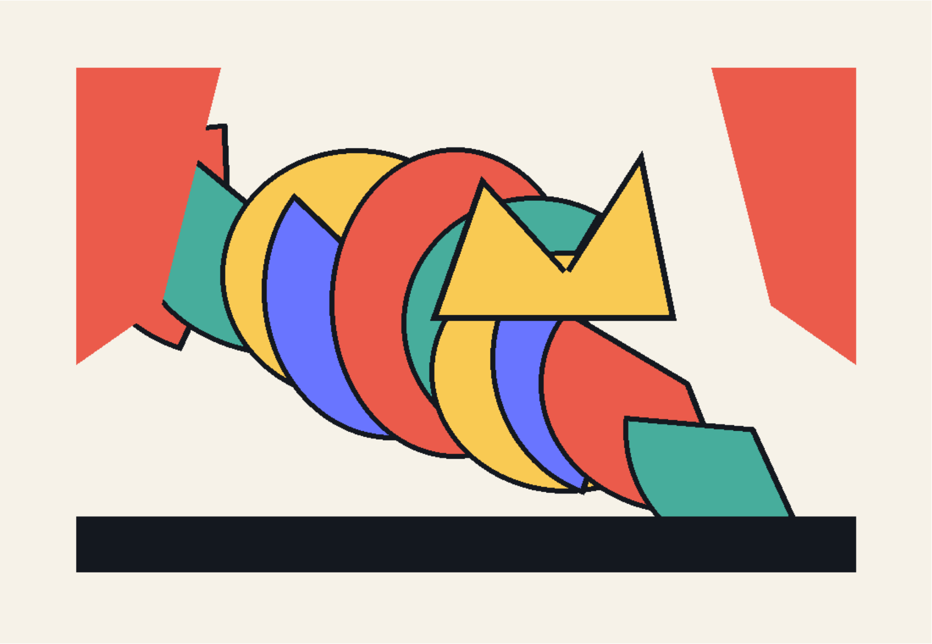

FIGURE 8

ACHARYA VYAGHRA: (To ACHARYA SHARABHA.) Enough of invention, Acharya Sharabha. We are tired.

ACHARYA SIMHA: (To ACHARYA SHARABHA.) Acharya Sharabha, invention is over. The magic is over. Now that the bamboo barrier has fallen, neither I, nor Acharya Vyaghra, nor you, nor Gangesha, nor Vallabha, nor Vardhamana, nor Udayana, nor Dina, nor Bhadari retains an existence of the old kind.

ACHARYA VYAGHRA: This bamboo grove has become the forest of Vrindavan. (Pointing toward the path.) Even Sister Bato, the path

that leads here, has begun to help Vallabha. A wick set in mustard oil inside a turtle shell was made into a wedding lamp for Vallabha. Bidh and Bidhata have arrived in the form of doves.

(A rushing sound comes from offstage. ACHARYA VYAGHRA cups an ear to listen.) Hear that sound. The days of wandering in a dream-world are over.

ACHARYA SIMHA: (Pointing upward.) See that pair of parrots with green wings and red beaks — see the entwined parrots. (Pointing elsewhere in the sky.) See that pair of peacocks, companions of love. They have set out for this Vrindavan.

ACHARYA SHARABHA: (To ACHARYA SIMHA.) The severed head of Chhinnamasta drinks the thick central stream that falls from the headless trunk — the thick stream of blood. I have become that fallen head, Acharya Simha. I will not be defeated. Oblivion will prevail. Oblivion has already prevailed.

ACHARYA VYAGHRA: (To ACHARYA SHARABHA.) And two yoginis standing on either side drink the other two streams, Acharya Sharabha. Dina and Bhadari have enchanted those yoginis, just as they once enchanted Jiria the blacksmith-woman and Hiria the betel-seller.

ACHARYA SIMHA: (To ACHARYA SHARABHA.) Desire is a machine. The truth of truth itself, and the truth of history, are merely virtual appearances.

ACHARYA VYAGHRA: (To ACHARYA SHARABHA.) This bamboo grove had erased the distinction between truth and appearance.

ACHARYA SIMHA: (To ACHARYA SHARABHA.) The unconscious has become consciousness. Its language is Ulkamukh.

ACHARYA VYAGHRA: (To ACHARYA SHARABHA.) Acharya Sharabha, your method of education deprived certain feelings and thoughts of any place.

ACHARYA SIMHA: (To ACHARYA SHARABHA.) Ulkamukh opposes that imposed continuity.

ACHARYA SHARABHA: (Stepping between ACHARYA VYAGHRA and ACHARYA SIMHA and facing front.) The word nearest equality is inequality; the word nearest justice is injustice; and the word nearest deprivation is attainment.

ACHARYA VYAGHRA: (Advancing toward ACHARYA SHARABHA.) No, Acharya. That is your repressive method of education, and Ulkamukh opposes it.

ACHARYA SHARABHA: (Between them, facing front.) You wish to drag those in high places down, and raise those below them.

ACHARYA SIMHA: (Advancing toward ACHARYA SHARABHA.) High and low are themselves products of your educational system, and Ulkamukh opposes them.

ACHARYA SHARABHA: (Looking toward ACHARYA SIMHA.) You wish to erase the solo instrument and replace it with the noise of the crowd.

ACHARYA SIMHA: (Advancing toward ACHARYA SHARABHA.) Upon the narashamsi composed from the people's ballad... the people will dance, and the gandharvas will dance with them. Ulkamukh is the resonance of a united chorus.

ACHARYA SHARABHA: (Making a grotesque gesture.) But the creator is dead. Who will believe who wrote this Ulkamukh?

ACHARYA VYAGHRA: (Advancing toward ACHARYA SHARABHA.) The creation is more important than its creator — its message. That creation and that message are Ulkamukh.

ACHARYA SIMHA: (Advancing toward ACHARYA SHARABHA.) At night the thief was king; by day he called others "Master, Master." A thief no longer has any single appearance — now everyone has begun to steal. In earlier days, thieves trained beside the field embankment. They demonstrated how to cut a breach by cutting into the bank itself. At daybreak, when people went to the fields, they saw the opening — the whole village was in an uproar: "Stay alert! They are planning a great theft." Yet by day the same people looked entirely ordinary.

ACHARYA VYAGHRA: (Advancing toward ACHARYA SHARABHA.) For two days I have survived on scraps. Tonight I must steal — for the children. Oil the body; smear ash upon the face.
If anyone tries to catch me, I shall slip away. If someone recognises the thief at night, he must keep silent; he must not reveal the name, or the thief will kill him. By day, after all, the thief may be his master. That is what the king of the night fears.
ACHARYA SHARABHA: (Stepping between the two and facing front.) What story are you telling... that... that... what did you call it... Ulkamukh?
ACHARYA SIMHA: (Advancing toward ACHARYA SHARABHA.) When I twisted my mouth, people thought I was pleased; when I tightened my brow, they thought me contemplative. But the heart kept weeping. I know that, Acharya Sharabha.
ACHARYA SIMHA: (A ray of light continues to flash in the sky beyond.) Look — Vandevi has also entered this Vrindavan, and with her comes her companion Vanasapto, the tender, winged cow. Vanasapto has come to show Ulkamukh, lost in the forest, the way home.

(The three mime being swept through the air. The rushing sound from offstage grows steadily louder.)

ALL THREE: Imagination is losing its footing... Ulkamukh is coming.
Agadam bagadam, timber and thorn!
Agadam bagadam, timber and thorn!
Agadam bagadam, timber and thorn!
Ulkamukh has arrived!

(The three, still seeming to fly, mime falling. Total darkness.)

(When light returns, spherical forms have replaced the cubes. The corners have vanished; now there is a circle, turning memory until it faces us again.)

BHAGAT: This Earth is turning. (With effort, he lifts the sphere in his hands.) It hangs in the sky. Nothing supports it from below. It is so heavy, yet within the sky it has no weight.
Agadam bagadam, timber and thorn!

(He sets the sphere down and shuffles backward toward the south. His DISCIPLE enters and begins to turn it.)

BHAGAT: Look. Seen from the north, the Earth turns against the hands of a clock. Seen from the south, it appears to turn with them. We who stand upon the Earth have weight, while the Earth itself hangs weightless in the sky. (The DISCIPLE lifts the sphere and demonstrates.)

Agadam bagadam, timber and thorn!

(BHAGAT begins coughing violently. Beneath him he finds an Ulkamukhi amulet bearing an image of Sharabha. He cries out, "What is this? What is this? An Ulkamukhi amulet! I knew this would happen!" He opens it. Fine strands inscribed with letters, like fragments of palm leaf, spill out. Overcome with joy, he nearly faints. The DISCIPLE sets down the sphere and begins massaging BHAGAT'S chest.)

BHAGAT'S DISCIPLE: (Ceasing the massage and rising.) Guruji came from the south after hearing the story of Basaveshwar. He says the same thing will happen in Mithila: after a thousand years, an ancient event will occur again. (Smiling.) My guru is an accomplished master; he says the strangest things. But today the amulet itself spoke. What the guru forgot, the object remembered.

(BHAGAT regains consciousness and coughs even harder. The DISCIPLE massages his chest. Darkness fills the stage.)

ACT V

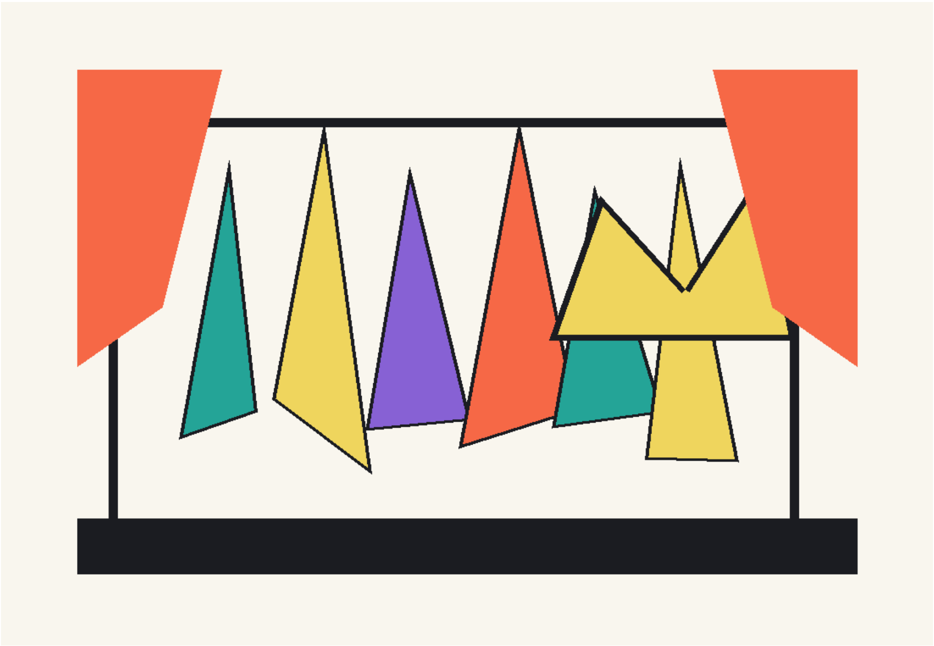

FIGURE 9

From Acts I through IV, chessboard-patterned cubes stood onstage. From Act V onward, the cubes — signs of ghosts and imagination — are replaced by spheres, signs of reality.

[*SOHAGO (Gangadhar's mother); Disciple Sahi becomes HARPATI (Gangadhar's father); Gangesha becomes* GANGADHAR; Vallabha becomes KUMARSUTA (Gangadhar's wife); Bhagat becomes JATA; Bhagat's Disciple becomes HIRU, a Dalit singer; Acharya Vyaghra becomes MANSUKH (Jive's father); Acharya Simha becomes HARIKAR, the Commander (Medha's father); Acharya Sharabha becomes KIRTI SINGH (the King); Vardhamana becomes MITU (Gangadhar's brother-in-law); Devadatta becomes JIVE (Mansukh's son); Disciple Khikhir becomes NARAYAN, the King's Finance Minister; Disciple Nadhia becomes COURTIER 1; Disciple Bijji becomes COURTIER 2; Udayana becomes MADHAV *(a member of the Experience Council and a courtier); Dina becomes MADHAV'S ASSOCIATE 1; Bhadari becomes MADHAV'S ASSOCIATE 2. Imagination has now descended into the body: what was once a story is now a danger within the royal court.*]

(A song is heard from offstage.)

In the first month, Agahan, Devaki's body grew warm —
O girl...
Mung dal no longer pleased her — how hot Devaki felt!
O girl...
In the second month, Poush, Devaki's body grew warm —
O girl...
Even the fish of Poush no longer pleased her — how hot Devaki felt!
O girl...
In the third month, Magh, Devaki's body grew warm —
O girl...
Thick rice pudding no longer pleased her — how hot Devaki felt!
O girl...
In the fourth month, Phagun, Devaki's body grew warm —
O girl...
The sweet pua of Holi no longer pleased her — how hot Devaki felt!
O girl...

In the fifth month, Chait, Devaki's body grew warm;
the fish of Chait no longer pleased her — how hot Devaki felt!
In the sixth month, Baisakh, Devaki's body grew warm —
O girl...
Green mangoes no longer pleased her — how hot Devaki felt!
In the seventh month, Jeth, Devaki's body grew warm —
O girl...
Even her loosened hair did not please her — how hot Devaki felt!
In the eighth month, Asadh, Devaki's body grew warm —
O girl...
Ripe mangoes no longer pleased her — how hot Devaki felt!
In the ninth month, Sawan, Devaki's body grew warm —
O girl...
Her husband's bed no longer pleased her — how hot Devaki felt!
In the tenth month, Bhadon, Devaki's body grew warm —
O girl...
Devaki writhed in labour; call the midwife!
When Yadunandan was born, the chains sprang open —
O girl...
the iron gates flew open and all the guards slept.

(As the song ends, HARPATI and SOHAGO enter, carrying a baby.)

HARPATI: (To SOHAGO.) Sohago, by Mother Ganga's grace we have lived to see this day; let us name him Gangadhar.

SOHAGO: Of course. (She fondles and rocks the baby.)

(Sage JATA enters to the chant "Agadam bagadam, timber and thorn," accompanied by his disciple, HIRU, a Dalit singer.)

SAGE JATA: Agadam bagadam, timber and thorn! Marvellous, marvellous, marvellous! This child is extraordinary!

DISCIPLE HIRU: (Overcome, he takes the baby in his arms and begins to sing.)
In which month did the clouds begin to thunder?
In which month did the frogs begin to call?
O girl, in which month was the little boy born,
piercing the co-wife's heart?
In Sawan the clouds began to thunder;
in Bhadon the frogs began to call.
In Asin the little boy was born,
piercing the co-wife's heart.
Which oil shall we give the mother-in-law?
And what shall we give the husband's sister?
O girl, bitter oil we shall give the mother-in-law,
and teasing words to the husband's sister.
O girl, amla we shall give the co-wife;
let it remain a debt upon her.

SAGE JATA: (Placing around GANGADHAR'S neck an amulet engraved with Sharabha.) This child is extraordinary — extraordinary. He is no ordinary child, and so this is no ordinary gift. But remember: the amulet does not give power; it only reminds him that the power is already within.

DISCIPLE HIRU: The jackal hurling its flaming tail... Sage Jata...

SAGE JATA: Ulkamukh...

(The four look at one another.)

DISCIPLE HIRU: (Astonished.) Ulkamukh? You remembered the name, Sage Jata!

SAGE JATA: (Astonished.) Ulkamukh?

DISCIPLE HIRU: (Astonished.) Yes. You just said it: Ulkamukh.

SAGE JATA: (Astonished.) I said it?

HARPATI: Yes. You said "Ulkamukh," Sage Jata.

SAGE JATA: (Astonished.) Truly? I said it?

SOHAGO: Yes, Sage Jata, you did. Is it an evil omen?

SAGE JATA: (Looking upward.) No, no evil omen. I had forgotten. This was given to my teacher's teacher's teacher's teacher by a still earlier master. I had forgotten the name of this amulet. Today, without warning, I remembered it. What have you named this divine child?

HARPATI: Gangadhar, Sage Jata.

SAGE JATA: (Looking at SOHAGO and HARPATI.) The amulet has passed to his neck. My teacher received it from his teacher, and that teacher from his teacher, and so on. I had forgotten its name: Ulkamukh. Yes, that is what my teacher told me, and what his teacher told him... Divine — divine! This child is divine.

HARPATI: (To SAGE JATA.) Sage Jata, what divine quality do you see in this child?

SOHAGO: (Steadying the baby, looking at SAGE JATA.) Sage Jata, he will not become some wandering ascetic, will he?

SAGE JATA: I do not know. But I feel that something will happen. In this desert, amid the sand, something may be born — yet it may fail to sprout.

HARPATI: Why, Sage Jata?

DISCIPLE HIRU: Because this amulet has lain in many places — beside old ponds and in forests. Sage Jata has placed it on many people; his teacher placed it on many, and his teacher's teacher, and the teacher before him. Yet nothing happened.

SOHAGO: (To HIRU.) What did not happen, Hiru?

DISCIPLE HIRU: Nothing was born from the sand of the desert.

(SAGE JATA begins coughing violently. DISCIPLE HIRU massages his chest. Darkness fills the stage.)

(The stage lights rise. The child GANGADHAR has grown. He has come to HIRU'S quarter. HIRU sits on the ground, stitching a piece of hide spread before him. A hide-stretcher stands beside him. GANGADHAR stops nearby.)

DISCIPLE HIRU: Come, Gangadhar, come.

GANGADHAR: Hiru, what are you doing?

DISCIPLE HIRU: So many carcasses have piled up. (He draws a deep breath.) This is a calf's hide; it died young.

GANGADHAR: (Sitting on the hide-stretcher.) What will you make from it?

DISCIPLE HIRU: Look — I am trying to make a mandar drum, if there is enough. There is very little hide. (To GANGADHAR.) Sit properly, or you will roll off.

(GANGADHAR immediately rolls off the frame. HIRU and GANGADHAR both burst into laughter.)

HIRU: I warned you. This frame can bear the weight of great dead animals, yet it could not bear the weight of a little boy like you.

GANGADHAR: Why is that, Hiru?

DISCIPLE HIRU: Because it also matters how a thing is placed. It is not enough simply to say, "This frame has the strength to bear so much weight." That old Sage Jata keeps muttering things like that — that one should understand before one speaks.

GANGADHAR: What else does Sage Jata say?
DISCIPLE HIRU: Many things. He says that we feel the weight of a mango, but the mango tree does not feel the weight of the mangoes growing upon it.
GANGADHAR: What else does he say?
DISCIPLE HIRU: He says the sky divides this world into two parts.
GANGADHAR: Two parts? The sky divides it in two? But the sky itself keeps receding before us. Where, then, does the other part begin?
DISCIPLE HIRU: The sky is glass. Through this side, we look to the other.
GANGADHAR: (Astonished.) Truly? What else does he say?
DISCIPLE HIRU: He says words are pearls; words are the light of rubies. But if words remain merely words, and speech and action drift apart, what use are those pearls? What use is that ruby light? A word that never reaches the poor man's mouth becomes an ornament in the royal court.
GANGADHAR: Then, Hiru, it becomes theft.
DISCIPLE HIRU: Yes.
GANGADHAR: Then, Hiru, it becomes the murder of words.
DISCIPLE HIRU: Yes.
GANGADHAR: Then, Hiru, it becomes a lie.
DISCIPLE HIRU: Yes.
GANGADHAR: Then, Hiru, it becomes hatred of truth.
DISCIPLE HIRU: Yes.
GANGADHAR: Then, Hiru, it becomes an arrogant word.
DISCIPLE HIRU: Yes.
GANGADHAR: Then it becomes an un-word. It becomes blaming another person — blaming that person because we ourselves failed to understand the meaning of our own words.

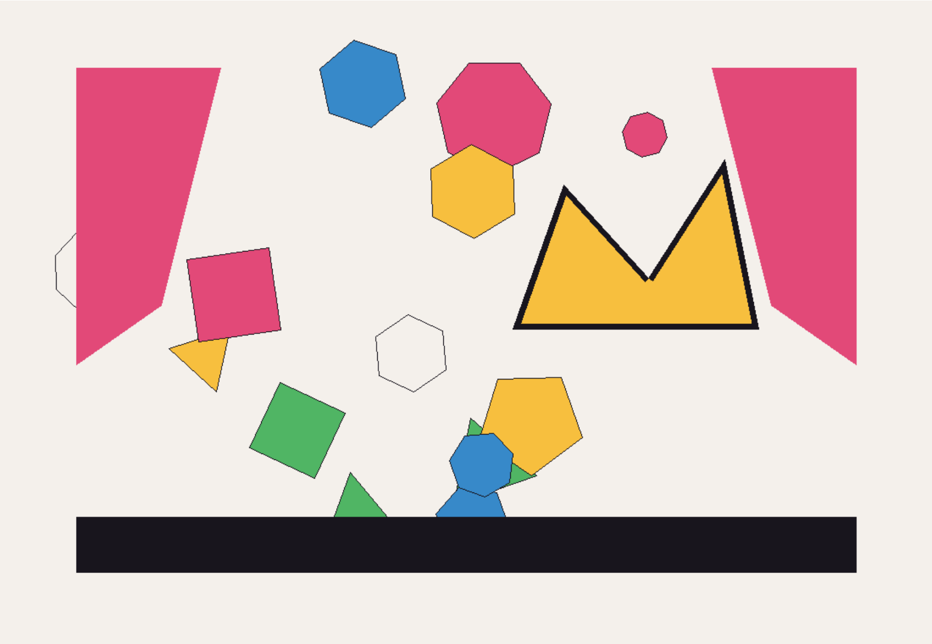

FIGURE 10

DISCIPLE HIRU: Yes. (They rise. HIRU assumes a pose from the Tandava dance and, overwhelmed, begins to sing.)

At Mother's doorway stands a hibiscus tree;
Mother, its branches bend beneath fruit and flower.
From the south-west a parrot comes;
Mother, it settles upon the hibiscus tree.

GANGADHAR: (He assumes a Tandava pose and, overcome, begins to sing.)

Some smear the courtyard in front, some the courtyard behind;
I, unfortunate, stand holding the doorway.
Some gather bela flowers, some hibiscus;
I, unfortunate, dig up the sacred dub grass.
Some ask for grain and wealth, some for a son;
I, unfortunate, stand with folded hands.

(Changing his voice, GANGADHAR stands facing HIRU.)

In Sawan, Vishahari makes her entrance;
in Bhadon, Vishahari plays jhilahori.
In Asin, Vishahari takes betel from the devotee;
in Kartik, tears stream from Vishahari's eyes.
In Agahan, Vishahari will become priceless.

DISCIPLE HIRU AND GANGADHAR: (They come face to face and sing together.)

The parrot eats neither fruit nor flower;
Mother, from leaf to leaf it plays at autumn.
Where has Dihwar Thakur gone? What has happened?
Mother, soothe and call your parrot home.
...

(Changing their voices, they stand apart from one another.)

High on the terrace sits Mother Vishahari;
Ram, low on the terrace sits the goldsmith's mother.
I shall give you, goldsmith brother, a basket full of gold;

Ram, fashion fifty ritual pitchers for Vishahari.
Traveller on the road, are you my brother?
Ram, I shall ask you to carry Vishahari's pitchers.
But I do not even know how to recognise your Vishahari;
Ram, how shall I know which pitchers to take?

(Darkness spreads.)

ACT VI

(The stage lights rise. GANGADHAR is now eight years old. He is arguing with his parents; the dispute is evidently serious.)

HARPATI: Has such a thing ever happened — refusing the sacred-thread ceremony? Have I ever stopped you? Though born a Brahmin's child, you went to Hiru's quarter to hear and learn songs. Did I ever forbid you?

GANGADHAR: (Showing his Ulkamukh amulet.) I have already taken this upon myself, Father — this Ulkamukhi amulet given by Sage Jata. Look. (He holds it up.) Why should one who wears Ulkamukh require any further rite of initiation?

(HARPATI grows angry and paces back and forth.)

SOHAGO: (To GANGADHAR.) Do not speak like that, Gangadhar. Such a thing has never happened. What will people say? What will the pandits say? Give up this stubbornness. You are no longer a baby; you are eight years old.

HARPATI: (To SOHAGO.) Look. Were you not the one who said that as he grew older, his stubbornness would lessen? Instead, I see it increasing day by day. His schoolmaster also says that when he gives a lesson to memorise, all the children learn it, but this boy finds a hundred faults in it.

GANGADHAR: Father, I do not like the rote learning taught at school. When I ask questions, the teacher does not explain. He says, "Memorise it exactly so," because his own teacher made him memorise it in exactly the same way. I think none of them fully understands the subject. How can it be a crime to ask why a frog jumps into water?

HARPATI: (Moving downstage.) There! Now what new argument is this? (To SOHAGO.) Ask Gangadhar where we are to build a new school specially for him.

SOHAGO: (To GANGADHAR.) Son, does anyone speak so about his teacher?

GANGADHAR: (To SOHAGO.) Mother, I recognise only Sage Jata — (touching the amulet) who placed this amulet on me — and his disciple Hiru the leatherworker as my teachers.

HARPATI: (Striding agitatedly downstage.) What is so special about Hiru the leatherworker?

GANGADHAR: (To HARPATI.) He possesses art. He knows how to cure the hides of dead cattle and turn them into many kinds of sandals, mandar drums, and mridangas. When a problem arises, he changes his method and applies his knowledge afresh. He sings songs in which the wisdom of many sacred texts can be learned from a single song.

HARPATI: (Turning sharply from downstage toward GANGADHAR.) And what is special about Sage Jata?

GANGADHAR: (To HARPATI.) He never tells us merely to memorise. When questioned, he explains. When someone interprets a sacred text, he does not grow angry; instead, he corrects a mistaken interpretation.

HARPATI: (Pacing downstage.) Yes, yes — that is why he was expelled from the school and took the road into the forests of Saptari.

GANGADHAR: (Coming downstage.) Mother, Father — this is my final decision. I shall not undergo the sacred-thread ceremony. Hiru says the pandits misinterpret the scriptures. Religion has been reduced to the sacrifice of goats.

HARPATI: (Angrily interrupting.) "Hiru says" — in every matter, Hiru says! And who told Hiru all these things?

GANGADHAR: Sage Jata told him.

HARPATI: (Still angrier.) And who told Sage Jata?

GANGADHAR: Sage Jata's teacher told him, and his teacher's teacher told that teacher, and... and... there is some mystery within this Ulkamukh, a mystery no one yet understands.

HARPATI: In other words, no one understands it — yet upon that ignorance you have based your final decision.

GANGADHAR: (Interrupting.) But do you truly value complicated ritual? I find more principle in Hiru's songs. And yes — you have understood my final decision.

HARPATI: You will make your final decision, remain in this house, and after you remain here, the villagers will allow me to remain in this village? Do you imagine all that is possible?

(MITU, GANGADHAR'S brother-in-law, and ANANDA, GANGADHAR'S sister, enter.)

ANANDA: Mother, Father — I do not think Gangadhar will move from his position.

HARPATI: (Turning sharply toward GANGADHAR.) Yes. I understand everything. He has found his proper place: Sage Jata, Hiru the leatherworker, and a school in the forests of Saptari. Sage Jata and Hiru can find no disciple, and my Gangadhar can find no teacher of their kind.

ANANDA: Mother, Father — do not indirectly force Gangadhar to leave home.

SOHAGO: (Facing ANANDA.) But do you not see what is happening here? He refuses the sacred-thread ceremony. Can stubbornness go this far?

HARPATI: (Facing SOHAGO.) Leave aside what people here think. I myself cannot accept it. Gangadhar, my final decision is that we will not leave this village.

SOHAGO: (To HARPATI.) Who is asking you to leave the village?

GANGADHAR: (To SOHAGO.) Mother, he means that if I do not leave the house, he will be forced to leave the village. Father, I shall set out for the forests of Saptari today. My final decision and yours cannot be reconciled.

SOHAGO: (To GANGADHAR.) Gangadhar, you are only eight years old — and alone...

GANGADHAR: (To SOHAGO.) I shall not be alone. I have a certain refuge in the Saptari forest, with my teachers: Sage Jata and Hiru the leatherworker.

GANGADHAR: (To SOHAGO.) Give me your permission to go.

MITU: No. We cannot simply let Gangadhar go alone. We shall go with him. (To ANANDA.) Will we not, Ananda?

ANANDA: Yes. We cannot abandon him. Mother, you remain with Father. I promise that Gangadhar will complete his education — and...

GANGADHAR: And Ulkamukh is already with me.

(SOHAGO is shaken; HARPATI turns to stone. Darkness spreads.
When the lights return, GANGADHAR, ANANDA, MITU, SAGE JATA, and HIRU are revealed.
The happiness of having attained a goal is clear on every face.)

ANANDA: Sage Jata, Hiru — Gangadhar's quick mind had become a problem for him at school.
The teacher could not answer his questions and therefore kept making complaints
against Gangadhar instead.
DISCIPLE HIRU: Only the fortunate receive such a disciple, Ananda. But if a diamond never reaches a jeweller,
it remains only a stone.
MITU: Yes. And we too have learned so many kinds of knowledge here. The plants and animals
of this forest have become our teachers.
GANGADHAR: If every school in Mithila had teachers like Sage Jata and Hiru,
our fortune would rise. Instead, they appoint people who... Hiru, describe how much knowledge
we have gained in these five years.
HIRU: (Laughing loudly.) What can I possibly describe?
ANANDA: The forest — the creatures of the forest — teaching us something new at every moment.
HIRU: (Extending a hand in the posture of song.)
Snakes to the left, snakes to the right,
wearing garments of wondrous pattern.
Where shall I bring alms from every day?
Turn back, wanderer, and leave this courtyard.
The yogi takes no alms,
nor will he turn back. Come out into the courtyard!
GANGADHAR: Oh-ho!

HIRU:

I shall not go, I shall not go, I shall not go
from your courtyard.
The Bahira snake has built the marriage pavilion;
the Teliya snake has tied its bindings.
The Dhaman snake has made the bridal lap;
the python has laid the foundation.
From the Harhara snake come anklets and ornaments;
from the Karait come bracelets.
From the Paniyadarar comes the armlet;
from the Dharba comes the drum.
The Suguwa snake brings the celebration;
the moon and stars bring the mirror;
the fish-eagle brings the jewellery.

GANGADHAR:

I shall not go, I shall not go, I shall not go
from your courtyard.
SAGE JATA: (Rising and beginning to pace.) You must go, Gangadhar. You have much work
to do. My heart is content now that I have found a disciple like you. Such good fortune
was granted neither to my teacher, nor to his teacher, nor to the teacher before him. The inner fulfilment I found
while teaching you was extraordinary. In this age of rote learning, your hunger to understand every subject was
astonishing.

I am content. Whether this is the power of Ulkamukh, or whether your power has made Ulkamukh come true, I do not know. Go. Go to the court of Kirti Singh. Let us see what this Ulkamukh makes possible.

(Darkness spreads.)

ACT VII

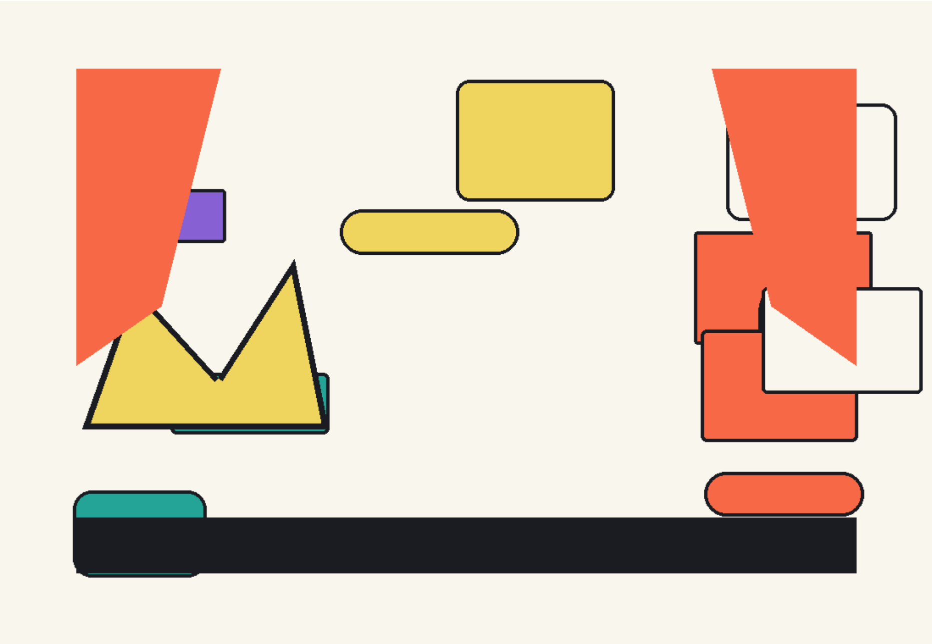

FIGURE 11

(The royal court of KIRTI SINGH. The King is seated. GANGADHAR enters from one side with COURTIER 1; from the other, the King's Finance Minister NARAYAN enters with COURTIER 2.)

KIRTI SINGH: (To NARAYAN.) Come, Finance Minister Narayan. Have the accounts been reconciled yet, or not?

COURTIER 1: (Facing the King.) How can they be? Every student emerging from the schools has been trained by rote and becomes lost when faced with a new mathematical problem. Ask such a student anything from the book and he will recite it in a rush without looking; yet none of them can calculate an account or reconcile the ledgers and land records.

KIRTI SINGH: (Raising his voice slightly.) Finance Minister Narayan — what am I hearing?

FINANCE MINISTER NARAYAN: (Flustered.) Yes, yes — I was just having one of my disciples add one plus two plus three, all the way to one hundred. I told him to finish the sum within an hour, but before he could, this man — (pointing to COURTIER 2) — dragged me here.

COURTIER 2: (Exasperated.) Finance Minister, you could not reconcile the sum yesterday either — sum upon sum! My lord, for a whole year no one has been able to discover whether the accounts and land registers show a profit or a loss.

COURTIER 1: (Eagerly, to the King.) Your Majesty, I found this boy there. He said he could reconcile all the accounts. There was little time, so I brought him with me.

GANGADHAR: (Eagerly, to the King.) Your Majesty, with your permission, may I speak?

(The FINANCE MINISTER interrupts.)

FINANCE MINISTER NARAYAN: (Flustered.) Adding the numbers from one to one hundred must take time, Your Majesty.

(The KING gestures for GANGADHAR to speak.)

GANGADHAR: (Facing the King.) Thank you, Your Majesty. (Facing FINANCE MINISTER NARAYAN.) To add one through one hundred, first consider how many numbers there are.

FINANCE MINISTER NARAYAN: (Smirking.) One hundred. How many else could there be?

GANGADHAR: Write one to one hundred, and beneath them one hundred to one. Pair one with one hundred, two with ninety-nine, three with ninety-eight. What does each pair equal?

FINANCE MINISTER NARAYAN: (Smirking.) One hundred and one. What else?

GANGADHAR: Each pair contains two numbers. How many pairs are there among one hundred numbers?

FINANCE MINISTER NARAYAN: (Smirking.) Fifty. What else?

GANGADHAR: There are fifty pairs of one hundred and one. Multiply one hundred and one by fifty. Or multiply fifty by one hundred, then add fifty. What does that make?

FINANCE MINISTER NARAYAN: (Eyes widening.) Fifty times one hundred is five thousand, plus fifty makes five thousand and fifty. Five thousand and fifty, Your Majesty. Yes — that is correct!

KIRTI SINGH: Your pupil is exceptionally capable. (To GANGADHAR.) What is your name, my child?

FINANCE MINISTER NARAYAN: (Ashamed, to the King.) No, Your Majesty, he is not my pupil. He came to ask me for employment. When I asked which school he attended, he said he had studied in Saptari with Sage Jata and his disciple Hiru the leatherworker, and had attended no formal school. Therefore I refused him employment. I am ashamed, Your Majesty. His name is Gangadhar.

KIRTI SINGH: Astonishing! He attended no school, but studied with Sage Jata and his disciple Hiru the leatherworker!

FINANCE MINISTER NARAYAN: (Ashamed.) Your Majesty, with your permission, shall I appoint Gangadhar to a post?

COURTIER 1: (To FINANCE MINISTER NARAYAN.) Appoint him? If you do not, your own post will be in danger. For a year no one has known whether the kingdom's accounts and registers show profit or loss.

KIRTI SINGH: Never mind. (Gesturing to COURTIERS 1 and 2.) Go and summon Commander Harikar.

(COURTIER 1 exits one way and COURTIER 2 the other.)

KIRTI SINGH: Gangadhar, are you willing to serve in the royal court?

GANGADHAR: Your Majesty, I am ready to work anywhere. If I serve in the royal court, others will benefit from my education, and I may also prove that this kind of learning can be practised elsewhere.

(COURTIERS 1 and 2 return with COMMANDER HARIKAR.)

KIRTI SINGH: Finance Minister, Gangadhar — sit in the reception chamber. I have an urgent matter to discuss. Remain seated; do not go anywhere.

FINANCE MINISTER NARAYAN AND GANGADHAR: (Together.) Yes, Your Majesty.

(They exit.)

COMMANDER HARIKAR: (To KIRTI SINGH.) You summoned me, Your Majesty?

KIRTI SINGH: Yes, Commander. Today I met a boy named Gangadhar — extraordinarily clever, extraordinarily gifted. The Finance Minister is useless: he cannot produce an account or submit a ledger on time. Yet one merit remains — he never disobeys an order.

COMMANDER HARIKAR: Yes, Your Majesty.

KIRTI SINGH: (To COMMANDER HARIKAR.) A thought has occurred to me. The marriage of my sworn sister Kumarsuta...

COMMANDER HARIKAR: (To KIRTI SINGH.) Your Majesty, you are not thinking of Gangadhar, are you?

KIRTI SINGH: (To COMMANDER HARIKAR.) I am, Commander.

COMMANDER HARIKAR: (To KIRTI SINGH.) But Your Majesty stands for high lineage, and Gangadhar is...

KIRTI SINGH: Yes, that is precisely why he must be raised to noble rank. I shall arrange Gangadhar's marriage to my sworn sister, Kumarsuta, and appoint him Prime Minister of this kingdom. Commander Harikar... that young man who just passed before you... he is extraordinarily gifted.

COMMANDER HARIKAR: Yes, Your Majesty. (Gesturing towards COURTIER 1 and COURTIER 2.) These two were only just

discussing his brilliance. He would be an entirely suitable husband for Kumarsuta. Finance Minister Narayan has been unable to manage the additional charge of Prime Minister.

KIRTI SINGH: Then make every arrangement for the wedding, Commander.

COMMANDER HARIKAR: Certainly, Your Majesty... certainly. Everything will be arranged at once.

(Darkness spreads everywhere. When the light returns, Gangadhar's office seems to have become more important than the royal court itself. He has founded an Experience Council in which there is no distinction of caste or of sex. GANGADHAR, MANSUKH, HARIKAR, MITU,

KUMARSUTA, ANANDA, MEDHA, JIVE, SAGE JATA, HIRU, MADHAV, MADHAV'S

ASSOCIATE 1 and MADHAV'S ASSOCIATE 2 enter the stage as the light rises. An Ulkamukh amulet hangs from every neck.)

GANGADHAR: In the new schools, students are thinking for themselves and working with their own hands. Women's education has begun again. Caste divisions have been abolished; education is for everyone. Welcome to this meeting of the Experience Council. We are eager to hear your thoughts, Sage Jata.

SAGE JATA: Education through understanding, not rote repetition, has begun... something absent in the time of my teacher, his teacher, and his teacher before him. Learning memorised without understanding is merely a burden loaded on a donkey. Is that not so, Mansukh?

MANSUKH: Indeed it is. (To his son JIVE.) Arrange refreshments for all our guests, Jive. (To HARIKAR.) Harikar, would you also like to speak?

HARIKAR: (To MEDHA.) Daughter, go and help Jive.

(JIVE and MEDHA exit.)

HARIKAR: I do, Mansukh, but in a little while. First I would like to hear more from Gangadhar.

GANGADHAR: The Experience Council honours labour, not wealth. A rich man's riches are like a hen's milk: they may nourish only the hen's own chicks, but they can never make sweets for everyone.

KUMARSUTA: Yes. I keep telling my sworn brother, Kirti Singh, the same thing. Finance Minister Narayan continues to believe that every welfare measure of the Experience Council is being paid for from the royal treasury.

ANANDA: Narayan does not understand economics. He understands only how money may be collected; he does not understand how wealth is created.

MADHAV: Gangadhar has explained the accounts to Kirti Singh many times. Every welfare programme of the Experience Council is funded by the wealth it earns itself.

KUMARSUTA: In Gangadhar's presence, Narayan accepts that. Behind his back, he calls Gangadhar's accounts evasive—an Ulkamukh maze of figures—and spreads the illusion that they cannot be trusted.

GANGADHAR: You may question someone bitten by a snake, or someone tormented by ghosts and spirits; but what can you ask of one possessed by the ghost called money? The Experience Council's schools teach people to earn through their own work; they teach self-reliance.

MANSUKH: Well said, Gangadhar. At the Experience Council's school, my son never once felt that his people had ever been treated as untouchable. (Looking at MITU.) Is that not so, Mitu?

MITU: Do not call them untouchable, Mansukh. The Experience Council has named them Ulkamukhis. (Looking at MADHAV.) Madhav has organised the Ulkamukhi schools so well that words cannot do them justice.

MADHAV: Yes, Ulkamukhis emerge from those schools. (Turning to ASSOCIATE 1 and ASSOCIATE 2.) Tell everyone how the Ulkamukhi schools meet their financial needs.

MADHAV'S ASSOCIATE 1: Everywhere, Ulkamukhi members support the teachers and students through their own labour.

MADHAV'S ASSOCIATE 2: Everywhere, Ulkamukhi members meet the cost of land and buildings

for the Ulkamukhi schools.

MADHAV'S ASSOCIATE 1: People say the Ulkamukhi schools have brought them immense benefit. The experiments carried out by the students and teachers of those schools have transformed their lives.

MADHAV'S ASSOCIATE 2: They also say that former and present students and teachers come to their aid whenever needed. Therefore, however much the people give these schools, the schools return even more to them. (Looking at ANANDA.) Ananda herself was present when this was being discussed in one place.

ANANDA: Yes, that is true. But much more remains to be done. Shall we conclude today's meeting now?

HARIKAR: No. I have something to say.

MADHAV: What is it, Commander Harikar?

HARIKAR: Madhav, Gangadhar is leaving for Saptari. You will therefore have to undertake this task. I wish my daughter Medha to marry Jive. I shall attend to the wedding arrangements; and because you and I both serve in the royal court, we shall obtain the King's formal permission for it. I place that responsibility upon you.

GANGADHAR: This is joyful news. (He rises. Everyone stands and begins congratulating MANSUKH and HARIKAR. JIVE and MEDHA enter carrying trays and other refreshments. Darkness spreads.)

(The court of KING KIRTI SINGH. The KING, FINANCE MINISTER NARAYAN, COURTIER 1, COURTIER 2, MADHAV and his two ASSOCIATES are present. The KING appears furious.)

COURTIER 1: An outrage has occurred, Your Majesty. News has arrived of the marriage between the Brahmin commander Harikar's daughter and the son of the leatherworker Mansukh.

COURTIER 2: Such a pratiloma marriage can in no way be called proper—especially when it had not received royal assent.

COURTIER 1: And this when the Commander is a member of this court, and Madhav belongs to the Experience Council that arranged the marriage!

KING KIRTI SINGH: (To MADHAV.) When I had not granted permission for Jive and Medha to marry, how did this wedding take place, Madhav?

MADHAV: Your Majesty, the permission was only a formality. No one in the Experience Council opposed the marriage.

KING KIRTI SINGH: The Experience Council! The Experience Council! Has it grown greater than this royal court?

FINANCE MINISTER NARAYAN: I raised objections as well, Your Majesty. This Experience Council wanders about dispensing endless charity and draining the royal treasury.

MADHAV: Everyone in the Experience Council eats what they earn through labour, Finance Minister Narayan. From time to time you repeat this charge against Gangadhar, but he has answered it thoroughly, and you yourself declared that you were satisfied.

COURTIER 1: How could he be satisfied? Gangadhar's labyrinthine accounts never enter his understanding.

COURTIER 2: Those were minor matters. This time the King's command has been defied. The King never obstructed any work of the Experience Council. End rote learning, they said—and it was ended.

COURTIER 1: But the Finance Minister's accounts could never add up without rote learning.

FINANCE MINISTER NARAYAN: Once rote learning ended, people began to think with their own minds. This is only the beginning, Your Majesty. The marriage of Mansukh the leatherworker's son to the Brahmin commander Harikar's daughter will bring revolution. What do they call it...? (Thinking.)

MADHAV'S ASSOCIATES 1 AND 2: Ulkamukhi...

KIRTI SINGH: Madhav, go and tell Harikar that he is no longer commander of this kingdom. Inform the Experience Council—hmph, the Experience Council—that Gangadhar is no longer Prime Minister of this kingdom. When an idea begins to rise above the royal command, the walls of the palace begin to tremble. Narayan will now assume both offices. Madhav, you may go.

(MADHAV and his two ASSOCIATES exit.)

KING KIRTI SINGH: Commander Narayan, I want four eyes: Medha's two and Jive's two. When both pairs have been gouged out, throw the two of them before the maddened Airavata. Have them crushed—but first I want those four eyes. Eyes that dared to look beyond caste cannot be endured by the throne. Let the news spread to the farthest horizon: a pratiloma—

(Darkness. From offstage come the cries of JIVE and MEDHA. Then an elephant's trumpeting merges with thunder tearing across the sky. The voices of man, woman and elephant mingle into one. Amid mournful music, light slowly rises on a meeting of the Experience Council.

GANGADHAR, MANSUKH, HARIKAR, MITU, KUMARSUTA, ANANDA, SAGE JATA, HIRU, MADHAV,

MADHAV'S ASSOCIATE 1 and MADHAV'S ASSOCIATE 2 are present—but JIVE and MEDHA are absent. Grief and rage mark every face.)

GANGADHAR: Is this your final decision?

ALL, TOGETHER: Yes. Yes. It is final, Gangadhar, whether you accept it or not.

KUMARSUTA: I too accept this decision.

GANGADHAR: The Experience Council has always honoured the will of the majority. But think it over

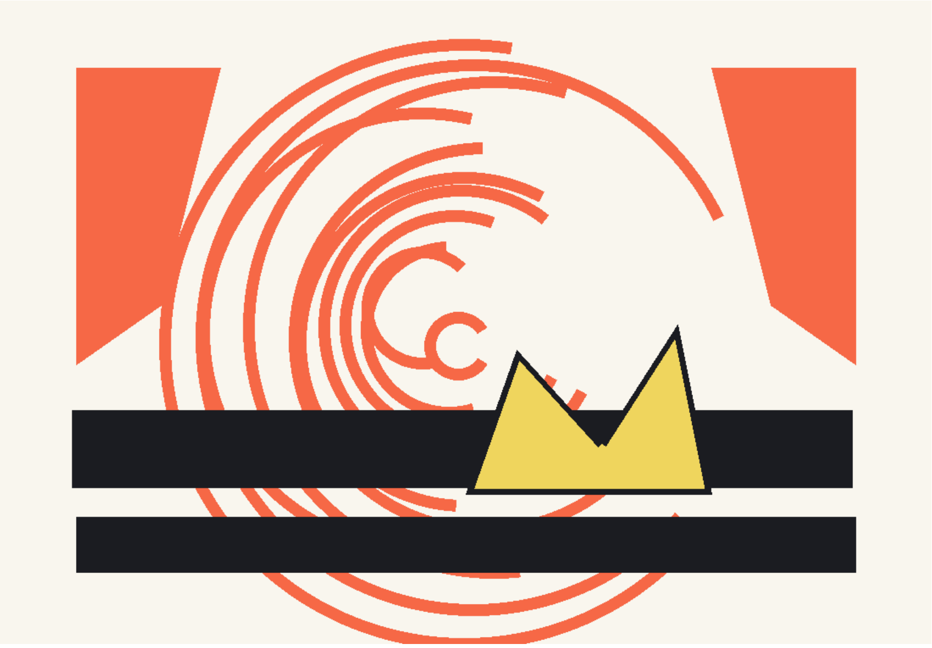

FIGURE 12

once more.

ANANDA: (To MADHAV.) Madhav! How was it that the royal order for the brutal killing of

Medha and Jive was kept secret from you?

HARIKAR: (To MADHAV.) Brutal... the utmost brutality... Oh! Such a murder—the daughter of the royal commander's own house,

and his son-in-law... An order for such a death—and you caught not even the faintest hint of it, Madhav?

MANSUKH: (To GANGADHAR.) Gangadhar, and members of the Experience Council: I demand justice—justice

against the injustice of the royal court. I demand a justice sterner even than the court's injustice.

GANGADHAR: Very well. Let it be so. Who shall be entrusted with it?

MADHAV: I shall take this burden, Gangadhar—gladly... gladly. I shall stand

against the royal court that committed this monstrous sin. I shall conduct a secret campaign against the court

that concealed this conspiracy from me. That shall be my penance. But this must not become mere revenge; it must defend memory.

If only revenge remains, I too shall burn in the same fire. (MADHAV comes to the front of the stage with his two ASSOCIATES.)

MITU: Madhav, you must be cautious. Everyone in the royal court knows that you are a member of the Experience

Council.

SAGE JATA: Madhav, Hiru and I shall prepare the ground—such a convincing pretence

that the royal court will believe you have been expelled from the Experience Council.

HIRU: And I shall spread the story through song, so the court will believe that

the Experience Council collapsed after Madhav was cast out.

GANGADHAR: Then let it be so. Every member of the Experience Council must leave for Saptari. Madhav, you and your two

associates must return to the royal court. Sage Jata and Hiru, do not take long;

complete your task quickly and reach the forests of Saptari.

(Darkness. When light returns, RUDRAMATI—Madhav's mother—stands onstage with MADHAV and

his two ASSOCIATES. Dishes of food are set nearby. RUDRAMATI is furious.)

MADHAV'S ASSOCIATE 1: Mother Rudramati, bless your son Madhav and both of us, so that

we may complete the task entrusted to us by the Experience Council.
MADHAV'S ASSOCIATE 2: Mother Rudramati, after the monstrous murder of Medha and Jive, silence would be cowardice. The Experience Council has resolved that we must punish the King for his deed.
RUDRAMATI: (To MADHAV.) Has the Experience Council's decision been carried out, Madhav?
MADHAV: No, Mother. We are about to leave. I thought I should come home first and seek my mother's blessing before setting out.
RUDRAMATI: How did you dare enter this house before carrying out the Experience Council's decision, Madhav? Medha and Jive were killed—their eyes gouged out, their bodies crushed beneath an elephant! You are fortunate, Madhav, that you have been entrusted with punishing the criminal responsible. But do you understand the gravity of that charge?
MADHAV: I do, Mother.
RUDRAMATI: (In fury, throwing rice from the dish onto the ground.) What do you understand, Madhav? How dare you enter this house without carrying out the Experience Council's decision, my son? Until you fulfil it, you shall live in the form of a chicken—and a chicken has no right to eat from a plate. Eat! Eat the rice I have thrown on the ground.

(MADHAV barks and begins eating the scattered rice. Darkness.)

(Light returns. The stage is empty. HIRU and SAGE JATA enter.)

HIRU:

Bangles for the hands, a bracelet of flowers—
where shall I find them now, my beloved?
A girdle for the waist, a chain of gold—
none of them delights my heart, my beloved.
Medha and Jive have been slain, yet Madhav remains silent;
that does not please my heart, my beloved.
The King tore out their eyes and had the elephant crush them—
where shall I find Medha and Jive now, my beloved?

SAGE JATA:

I will not eat the sothoura, O King; it tastes bitter.
Madhav's conduct tastes bitter to Gangadhar.
The mother comes to bless the sixth-day rite;
Madhav's conduct tastes bitter to Gangadhar.
The sister comes to prepare the kohl;
Madhav's conduct tastes bitter to Gangadhar.

(COURTIER 1 and COURTIER 2 enter.)

COURTIER 1: What are you saying? Everyone at court knows that Madhav and Gangadhar trust each other without limit.
HIRU: Not trust. Trusted.
COURTIER 2: What do you mean?
SAGE JATA: The murder of Jive and Medha.
COURTIER 1: But Madhav knew nothing about that.
HIRU: You may know that. Everyone in the Experience Council, however, kept asking how Madhav could have known nothing of the conspiracy—and how he could have made no attempt to stop it.
SAGE JATA: And so the Experience Council broke apart.
COURTIER 1: The Experience Council has broken apart?

HIRU: Madhav either left the Experience Council or was expelled from it. In either case, that means the Council has split, does it not?

(COURTIER 1 and COURTIER 2 move to a corner of the stage and whisper.)

COURTIER 1: This is useful news. The King has been needlessly suspicious of Madhav.

COURTIER 2: Yes. These mendicants have no idea how great a favour they have done us.

COURTIER 1: (Calling loudly to SAGE JATA and HIRU from a distance.) Very well, mendicant brothers, we must go now. We shall meet again one day over a drink of bhang.

HIRU: Very well, brothers. We shall certainly meet again.

(COURTIER 1 and COURTIER 2 exit.)

SAGE JATA: Come, Hiru. Our work is done. We too must now set out for the forests of Saptari.

HIRU: (Takes a pair of cymbals from his shoulder-bag and begins to play.)
Ghosts and spirits play the cymbals;
I make the yoginis dance.
I destroy the demons;
I bind the world together.

(Darkness. When light returns, the KING and NARAYAN are in the royal court. COURTIER 1 enters.)

COURTIER 1: Victory to Your Majesty. I bring welcome news. Madhav has been expelled from the Experience Council. The Council suspected that Madhav had concealed from it his knowledge of the royal order to kill Jive and Medha.

NARAYAN: But Madhav knew nothing of it. If he did not know, how could he have hidden it from anyone?

COURTIER 1: Who in the Experience Council would believe that? When the royal order was issued, Madhav was present in the royal court.

NARAYAN: Yes, that is true. But how did you learn this?

COURTIER 1: (Smiling.) I have placed informants everywhere. The Experience Council could hardly escape their reach.

(COURTIER 2 enters.)

COURTIER 2: (Addressing the KING.) Victory to Your Majesty. Madhav and his two associates seek permission to enter the royal court.

KIRTI SINGH: Permission is granted. Bring all three in with honour.

(COURTIER 2 exits, then re-enters with MADHAV and his two ASSOCIATES.)

KIRTI SINGH: Come, Madhav. I had thought that you too had abandoned the royal court, like Gangadhar and Harikar.

MADHAV: How could I abandon the royal court, Your Majesty? Gangadhar and Harikar have the Experience Council—if not the royal court, then the Experience Council. For me, only the royal court remains. (Softly.) Sometimes, to enter within, one must appear a traitor from without.

NARAYAN: The decision to execute Jive and Medha was taken without warning. That is why you could not be informed.

MADHAV: Even had I been told, Finance Minister Narayan, I could not have altered the royal decree.

KIRTI SINGH: Madhav, if I had borne any hatred towards Gangadhar, would I have arranged his marriage to my sworn sister Kumarsuta? I made him Prime Minister so that he might be raised to noble rank. How was I to know that he was a patron of the low-born—and that he would colour Kumarsuta in his own colours as well?

MADHAV: (Moving slowly towards the KING.) Yes. He coloured all of us in his own colours, Kirti Singh.

(He strikes particular force into the last two words, then attacks KIRTI SINGH with his sword. MADHAV'S two ASSOCIATES fight NARAYAN and the two COURTIERS.

The ASSOCIATES throw the COURTIERS and NARAYAN to the ground. By then the King's soldiers arrive. MADHAV plunges a dagger into his own belly and takes his life. The King's soldiers kill his two ASSOCIATES. NARAYAN removes the Ulkamukh amulets from all three necks and displays them to everyone. Darkness spreads once more.)

(Light returns. The stage is empty. Members of the Experience Council enter: GANGADHAR, MANSUKH, HARIKAR, MITU, KUMARSUTA, ANANDA, SAGE JATA and HIRU. JIVE, MEDHA, MADHAV and MADHAV'S two ASSOCIATES are absent. GANGADHAR carries a walking-stick and is calm. Everyone sits.)

GANGADHAR: The time has come to take leave. The Experience Council brought every caste closer and abolished caste, but...

MANSUKH: No, Gangadhar. Nothing will happen to you.

HARIKAR: Everything is being set right, Gangadhar. Kirti Singh is dead. Now everything will be right again.

MITU: But Madhav and both his associates died with him.

KUMARSUTA: Kirti Singh's death had become necessary. No human being could order the monstrous murder of Medha and Jive. Kirti Singh became surrounded by people who turned him from a human being into an animal. Gangadhar, nothing will happen to you.

GANGADHAR: No, Kumarsuta. Everyone's time must come. I have certain fears about the Experience Council.

ANANDA: Gangadhar, the Experience Council will continue exactly as you wish.

GANGADHAR: I am afraid.

SAGE JATA: Afraid of what, Gangadhar?

HIRU: Afraid of what? Every caste may enter the Experience Council, and women face no discrimination there.

GANGADHAR: (Speaking breathlessly.) That is true today, Hiru. I want it to remain true tomorrow, Sage Jata. My only fear is that the fire of vengeance may turn the Experience Council itself into an Ulkamukhi caste, Sage Jata. That is my one fear... (He begins to cough.) My one fear is that, in resisting the attacks certain to be made upon it, the Experience Council may enclose itself within a wall and bar the entry of every other caste. The door we opened must not be shut again after I am gone. Do not let that happen after I am gone, Kumarsuta... Yet the fire of revenge may make it happen. That alone is my fear...

(He begins to cough. KUMARSUTA cradles his head in her lap. Slowly, GANGADHAR dies. HIRU holds the amulet in his hand and gazes at it. JATA places a hand upon the earth and listens, as though a cube were turning again somewhere far away. Darkness begins to spread. A voice rises offstage.)

I am afraid—this place fills me with dread;
your courtyard has become a house of fear.
A python for the pillar, a rat snake for the rope;
a cobra in the lap strikes out with a hiss.
I am afraid—this place fills me with dread;
your courtyard has become a house of fear.
Upon the krait's wick lies a binding chain;
a hornet's nest drones and thrums.
I am afraid—this place fills me with dread;
your courtyard has become a house of fear.
Upon the parrot's ridge beats the cattle-drum;
the tongue of water lashes and flickers.
I am afraid—this place fills me with dread;
your courtyard has become a house of fear.

The scorpion's coiled rings hiss and whisper.)

—END—

(Final sound: the rasp of the cube and the rumble of the sphere are heard together. Then a faint line of folk song returns from far away, as though oblivion were once again being defeated.)

CURTAIN

VIDEHA

Videha: The First Maithili Fortnightly E-Journal | ISSN 2229-547X | www.videha.co.in

रंग-संगम

नओटा मैथिली नाटक आ तकर अंग्रेजी रंगमंचीय रूपान्तर

रंग-संगममे गजेन्द्र ठाकुरक नओटा मैथिली नाटक — अपाला आत्रेयी, भऽ जाएब छू, दानवीर दधीची, गंगा ब्रिज, जलोदीप, कमलाक भगता, मचण्ड, संकर्षण, आ उल्कामुख — तकर अंग्रेजी रंगमंचीय रूपान्तरक संग जोड़ी-क्रममे संकलित अछि। प्रत्येक मैथिली मूलक तुरन्त बाद ओकर अंग्रेजी रूपान्तर देल गेल अछि, मूल संवाद, मंच-निर्देश आ पात्र-परिचय सुरक्षित राखि। ई संयुक्त खण्ड मैथिली रंगमंचकेँ अंग्रेजीभाषी पाठक-वर्ग धरि पहुँचाबैत, दुनू भाषाक नाट्य-परम्पराक बीच एकटा सेतु बनबैत अछि।

गजेन्द्र ठाकुर मैथिली भाषाक विशिष्ट नाटककार, कथाकार आ विदेह ई-पत्रिकाक सम्पादक छथि। हिनक नाट्य-लेखन मैथिली रंगमंचकेँ नव विषय आ नव रूपविधान देने अछि।

www.videha.co.in

विदेह — प्रथम मैथिली पाक्षिक ई-पत्रिका
ISSN 2229-547X
© Gajendra Thakur, संयुक्त संस्करण 2026